ज्ञानमण्डल ग्रन्थमालाका २५ वाँ ग्रन्थ

मीर क़ासिम

हरिहरनाथ शास्त्री

ज्ञानमण्डल ग्रन्थमालाका २५वाँ ग्रन्थ

मीर क़ासिम ।

लेखक—

श्री हरिहरनाथ शास्त्री

भूमिका लेखक—

डाक्टर बेनीप्रसाद एम. ए. (प्रयाग)
डी. एस-सी. (लन्दन)

प्रकाशक—

श्री काशी विद्यापीठ, काशी ।

प्राप्तिस्थान—

ज्ञानमण्डल, काशी ।

प्रथम बार १५०० } १९८४ { मूल्य १=)

प्रकाशक—

श्रीबीरबलसिंह जी,
काशी विद्यापीठ,
काशी।

मिलनेका पता—
व्यवस्थापक, ज्ञानमण्डल,
काशी।

मुद्रक—
श्रीमाधव विष्णु पराड़कर,
ज्ञानमण्डल यंत्रालय,
काशी।

प्रकाशकका वक्तव्य ।

यद्यपि ज्ञानमण्डलका प्रकाशन-विभाग अब काशी-विद्यापीठके प्रकाशन-विभागमें सम्मिलित कर दिया गया है, तो भी ग्रन्थमालाका नाम वही रहेगा। इस ग्रन्थमालामें अब जो पुस्तकें प्रकाशित होंगी उन सबके प्रकाशनादिका सर्वाधिकार श्री काशी-विद्यापीठको ही रहेगा, किन्तु ज्ञानमण्डल-ग्रन्थमालाके स्थायी ग्राहकोंको अभीतक जो सुविधाएँ प्राप्त थीं, वे अब भी ज्योंकी त्यों रहेंगी और उन्हें पूर्व प्रकाशित तथा बादमें प्रकाशित होनेवाली मालाकी सभी पुस्तकें, नियमानुसार, ज्ञानमण्डल-पुस्तक-भण्डारसे पौने मूल्यमें ही मिल सकेंगी।

—प्रकाशक

जिनके चरणोंके समीप बैठकर भारतीय
इतिहासका अध्ययन किया, जिनके
कारण उसमें रुचि उत्पन्न हुई
और यह पुस्तक लिखनेका
साहस हुआ,
उन्हीं
गुरुदेव पण्डित नरेन्द्रदेवजीके
चरणोंमें
अपने प्रयासका यह प्रथम पुष्प श्रद्धा
और भक्ति-पूर्वक समर्पित—

हरिहर
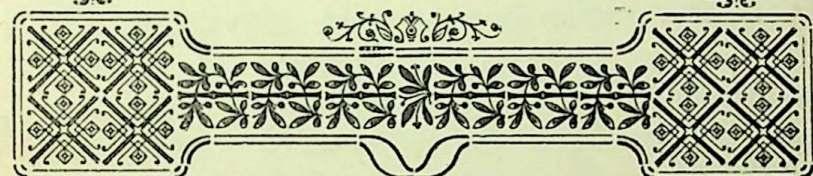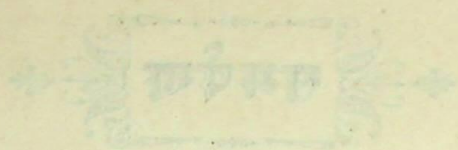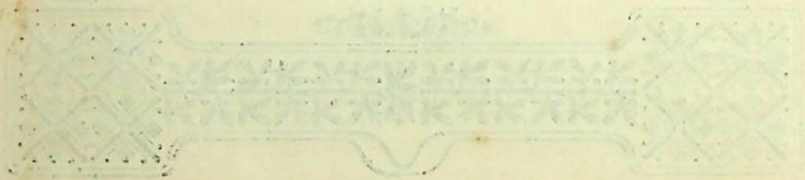
भूमिका।

अठारहवीं सदीका भारतीय इतिहास अभीतक घोर अन्धकारमें पड़ा हुआ है। पुस्तकों और कागज-पत्रोंका अभाव नहीं है। लन्दन इंडिया आफिसके पुस्तकालयमें एवं कलकत्ता, बम्बई और मद्रासके रेकर्ड दफ़्तरोंमें सैकड़ों नहीं हजारों ही मूलपत्र मौजूद हैं। देशके अन्य नगरोंके सरकारी दफ़्तरोंमें भी बहुत सी सामग्री मौजूद है। इसके अलावा राजा, जमीन्दार और अन्य व्यक्तियोंसे भी बहुतसे कागज, खोज करनेपर, मिल सकते हैं। पर अभीतक किसी समाज या संस्थाने इन सब पत्रोंको इकट्ठा करनेका और समीक्षा करनेका उद्योग नहीं किया है। अबतक इतिहासके इस भागपर जो कुछ लिखा गया है वह उपलभ्य सामग्रीके एक अंशके ही आधारपर लिखा गया है। दूसरे, उस अंशकी परीक्षा भी निष्पक्ष नहीं हुई है। अधिकांश अंग्रेज लेखकोंने अपने देश भाइयोंकी तत्कालीन कार्यवाहियों-को उचित और न्यायपूर्ण सिद्ध करनेकी ही चेष्टा की है। सप्रमाण इति-हासके लिये इस समय दो बातें आवश्यक हैं—एक तो सामग्रीका एकत्री-करण और दूसरे उसकी निष्पक्ष समालोचना। इसके साथ साथ भिन्न भिन्न ऐतिहासिक विषयोंपर भी पूरे अनुसंधानके साथ ग्रन्थ लिखनेकी आवश्यकता है। ऐसी ग्रन्थमालासे अन्तमें सम्पूर्ण इतिहास लिखनेमें बड़ी सहायता मिलेगी। विवेचनाके विषयोंमें मीर कासिमका समय किसीसे कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। बंगाल, बिहार और उड़ीसामें अंग्रेजी सत्ताकी स्थापनासे उसका घना सम्बन्ध है।

वर्तमान पुस्तकके लेखकका यह दावा नहीं है कि उन्होंने इस कालकी सारी ऐतिहासिक सामग्रीकी आलोचना कर डाली है। वह स्वयं स्वीकार करेंगे कि अभी बहुत कुछ देख भाल बाकी है। पर इस ग्रन्थके अवलोकनसे पाठकोंको मालूम हो जायगा कि लेखकने बहुत परिश्रम किया है और कुछ जटिल प्रश्नोंपर प्रकाश डालनेका उद्योग किया है। उन्होंने नये सिद्धान्त

निकाले हैं और अनेक प्रमाणों और युक्तियोंसे उनका प्रतिपादन किया है। हर्षकी बात है कि पुस्तककी भाषा सरल और ललित है, वर्णन मनोरंजक है। आशा है कि पाठकोंकी कमी न रहेगी।

मीर कासिमके चरित्रपर जो कलंक लगाये जाते हैं उनके विषयमें लेखकने अच्छी विवेचना की है। पटनाका हत्याकांड वैसा भीषण नहीं था जैसा कि अनेक इतिहासकारोंने दिखाया है। बच्चे और स्त्रियां न कैद की गई थीं, और न उनका वध किया गया था। जिन लोगोंके प्राण गये उन्होंने नवाबके विरुद्ध अपराध किया था। अंग्रेजोंसे जो व्यवहार मीर कासिमके थे उनमें कलकत्ता कौंसिलने बड़ी धींगा धींगी की थी—यह भी स्पष्टतः सिद्ध किया गया है। माना वेंसिटर्ट और वारन हेस्टिंग्जने न्याय और बुद्धि-से काम लिया पर उनकी कुछ न चली। इस कालमें बंगालपर जो भीषण विपत्तियां आईं, कृषि, उद्योग और व्यापारकी जो क्षति हुई उसका उत्तर-दायित्व मुख्यतः कम्पनीके नौकरों और गुमाश्तोंपर है। यह कहनेका अभिप्राय नहीं है कि मीर कासिम आदर्श शासक था। लेखकने उसकी त्रुटियोंको मुक्तकंठसे स्वीकार किया है। वह अच्छा सेनापति नहीं था। और कई भूलें उसने कीं। इस समस्त विषयका सुपाठ्य वर्णन इस पुस्तकमें मिलेगा और इसके लिये लेखक धन्यवादके पात्र हैं।

इलाहाबाद

बेनीप्रसाद

दो शब्द

सन् १९२१ ईसवीमें इस पुस्तकका लेखक श्री काशी विद्यापीठके इतिहास-मन्दिरमें प्रविष्ट हुआ। इसके पूर्व लेखकके मस्तिष्कमें भारतीय इतिहासके सम्बन्धमें विचित्र कल्पनाएँ थीं। उसने मार्सडन स्मिथ आदि अंगरेज इतिहास-लेखक तथा उनके हांमी कुछ देशी लेखकोंकी पोथियोंका अध्ययन किया था। इन पुस्तकोंको पढ़कर वह यही समझे बैठा था कि भारतवर्षमें आये हुए अंगरेज भलेमानस थे, न्यायप्रिय थे, बुद्धिमान् थे, यही नहीं बल्कि ईमानदार भी थे। और जो कुछ इन लोगोंने भारतवर्षमें आकर किया उसीमें इस देशकी भलाई थी। लेखकको बतलाया गया था कि शिवाजी लुटेरे थे, हैदरअली और नानाफडनवीस मूर्ख थे, सिराजुद्दौला क्रूर और अयोग्य थे, मीरक़ासिम निर्दई तथा विश्वासघातक थे। तात्पर्य्य यह कि अंगरेजोंके गुण और देशी शासकोंकी निन्दा और उनके दुर्गणोंका पाठ लेखकको पढ़ाया गया था। अतः लेखकको अपने इतिहासका अभिमान नहीं था, घृणा थी। यदि उसके हृदयमें सम्मान था तो अंगरेजोंके लिए था।

लेखक उस अवसरको अपने जीवनके बड़े भारी सौभाग्यकी घड़ी समझता है जब काशी विद्यापीठमें आकर उसे भारतीय इतिहासके अध्यापक श्री नरेन्द्रदेवजीका साथ हुआ। लेखकको चार वर्षोंतक प्रोफेसर महोदयके चरण-कमलोंके समीप बैठकर भारतीय इतिहासमें सबक़ लेनेका सुअवसर प्राप्त हुआ है। लेखक उक्त प्रोफेसर साहबका सदा ऋणी रहेगा जिनके व्याख्यानोंसे उसकी आँखें खुलीं। प्रोफेसर साहबके व्याख्यानोंमें अद्भुत नवीनता और असलियत थी, एक खास आकर्षण था, एक विचित्र ओज था, एक सारगर्भित गम्भीरता थी। उनके ही प्रभावमें आकर लेखकने भारतीय इतिहासकी वास्तविकताको समझनेकी ओर कदम बढ़ाया। पहिले पहल प्रोफेसर महोदयके ही संसर्गमें आकर लेखकने समझा कि उसकी पूर्व कल्पनाएँ बिलकुल निराधार थीं। जिसको वह सत्य समझ रहा था व

वास्तवमें कुछ अँगरेज इतिहासकारोंकी कपोल-कल्पित कहानी थी जिन्होंने देशी शासकोंको संसारकी दृष्टिमें नीचा दिखाकर और उनके दुर्गुणोंको अपनी इच्छानुसार प्रदर्शित करके उसकी आड़में अपने देशवासियों द्वारा किये गये घृणित कृत्योंपर परदा डालनेकी चेष्टा की थी। उसने महसूस किया कि जिन व्यक्तियोंके चरित्रको उन लेखकोंने काले रंगमें रंगा है वे वास्तवमें भारतवर्षके लिए गौरवके कारण है—वे हमारे इतिहासको उज्वल बनाते हैं। मीर क़ासिमके सम्बन्धमें भी प्रोफेसर साहबके छः या सात व्याख्यान हुए थे। उन्होंने बतलाया कि अँगरेजोंने मीरक़ासिमके समयमें बंगालकी प्रजापर कैसे कैसे अत्याचार किये और मीरक़ासिमके प्रति उन लोगोंने कौन कौन अत्याचार किये। लेखकको मालूम हुआ मानो उसकी आँखोंपर कोई पट्टी बँधी थी जिसे एकाएक किसीने खींच लिया हो। एक रोज़ लेखकने उत्साहमें आकर प्रोफेसर महाशयसे पूछा "क्या आप उन बातोंको जिन्हें आप 'क्लास-रूम' में थोड़ेसे विद्यार्थियोंके बीच प्रकट कर रहे हैं, औरोंके कानोंतक नहीं पहुँचा सकते? क्या इसकी ज़रूरत नहीं है कि यह आवाज़ इस चहारदीवारीसे बाहर भी जाय? प्रोफेसर महाशयने अपनी स्वाभाविक सादगीके साथ उत्तर दिया "जरूरत अवश्य है, तुम क्यों नहीं कुछ लिखते?"

श्रद्धेय प्रोफेसर महोदयके उपर्युक्त वाक्य लेखकके उत्साहको बढ़ानेके लिए काफी थे। उसको केवल आशीर्वादकी जरूरत थी। तदनुसार लेखकने पहिले पहल इस पुस्तकको लिखना प्रारम्भ किया और दो वर्षोंके परिश्रमके पश्चात् आज वह इस योग्य हुआ है कि पाठकोंके सन्मुख इस पुस्तकको पेश कर सके।

पुस्तक लिखनेमें लेखक क्यों प्रवृत्त हुआ, यह ऊपर बतला दिया गया। वह चाहता था कि वास्तविकताका अनुसन्धान हो, संसारकी आंखोंके सामने मीर कासिमके सम्बन्धमें जो परदा बहुतसे लेखकोंने डाल रक्खा है वह हट जाय। यदि लेखकके विचारोंमें पाठकोंको कुछ भी नवीनता देख पड़ी और इस पुस्तकमें उनके सोचनेके लिए थोड़ी भी सामग्री मिल गयी तो लेखक अपने परिश्रमको सफल समझेगा।

अब लेखक अपना कर्तव्य समझता है कि इस पुस्तकके प्रकाशित होने तक जिन जिन लोगोंसे सहायता मिली है उन्हें धन्यवाद दे। लेखक सबसे अधिक कृतज्ञ प्रोफेसर नरेन्द्रदेवजीके प्रति है। लेखकके पास शब्द नहीं जिनमें वह प्रोफेसर महाशयको धन्यवाद दे सके। यदि लेखकको प्रोफेसर साहबका शिष्य होनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ होता, तो यह पुस्तक आज पाठकोंके सम्मुख नहीं होती। प्रोफेसर महाशयने कई पुराने ग्रन्थोंके ढूँढ़नेमें तथा इस पुस्तकका ख़ाका ठीक करनेमें लेखकको बहुत सहायता पहुंचाई है जिसके लिए लेखक उनका बहुत ऋणी है। लेखकका धन्यवाद इलाहाबाद पब्लिक लाइब्रेरी तथा फैजाबाद लाइब्रेरीके लाइब्रेरियनोंके प्रति भी है जिनकी कृपासे लेखकको पुस्तक लिखनेके लिए आवश्यक सामग्री प्राप्त हुई। प्रयाग विश्वविद्यालयके इतिहास-विभागके अध्यापक श्रीबेनी प्रसाद जीके प्रति भी लेखक विशेष कृतज्ञता प्रकट करना चाहता है, क्योंकि आपने अपना अमूल्य समय देकर इस पुस्तकके लिए भूमिका लिख देनेकी कृपा की है। अन्तमें लेखक श्री काशी विद्यापीठके प्रकाशन-विभागको भी धन्यवाद देना चाहता है जिसने इस पुस्तकको प्रकाशित करनेका भार उठाया। लेखक इस सम्बन्धमें प्रकाशन-विभागके सम्पादक श्री मुकुन्दीलालजी श्रीवास्तवको भी धन्यवाद देना नहीं भूल सकता। आपने पुस्तकका सम्पादन करने, प्रूफ देखने, अनुक्रमणिका तैयार करने, अशुद्धियोंको ठीक करने और पुस्तकको सर्वाङ्ग सुन्दर बनानेमें जो परिश्रम किया है उसके लिए लेखक आपके प्रति अत्यन्त कृतज्ञ है।

कानपुर, २५ अक्टूबर १९२७ }

हरिहरनाथ

विषय-सूची

पुस्तक-सूची।

मीर कासिमके सम्बन्धकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए निम्न-लिखित पुस्तकोंसे विशेष सहायता मिल सकती है :—

1. Sayer-ul-mutakherin by Sayed Gulam Hussain.
2. Narrative of Vansittart 3 Volumes.
3. A View of the Rise, Progress and Present state of English Government in Bengal by Verelst.
4. Decisive Battles of India by G. B. Malleson.
5. History of the military transactions of British India by Orme.
6. Calender of the Persian Correspondence
7. A Collection of treaties and engagements and Sanads by Aitchison Volumes I, II.
8. Rise and Progress of British power in India by Auber
9. Rise and Progress of the Bengal Army by Broome
10. The Economic History of British India by R. C. Dutt.
11. The Rise of the British power in India by Elphinstone
12. Lyall's Rise of the British Dominion in India
13. The Fall of the Moghal Empire by Owen
14. A Comprehensive History of India from the first landing of the English to the Sepoy Mutiny by Beveridge.
15. History of British India by Mills.
16. Early Records of British India by Wheeler.
17. History of British Empire in India by Thornton.
18. Clive by Gleig.
19. Calcutta Review, October 1884.
20. District Gazateers of Monghyr and Patna.
21. Selections from the unpublished Records of Government for the years 1748–67 by J. Long.
22. History of the British Empire in India and the East by Nolan.

२३. मीर क़ासिम (बंगला) लेखक श्री अक्षय कुमार मैत्रेय।

प्रस्तावना ।

मीर कासिमके शासनपर एक सरसरी दृष्टि

भारतीय इतिहाससे मीर कासिमका स्थान लुप्तसा हो-गया है । इस नामके प्रति आदर-भाव होना तो दूर रहा, इसके विपरीत मीर कासिम आज घृणाकी दृष्टिसे देखे जाते हैं । अँगरेज़ इतिहास-लेखकोंने तो आमतौरसे इनकी निन्दा करनेमें ही अपनी बुद्धि और विद्याका तमाम भण्डार खर्च कर डाला है । इन्हीं लेखकोंकी हांमें हां मिलानेवाले, इनकी बातोंको ही ब्रह्मवाक्य माननेवाले, भारतीय इतिहास-लेखकोंने भी मीर कासिमके चरित्रका निराधार और कपोल-कल्पित चित्र खींचनेमें कोई कसर नहीं रखी है । 'अत्या-चारी', 'क्रूर' और 'अयोग्य' आदि विशेषण इस नामके साथ प्रयुक्त किये गये हैं । बहुत कम लेखकोंने मीर कासिम-के गुणों और दोषोंकी वास्तविक विवेचना करनेका यत्न किया है । बात यह है कि इतिहास लिखते समय बहुत से लेखक स्थितिका विचार ही नहीं करते । जिस अव-स्थामें रहकर मीर कासिमको राज्यसञ्चालनका कार्य्य करना पड़ा था उस अवस्थापर ध्यान दिये विना ही इतिहास-कारोंने अपनी सम्मति प्रगट कर दी है । यदि हम निष्पक्ष भावसे तमाम घटनाओंकी छानबीन करते हुए मीर कासिम सम्बन्धी इतिहासका अध्ययन करेंगे तो हम समझ सकेंगे कि इनके कार्य कहाँतक न्यायोचित थे और भारतीय इति-हासमें इनका क्या स्थान होना चाहिये ।

संवत् १८१४ (सन् १७५७ ई०) में पलासी-युद्ध (षड्-यंत्र) हुआ। उसके बाद बंगालमें अँगरेजोंका सिक्का अच्छी तरह बैठ गया। अभीतक ये लोग नवाबकी कृपाके भिखारी वणिक् मात्र थे। अब ये बंगालके वास्तविक शासक बन बैठे। मीर जाफर, जिन्हें सिराजके साथ विश्वासघात करनेके पुरस्कारमें बंगालकी नवाबी मिली थी, एक अयोग्य और निकम्मे शासक थे। अँगरेज इन्हें कठपुतलीकी तरह अपनी इच्छाके अनुसार नचाया करते थे। फरुखसियरके समयमें अँगरेजोंको जो फरमान प्राप्त हुआ था उसके अनु-सार ये लोग देशके भीतर विदेशी मालका ही निःशुल्क व्यापार कर सकते थे। देशी वस्तुओंका निःशुल्क व्यापार करनेका अधिकार इन्हें प्राप्त न था। पलासीयुद्धके पूर्व ये लोग छिपे तौरसे जहाँ तहाँ उक्त प्रकारका व्यापार कर लिया करते थे। परन्तु अब तो इसे ये अपना स्वत्व समझने लग गये। मीर जाफरने फिरंगियोंकी इस मन-मानी काररवाईमें कोई विघ्न-बाधा उपस्थित नहीं की। ये लोग स्वतन्त्रतापूर्वक निःशुल्क व्यापारका अनुचित लाभ उठाने लगे। संवत् १८१७ (१७६० ई०) तक मीर जाफर ही बंगालके नवाब रहे। अँगरेजोंके व्यापारमें इनके द्वारा यद्यपि कोई विघ्न-बाधा उपस्थित नहीं हुई तो भी ये लोग मीर जाफरसे रुष्ट थे। सन्धिके अनुसार मीर जाफरसे जो कुछ इन्हें पाना था अभी तक ये लोग वसूल न कर पाये थे। मीर जाफरमें यह सामर्थ्य नहीं थी कि तमाम ऋणसे मुक्त हो सकें। इसके अतिरिक्त इनके समयमें तमाम राज्यमें अराजकता फैली हुई थी। मीर जाफर उसे दबानेमें सर्वथा असमर्थ थे। अँगरेजोंको इस समय

एक ऐसे व्यक्तिकी जरूरत थी जो उनका तमाम ऋण चुका कर देशमें शान्ति स्थापित करे और इनकी इच्छाका दास भी बनकर रहे। इन सब बातोंको देखते हुए ही इन लोगोंने मीर जाफरको पदच्युत कर मीर कासिमको नवाब बनाया।

मीर कासिम फिरंगियोंकी सहायतासे नवाब हो गये, इसमें सन्देह नहीं, परन्तु इन्हें उन लोगोंकी अधीनतामें रहना—उनके हाथोंका खिलौना बनना—पसन्द नहीं था। इनकी प्रकृति अपने श्वशुरसे एकदम भिन्न थी। नवाब होते ही इन्होंने निश्चय कर लिया कि मैं अपने घरका स्वामी स्वयं होकर रहूँगा। इन्हें अपने प्रबन्धमें अँगरेजोंका हस्तक्षेप पसन्द नहीं था। यह बिलकुल अपनी इच्छाके अनुसार राज्य-सञ्चालन करना चाहते थे। नवाब मीर कासिमने विचारा कि अँगरेजोंके हस्तक्षेपका प्रधान कारण सन्धि सम्बन्धी रुपयेका न चुकाना है। यदि सन्धिकी शर्तें पूरी हो जायँगी तो उन लोगोंको राज्यप्रबन्धमें हस्त-क्षेप करनेका कोई बहाना न रह जायगा। अतएव गद्दी-पर बैठते ही इनका ध्यान पहले इसी ओर आकर्षित हुआ। अवस्था शोचनीय थी। खजानेमें केवल ५० हजार रुपये थे, हिसाब-किताब सब गड़बड़ीमें पड़ा हुआ था। अँगरे-जोंको रुपया तो देना था ही, इधर सेनाका वेतन भी कई माससे नहीं दिया गया था। इस अवसरपर नवाबने अपूर्व उत्साहका परिचय दिया। इन्होंने तमाम अफसरों-को बुलवाया और उन्हें ठीक ठीक हिसाब बतलानेके लिए मजबूर किया। जिनके जिम्मे जो हिसाब था उन्होंने उस-का बहुतसा रुपया हड़प डाला था। अन्तःपुरकी दासि-योंके जिम्मे बहुतसा सोना, जवाहरात आदि निकलते थे।

जाँच करवानेपर सब बातोंका भेद खुला। जिन लोगोंने जो कुछ हज़म कर लिया था उन्हें उसे लौटाना पड़ा। कुछ ही दिनोंमें पर्याप्त धन इकट्ठा हो गया। इधर नवाबने अपने निजी खर्च भी बहुत कुछ घटा दिये। भेड़, बुलबुल, हिरन आदि केवल नुमाइशके लिए रखे जाते थे और इन-पर बहुतसा रुपया व्यर्थ ही खर्च किया जाता था। नवाब-ने इन सबको बेच डाला। इस ढंगसे भी काफी धनकी प्राप्ति हुई। नवाबने सन्धिका रुपया अँगरेजोंको दे दिया। सेनाकी जो तनख्वाह बाकी थी वह भी चुकता कर दी।

नवाब मीर कासिमकी राज्यव्यवस्था तथा उत्कर्ष और अधःपतनके कारणोंपर विचार करनेसे पहले यह मालूम करना आवश्यक है कि उन्हें राज्यसंचालनमें किन किन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा और उक्त कठिनाइयोंके निवारणार्थ उन्होंने क्या क्या यत्न किये। इन बातोंके विचार करनेके साथ यदि हम मीर कासिमकी राज्यव्यवस्थाका अध्ययन करें तो हमें उनके बड़प्पनका ठीक ठीक पता लगेगा और हम उनका वास्तविक महत्त्व समझ सकेंगे। मसनदपर बैठते ही एक खास दिक्कत, जिसका सामना नवाबको करना पड़ा, ऋण-परिशोधके सम्बन्धकी थी। हम ऊपर बतला चुके हैं कि नवाबने किस अपूर्व उत्साह और कार्यक्षमताके साथ उक्त कठिनाईको दूर किया। अब नवाब-के मार्गमें दो प्रधान अड़चनें थीं—अराजकता तथा अँग-रेजोंकी व्यापार सम्बन्धी मनमानी कारखाइयाँ। हमें अब इन कठिनाइयोंका संक्षिप्त वर्णन करना है और साथ ही साथ यह बतलाना है कि नवाबने उन्हें दूर करनेके लिए कौन कौनसे यत्न किये।

मीर जाफर एक अयोग्य शासक थे, यह बात पहले ही बता दी गयी है। पलासी-युद्धसे अँगरेजोंकी धाक बंगालमें जम तो अवश्य गयी, परन्तु क्रान्तिके जो दुष्परिणाम हुआ करते हैं वे यहाँ भी घटित हुए। अराजकताका सूत्रपात हुआ। जिसे जहाँ जो मिला धर दबाया। शक्तिशाली व्यक्तियोंका बोलबाला था। हर जगह जमीन्दार सर उठाने लगे। बिहार प्रान्तके जमीन्दार खुल्लमखुल्ला बाग़ी बन बैठे। इधर शाह आलमने धावा बोल दिया। वह बिहारमें आकर गड़बड़ मचा रहे थे। बिहार प्रान्तके नायब रामनारायण भी एक तरहसे स्वतंत्र हो बैठे थे। कई सालसे उन्होंने हिसाब चुकता नहीं किया था और न मुर्शिदाबादके खजानेमें मालगुजारीका रुपया ही भेजा था। बिहारसे नवाबका अधिकार मानों उठ ही गया था। बंगालमें वीरभूमके राजा बड़े शक्तिशाली हो गये थे। मीर कासिम जब नवाब हुए तो उनके सामने भी यह भयंकर स्थिति उपस्थित थी। उन्हें इस बड़ी उलझनको सुलझाना था। उनके सामने यह प्रश्न था कि जमीन्दारोंकी अन्यायपूर्ण शक्ति किस भांति चूर्ण की जाय। शाह आलमका सामना करना हँसी खेलका काम नहीं था। बिहार प्रान्तके कई प्रभावशाली व्यक्ति सम्राट्का साथ दे रहे थे। नवाबके सामने यह भी एक टेढ़ा प्रश्न था कि सम्राट्का बढ़ता हुआ वेग किस तरह रोका जाय। रामनारायण जैसे उद्धत अफसरोंका राज्य-कार्य्यमें रहना कम जोखिमकी बात नहीं थी। मीर कासिमको इन जैसे व्यक्तियोंको भी दबाना था। नवाबने जिस खूबीके साथ इन कठिनाइयोंका सामना किया वह वास्तवमें प्रशंसनीय है। इस व्यक्तिके अपूर्व

उत्साहने कई अँगरेज इतिहासकारोंकी आँखोंको भी चकाचौंध कर दिया। मरे साहबने साफ साफ लिखा है कि "मीर कासिमकी कार्य्यक्षमता इस बातकी द्योतक है कि यदि वह स्वतन्त्रतापूर्वक राज्यसञ्चालन कर पाते तो वह बड़े अच्छे शासक हो सकते।" अस्तु, पहले उन्होंने वीरभूमके राजाकी खबर ली। वीरभूमके राजा परास्त किये गये, उनकी शक्ति पूर्णतः नष्ट कर दी गयी। इधर बिहारमें शाह आलमको हार खानी पड़ी। नवाबके साथ उन्होंने सन्धि कर ली। यह तै पाया कि नवाब शाही खज़ानेमें प्रति वर्ष चौबीस लाख रुपया दिया करेंगे।

इधरसे छुट्टी पाकर मीर कासिमने रामनारायणकी भी खबर ली। रामनारायण एक योग्य व्यक्ति, अनुभवी शासक तथा दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे। अँगरेज़ लोग इन्हें अपनी तरफ मिलाये रखना चाहते थे। यही कारण है कि मीर जाफरने भी जब इनके पदच्युत किये जानेके सम्बन्धमें क्लाइवसे प्रस्ताव किया था तो उन्होंने इसका विरोध किया था। रामनारायण अपने पदपर स्थित रहे। अँगरेजोंका सहारा पाकर तथा मीर जाफरकी निर्बलतासे लाभ उठाकर यह धीरे धीरे स्वच्छन्द होने लगे और एक प्रकारसे स्वतन्त्र ही हो बैठे। नवाब मीर कासिम इस प्रकारकी उच्छृङ्खलताको सहन करनेके लिए तैयार नहीं थे। इन्होंने तत्काल निश्चय कर लिया कि रामनारायणको सीधा करना चाहिये। आरम्भमें तो अँगरेज़ोंने रामनारायणका ही साथ दिया। रामनारायणने भी पटनाके तत्कालीन अँगरेज शासकको अपनी ओर मिलाकर नवाबको हर तरहसे तंग करना शुरू किया। मीर कासिमने कई बार कलकत्ता गवर्नरके पास

इनकी शिकायत लिख भेजी। अन्तमें उन्हें आज्ञा दे दी गयी कि वह रामनारायणके साथ अपनी इच्छाके अनुसार न्यायोचित व्यवहार करें। रामनारायण हिसाब समझानेके लिए बुलाये गये। परन्तु इनका प्रबन्ध तो त्रुटियोंसे परिपूर्ण था। धूर्तता, चालबाज़ी और बेईमानी भरी पड़ी थी। हिसाब समझाते तो क्या समझाते ? इन्होंने अपनेको नवाबकी दयापर ही समर्पित करना उचित समझा। यह गिरफ़ार कर लिये गये। कुछ दिनोंतक तो अज़ीमाबादमें ही रखे गये, फिर मुर्शिदाबाद भेज दिये गये।

रामनारायणकी खबर लेनेके पश्चात् नवाबने बिहारके उद्धत जमीन्दारोंको नीचा दिखलानेका निश्चय किया। पश्चिमी बिहारके जमीन्दार प्रजापर मनमाना अत्याचार कर रहे थे। वे छोटे छोटे क़िले बना निर्बलोंको कुचल कर अपनी शक्तिका प्रसार करनेमें लगे थे। मीर कासिम स्वयं इनके विरुद्ध चल खड़े हुए। जमीन्दार लोग नवाबके विरुद्ध खड़े न रह सके और गङ्गा पारकर गाज़ीपुरकी ओर चले गये। सरकारी अफसर नियुक्त किये गये, इनके किले गिरवा डाले गये और इनकी शक्ति पूर्णत चूर्ण कर दी गयी। बिहार प्रान्तके अन्य जमीन्दार कमकर खाँ, बुनियादसिंह और फतहसिंह आदिको भी मीर कासिमने नीचा दिखाया। राज्यसे अराजकताका मूलोच्छेद और शान्तिकी स्थापना हुई।

ऋण चुकता हो गया। सन्धिकी शर्तें पूरी हो गयीं। भभकती हुई विद्रोहकी आग भी शान्त कर दी गयी। नवाब मीर कासिमके शासनकी वास्तविक नींव पड़ गयी। अब इन्हें अपनी शक्तिको दृढ़ और स्थायी बनाना था।

शासनकी दुर्बलतासे अँगरेज़ लोग जो अनुचित लाभ उठा रहे थे उससे मीर कासिम बेखबर नहीं थे, परन्तु उनसे अभी बोलना अपने पैरमें अपने ही हाथों कुल्हाड़ी मारना था। फिरंगियोंके हाथ मीर जाफरकी जो दुर्दशा हुई उसे इन्होंने अपनी आँखों देखा था। यह जानते थे कि अगर अभी हम अँगरेज़ोंके विरुद्ध अधिक हाथ-पैर हिलायँगे तो तत्काल कुचल डाले जायँगे। यही कारण है कि आरम्भमें इनका ध्यान अपनी शक्ति संग्रह करनेकी ओर आकर्षित हुआ। एक बात इन्हें बहुत खटकती थी—वह थी मुर्शिदाबादमें राजधानीका होना। इन्होंने विचारा कि मुर्शिदाबाद अँगरेज़ी राजधानी कलकत्तेके बहुत निकट है, यहाँ अँगरेज़ आसानीके साथ बराबर राज्यसञ्चालनमें हस्त-क्षेप करते रहेंगे। अतः कहीं अन्यत्र, कलकत्तेसे दूर, राज-धानीका होना इन्होंने आवश्यक समझा। इसी कारणसे मुर्शिदाबादसे हटाकर मुँगेरमें यह अपनी राजधानी ले गये, और यहां आकर राज्यव्यवस्था तथा शासन-सुधारके कार्य्यमें उत्साहके साथ लग गये। अन्य बातोंके अतिरिक्त इनके शासनमें दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। एक वह इन्होंने गुप्तचर-विभागका संघटन किया। सिंहासनासीन होनेके बादसे ही यह गुप्तचर-विभागकी आवश्यकता अनुभव कर रहे थे। अँगरेजोंपर इनका विश्वास नहीं था। सिराजु-द्दौलाके विरुद्ध जो षड्यन्त्र रचा गया था वह इन्होंने अपनी आँखों देखा था। मीर जाफरका अधःपतन भी इनके सामने ही घटित हुआ था। यह डरते थे कि अँग-रेज़ लोग मेरे आदमियोंको मिलाकर कहीं मेरे विरुद्ध भी गुप्त षड्यन्त्र न रच बैठें। यही कारण है कि इन्होंने

गुप्तचर-विभागका समुचित प्रबन्ध किया। शासनकालमें नवाबको उक्त विभागसे बड़ी सहायता मिली। इनके विरुद्ध समय समयपर स्वयं इनके अफसरोंने गुप्त कारवाई करनी चाही, लेकिन गुप्तचर-विभागका ऐसा सुप्रबन्ध था कि तत्काल तमाम बातें नवाबके कानों पहुँच जाती थीं। अंकुर उगनेके पहले ही बीजका नाश कर दिया जाता था। कई अफसरोंको विश्वासघातके अपराधमें नवाबने कड़ी कड़ी सजाएँ दी थीं। इनका आतङ्क सबके हृदयपर इतना अधिक बैठ गया था कि बादको इस प्रकारकी बातें बहुत कम घटित होती थीं।

नवाब मीर कासिमका दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य सैनिक संटघन था। वीरभूमके राजासे जब इन्हें लड़ना पड़ा था उस समय इन्होंने अँगरेज सिपाहियोंकी लड़ाईका ढङ्ग देखा था। केवल थोड़ेसे सिपाहियोंने बड़ी सेनाको भगा दिया था। तभीसे इन्होंने सोच रखा था कि अँगरेजी ढङ्गपर अपनी सेनाका सञ्चालन करेंगे। यह योग्य और अनुभवी सेनापतियोंको ढूँढ़नेमें लग गये। इन्होंने ऐसे आदमियों-का पता लगाना आरम्भ किया जिनसे अँगरेजोंकी शत्रुता हो। यह जानते थे कि मौका पड़नेपर ऐसे ही व्यक्ति अँगरेजोंके विरुद्ध हमारे काम आयेंगे। गुरगीन खाँ इनके प्रधान सेनाध्यक्षके पदपर नियुक्त थे। इनके अतिरिक्त मु० तकीखाँ, समरू और मारकर इनके मुख्य सेनापतियोंमें थे। इन्हीं व्यक्तियोंकी बदौलत मीर कासिमकी पैदल और घुड़-सवार सेनाएँ अँगरेजी ढङ्गपर संघटित हुई। नवाबने बन्दूक, गोले, बारूद, पिस्तौल और युद्धकी अन्य आवश्यक सामग्री जमा करना और स्वयं भी तैयार कराना आरम्भ

कर दिया था। इनके यहाँ जो गोले तैयार होते थे वे बड़े ही अच्छे होते थे। एक अँगरेज इतिहासकारने लिखा है कि कम्पनीके जो गोले इंग्लैंडसे आते थे वे भी मुँगेरके गोलोंकी बराबरी करनेमें असमर्थ थे। इस प्रकार नवाब मीर कासिम सैनिक संघटनकी ओर अपूर्व उत्साहके साथ लग गये और बहुत अंशोंमें इन्होंने अपनी दशा सुधार भी ली।

अब हमें यह विचार करना है कि फिरंगियोंके साथ नवाब मीर कासिमके जो झगड़े हुए थे उनके कारण क्या हैं। विचारपूर्वक देखा जाय तो मालूम होगा कि इन झगड़ोंका मूलकारण अँगरेजोंका घमण्ड था। वे अपनेको नवाबकी प्रजा तो समझते नहीं थे वरन् इसके प्रतिकूल नवाबको ही वे अपनी प्रजा समझते थे। मीर कासिम अँगरेजोंकी सहायता पाकर ही नवाब हुए थे अतएव वे लोग स्वभावतः उन्हें अपना आश्रित समझते थे। मामूली अँगरेजोंको भी यह घमण्ड था कि हम ही देशके शासक हैं, हम जो चाहें कर सकते हैं और नवाब हमारे काममें कोई रुकावट नहीं डाल सकते। यही कारण है कि नवाबका आदर करना तो दूर रहा, वे उन्हें अपमानित तक करनेके लिए तत्पर रहते थे। इसी एक विचारसे उत्साहित होकर—कि हम शासक हैं और नवाब शासित हैं—इन लोगोंने मीर कासिमके मार्गमें कई अड़चनें उपस्थित कीं। उनमें व्यापार सम्बन्धी अड़चनें ही मुख्य थीं। जैसा कि पहले ही बतला दिया गया है पलासी-युद्धके पश्चात् मीर जाफरकी निर्बलता और अपने प्रभुत्वसे लाभ उठाकर अँगरेजोंने फरुखसियरसे प्राप्त फरमानका अनुचित लाभ उठाना

आरम्भ कर दिया था। वे लोग अपनी बढ़ती हुई शक्ति-का दुरुपयोग करने लगे। उन लोगोंके गुमाश्ते हर जगह नियत थे। यह गुमाश्ते प्रजापर मनमाना अत्याचार किया करते थे। हर ग्राम और परगनेमें ये लोग फैले हुए थे। ये नमक, पान, घी, चावल, बाँस, मछली, चीनी, तम्बाकू, अफीम, इत्यादि बहुतसी चीजें बलपूर्वक चौथाई मूल्यमें खरीदकर चौगुने मूल्यमें बेचा करते थे। प्रजा इन गुमा-श्तोंसे व्यवहार करना नहीं चाहती थी। परिणाम यह होता था कि ये लोग कैद कर लिये जाते थे और इनकी पीठपर कोड़ेका प्रहार होता था। ये गुमाश्ते हर ग्रामके जुलाहोंको बुलवाते और उनसे ज़बरदस्ती शर्तनामा लिखवा कर मनमानी कीमतपर कपड़ा वसूल करते थे। इन जुलाहोंका नाम एक रजिस्टरमें दर्ज रहता था; ये दूसरी जगह कपड़ा नहीं बेच सकते थे। बिचारे जुलाहोंका सत्यानाश हो गया। वे शहर छोड़ छोड़ कर भागने लगे। जिन स्थानोंने कलाकौशलमें बड़ी उन्नति की थी वे निर्जन हो गये। पहले न्यायके लिए कचहरियाँ थीं परन्तु अब यही गुमाश्ते न्यायाधीश बना दिये गये थे। किश्तियोंपर अँग-रेज़ी झण्डा लगाकर ये हरजगह बिना शुल्क दिये सामान लाया जाया करते थे। नवाबको प्रतिवर्ष २५ लाख रुपये-का घाटा होने लगा। अँगरेजोंकी स्वार्थपरताका बड़ा बुरा परिणाम हुआ। कलाकौशलका नाश हो गया। देशी व्यापारी तबाह हो गये। एक तरफ तो अँगरेज व्यापारी कुछ भी शुल्क न देते थे, दूसरी ओर देशी व्यापारियोंसे शुल्क लिया जाता था। भला यह लोग ऐसी अवस्थामें अँगरेजोंके साथ कैसे टक्कर ले सकते थे? इन्हें व्यापार

बन्द करना पड़ा। इन मनमाने अत्याचारोंका प्रभाव खेती-पर भी पड़ा। ये गुमाश्ते खेतीसे उत्पन्न चीजोंको प्राप्त करनेके लिए खेती करनेवालोंपर भी अत्याचार करने लगे। दाम काफी नहीं मिलता, यह देखकर लोगोंने खेती करना बन्द कर दिया। जमीनसे मालगुज़ारी तकका मिलना बन्द हो गया। कई अँगरेज़ लेखकोंने अँगरेज़ोंके इस व्यवहार-की निन्दा की है और प्रजाकी असहाय अवस्थापर आँसू गिराये हैं। मैलिसन साहब लिखते हैं, "सवा सौ वर्ष पहले अँगरेजोंने इस देशमें जिस निर्लज्जता और स्वार्थपरा-यणताका परिचय दिया उसे देखकर हर अँगरेज़का सिर लज्जासे नीचा हो जायगा।" कलकत्ता-कौंसिलके मेम्बर वारेन हेस्टिंग्ज़ने इन अत्याचारोंके सम्बन्धमें जो विवरण दिया है वह बड़ा ही करुणाजनक है। वह लिखते हैं—"हमलोग कुछ सिपाहियोंके साथ सफ़र कर रहे थे। जहाँ हमलोग पहुँच जाते वहाँके रहनेवाले हमलोगोंके अत्याचार-के डरसे पहले ही घरबार छोड़कर भाग जाते। ग्राम, सराय, धर्मशालाएँ सब निर्जन हो जातीं। हमसे पहले कुछ सिपाही गये हुए थे, उन्होंने जो अत्याचार किये थे उनसे साफ मालूम होता था कि लोगोंका हमसे डरना निर्मूल न था। इस प्रकारके कृत्य नवाबके हक़में, देशके लिए और अँगरेज जातिकी प्रतिष्ठाके ख्यालसे भी उचित नहीं हैं।"

मुताखरीनके लेखक सैयद गुलामहुसैनने बहुत कुछ अंगरेजोंका पक्ष लिया है। परन्तु व्यापार-सम्बन्धी अनेक अत्याचारोंकी तरफसे वह भी अपनी आँखें बन्द न कर सका। वह लिखता है "बंगालकी प्रजाकी भलाईकी ओरसे

अँगरेज लोग इतने उदासीन हैं कि लोग रोते हैं। प्रजा निर्धनतासे पीड़ित हो रही है। हे परमात्मा, आओ और अपने सेवकोंकी रक्षा करो। इन्हें अन्यायियोंके पञ्जेसे छुटकारा दिलाओ।" रमेशचन्द्र दत्त लिखते हैं कि बंगाल-निवासियोंपर इसके पूर्व भी कष्ट पड़े थे परन्तु ऐसे विकट संकटका सामना उन्हें कभी भी नहीं करना पड़ा था। जहाँ कहीं नवाबके अफसर इनके मार्गमें रुकावट डालते, इनके अत्याचारोंको रोकनेकी चेष्टा करते, वहाँ वे कैद कर लिये जाते थे।

मीर जाफरके समय बंगालमें अँगरेजों द्वारा जो अत्याचार हुए उनका यही संक्षिप्त वर्णन है। जब मीर कासिमको नवाबी मिली तब भी यही स्थिति मौजूद थी। अभी तक वही अत्याचार जारी थे, और प्रजा पीड़ित थी। जबतक देशमें अराजकताका प्रकोप रहा, नवाब मीर कासिम कुछ न कर सके। जब शाह आलम दिल्ली चले गये, रामनारायणका मामला तै हो गया, जमीन्दारोंकी शक्ति चूर्ण कर दी गयी, राज्यमें शान्ति स्थापित हो चुकी और सैनिक-संघटनकी नीव भी नये ढङ्गपर पड़ गयी तो नवाब मीर कासिमका ध्यान इस ओर भी आकर्षित हुआ। इन्होंने निश्चय कर लिया कि हम अपने कर्तव्योंका पालन करेंगे, फिरंगियोंके अत्याचारोंको बन्द कर देशमें शांति स्थापित करेंगे और प्रजाके दुःखोंका निवारण करेंगे। यह इस बातको सहन करनेके लिए तैयार नहीं थे कि यहाँकी प्रजा तो कष्टोंसे पीड़ित रहे और सात समुद्र पारसे आये हुए व्यापारी उनका ही धन चूसकर मजा उड़ायें। बूढ़े मीर जाफरकी प्रकृति ही ऐसी थी कि वह अँगरेजोंके इशारे-

पर नाचा करते परन्तु मीर कासिम तो पूरे अक्खड़ थे। यह कभी अपने आत्मगौरवको खो नहीं सकते थे। इन्होंने तै कर लिया था कि या तो अँगरेजोंके निन्दास्पद व्यवहारोंका मूलोच्छेद करेंगे या संसारसे अपनी सत्ता मिटा देंगे। नवाबने एक पत्र कलकत्ताके गवर्नर वानसीटार्टके नाम लिखा और फिरंगियों द्वारा नित्य किये जानेवाले अत्याचारोंका वर्णन कर आशा प्रगट की कि उस ओर ध्यान दिया जायगा। नवाबका उक्त पत्र कलकत्ता कौंसिलके सामने पेश किया गया और यह तै पाया कि मि० हेस्टिंग्ज़ नवाबसे जाकर मिलें और व्यापार सम्बन्धी आवश्यक नियमोंका निबटारा करें। तदनुसार मिस्टर वारेन हेस्टिंग्ज़ और मीर कासिम, दोनोंकी भेंट हुई। व्यापार सम्बन्धी कुछ आवश्यक नियम निर्धारित हुए। गवर्नर वानसीटार्टने साफ साफ कह दिया कि यदि अँगरेज व्यापारी और उनके गुमाश्ते उक्त आदेशानुसार व्यवहार न करें तो नवाबको यह अधिकार है कि उन्हें हर उपायसे रोकें। यदि वे लोग शान्तिपूर्वक न मानें तो बलप्रयोगकी भी इन्हें हिदायत कर दी गयी। वानसीटार्ट लिखते हैं—"और राज्यकी भाँति नवाबको भी यह अधिकार है कि उनकी प्रजापर यदि कोई किसी तरहका अत्याचार करे तो वह उसे रोकें। यदि शान्तिसे काम न चले तो बलप्रयोग करनेका भी अधिकार उन्हें प्राप्त है। किसी भी निष्पक्ष व्यक्तिको इस उचित बातमें शिकायत करनेकी जगह नहीं है।" हेस्टिंग्जने उपाय तो बतला दिया और कलकत्ता-कौंसिलके प्रेसिडेण्टने भी उसके पक्षमें ही अपनी राय दी, परन्तु कलकत्ता-कौंसिलके स्वार्थान्ध मेम्बरोंको

भला यह बात कैसे स्वीकार हो सकती थी ? प्रजा दानों बिना तरसा करे, इसकी उन्हें क्या परवाह ? उन्हें तो एक मात्र चिन्ता यही थी कि हमारे व्यापारकी वृद्धि किस प्रकार हो । उन्हें केवल मौज उड़ानेसे मतलब था । उन्होंने हेस्टिंग्जके निर्णयका विरोध किया । व्यापार सम्बन्धी कुरीतियाँ ज्योंकी त्यों जारी रहीं। तब और अबमें अन्तर कुछ भी न दिखलाई पड़ा ।

नवाब मीर कासिम गुस्सा पीकर रह जाते थे। इनकी तरफसे अभी कुछ भी ज्यादती नहीं हुई थी । यह शान्ति-के साथ काम निकालना चाहते थे । इन्होंने देखा वारेन हेस्टिंग्ज नियम निर्धारित कर भी गये परन्तु परिणाम नदारद । यदि यह चाहते तो हर उपायसे अँगरेज़ व्या-पारियोंको सीधा कर सकते थे, कोई इन्हें दोषी नहीं बता सकता था । परन्तु इन्होंने उचित यही समझा कि अपनी तरफसे शान्तिकी कोई चेष्टा उठा न रखनी चाहिये । इन्होंने फिर एक पत्र गवर्नर वानसीटार्टके पास लिखा और यह आशा प्रगट की कि फिरंगियोंकी मनमानी कार-रवाइयोंको रोकनेका उचित प्रबन्ध किया जायगा । पत्रके अन्तमें नवाबने लिखा था "ईश्वरकी कृपासे मैंने सन्धिके किसी भी नियमको भङ्ग नहीं किया । तब क्या कारण है कि अँगरेज़ लोग हमारी क्षति करनेपर तुले हैं ? कृपया बिना विलम्ब इन बातोंपर विचार कीजिये क्योंकि इन दोषोंके कारण मेरे शासनकी ओर घृणाभावकी वृद्धि होती जाती है ।" कौंसिलके सामने नवाबका पत्र पेश किया गया और यह निश्चय हुआ कि वानसीटार्ट और हेस्टिंग्ज व्यापार सम्बन्धी झगड़ोंके मूल कारणोंको ढूँढ़कर उनका

निबटारा करनेका उचित उपाय करें। तदनुसार यह लोग मुर्शिदाबाद, बर्दवान होते हुए नवाबसे मिलनेके लिए मुँगेर पहुँचे। इन लोगोंने व्यापार सम्बन्धी कुरीतियोंको रोकनेके लिए जो नियम नवाबके सामने पेश किये उनका आशय यही था कि—

"विदेशसे आनेवाली या विदेश जानेवाली वस्तुओं पर कम्पनीका दस्तक रहेगा और वे विना शुल्क आ जा सकेंगी। यहाँकी वस्तुओंपर देशमें व्यापारके निमित्त स्थानीय सरकारी अफसरके दस्तककी आवश्यकता पड़ेगी। दस्तक प्राप्त करते समय और माल भेजनेके पहले ६ फीसदी शुल्क देना होगा। देशी व्यापारियोंको इससे कुछ अधिक शुल्क देना पड़ता था। देशके भीतर देशी वस्तुओंमें जो व्यापार अँगरेज करेंगे उसके लिए वे शुल्कसे मुक्त न किये जायँगे। यदि किसी मनुष्यके पास दस्तक न हो तो उसका माल रोक लिया जाय और इसकी सूचना निकटस्थ अँगरेज़ी फैकृरी और सरकारी अफसरको दी जाय। गुमाश्ते सामानकी खरीद और बिक्रीमें बलप्रयोग न कर सकेंगे। यदि गुमाश्तेके मुनासिब व्यापारमें किसी तरहकी रुकावट डाली जाती है तो वह इसकी शिकायत स्थानीय फौजदारसे करेगा। फौजदार मामलेको तै करेगा। यदि फौजदारका निर्णय गुमाश्तेको अनुचित जान पड़े तो वह निकटस्थ अँगरेज़ अफसरके पास लिखेगा। वह अफसर उस शिकायतको प्रेसिडेएटके पास भेज देगा। यदि प्रेसिडेएटको भी फौजदारका निर्णय अनुचित जान पड़े तो वह नवाबको लिखेंगे कि उस मामलेकी उचित जाँच की जाय।"

उपर्युक्त नियमोंको वानसीटार्टने नवाबके सामने पेश किया। पहले तो मीर कासिमको ये नियम स्वीकार करनेमें हिचकिचाहट हुई। उनका ख्याल था कि वर्तमान कुरीतियोंको रोकनेके लिए उपर्युक्त नियम पर्याप्त नहीं हैं। किन्तु प्रेसिडेण्टके यह विश्वास दिलानेपर कि भविष्यमें अब किसी प्रकारकी गड़बड़ीकी आशङ्का नहीं है, नवाबने अन्तमें उन्हें स्वीकार किया। यथासमय इन नियमोंकी सूचना कलकत्ता-कौंसिलको मिली। बोर्डके मेम्बर आगबबूला हो गये। अपने स्वार्थपर इस तरहका कुठाराघात वे सहन न कर सके। अभी तक वे लोग निःशुल्क व्यापार कर रहे थे, अब शुल्कका देना उन्हें अखरता था। निःशुल्क व्यापारके कारण व्यापारका आधिपत्य उनको मिल गया था। देशी व्यापारियोंको उनके साथ टक्कर लेना कठिन था क्योंकि उन लोगोंको पूर्ववत् शुल्क देना पड़ता था। अब फिर वही शुल्कको आफत हमारे मत्थे सवार होगी, यह बात अँगरेज़ोंके लिए असहनीय थी। अँगरेज़ी गुमाश्तोंके सम्बन्धमें जो नियम बने थे उनसे उन लोगोंकी स्वच्छन्दता रुक सी जाती थी।

४ माघ संवत् १८१६ (१७ जनवरी सन् १७६३) को कलकत्ता-कौंसिलका अधिवेशन हुआ। यह स्वीकृत हुआ कि "प्रेसिडेण्टने नवाबके साथ मिलकर जो नियम निर्धारित किये हैं वे हमलोगोंके लिए बहैसियत अँगरेज होनेके लज्जाजनक हैं। इनका अनिवार्य्य परिणाम यही होगा कि हमलोगोंका व्यापार नष्ट हो जायगा।" इस प्रकार वानसीटार्ट और हेस्टिंग्जका तमाम परिश्रम व्यर्थ गया। बोर्डने इनके निर्णयको अस्वीकार कर सब मेहनतपर पानी फेर दिया।

निर्लज्जता और स्वार्थपरायणताकी यह पराकाष्ठा थी। जिन नियमोंके सम्बन्धमें मैलिसन साहब लिखते हैं कि ये नियम अँगरेज़ोंके लिए अनुचित रूपसे लाभदायक थे वे ही नियम अँगरेज़ोंको अन्याययुक्त प्रतीत हुए। उन्होंने निश्चय किया कि शाही फ़रमान द्वारा हमें हर प्रकारका निःशुल्क व्यापार करनेका अधिकार है। केवल उदारताके कारण उन्होंने नमक और तम्बाकूपर ढाई फी सैकड़ा शुल्क देना स्वीकार किया। समयका उलट-फेर इसीको कहते हैं। जो अँगरेज व्यापारी कभी माथेपर खिलौने लेकर घूम घूम कर बेचा करते और सड़कके लड़के जिनकी हँसी उड़ाते थे वे आज इतने प्रबल हो गये कि देशके शासकपर ही यह अनुचित रोब गाँठने लगे। उन्होंने साफ साफ कह दिया कि हम शुल्क न देंगे। गुमाश्तोंकी मनमानी ज्यादतियोंके रोकनेके निमित्त जो नियम निर्धारित किये गये थे उन्हें उन लोगोंने एकदम रद्द कर दिया। वे पूर्ववत् अत्याचार करनेके लिए स्वतन्त्र छोड़ दिये गये।

कुछ ही दिनोंमें उक्त निर्णयकी सूचना नवाब मीर कासिमको भी मिली। उन्हें इस बातका पता लग गया कि अँगरेज अपनी स्वार्थ-नीतिसे रत्ती भर भी पीछे हटनेको तैयार नहीं हैं। नवाबने देख लिया कि यदि हमें अपनी प्रजाका हित करना है, यदि हम चाहते हैं कि देशी व्यापारी अँगरेजोंकी स्वार्थपरताके कारण अधिक कष्ट न उठावें तो हमें उन लोगोंको भी वही अधिकार देने होंगे जो अँगरेज वणिकोंको बलपूर्वक प्राप्त हैं। उन्होंने इस बातकी घोषणा कर दी कि भविष्यमें किसीसे भी शुल्क न लिया जायगा। नवाबकी इस समयकी बुद्धिमत्ता प्रशंसनीय थी।

उन्होंने फिरंगियोंको बतला दिया कि न्यायकी आड़में तुम घोर अन्याय और अविचार नहीं कर सकते। फरमानका झूठा आश्रय लेकर तुम हमारी प्रजाका गला नहीं घोट सकते। अब व्यापारमें तुम्हारे और देशी व्यापारियोंके बीच उचित और न्याययुक्त मुठभेड़ हो सकेगी और वे तुम्हारे साथ एक पलड़ेपर खड़े रह सकेंगे। वास्तवमें देखा जाय तो निःशुल्क व्यापार सम्बन्धी नवाबके निर्णयसे उनकी दूरदर्शिता और न्यायप्रियता पूरे तौरसे झलकती है। उन्होंने यह बात तो मान ली कि हमारी आमदनी भले ही कम हो जाय परन्तु उन्हें यह अनुचित प्रतीत हुआ कि देशी व्यापारी भूखों मरें और अँगरेज व्यापारी उनकी रोज़ी मार कर मजे उड़ायें। नवाबने निजी स्वार्थको प्रजाहितके अधीन ही रखना अपना कर्तव्य समझा। कुछ इतिहासकारोंने इस कामके लिए मुक्तकंठसे मीर कासिमकी प्रशंसा की है। रमेशचन्द्रदत्त लिखते हैं कि 'ऐसी उदारताका उदाहरण भारतीय इतिहासमें नहीं मिल सकता'। परन्तु मीर कासिमकी न्यायप्रियता फिरङ्गियोंको काँटेकी तरह चुभ गयी। अभी तक फरमानकी आड़ लेकर वे अपनी स्वार्थ-लीलाको छिपाये बैठे थे परन्तु अब तो अपने अत्याचारों-पर परदा डालनेके लिए उन्हें कोई युक्ति ही न रही। उन लोगोंने अब खुल्लमखुल्ला बलात्कारपर कमर कस ली। कौंसिलका अधिवेशन कर उन्होंने निश्चय किया कि व्यापारको निःशुल्क रखनेका नवाबको कोई अधिकार ही नहीं है।

मैलिसन साहबने अँगरेज वणिकोंकी तुलना डाकुओं और लुटेरोंसे की है। मिल साहब लिखते हैं कि फिरं-

गियोंने लज्जा और न्यायको जिस प्रकार तिलाञ्जलि दे डाली इसका उदाहरण इतिहासमें बहुत ही कम मिलता है। स्वयं तत्कालीन गवर्नर वानसीटार्टने लिखा है कि "नवाबको हर तरहसे यह अधिकार है कि शुल्कसे जिसे चाहें मुक्त कर दें।" लेकिन कौंसिलके सदस्योंने नवाबके इस उचित अधिकारको भी अन्याययुक्त और अनुचित ठहराया। मि० जोनस्टन और हे नवाबके पास डेपुटेशन लेकर मुँगेर भेजे गये। इन्हें यह आदेश दिया गया था कि वे नवाबसे मिलकर निःशुल्क व्यापारनीतिको रद्द करा दें। परन्तु इनकी कुछ भी सुनवाई नहीं हुई। कौंसिलने कुछ भय भी दिखलाया लेकिन नवाबने इन धमकियोंकी परवाह न की। उन्होंने एक बार अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया था और अब वह उससे हटनेके लिए तैयार नहीं थे। उन्हें मालूम होगया था कि हमारा निर्णय अँगरेजोंके स्वार्थका बाधक है अतः वे इसे सहन न कर सकेंगे और हमको उनसे जूझना पड़ेगा। परन्तु न्यायको कुरबान कर वह राज्य-सुख भोगनेके लिए उत्सुक नहीं थे। किसी कर्तव्यनिष्ठ शासकको जो करना चाहिये था वही उन्होंने किया। जो कुछ भी परिणाम हो, उसे सहन करनेके लिए वह तैयार बैठे थे।

परिणाम वही हुआ जिसकी पहलेसे ही आशङ्का थी। पटनाके अँगरेज़ी शासक मिस्टर एलिसने अँगरेज़ी सेनाको लेकर रातोरात पटना शहरपर आक्रमण कर दिया। नवाबके आदमियोंको पहलेसे मालूम नहीं था कि इस प्रकार अचानक हमला होगा। वे लोग बेखबर पड़े थे। अँगरेजोंने चहल सतूनको छोड़कर दुर्गके हर एक स्थानपर

अपना अधिकार जमाया। शहरवालोंपर मनमाने अत्याचार किये। इस तरहकी लूटपाट हुई कि कई घरोंमें तिनका तक न बचा। नवाबको जब यह सूचना मिली तो उन्होंने तुरन्त पटनाके लिए सेना भेजी। अँगरेज़ इनके मुकाबलेमें ठहर न सके। नदी पार कर सारन होते हुए सुजाउद्दौलाके राज्यमें भागनेकी इन लोगोंने तैयारी की। परन्तु मार्गमें ही नवाबके आदमियोंसे इन लोगोंकी मुठभेड़ हुई। २००० व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। औरतों और बच्चोंको तो इन लोगोंने मुक्त कर दिया। उन्हें नावोंपर रख कर कलकत्ता भेजवा दिया। परन्तु अन्य लोग मुँगेरमें कैद रक्खे गये।

युद्धका श्रीगणेश एक प्रकारसे अँगरेजोंने कर ही दिया था। कलकत्ता-कौंसिलने भी लड़ाईको घोषणा कर दी। नवाबकी ओरसे भी तैयारियाँ की गयीं। एकके बाद दो, फिर तीन, लड़ाइयाँ हुईं, किन्तु विजय-लक्ष्मी नवाबसे अप्रसन्न थी। भाग्यने अँगरेजोंका साथ दिया। इतिहासकारोंने मीर कासिमकी पराजयको लेकर उनकी योग्यताकी खूब धज्जियाँ उड़ायी हैं। कहा जाता है कि नवाबने अपनी शक्तिका अनुमान किये बिना ही अँगरेजोंसे लड़ाई छेड़ दी, इसीसे उनकी हार हुई। परन्तु इतिहास कुछ और ही बतलाता है। नवाबकी पराजयका कारण उनकी सेनाकी अयोग्यता नहीं कही जा सकती। फतवाके युद्धमें नवाबकी सेनाकी जो हार हुई थी, उसका मुख्य कारण सेनापतियोंका पारस्परिक द्वेषभाव था। फतवाके युद्धक्षेत्रमें केवल मुहम्मद तकीखाँ सेनापति अपने सिपाहियोंको लेकर लड़े थे। अन्य दो सेनाध्यक्ष जो इनकी सहायताके लिए

भेजे गये थे अपनी सेना लिये तटस्थ रूपसे अलग खड़े तमाशा देखते रहे। यदि सब लोग एक साथ मिलकर अँगरेजी सेनासे लड़े होते तो इनकी पराजय असंभव थी। सूतीके युद्धमें अँगरेज़ करीब करीब हार चुके थे। परन्तु अंतमें भाग्यने पलटा खाया। आसुद्दौलाकी कायरता तथा समरू और मारकरकी स्वार्थपरताने विचित्र उलट-फेर उत्पन्न कर दिया। इन्हीं लोगोंकी असावधानीके कारण नवाबको सूतीके युद्धमें भी हार खानी पड़ी। उदवानालामें नवाब और अँगरेजोंके बीच अन्तिम युद्ध हुआ था। यहाँ पर मीर कासिमने सेनाका संघटन जिस खूबीके साथ किया था उसे देखते हुए यह असंभव था कि इनकी पराजय होसके। कोई ऐसा मार्ग ही न था जिससे होकर यह लोग नवाबपर आक्रमण कर पाते। केवल एक छोटा सा सुरंग था, जिसका पता नवाबके एक सेनानायक नज़ीफखाँने लगाया था। यह नित्य रातको उसी मार्गसे जाकर अँगरेजोंपर धावा करता और फिर लौट जाता। अँगरेज़ तंग आगये थे। उन्हें यह भी पता नहीं था कि इस तरहका कोई सुरंग भी मौजूद है। परन्तु अन्तमें धोखा हुआ। कुछ दिनों पहले एक अँगरेज फूट कर नवाबकी सेनामें शामिल हो गया था। उसको इस सुरंग-का पता था। उसने जाकर सब हाल अँगरेजी सेनासे कह डाला। फिर क्या था, चुपकेसे अँगरेजोंने एक रात आक्रमण किया। सरकारी सेना नाचरंगमें मस्त थी, उसे इस तरहके अचानक हमलेकी आशङ्का न थी। अँगरेजोंने बाजी मार ली। केवल एक व्यक्तिके विश्वासघातके कारण अँगेरेजी सेनाकी विजय हुई और मीर कासिम पराजित हुए।

उदवानालाके युद्धके साथ साथ नवाबकी तमाम आशाएँ मिट्टीमें मिल गयीं। उनमें अब इतनी शक्ति न रही कि अँगरेजोंके विरुद्ध खड़े रह सकें। अब उन्हें सिवाय पीछे हटनेके और कोई उपाय न रह गया। मुँगेरसे वह अज़ीमाबादके लिए रवाना हुए। साथमें उन अँगरेज़ कैदियोंको भी लेते गये जो पटनासे पराजित होकर भागते हुए पकड़े गये थे। अज़ीमाबादमें लाकर उन लोगोंको नवाबने मरवा डाला। प्रायः सब इतिहासकारोंने पटना-हत्याकाण्डके लिए नवाब मीर कासिमको दोषी ठहराया है। बेवरिज जैसे निष्पक्ष इतिहास-लेखकने भी उक्त कार्य्यके लिए नवाबकी निन्दा की है। मिस्टर वानसीटार्टने बहुत मौकोंपर नवाबका साथ दिया था परन्तु यहाँपर वह भी लिखते हैं "अभीतक नवाबके साथ अँगरेजों द्वारा जो कुछ अत्याचार हुए हैं वे इस घृणित कृत्यसे धुल जाते हैं।" शोक इस बातका है कि इस कृत्यके कारणोंपर विचार किये बिना ही नवाबपर क्रूरताका दोष आरोपित किया गया है। यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो अँगरेज़ोंने जैसा किया उसका उचित दण्ड पाया। चोरोंकी भांति छिपकर रातके समय आक्रमण कर इन लोगोंने शहरपर अधिकार कर लिया। असहाय और निरपराध प्रजाको कष्ट पहुँचाया। मीर कासिमने तीन ज़िले अँगरेजोंके सिपुर्द किये थे, यह केवल इसलिये कि इनकी आमदनीसे अँगरेजी सेना रखी जाय और वह समयपर नवाबकी रक्षा करे। परन्तु इनलोगोंने विश्वासघात किया, रक्षक ही भक्षक बन बैठे। स्वयं वानसीटार्ट महाशयने पटनापर अँगरेज़ोंका जो आक्रमण हुआ था उसको विश्वासघात कहा है। बीसवीं शताब्दीमें संसार उन्नतिके

शिखरपर चढ़ा हुआ है परन्तु आज भी राज्यके विरुद्ध षड्यन्त्र या विश्वासघातके लिए मृत्यु-दण्ड तक हो जाता है। तब समय कुछ और था, संसार इतना सभ्य नहीं था। वैसे समयमें और षड्यन्त्रके लिए ही यदि नवाबने अँगरेजोंको मृत्युदण्ड दिया तो कोई बड़ा अनुचित नहीं किया। और वह षड्यन्त्र भी किसके द्वारा रचा गया था? उन लोगोंके द्वारा जिनपर नवाबकी रक्षाका भार था। आश्चर्य्य है कि इसपर भी मीर कासिमको अन्यायी और क्रूरका खिताब दिया जाता है। नवाबकी इच्छा यह कदापि नहीं थी कि अँगरेज़ोंका बिना अपराध वध करें। वह केवल अपराधियोंको दण्ड देना चाहते थे। यदि ऐसा न होता तो वह स्त्रियों और बच्चोंको क्यों छोड़ते? डाक्टर फुलर्टन अँगरेज़ोंके साथ उनके दुष्कृत्यमें सम्मिलित नहीं थे। नवाबने उन्हें मुक्त कर दिया था। भला इसका क्या मतलब? यदि उदवानालाके युद्धमें हार जानेके कारण सचमुच नवाबका दिमाग खराब हो गया था तो फिर उन्होंने अन्य अँगरेजोंको कत्ल कर एक फुलर्टनको ही क्यों छोड़ दिया? बात यह थी कि वह केवल अपने कर्तव्यका पालन करना चाहते थे और वही किया भी। यदि उसके प्रतिकूल आचरण करते तो यही कहा जाता कि उन्होंने न्यायके प्रतिकूल आचरण किया। अस्तु, पटनामें १६२ अँगरेज़ मार डाले गये।

उदवानालाकी पराजयके बाद नवाबमें इतनी शक्ति नहीं रही कि एक तरफ तो अँगरेज़ोंसे लड़ें, दूसरी तरफ देशमें शान्ति भी बनाये रखें। इनके विरुद्ध बलवे होने लगे। मुँगेर, सहसराम, पुर्निया आदि स्थान अँगरेज़ोंके

कब्जेमें आ गये। मीर कासिमने बिहारमें अधिक विलम्ब करना बेकार समझा। वह शुजाउद्दौलाके राज्यमें चले गये। शुजाउद्दौलाने धनके लालचमें आकर और यह समझ कर कि बंगालके शासक हम स्वयं हो जायँगे, मीर कासिमका साथ दिया। पुनः अँगरेजोंपर आक्रमण हुआ। कुछ दिनोंतक मीर कासिम शुजाउद्दौलाके साथ मिलकर अँगरेज़ोंके विरुद्ध लड़ते रहे। बादको इनके पास जो कुछ धन था वह सब खर्च हो गया। जो सेनापति आदि इनके साथ थे उन सबोंने इनका पक्ष छोड़ दिया। असहाय पाकर शुजाउद्दौलाने इन्हें क़ैद कर लिया। किन्तु बकसर युद्धके एक दिन पहिले पुनः मुक्त कर दिया। इन्हें एक लँगड़ी हथिनी दी गयी जिसपर चढ़कर यह भाग निकले। बनारस, इलाहाबाद होते हुए बरेली पहुँचे। वहाँ बहुत दिनोंतक रुहिलोंकी शरणमें रहे। कहा जाता है कि नजीफ़उद्दौला इनके खर्चके लिए पेन्शन देता रहा। ऐसा पता लगता है कि संवत् १८२३ (सन् १७६६ ईसवी) में मीर कासिमने अहमदशाह अब्दालीसे सहायतार्थ प्रार्थना की थी। तदनुसार अहमदशाहने अटक पार किया और लाहौरसे १२० मीलकी दूरीपर आ गये। परन्तु इस समय भारतवर्षकी अवस्था वह नहीं रह गयी थी जो पानीपतकी लड़ाईके समय थी। उस समय तमाम मुसलमानी रियासतोंने अब्दालीका साथ दिया था। इस बार सबसे प्रधान मुसलमान सरदार शुजाउद्दौला अँगरेजोंका मित्र बना था। सिक्ख अब्दालीके विरुद्ध थे ही। यह हालत देखकर इन्होंने युद्ध करना उचित न समझा। मीर कासिमसे अपनी असमर्थता प्रगट कर वह स्वदेशको लौट गये।

इसके पश्चात् दस वर्षतक नवाब मीर कासिमका कुछ भी पता नहीं चलता। संवत् १८३४ (सन् १७७७ ई०) में दिल्लीकी एक झोपड़ीमें एक व्यक्ति मरा पाया गया। उसके शरीरपर केवल एक दोशाला था। उसीको बेचकर उसके कफन इत्यादिका खर्च निकाला गया। दफ़न किये जानेके अवसरपर एक व्यक्तिने धीरेसे कहा था "यह तो मीर कासिम है।" इस प्रकार मीर कासिमकी मृत्यु हुई। इस समय इनकी मृत्युपर शोक प्रकट करनेवाला, दो आँसू गिरानेवाला, भी कोई न रहा। प्रभुकी लीला भी कैसी अद्भुत है!

फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि मीर कासिम एक योग्य शासक थे और यदि इनके मार्गमें बराबर रुकावटें न पड़ी होतीं तो यह बहुत कुछ कर दिखाते। इनपर यह दोष आरोपित किया जाता है कि सन्देहकी मात्रा इनमें बहुत अधिक थी। ठंडे दिलसे विचार किया जाय तो मीर कासिम इसके लिए दोषी नहीं ठहराये जा सकते। सिराजुद्दौलाके विरुद्ध अँगरेज़ोंने जो षड्यन्त्र रचा था उसे देखकर इनके नेत्र खुल गये थे। अपने अधीनस्थ अफसरोंके विश्वासघातने स्वभावतः इनके मनमें सन्देहकी मात्रा बढ़ा दी थी। सच पूछा जाय तो मीर कासिममें बड़े गुण थे। राज्य-प्रबन्धके सम्बन्धमें, बारीकसे बारीक बातोंका पता लगानेमें तथा आपसके झगड़ोंको तै करनेमें इनकी समता करनेवाला दूसरा व्यक्ति उस समय नहीं था। नियत समयपर अपनी सेनाको तनख्वाह देने, आमदनी और खर्चकी व्यवस्था रखने, तथा विद्वानोंका आदर-सत्कार करनेमें उस समय उनके सदृश कोई देशी राजा नहीं था।

मुताखरीनका लेखक लिखता है कि अपने समयके यह एक अद्वितीय व्यक्ति और सबसे अच्छे शासक थे। धैर्य्य की मात्रा इनमें बहुत ज्यादा थी। एक समयकी बात है कि इन्होंने किसी आदमीके विरुद्ध किसी मामलेमें फैसला दिया। वह व्यक्ति क्रोधसे आगबबूला हो उठा। भरे दरबारमें चिल्ला उठा "जिस दिन परमात्माने तुम जैसे अन्यायी शासकको उत्पन्न किया उस दिन शायद उसने शराब पी ली थी।" जो लोग वहाँ बैठे हुए थे एक स्वरसे चिल्ला उठे कि इस व्यक्तिको कड़ी सज़ा देनी चाहिये। परन्तु नवाबने सबको शान्त किया। केवल इतना ही कहा "क्रोधके आवेशमें आकर इस मनुष्यने ऐसा व्यवहार किया, इसे क्षमा करो।" उदारता और दयामें भी नवाब बहुत बढ़े चढ़े थे। कई लाख रुपये गरीब-दुखियोंकी सहायतामें खर्च करते थे। नवाब विद्वानोंकी बड़ी कदर करते थे। शाहमुहम्मदअली हाज़िन अपने समयके प्रख्यात विद्वानोंमें थे। जब यह दरबारमें आते तो मीर कासिम दस कदम आगे बढ़कर इन्हें सलाम करते और अपने मसनदपर स्थान देते। मीर कासिम कुछ ही दिनोंतक राज्य कर पाये थे। उतने समय भी शान्तिसे नहीं बैठने पाये। इनका समय बराबर कठिनाइयोंका सामना करते ही बीता। इतने पर भी इन्होंने जो कुछ प्रबन्ध किया वह प्रशंसनीय है। इस थोड़े समयमें इन्होंने अपनी सेनाका संघटन जिस खूबीसे किया उससे इनकी योग्यता अच्छी तरह झलकती है। इनके सेनापति गुरग़ीनखाँने एक बार इनसे कहा था कि 'दो वर्षमें तुम अँगरेज़ोंसे टक्कर लेने योग्य हो जाओगे।' दो वर्षतक ठहरनेका अवसर ही न

मिला। उक्त कथनके कुछ ही दिनों बाद उन्हें युद्ध करना पड़ा। इतनेपर भी यदि लड़ाईमें कुछ दुर्घटनाएँ उपस्थित न होतीं, जिनका वर्णन पहलेही कर दिया गया है, तो यह नहीं कहा जा सकता कि मीर कासिमकी हार हो जाती। खैर, हार हुई सही परन्तु इतना तो मानना ही पड़ेगा कि जबतक मीर कासिम नवाब रहे उन्होंने अपने गौरवकी रक्षा की। स्वार्थको प्रजाहितके अधीन रखा। यदि वह चाहते तो आरामसे रहते और प्रजाका गला घुँटने देते। परन्तु उन्हें यह स्वीकार नहीं था। अपने कर्तव्यको उन्होंने सर्वोपरि समझा। अन्तिम समयतक उसीके लिए लड़ते रहे। इतिहासकारोंको जो कुछ कहना हो भले ही कह डालेँ परन्तु हर निष्पक्ष व्यक्तिको मानना पड़ेगा कि मीर कासिमका नाम इतिहासमें सुवर्णाक्षरोंसे लिखने योग्य है। उनका इतिहास स्वाभिमान और आत्म-गौरवका इतिहास है। भारतवर्षको मीर कासिमके लिए अभिमान होना चाहिये। केवल ऐसे ही व्यक्तियोंके कारण आज हमारा इतिहास उज्ज्वल है और हम गर्वसे अपना माथा ऊँचा उठा सकते हैं।
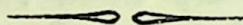
१—बङ्गालमें अँगरेज़ोंका उदय।

अँगरेज़ोंके शक्तिविस्तारकी कथा बड़ी ही मनोरञ्जक है। उन लोगोंकी किसी बड़ी सेनाने यहाँ आकर इस देशको विजय नहीं किया। भारतकी ही पलटनें समरमें अँगरेजोंके साथ होकर लड़ीं। यहाँका ही धन देशी शक्तियोंके विरुद्ध लड़नेमें खर्च किया गया। समय समयपर हममें ही विश्वास-घातकोंका प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने देशप्रेमको ताक़पर रखकर अँगरेजोंका पक्ष ग्रहण किया। हमारे ही दोषोंसे लाभ उठाकर इन लोगोंने अपना आधिपत्य इस देशमें स्थापित किया। छोटेमोटे वणिकोंसे धीरे धीरे ये लोग इस देशके कर्ताधर्ता हो गये। यहाँके शासकोंकी दयाके भिखारी समय बीतनेपर उनके ही मालिक बन बैठे।

जो अँगरेज़ हिन्दुस्तानमें पहले पहल आया वह टामस स्टीवेन था। संवत् १६४२ (सन् १५८५ ई०) में जान न्यूबेरी और राल्फ़फिच यहाँ आये। बीजापुर, गोलकुण्डा, बुरहानपुर और आगराकी यात्रा करते हुए ये लोग फ़तहपुर सिकरी पहुँचे। ये लोग रानी एलिज़बेथके यहाँसे अकबर-के लिए एक पत्र भी लाये थे। संवत् १६५६ (सन् १५९९ ई०) में ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी स्थापना हुई। १६ पौष संवत् १६५७ (३१ दिसम्बर १६०० ई०) को इस कम्पनीको चार्टर प्राप्त हुआ था। आरम्भमें जावा तथा ऐचिनमें अँगरेज़ोंने फैक्टरियाँ स्थापित कीं। परन्तु बहुत कालतक

डच लोगोंने इन्हें व्यापार नहीं करने दिया। अमबियाना-के हत्याकाण्डके पश्चात् संवत् १६८० (सन् १६२३ ई०) में अँगरेज़ोंको इन स्थानोंसे हटना पड़ा। अब इन लोगोंने हिन्दुस्तानमें व्यापार करनेका निश्चय किया। संवत् १६६९ (सन् १६१२ ई०) में एक अँगरेज़ी फैक्टरी सूरतमें स्थापित हो चुकी थी। संवत् १६७२ में सर टामस रो हिन्दुस्तान आये। इनके परिश्रमसे अँगरेजोंको भडौंच, सूरत, कैम्बे, अहमदाबाद, बुरहानपुर, अजमेर, आगरा और लाहौरमें फैक्टरियाँ बनानेकी आज्ञा मिली। संवत् १६८५ (सन् १६२८ ई०) में मछलीपट्टममें इन लोगोंने एक फैक्टरी बनायी। संवत् १६९० में पिपली और संवत् १६९९ में बालेश्वरमें फैक्टरियाँ बनायी गयीं। संवत् १६९७ (सन् १६४० ई०) में ये लोग हुगलीमें भी आ बसे। यहाँपर फैक्टरी स्थापित की गयी और उसकी शाखाएँ पटना, ढाका, कासिमबाज़ार तथा मुर्शिदाबादमें खोली गयीं। संवत् १६९६ (सन् १६३९ ई०) में अँगरेज़ोंने चेनाकूपम नामक स्थान खरीदा। यही बादको मद्रासके नामसे विख्यात हुआ और धीरे धीरे एक प्रेसिडेन्सीका प्रधान नगर हो गया। संवत् १७४८ (सन् १६९१ ई०) में इन्हें सेण्ट डेविडका किला प्राप्त हुआ। दस पौण्ड सालाना कर देनेके बदले अँगरेज़ोंको बम्बई द्वीप भी मिल गया।

आरम्भमें बङ्गाल मद्रास प्रान्तके अधीन था। परन्तु संवत् १७३८ (सन् १६८१ ई०) में यह भी एक अलग प्रान्त बना दिया गया। विलियम हेज यहाँके गवर्नर बनाये गये और जाब चारनाक उनके सहायक नियुक्त हुए। संवत् १७४४ (सन् १६८७ ई०) में अँगरेज़ोंका मुग़ल अफ़सरोंसे

झगड़ा हो गया। उस समय शाइस्ताखाँ बङ्गालके मुग़ल गवर्नर थे। झगड़ोंके कारण अँगरेज़ हुगली छोड़कर चले गये और मुग़ल-साम्राज्यसे युद्ध करनेपर तुल गये। मिस्टर निकलसन और मि० हीथने चटगाँवपर आक्रमण किया परन्तु इन लोगोंकी गहरी हार हुई। इन्हें आज पहले पहल मालूम हुआ कि भारतवर्षको विजय करनेमें केवल तलवार हमारी सहायक नहीं हो सकती। यदि हमें हिन्दुस्तानपर राज्य करना है तो छल और कपटका भी आश्रय लेना पड़ेगा। भारतवासी वीर हैं, छली नहीं। वीरतामें हम उनसे पार नहीं पा सकते। छलके द्वारा ही हम उन्हें बसमें कर सकते हैं। यही सोचकर अपने दुःसाहसके लिए उन लोगोंने क्षमायाचना की। औरङ्गज़ेबने एक फरमान द्वारा उन्हें क्षमाप्रदान किया। संवत् १७५५ (सन् १६९८ ई०) में ज़मीन्दार शोभासिंहने अफगान सरदार रहीमखाँके साथ मिलकर बर्दवानके राजा कृष्णरामके खिलाफ विद्रोह कर दिया। जब बलवा शान्त हो गया तो अँगरेज़ोंको अपनी रक्षाके बहाने किला बनानेकी आज्ञा मिल गयी। संवत् १७५५ (सन् १६९८ ई०) में अँगरेज़ोंको सुतनट्टी, गोविन्दपुर और कालीघाट नामके तीन ग्राम बारह सौ रुपये सालाना मालगुज़ारीके बदले प्राप्त हुए।

शाहजहाँके समयमें तीन हज़ार रुपया सालाना देनेपर अँगरेजोंको तमाम बङ्गालमें व्यापार करनेकी स्वतन्त्रता प्राप्त हो गयी थी। इस आशयका उन्हें एक फरमान भी मिला था। परन्तु फ़रमान निरर्थक था। वह कार्य्यरूपमें परिणत नहीं हुआ। फ़रमानके होते हुए भी शाइस्ताखाँने ढाका फैक्टरीके अँगरेज़ अफसरको क़ैद कर लिया और साढ़े

तीन रुपया फ़ी सैकड़ा कर देनेपर ही उसको मुक्त किया। बिचारे वणिकोंको व्यापारमें बड़ी बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता था। सूबेदार और उसके आश्रित अन्य अफसरोंकी सहायताके बिना वे हुगलीमें रेशम इकट्ठा नहीं कर सकते थे। जहाज़पर सामान लादनेके पूर्व सूबेदारकी आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक था। इस आज्ञा-प्राप्तिके लिए उन्हें रिश्वतका भी सहारा लेना पड़ता था। सूबेदारकी आज्ञासे कई बार पटनासे आई हुई शोरेकी नावें रोक ली गयी थीं।

संवत् १७७२ (सन् १७१५ ई०) में कलकत्तेसे कम्पनीका एक डेपुटेशन फरुखसियरके पास दिल्ली गया। वह बादशाहसे ३८ ग्रामोंका फरमान प्राप्त करनेमें सफल हुआ। उस समय बङ्गालके सूबेदार मुर्शिदकुलीखाँ थे। मुर्शिद-कुलीखाँ अँगरेजोंके कट्टर विरोधी थे। यह नहीं चाहते थे कि इस देशमें फिरङ्गियोंका प्रभुत्व स्थापित हो। फ़र-मानका आशय पूरा होने देनेमें इन्होंने हर तरहकी विघ्नबाधा उपस्थित की। इन्होंने ज़मीन्दारोंको भड़काया कि अँगरेज़ों-के हाथ ज़मीन न बेचो।

संवत् १७८२ (सन् १७२५ ई०) में मुर्शिदकुलीखाँका देहान्त हुआ। उनके पश्चात् जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है शुजाउद्दीनखाँ नाज़िम नियुक्त हुए। इनके समयमें कोई उल्लेख योग्य घटना नहीं हुई। इनकी मृत्युके पश्चात् सरफ़राज़खाँ सिंहासनासीन हुए। पर राज्यलक्ष्मी-की कृपा उनपर अधिक दिनोंतक नहीं रही। अलीवर्दीखाँ गिरियाके मैदानमें उनको परास्त कर स्वयँ नवाब बन बैठे। अलीवर्दीके समयमें अँगरेज़ोंको किसी प्रकारका कष्ट नहीं

हुआ, वरञ्च उनकी कृपा सर्वदा अँगरेजोंपर बनी रही, जिसके कारण व्यवसायमें खूब उन्नति हुई।

संवत् १८१२ (सन् १७५६ ई०) के २७ चैत्र (१० अप्रैल) को अलीवर्दीखाँका स्वर्गवास हुआ। नवाब अलीवर्दीखाँके कोई पुत्र नहीं था। अपने नाती सिराजुद्दौलाको इन्होंने पोष्य पुत्रके रूपमें ग्रहण किया था। जब इनका देहान्त हुआ तो सिराज ही राज्यासीन हुए। अभीतक अँगरेज़ोंको कोई राजनीतिक सत्ता प्राप्त न थी, वे धनके बलपर अपने स्वत्वोंकी रक्षा करते आते थे। परन्तु इस समय उन लोगोंको परिस्थिति अपने अनुकूल दिखलाई पड़ी। उन्होंने उससे लाभ उठानेका अच्छा अवसर देखा। राजगद्दीके लिए दो व्यक्ति और भी उम्मीदवार थे। एक तो पुर-नियाके शासक शौकतजङ्ग थे। यह अलीवर्दीके दामाद सैयद अहमदके पुत्र थे। सिराजके दूसरे प्रबल विरोधी ढाकेके शासक नवाजिश मुहम्मद थे। बङ्गालमें अँगरेज वही चाल चलना चाहते थे जो उन्होंने दक्खिनमें फ्रांसी-सियोंसे सीखी थी। नवाजिश मुहम्मदका पक्ष लेकर उन्होंने सोचा था कि सिराजको नीचा दिखायँगे और बङ्गालमें अपनी सत्ता स्थापित करेंगे। परन्तु ऐसा न हो सका। सिराजुद्दौलाके सौभाग्यसे नवाजिश मुहम्मदकी मृत्यु हो गयी। अब भी शौकतजङ्गपर अँगरेजोंकी आँख लगी हुई थी, परन्तु सिराजुद्दौलाने उन्हें भी नीचा दिखाया।

नवाजिश मुहम्मदके दीवान राजवल्लभ थे। इन्होंने सिराजके विरुद्ध नवाजिशको मदद की थी। जब नवाजिश-की मृत्यु होगयी तो इन्होंने सिराजके डरसे अपने पुत्र कृष्ण-वल्लभको सपरिवार कलकत्ते भेज दिया। अँगरेजोंने इन्हें

शरण दी थी। अँगरेजोंको इस समय पता लगा था कि फ्रांसीसी लोग उनपर हमला करने वाले हैं। इसलिए उन्होंने कलकत्तेमें सिराजकी आज्ञाके बिना एक किला बनवाना भी आरम्भ कर दिया था। सिराजने जब यह सुना तो एक पत्र कलकत्तेको लिखा कि कृष्णवल्लभ लौटा दिये जायँ और अँगरेज लोग नये किलेको धराशायी कर दें। अँगरेजोंने सिराजुद्दौलाकी आज्ञाका उल्लंघन किया। अतएव नवाबने कलकत्तेपर हमला कर दिया। अँगरेज नवाबके विरुद्ध टिक न सके। वे लोग भाग खड़े हुए और उन्होंने फलता द्वीपमें शरण ली। कुछ दिनोंके पश्चात् मदरासमें जब यह सूचना पहुँची तो वहाँसे क्लाइव और वाटसन सेना सहित भेजे गये। कलकत्तेके तत्कालीन सरकारी शासक मानिकचन्दके विश्वासघातसे कलकत्तेपर अँगरेजोंका पुनः अधिकार हो गया। इसके पश्चात् अलीनगरकी सन्धि हुई। इस सन्धिके अनुसार कलकत्ता अँगरेजोंको दे दिया गया। कलकत्तेपर आक्रमणके समय अँगरेजोंकी जो क्षति हुई थी नवाबने उसकी पूर्ति करनेका वादा किया। किला बनवानेकी भी आज्ञा अँगरेजोंको दे दी गयी। उन्होंने यह शपथ खायी कि वे राज्यमें शान्तिके साथ रहेंगे। बहुधा लोग आश्चर्यमें पड़ जाते हैं कि नवाबने अँगरेजोंके साथ ऐसी सन्धि क्यों की जो सर्वथा उन लोगोंके ही अनुकूल थी। इसका कारण यह था कि सिराज यह बात ताड़ गये थे कि हमारे अफसर प्रकाश्यरूपसे हमारे पक्षमें भले ही हों, पर वास्तवमें वे हमारे विरुद्ध हैं। ऐसी अवस्थामें किसी तरह शान्ति स्थापित करना ही उन्होंने पहले आवश्यक समझा।

अलीनगरकी सन्धि हो गयी। परन्तु अँगरेजोंने इसके अनुसार कार्य्य नहीं किया। इन लोगोंने चन्दरनगरके फ्रांसीसियोंपर आक्रमण कर दिया। सिराज इससे बहुत रुष्ट हुए। उन्होंने मना किया परन्तु अँगरेज़ न माने। फिर सिराजने महाराज नन्दकुमारको अँगरेज़ोंके विरुद्ध चन्दर-नगरकी ओर भेजा, परन्तु नन्दकुमारने विश्वासघात किया। वह रिश्वत लेकर अँगरेज़ोंकी ओर मिल गये। चन्दरनगरमें फ्रांसीसियोंकी हार हुई। इधर अँगरेजोंने सिराजके विरुद्ध गुप्त मन्त्रणा आरम्भ की। एक षड्यन्त्र रचा गया जिसमें दरबारके कई प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित थे। तदनुसार यह तै पाया था कि सिराजुद्दौला राज्य-च्युत किये जायँ और सेनापति मीर जाफरको राजगद्दी दी जाय। इसी षड्यन्त्रके फलस्वरूप संवत् १८१४ (सन् १७५७ ई०) में पलासीका युद्ध हुआ।

पलासी युद्धको युद्ध कहना ही युद्धको बदनाम करना है। वास्तवमें यह एक षड्यन्त्र था और हम इसको पलासी-षड्यन्त्र ही कह सकते हैं। सेनापति मीर जाफर और इनके अधीनस्थ और कई सरदार सेना लिये युद्ध-क्षेत्रमें खड़े रहे। अँगरेज़ोंने बिना परिश्रम बाज़ी मार ली। सिराजुद्दौलाको युद्ध करनेका कोई सहारा न रहा। युद्ध-क्षेत्रसे वह भाग खड़े हुए। उनकी इच्छा थी कि पटने जाकर रामनारायणकी सहायतासे तथा फ्रांसीसियोंको अपनी ओर मिलाकर पुनः अपनी सत्ता स्थापित करें। यही सोच कर वह अपनी पत्नीको लेकर जल-मार्गसे चल खड़े हुए, परन्तु रास्तेमें पकड़े गये। मीर जाफरके पुत्र मीरनने रातमें उन्हें मार डाला।

पलासी युद्धके पश्चात् अँगरेज़ोंको यद्यपि किसी राज्यकी प्राप्ति न हुई तथापि बंगालमें उनका सिक्का अच्छी तरह जम गया।

२—मीर जाफ़र

पलासी युद्धके पश्चात् अँगरेजोंने मीर जाफरका नवाबकी मसनद्पर बैठाया। अपने स्वामी सिराजुद्दौलाके साथ विश्वासघात करनेके पुरस्कार स्वरूप इन्हें नज़ामत पद प्राप्त हुआ। परन्तु इस प्रतिष्ठाके कारण मीर जाफरके सुख और शान्तिकी वृद्धि नहीं हुई। सिंहासनासीन होते ही इन्हें कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। पलासी-युद्धके पूर्व अँगरेजोंके साथ इनकी जो सन्धि हुई थी उसके अनुसार इन्होंने उन लोगोंको बहुतसा रुपया देनेका वादा किया था। वह तमाम रुपया अभीतक यह न दे पाये थे। अँगरेजोंके तकाजोंसे इनके नाकों दम हो गया था। सिराजुद्दौलाके विरुद्ध जो लोग षड्यन्त्रमें सम्मिलित थे उनमें बहुतोंको यह आशा बनी हुई थी कि मीर जाफरके नवाब होते ही हमें बड़े बड़े पद प्राप्त होंगे। परन्तु उनके मनोरथ सिद्ध नहीं हुए। अतः मीर जाफरको उनके असन्तोषका भी भय था। इसके अतिरिक्ति सेनाका वेतन बहुत दिनोंसे बाक़ी थां। उसमें विद्रोहकी अग्नि सुलग रही थी। मीर जाफरको इसकी अलग चिन्ता लगी

हुई थी। इसके अलावा रायदुर्लभसे भी मीर जाफरकी इस समय अनबन हो गयी थी। इधर तीन स्थानोंमें विद्रोह उठ खड़े हुए थे। अवधके नवाब शुजाउद्दौलाके आक्रमणका भी डर बना हुआ था। इस प्रकार मीर जाफर अनेक कठिनाइयोंसे घिरे थे। इस भयङ्कर स्थितिमें उनका सिर चकरा गया। उनमें इतनी शक्ति न रही कि इन कठिनाइयोंका सामना कर सकें। ऐसी अवस्थामें उन्होंने क्लाइवकी शरण ली।

इस अवसरपर क्लाइवने बड़ी बुद्धिमत्तासे काम लिया। सन्धिका जो कुछ रुपया नवाब मीर जाफरसे प्राप्त करना था उसमें कुछ तो तत्काल ही मिल गया और शेषके लिए तकावी लिख दी गयी। तीन स्थानोंमें जो विद्रोह उठ खड़े हुए थे उन्हें भी क्लाइवने शान्त किया। राय-दुर्लभके साथ मीर जाफरका मेल करा दिया। तनख्वाह न मिलनेके कारण सेना निश्चेष्टसी हो गयी थी, वह कुछ करनेको तैयार नहीं थी। क्लाइवने थोड़ासा रुपया दिला कर उसे कुछ समयके लिए शान्त किया। तत्पश्चात् वह मीर जाफरके साथ पटना जानेके लिए रवाना हुए। पटना जानेका मुख्य उद्देश्य यह था कि नवाब और अँग-रेजोंके सम्मिलित सैन्यबलको दिखाकर शुजाउद्दौलाके हृदय-में भयका सञ्चार करें जिससे वह आक्रमण करनेका साहस न करें। दूसरा उद्देश्य यह भी था कि दिल्लीसे मीर जाफरके लिए सनद इत्यादि प्राप्त करें।

यथासमय क्लाइव और नवाब मीर जाफर अपनी सेनाओंके साथ पटना पहुँचे। नवाबकी इच्छा थी कि रामनारायणको पदच्युत कर अपने किसी सम्बन्धीको उनके

स्थानपर नियुक्त करें। परन्तु क्लाइवने ऐसा होने न दिया। उन्होंने रामनारायणका पक्ष ग्रहण किया। अतएव रामनारायण अपने पदपर स्थित रहे। कुछ ही दिनोंमें दिल्लीसे पत्र आये। मन्त्रिमण्डलने मीर जाफरको नवाब मान लिया और उनके लिए सनद और खिताब आदि भेजे। क्लाइवको मनसबदारी मिली। कुछ दिनोंतक पटनेमें रहकर ये लोग मुर्शिदाबाद लौटे। मुर्शिदाबाद पहुँचनेपर इन्हें मालूम हुआ कि फ्रांसीसी लोग कारोमण्डलके किनारेपर उत्पात मचाये हुए हैं। अँगरेजोंको दो बार नीचा भी देखना पड़ा। स्थिति शोचनीय थी। क्लाइवको यह बात भली भाँति मालूम थी कि यदि नवाबको अँगरेजोंकी स्थितिका पता लग जायगा तो उनके हृदयसे उन लोगोंका दबदबा बहुत कुछ कम हो जायगा। क्लाइवने यही सोचकर तत्काल यह खबर फैला दी कि अँगरेजोंने दो स्थानोंपर फ्रांसीसियोंको हराया है।

क्लाइव कुछ दिनोंतक मुर्शिदाबाद रह कर कलकत्ते लौट आये। एक सप्ताहके भीतर इंग्लैंडसे एक परवाना पहुँचा जिसके अनुसार बंगालके अँगरेजी शासनके लिए दस आदमियोंकी एक कमेटी नियत हुई। यह निश्चित हुआ कि चार प्रधान मेम्बर तीन तीन मास तक सभापतिके पदपर कार्य करेंगे। इस परवानेके अनुसार क्लाइवको शासनमें कोई अधिकार नहीं दिया गया। उनकी इच्छा हुई कि स्वदेश लौट जायँ। परन्तु नयी कमेटीके तमाम मेम्बरोंने सर्वसम्मतिसे क्लाइवको ही सभापति चुना। क्लाइव डाइरेक्टरोंके इस परवानेसे असन्तुष्ट थे। पहले तो उन्होंने सभापति होनेसे इनकार किया परन्तु जब हर

एक दलके तमाम अँगरेजोंने कमेटीके प्रस्तावका समर्थन किया तब उन्होंने सभापति होना स्वीकार किया।

इधर मीर जाफरके दरबारमें तरह तरहके अत्याचार हो रहे थे। स्वार्थान्ध मन्त्रियोंके कारण मीर जाफरकी दुर्बलता और भी बढ़ती गयी। वह समझते थे कि षड्यन्त्रके द्वारा हत्याओंका सहारा लेकर मैं अपना राज्यकार्य्य उचित रूपसे सम्पादित कर सकूँगा। क्रूरताके साथ उन्होंने बहुतोंका खून किया। सिराजुद्दौलाके परिवारके हर व्यक्तिको उन्होंने किसी न किसी बहाने मरवा डाला। उनके कई इष्ट मित्रोंको भी मृत्यु-यंत्रणा भोगनी पड़ी। जब मुर्शिदाबादका सिंहासन इन अत्याचारोंसे कम्पित हो रहा था तब इधर मीर जाफरके लिए एक नयी आफत उठ खड़ी हुई। दिल्लीश्वरके ज्येष्ठ पुत्र शाह आलमने बिहारपर हमला कर दिया। शाहज़ादेने विद्रोह कर दिया था और दिल्लीसे भागकर यहाँ आये हुए थे। सुजाउद्दौलाने भी इन्हें प्रोत्साहन दिया। इन्होंने कुछ आदमियोंको इकट्ठा कर पटनेपर घेरा डाल दिया।

इस नयी विपत्तिसे मीर जाफर बहुत घबड़ा गये। सेना तो इनकी बिगड़ी हुई थी ही। वेतन न मिलनेके कारण सिपाहियोंने आगे बढ़नेसे इनकार किया। इन्होंने क्लाइवसे सहायता चाही। साढ़े चार सौ अँगरेज़ और पच्चीस सौ देशी सिपाहियोंको लेकर क्लाइव आगे बढ़े। इनके पहुँचनेके पहलेही पटनेके शासकने शाह आलमको हरा दिया था। शाहज़ादेकी तमाम कोशिशें व्यर्थ गयीं। इन्हें पीछे हटना पड़ा। गङ्गानदी इन लोगोंने पार की परन्तु वहाँ शरण न मिली। शुजाउद्दौला अब इनकी सहायताके लिए

तैयार नहीं थे। चारों ओरसे अपनेको असहाय पाकर शाह आलमने अँगरेजोंसे सहायता माँगी। परन्तु इधर दिल्लीसे मीर जाफरके पास इस आशयका पत्र आया था कि शाह आलमको गिरफ़ार कर लें। ऐसी स्थितिमें क्लाइव शाहज़ादेको शरण न दे सके। हाँ, उन्होंने कुछ रुपया उनके पास भेज दिया जिससे वह कहीं भाग जायँ।

इसमें सन्देह नहीं कि मीर जाफरको समय समयपर किसी भयङ्कर स्थितिके उपस्थित हो जानेपर अँगरेज़ोंसे सहायता मिलती थी। परन्तु वह उनके हस्तक्षेपसे तङ्ग आ गये थे। वह इस बातका अनुभव कर रहे थे कि बङ्गालका नवाब होते हुए भी मैं अँगरेज़ोंकी इच्छाका दास हूँ। उन लोगोंकी इच्छाके विरुद्ध कोई काम करना उनकी शक्तिके बाहरकी बात थी। मीर जाफरको सर्वदा यह चिन्ता बनी रहती थी कि अँगरेज़ोंकी शक्तिका कैसे ह्रास हो। इसी अभिप्रायसे उन्होंने डच लोगोंके साथ एक गुप्त मन्त्रणा भी की थी। दोनों ओरसे सन्धि हुई। यह निश्चित हुआ कि डच लोग बङ्गालपर हमला करेंगे। तदनुसार डच जहाज यथासमय चल खड़े हुए, युद्ध हुआ और उसमें डचोंकी गहरी हार हुई। लड़ाईमें अँगरेजोंका जो नुकसान हुआ था उसकी पूर्ति डच लोगोंको करनी पड़ी। मीर जाफरको बड़ी निराशा हुई। अँगरेज़ लोग भी अब मीर जाफरसे पहलेकी अपेक्षा अधिक सशङ्क रहने लगे।

इस बीचमें यह पता लगा कि शाह आलम पुनः बिहार-पर आक्रमण करनेकी तैयारीमें लगे हैं। इस बार बहुतसे जमीन्दारोंने भी शाह आलमका पक्ष ग्रहण किया था। अँगरेज सेनापति कालियाड ५ माघ (१८ जनवरी) को

मुर्शिदाबादसे पटनेके लिए रवाना हुए। मीरन भी एक बड़ी सेनाके साथ थे। इन लोगोंका उद्देश्य शाहज़ादेकी गतिका अवरोध करना था। इधर शाहज़ादा जब बिहार पहुँचे तो इन्हें मालूम हुआ कि इनके पिताका स्वर्गवास हो गया। प्रधान मन्त्रीने उन्हें कैद कर रक्खा था और बादको मरवा डाला। अब शाहजादेने स्वयं बादशाह पदको धारण किया। पटना पहुँचनेके पहले ही अँगरेज़ सेनापति मि० कालियाडने पटनेके शासक रामनारायणको लिख भेजा था कि जबतक हमलोग न आ जायँ शाह आलमपर आक्रमण न करना। परन्तु इन्होंने यह बात न मानी और हमला कर दिया। परिणाम यह हुआ कि इनकी पराजय हुई और इन्हें पुनः पटना लौट आना पड़ा; इस बीचमें कालियाडकी सेना भी पटना पहुँच गयी। इन्होंने आगे बढ़कर शाह आलमपर हमला किया और पूर्ण विजय प्राप्त हुई। कालियाडकी इच्छा थी कि बादशाहका पीछा करें। परन्तु मीरनने सहायता न पहुँचायी। कालियाडने कुछ सवार माँगे लेकिन मीरनने देनेसे इनकार किया। तौ भी मि० कालियाडने बादशाहका पीछा किया। मार्गमें मीर जाफर भी मिल गये। परन्तु इन्होंने भी कुछ सहायता न पहुँचायी। बादशाह साफ निकल गये और पटना लौट आये। वहाँ मिस्टर लाने* भी इनका साथ दिया। पुनः लड़नेकी तैयारीमें यह लोग संलग्न हो गये, परन्तु कुछ सफलता प्राप्त नहीं हुई। इसी बीचमें मीरनका मृत्युकाल उपस्थित हुआ। एक बार रातको बड़ी आँधी आयी।

---

* यह एक फ्रांसीसी अफसर था।

मीरनके खेमेमें बिजली गिरी और उसके आघातसे वह मर गये । मीरन और मीर जाफरने कालियाडका साथ शाह आलमके विरुद्ध क्यों नहीं दिया इस बातसे शङ्का हो सकती है । कुछ इतिहासकारोंका ख्याल है कि दोनों पिता-पुत्र शाह आलमके साथ पत्र-व्यवहार कर रहे थे । इन दोनोंकी इच्छा थी कि शाह आलमके साथ मिलकर अँगरेज़ोंकी शक्तिको चूर्ण करें । यह लोग चाहते थे कि बङ्गालसे अँगरेज़ोंका आधिपत्य नष्ट कर दिया जाय । खैर, जैसा कि पहलेही बतला दिया गया है, बादशाहको अपने उद्देश्यमें सफलता न हुई । बरसात आ गयी थी, अतः अँगरेज़ भी इस समय इनके विरुद्ध कुछ कर न सके । कुछ दिनोंके लिए यह लोग निश्चेष्ट बैठे रहे ।

मीर जाफरके लिए उनका पुत्र मीरन बड़ा भारी सहारा था परन्तु अब वह भी न रहा । मीरनकी मृत्युके पश्चात् मीर जाफरको अपनी अशक्यताका पूर्णरूपसे अनुभव हुआ । अपने पैरोंपर खड़ा होनेकी सामर्थ्य उनमें नहीं थी । मीरनके मरनेके बाद सेनामें बड़ी गड़बड़ी फैली । सिपाहियोंका असन्तोष जो बहुत दिनोंसे ज़ोर पकड़ रहा था अब उबल पड़ा । उन लोगोंने शाही महलोंको घेर लिया और मीर जाफरको मार डालनेकी धमकी दी । नवाबकी जान सङ्कटमें पड़ गयी । उस समय मीर जाफरके दामाद मीर क़ासिमने उनकी जान बचायी । उन्होंने अपने पाससे थोड़ासा रुपया देकर और जिम्मेदारी स्वयं लेकर सिपाहियोंको शान्त किया ।
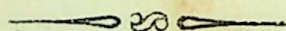
३—मीर क़ासिमका राज्याभिषेक

मीर क़ासिमके पूर्वजोंका इतिहास विशेष रूपसे मालूम नहीं है। केवल इतना ही ज्ञात है कि इनके पिताका नाम सैयद अरीज़ी खां था। इनके दादा इमतियाज खां फारस-निवासी थे। यह अजीमाबादमें दीवानी पदपर कार्य्य कर चुके थे। इनकी प्रतिष्ठा बढ़ी चढ़ी थी अतएव मीर जाफरने अपनी पुत्रीका विवाह इनके पोते मीर क़ासिमके साथ बड़ी प्रसन्नतासे कर दिया। परन्तु इस सम्बन्धसे आनन्दकी वृद्धि नहीं हुई, प्रत्युत पारस्परिक वैमनस्य और कलहका प्रादुर्भाव हुआ। भीतरकी दुष्ट प्रकृतिने अग्निमें घृतका काम किया। मीर जाफर अपने दामादसे बहुत जलते थे। दो बार तो पिता-पुत्रने मीर क़ासिमको मार डालनेका भी यत्न किया, परन्तु फल कुछ भी न हुआ।

मीरनकी मृत्युने नवाबका काया-पलट कर दिया। अब उनमें शक्ति न रही कि वह राज्य-प्रबन्धका उचित रूपसे सम्पादन करें। मीरनसे राज्य-कार्य्यमें उन्हें बहुत सहायता मिलती थी, किन्तु अब वह निःसहाय हो गये। ऐसी ही दशामें मीर क़ासिमने एक बार सिपाहियोंसे नवाबकी रक्षा भी की। तबसे मीर जाफरका मन मीर क़ासिमकी ओर विशेष रूपसे आकृष्ट हो गया था। मीरनकी मृत्युके पश्चात् उन्हें अब एक नया अवलम्ब मिल गया। अब

अपने दामादको प्रसन्न रखना उन्हें आवश्यक प्रतीत हुआ। तदनुसार मीर क़ासिम पुरनिया और रंगपुरके शासक नियुक्त किये गये। इसी समय कलकत्ता-कौन्सिलके साथ एक विशेष मामला तै करनेकी आवश्यकता पड़ी। मीर जाफरको इस कार्य्यके लिए मीर क़ासिमसे अधिक योग्य व्यक्ति दिखलाई न पड़ा। तदनुसार यह कलकत्ता भेजे गये। वहाँ जाकर इन्होंने इतनी योग्यताके साथ अपना कार्य्य पूरा किया कि यह मीर जाफरके कृपापात्र बन गये। इस समयतक क्लाइव अपने देशको लौट गये थे। जाते समय वह मिस्टर वानसीटार्टको अपना उत्तराधिकारी नियत करते गये। उनके आनेतक वह कुल काम हालवेलको सौंपते गये। हालवेलने प्रत्यक्ष देख लिया था कि अवस्था कैसी शोचनीय हो रही है। नवाब मीर जाफरकी फजूल-खर्चीके कारण खजाना खाली हो रहा था। सेनाको तनख्वाह कई महीनोंसे नहीं मिली थी। इधर सन्धिका रुपया न मिलनेके कारण अँगरेजोंका कारोबार रुका हुआ था। हालवेलको यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि सूबेदारीमें कुछ आवश्यक परिवर्तन किया जाय। उनकी इच्छा थी कि मीर जाफरको पदच्युत करके कोई दूसरा योग्य व्यक्ति उनके स्थानपर नियुक्त किया जाय। वानसीटार्टके आ जानेपर जब हालवेल चार्ज देकर अपने देशको जानेके लिए तैयार हुए तो उन्होंने कौन्सिलके सामने उस समयकी सारी दुर्दशाका एक चित्र खींचा और उसको दूर करनेका उपाय बतलाया। आरम्भमें तो मिस्टर वानसीटार्टने वर्तमान अवस्थाका ही समर्थन किया परन्तु कुछ ही दिनोंमें उन्हें अपनी भूल मालूम हुई। अब उन्हें भी यह अनुभव

होने लगा कि वर्तमान शासन-प्रणालीको बदलना आवश्यक है। पहले उन्होंने इस बातपर ज़ोर दिया कि दिल्लीश्वरसे सन्धि कर ली जाय और नवाब मीर जाफर मुगल सरकारके मातहत होकर रहें, साथ ही वह इस बातके लिए मजबूर किये जायँ कि वह कुछ जिले सन्धिके रुपयोंके बदलेमें अँगरेजोंको दें, तथा अपने प्रबन्धमें सुधार और खर्चमें कमी करें।

जिस समय इस विषयपर वाद-विवाद हो रहा था उसी समय मीर जाफरकी ओरसे मीर क़ासिम नये गवर्नरको बधाई देनेके लिए तथा कुछ अन्य आवश्यक कार्य्यवश दूसरी बार कलकत्ते आये। मीर क़ासिम बड़े चतुर व्यक्ति थे *। वह थोड़ी ही देरमें अँगरेजोंकी वास्तविक अवस्था ताड़ गये। वह भली भांति समझ गये कि अँगरेजोंको इस समय रुपयेकी ज़रूरत है, इन्हें अपनी ओर मिला लेना कोई बड़ी बात नहीं है। बात ही बातमें उन्होंने वानसीटार्टको राज्यकी तमाम बुराइयां बतलायीं, मीर जाफरके दोष दिखलाये, उनके मन्त्री चुन्नीलाल और मन्नोलालकी शिकायत की, सेनाको दुरवस्थाका वर्णन किया, तथा इमारतोंके बनवानेमें जो अपव्यय हुआ था उसकी शिकायत की। मीर

---

*Meer Kassim being a man of very considerable ability and shrewdness well acquainted with the state of affairs and the opinions and views of the English, he played his cards with such skill acknowledging the existance of the evils of the administration pointing out their causes and the means of improvement and the obstacles to reform that he was looked upon as the fittest person to restore the efficiency of the government.

Broome's Rise and Progress of the Bengal Army, p. 310

क़ासिमने वे उपाय भी बतलाये जिनके द्वारा उचित रूपसे राज्य-प्रबन्ध किया जा सकता था। मिस्टर वानसीटार्ट-पर इन बातोंका काफी प्रभाव पड़ा। उनको यह उचित जान पड़ा कि मीर क़ासिम अपने श्वशुर मीर जाफरके सहायक बनाये जायँ परन्तु तमाम अधिकार मीर क़ासिमके ही हाथमें रहे। उन्होंने अपनी इच्छा सिलेक्ट कमेटीके मेम्बरोंके सामने प्रगट की और उनकी राय पूछी। सिलेक्ट कमेटीके तमाम सदस्योंने एक मतसे उनका समर्थन किया। ११ आश्विन संवत् १८१७ (२७ सितम्बर १७६० ई०) को सिलेक्ट कमेटीके साथ मीर क़ासिमकी सन्धि हुई। तदनुसार यह निश्चित हुआ कि 'मीर कासिम नवाब मीर जाफरके सहायक नियत हों और राज्यका समस्त प्रबन्ध उन्हींके हाथमें रहे। परन्तु जबतक मीर जाफर जीवित रहें तब तक नवाब कहलानेका गौरव मीर जाफरका ही प्राप्त रहे और उनके जीवन निर्वाहके लिए मीर क़ासिम उन्हें समुचित द्रव्य दिया करें। सन्धिका जो कुछ रुपया अँगरेजोंको मीर जाफरसे पाना था उसे मीर क़ासिम चुका दें। कम्पनी-को नवाबकी रक्षाके लिए जो सेना रखनी पड़ती है उसके खर्चके लिए बर्दवान, मिदनापुर और चटगाँवके जिले उन्हें दे दिये जायँ। सिलहटमें जो चूना उत्पन्न होता है उसका आधा भाग बिना कर दिये कम्पनी खरीद सके। बादशाह-के साथ दोनों दलोंकी रायके बिना कोई सन्धि न हो।' और भी कई बातें तै हुई जिनका उल्लेख सन्धिपत्रमें नहीं किया गया, परन्तु वे भी मान्य समझी गयीं—नवाबकी सेना घटायी जाय और उसका नये सिरेसे संघटन हो, तथा मीर जाफरके मन्त्री चुन्नीलाल और मन्नीलाल जिन्होंने कर-

वसूलीका तमाम प्रबन्ध अपने हाथमें ले लिया था, पदच्युत किये जायँ। सिलेक्ट कमेटीके सदस्योंके लिए भी पुरस्कार नियत हुए।* वानसीटार्टको ५ लाख, हालवेलको २ लाख ७० हजार, समनरको २ लाख ५५ हजार, मेकगायरको २ लाख ५५ हजार, कालियाडको २ लाख, स्मिथको १ लाख ३४ हजार देनेकी प्रतिज्ञा मीर कासिमको करनी पड़ी। इसके पश्चात् मिस्टर वानसीटार्टने यह प्रस्ताव पेश किया कि मिस्टर हालवेल उन शर्तोंको कार्य्यरूपमें परिणत करनेके लिए कालियाडके साथ मुर्शिदाबाद जायँ। यदि मीर जाफर शान्तिके साथ सुलहकी शर्तें न मानें तो आवश्यकता पड़नेपर बलप्रयोग भी करें और नवाब मीर जाफरको उन नियमोंको माननेके लिए बाध्य करें। हालवेलने मुर्शिदाबाद जानेसे इनकार किया। उनका कहना था कि अब मैंने स्वदेश लौटनेका निश्चय कर लिया है; इसके अतिरिक्त मिस्टर कालियाडकी अधीनतामें मुर्शिदाबाद जानेमें मेरी अप्रतिष्ठा है। हालवेलके इनकार कर देनेपर वान-

---

*Nor were the personal interests of the members of the select committee forgotton;- though no precise stipulations appeared to have been made, liberal presents were promised by Meer Kassim and notwithstanding an affection of reluctance in accepting them at his installation, when in fact he was unable to provide the means they were considered as sums which he was pledged to pay when able and which before very long were actually paid. These sums were as follows:—

Vansittart	5 lacs	Holwell	2 lacs 70 thous.
Sumner	2 „ 55 thous.	Mc'guire	2 „ 55 thous.
Calliaud	2 lacs.	Smith	1 „ 34 thous.
Yorke	1 lac 34 thous.		

Broome's Rise and Progress of the Bengal Army, p. 311

सीटार्ट स्वयं मुर्शिदाबाद जानेको तैयार हो गये। ११ आश्विनको रात्रिके समय एक सभा हुई और उसमें मीर कासिमने सन्धिपर हस्ताक्षर किये। १३ आश्विनको मिस्टर वानसीटार्ट मुर्शिदाबादके लिए चल पड़े। २८ आश्विन (१४ अक्तूबर) को यह लोग मुर्शिदाबादके निकट पहुँच गये और मुरादबागमें इनका खेमा पड़ा। दूसरे दिन मीर जाफर इनसे मिलने आये। उस दिन कुछ विशेष कार्य्य न हो सका। कुछ देर बाद मीर जाफर लौट आये। ३० आश्विनको वानसीटार्ट भी नवाबसे जाकर मिल आये। दो दिन बाद नवाब स्वयं राज्यप्रबन्ध सम्बन्धी बातें करनेके लिए मुरादबागको गये। बातचीतमें पहले ही वानसीटार्ट-ने नवाबके मन्त्रियोंके कुप्रबन्ध तथा राज्यमें अराजकताके प्रादुर्भावके सम्बन्धमें चर्चा की। फिर उन्होंने तीन पत्र नवाबको दिये और उनके द्वारा राज्यके तमाम दोषोंको प्रगट किया तथा उनके दूर करनेके साधन बतलाये। पहले पत्र-का यह आशय था—

"पटनेकी अँगरेजी सेनाका वेतन कई माससे नहीं मिला है। तनख़्वाह ही न मिलनेके कारण आपकी सेना भी असन्तुष्ट है। परमात्मा जानता है कि उस समय मुझे कितना दुःख हुआ था जब कि आपके महलोंको सिपा-हियोंने घेर लिया था और आपका जीवन सङ्कटमें पड़ गया था। मैंने यह बात साफ देख ली कि अपना स्वार्थ साधनेके लिए मन्त्री लोग न्यायसे हाथ धो बैठे हैं। भोली भाली प्रजा अन्यायसे पीड़ित हो रही है। अन्न इतना महँगा हो गया है कि लोग दानोंको तरस रहे हैं। शाह आलमका फसाद अब तक समाप्त नहीं हुआ। आपके

हाथमें पटनेके किलेके अतिरिक्त बिहार प्रान्तका कोई भी भाग नहीं है। मैं यहां इस बातको प्रतिज्ञा करके आया हूँ कि इन तमाम दोषोंको दूर करूँगा।"

दूसरे तथा तीसरे पत्रोंमें निम्नलिखित विषयोंकी ओर मीर जाफरका ध्यान आकर्षित किया गया था—

"जब तक देशमें शान्ति स्थापित नहीं हो जाती तबतक आप कम्पनीका कर्ज़ नहीं चुका सकते। अँगरेजी सेनाको केवल एक लाख रुपया दिया जाता है। यह रुपया सेनाके खर्चके लिए यथेष्ट नहीं है। अतएव रुपयेकी तादाद बढ़ानी चाहिये। यह आवश्यक जान पड़ता है कि कुछ ज़मीन आप कम्पनीको सेनाके खर्चके लिए दे दें। यदि आप स्वयं अपना सारा काम नहीं सम्हाल सकते तो राज्यका सारा प्रबन्ध किसी और योग्य व्यक्तिको सौंप दीजिये और आप तमाम चिन्ताओंसे मुक्त होकर शान्तिके साथ जीवन व्यतीत कीजिये।"

इन पत्रोंको पढ़कर मीर जाफर बड़े चिन्तित हुए। राज्यप्रबन्धके दोषोंको दूर करनेकी चिन्ता तो न मालूम थोड़ी देरके लिए कहाँ चली गयी। उन्होंने अधिवेशन वहीं समाप्त कर देनेका यत्न किया और तुरन्त चलनेके लिए तैयार हो गये। परन्तु मिस्टर वानसीटाटके प्रार्थना करने पर वहीं भोजन मँगवानेके लिए विवश हुए। थोड़ी देरके बाद पुनः दोनोंमें बातचीत शुरू हुई। मीर जाफरने यह बात मान ली कि "अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। पुत्रके मर जानेके शोकसे मुझमें और भी असमर्थता आ गयी है। मैं अब इस योग्य नहीं रहा कि अकेले तमाम कठिनाइयोंका सामना कर सकूं।"

वानसीटार्टने सम्मति दी कि आप अपने किसी सम्बन्धीसे सहायता लें तो अच्छा है। मीर जाफरने कई आदमियोंका नाम लिया जिनमें मीर क़ासिमका भी नाम था। गवर्नर वानसीटार्टने पूछा "आप इनमें सबसे अधिक योग्य किसको समझते हैं?" नवावने मीर क़ासिमको सबसे अधिक योग्य बतलाया। वानसीटार्ट तो नवाबसे यह कहलाना ही चाहते थे। उन्होंने मीर क़ासिमको बुलवानेके लिए मीर जाफरसे कहा। परन्तु वह इसके लिए अभी तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा कि पहले मैं अपने मन्त्रियोंसे राय ले लेना चाहता हूँ। परन्तु वानसीटार्टने उन्हें मीर क़ासिमको बुलवानेके लिए बाध्य किया। अतः मीर कासिम बुलवाये गये। किन्तु उनके आनेके पहलेही मीर जाफर इतने परेशान हो गये कि वह ठहर न सके और वहाँसे चल दिये।

जब मीर जाफर अपनी राजधानीको लौट रहे थे तब उन्होंने मार्गमें अपनी ही नावपर मीर क़ासिमको नदी पार करते देखा। उस समय मीर क़ासिम मुरादबागको जा रहे थे। मीर जाफरने इशारेसे उन्हें लौटनेको कहा। परन्तु उन्होंने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। सुनेको अनसुना कर दिया। मुरादबाग़ पहुँचनेपर वानसीटार्टने मीर जाफरके साथ जो कुछ बातचीत हुई थी सब मीर क़ासिमको कह सुनाई। मीर क़ासिमने कहा "अवस्था बड़ी शोचनीय हो रही है। नवाब अघ मुझे चैन न लेने देंगे।" वानसीटार्टने उत्तर दिया "मैं लाचार हूँ। अब कुछ नहीं कर सकता।" इस प्रकार वानसीटार्टने मीर क़ासिमके साथ जो सन्धि हुई थी उससे उलट जाना चाहा। मीर क़ासिमको ठहरनेका

आदेश कर स्वयं भोजन करने चले गये। मीर क़ासिम पासके दूसरे कमरेमें चले गये। वहाँ उनके मित्र अली इब्राहमखाँ बैठे हुए थे। उनके साथ उन्होंने परामर्श किया कि भविष्यमें क्या करना चाहिये। अली ईब्राहमने सलाह दी कि "वानसीटार्टसे जो कुछ कहना है तुम कह डालो। यदि वह इसे स्वीकार न करें तो तुम बिना घर लौटे तमाम सेना और द्रव्यादि यहीं मँगवा लो और वीरभूम चले जाओ। वहाँ जाकर तुम विद्रोह कर दो। सेनाका बहुत अधिक भाग तुम्हारे पक्षमें देखकर बादशाह और कमकरखाँ भी तुम्हारा साथ देंगे। अतएव सम्भव है कि इस तरह भी तुम्हारा उद्देश्य पूर्ण हो जाय।" * मीर क़ासिमने यह सलाह पसन्द की।

भोजन करनेके उपरान्त गवर्नर वानसीटार्टने मीर क़ासिमको पुनः बुलवाया। मीर क़ासिमने वानसीटार्टको वास्तविक अवस्था बतलाई और कहा कि मेरा जीवन सङ्कटमें है। यदि पूर्व निर्धारित उपायका अवलम्बन न किया गया तो बुराइयोंके उत्पन्न होनेका भय है। वानसीटार्ट अलग कमरेमें जाकर कालियाड योर्क आदिसे बहुत देरतक परामर्श करते रहे। अन्तमें यही निश्चित रहा

---

*Ali Ibrahim answered, "Tell Vansittart whatever is the matter and whatever you have to say. If he does not consent then without going home again send for your troops and money hither and taking your departure from this place march towards Birbhoom and caution yourself there and act as one revolted. As most of the troops are attached to you the emperor and Camcar Khan shall favour your views. It is probable that even in this way your scheme may chance to succeed.—Sayer Mutakherin Vol. II P. 382-83.

कि पूर्व निश्चित युक्तिके अनुसार ही कार्य्य किया जाय। मीर जाफरको एक रोजका समय और दिया गया कि पत्रोंपर विचार कर उसका उचित उत्तर दें। परन्तु मीर जाफरने कुछ भी जवाब नहीं दिया। वानसीटार्टको कुछ बलप्रयोग आवश्यक प्रतीत हुआ। यह तै हुआ कि ३ कार्त्तिक (२० अक्टूबर) को सूर्य्योदयके पहिले सेनाके साथ नवाबका महल घेर लिया जाय। मीर कासिमसे भी ससैन्य आनेको कहा गया। वानसीटार्टने कालियाडको एक पत्र भी मीर जाफरके लिए दिया। उसी समय किन्दूराम, मणिलालको पकड़नेका भी प्रबन्ध किया गया। निर्दिष्ट समयपर कालियाडने सेनाके साथ आकर नवाबका महल घेर लिया। मीर क़ासिम वहाँ पहिलेसे ही उपस्थित थे। कालियाडने वानसीटार्टके पत्रको पहले नवाबके पास भिजवाया। मीर जाफर बहुत रुष्ट हुए और लड़नेकी धमकियाँ देने लगे। समझानेका वहुत कुछ यत्न किया गया परन्तु फल कुछ भी न हुआ। अन्तमें अँगरेज़ी सेनाने जाकर फाटकपर बारूदकी आवाज़ें कीं। फाटकके भीतर जो सेना थी वह बन्दूककी आवाज़ सुनकर भाग खड़ी हुई। मीर जाफर उस समय निर-वलम्ब थे। 'उस समय उन्हें तीन वर्ष पहलेका दिन याद आया होगा जब कि इन्हीं अँगरेज़ोंके साथ मिलकर उन्होंने अपने अन्नदाता और सम्बन्धीके विरुद्ध षड्यन्त्र करके सिंहासन प्राप्त किया था। उसी सिंहासनको आज उनका दूसरा सम्बन्धी उनसे छीननेका यत्न कर रहा था। पिछले तीन वर्षोंके कष्टोंके सामने शेष पचास वर्षोंके तमाम दुःख ठंडे पड़ गये। अवश्य ही वह अपनी वर्तमान अवस्थाका

उस ज़मानेसे मुक़ाबला कर रहे होंगे जब कि पलासी-युद्धमें सिराजुद्दौलाका साथ देकर वह यश प्राप्त कर सकते थे। जिन अँगरेज़ोंने कई बार उनके साथ निष्ठुरताका व्यवहार किया था और जो आज उन्हें पदच्युत करनेकी धमकियाँ दे रहे थे उन लोगोंके विनाशमें यदि वह सहायक हुए होते तो आज उन्हें वास्तविक शक्ति प्राप्त होती, उनका नाम आदरणीय होता और उनका देश स्वतन्त्र रहता। आज जब मीर जाफरने पलक उठाकर देखा तो उनके सामने अँगरेज़ सैनिक महल घेरे खड़े थे। जितना सौजन्य उन्होंने सिराजुद्दौलाके साथ दिखलाया था क्या उससे अधिक सौजन्य या सहानुभूतिकी आशा आज वह मीर क़ासिमसे कर सकते थे?'* नवाब मीर जाफरको अब भली भाँति विदित हो गया कि समय हमारे अनुकूल नहीं है। वह नाममात्रको नवाब रहना नहीं चाहते थे। मीर क़ासिमके पास उन्होंने लिख भेजा कि मैं मुहर और राज्यके अन्य समस्त चिह्न तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। परन्तु राज्यका तमाम भार तुम्हें अपने ही ऊपर लेना होगा। तुम्हें ही सेनाकी शेष तनख्वाह देनी पड़ेगी। मेरी जान और सम्मानकी रक्षा भी तुम्हें करनी होगी, और, इसके अलावा, मेरे निर्वाहके लिए यथेष्ट प्रबन्ध भी करना पड़ेगा। मीर क़ासिमने ये सब बातें मान लीं। मीर जाफर महलसे बाहर निकल आये। सेनाने तमाम फाटकोंपर क़ब्ज़ा कर लिया। गवर्नरको जब यह समाचार मिला तो वह भी घटनास्थलपर आ पहुँचे। मीर जाफरने कहा "मुर्शिदाबादमें मैं अब क्षण भर भी नहीं ठहर सकता।

*Malleson's Decisive Battles of India; p 131.

मेरा जीवन यहाँ सङ्कटमें रहेगा। मैं कलकत्ता जाना चाहता हूँ।" रात भर भी वह मुर्शिदाबाद न ठहर सके। मीर क़ासिमने नावोंका समुचित प्रबन्ध करा दिया। मीर जाफ़र बहुत दिनोंसे इकट्ठा किया हुआ अपना सारा धन साथ लेते गये*। वानसीटार्टने उनकी रक्षाके लिए उनके साथ कुछ अँगरेज़ और देशी सिपाही कर दिये। रात्रिको वह नावपर मुरादबाग़के पास ही रहे और तीसरे दिन कलकत्तेके लिए रवाना हो गये।

३ कार्त्तिक (२० अक्तूबर) को यह विचित्र परिवर्तन घटित हुआ। मीर क़ासिम मसनदपर बैठाये गये। वानसीटार्टने सम्मान प्रदर्शित किया और भेंटादि प्रदान की। शहरके तमाम प्रतिष्ठित व्यक्तियोंने आकर मीर क़ासिमकी अधीनता स्वीकार की। 'सन्ध्यातक ऐसी शान्ति हो गयी मानो अवस्था पूर्ववत् ही रही हो और किसी प्रकारका कोई परिवर्तन हुआ ही न हो।' †
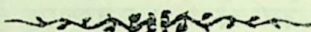
* Mir Jafar assembled leisurely those treasures and inestimable gems and jewels that had been hoarded up for ages together by several ancient families and princes. Sayer-Mutakherin Vol. II P. 386.

† In the evening everything was as perfectly quiet as if there had been no change.—Extracts from Mr. Vansittart's letter to the Select Committee, 21st October, 1760.

४—कलकत्ता-कौंसिलमें मतभेद।

जब बंगालके नवाब-पदसे मीर जाफर हटा दिये गये और उनके स्थानपर मीर क़ासिमका राज्याभिषेक हो गया, तब गवर्नर वानसीटार्टने निम्नलिखित आशयका एक घोषणा-पत्र प्रकाशित किया—

"मीर जाफ़र बड़े ही निर्दयी और लोभी थे। साथ ही वह आलसी भी पहले दर्जेके थे। उनके स्वार्थान्ध मन्त्री चापलूस थे। इनके कारण उनकी दुर्बलताकी और भी वृद्धि होती गयी। इन दुष्टोंके रहते राज्य-प्रबन्धमें किसी प्रकारका सुधार होनेकी संभावना न थी। मीर जाफर समझते थे कि षड्यन्त्रके द्वारा हत्याका सहारा लेकर मैं अपना राज्यकार्य्य उचित रूपसे सम्पादन कर सकूँगा। इसके अनेक प्रमाण हैं। उन्होंने क्रूरताके साथ बहुतोंका खून किया। उनमें कुछ प्रधान नामोंका यहाँ उल्लेख किया जाता है। (१) मीर क़ासिम—यह बख्शी थे। मीरनने इन्हें अपने घर निमन्त्रित कर मरवा डाला। (२) अब्दुल वहाब खाँ नवाबकी आज्ञासे संवत् १८१६ के चैत्र (१७६० के मार्च) महीनेमें मार डाले गये। (३) यार-मुहम्मद—यह सिराजके मित्र थे। संवत् १८१७ के वैशाखमें मीरनके सामने इनका वध किया गया। इनके अतिरिक्त घसीटी बेग़म, मुरादुद्दौला, लतीफुन्निसा बेग़म और उसकी पुत्रीका भी वध किया गया। इस प्रकारके अन्याययुक्त

वधोंसे तमाम प्रतिष्ठित पुरुष मीर जाफरसे घृणा करने लगे थे। नीच प्रकृतिके मनुष्योंने देखा कि इस तरहकी सरकार बहुत दिनोंतक स्थिर नहीं रह सकती। अतएव वे लोग ग़रीब प्रजापर अत्याचार कर धन संग्रह करने लगे। बहुत अधिक कर लगा देनेके कारण अन्नादि वस्तुएँ बहुत ही महँगी हो गयीं। इस दुरवस्थाके मुख्य कारण मुन्नीलाल और चुन्नीलाल हैं। इन्हीं लोगोंके कारण मीर जाफर व्यर्थके आमोद-प्रमोदमें पड़े रहे। खजानेमें रुपया बिलकुल नहीं आया। सेनाका वेतन तक नहीं दिया गया। एक बार सैनिकोंने महलोंको घेर लिया था और मीर जाफरको मार डालनेकी धमकियाँ भी देने लगे थे। मीर क़ासिमने उस समय अपने ऊपर उत्तरदायित्व लिया और अपने पाससे रुपया देकर उन्हें शान्त किया। परन्तु मीर जाफरके आचार-व्यवहारमें इस घटनासे भी कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ। वह उसी तरह आलसी बने रहे और आमोद-प्रमोदमें लिप्त रहे। ऐसी दुर्घटना पुनः एक बार हुई। मीर जाफरको इसकी आशङ्का पहलेसे ही थी। परन्तु उनमें शक्ति न थी कि उसको रोक सकें।

"मीर जाफरके समयमें सारे राज्यमें अराजकता फैली रही। युद्ध-क्षेत्रमें जो दो सेनाएँ थीं वे शाहजादेका साथ देनेका सुअवसर ढूँढ़ रही थीं। बीरभूमका राजा इस तैयारीमें था कि मुर्शिदाबादपर हमला करें। बिशुनपुर, रामगढ़ और अन्य प्रदेशोंके राजा भी अपनेको नवाबसे स्वतन्त्र करनेपर तुले हुए थे। उन्होंने बीरभूमके राजाकी यथाशक्ति सहायता की। तमाम राज्यमें शीघ्र विद्रोह होनेकी आशङ्का थी। इन विद्रोहियोंको दबानेमें केवल सेना

ही समर्थ हो सकती थी परन्तु उसे तो वेतन ही न मिला था अतएव उससे किसी प्रकारकी आशा करना फजूल था।

"बंगालका प्रत्येक व्यक्ति, जो यहाँके राज्य सम्बन्धी विषयोंसे परिचित है, स्वीकार करेगा कि मैं यह तमाम बातें अक्षरशः सत्य कह रहा हूँ। मैंने पहले यत्न किया कि ये दुष्ट मन्त्री बरखवास्त किये जायँ परन्तु जब मैंने देखा कि नवाब ऐसा करनेको तैयार नहीं हैं तब मुझे इस बातके लिए विवश होना पड़ा कि किसी अन्य योग्य व्यक्तिको नवाब-पदपर प्रतिष्ठित करूँ।"

उक्त घोषणासे शीघ्र ही सबको मालूम हो गया कि अब मीर कासिम बंगालके नवाब हैं। साधारणतः बंगालकी जनताको इस परिवर्तनसे आनन्द हुआ। कष्टसे पीड़ित प्रजाको शान्ति और सुखकी आशा बँधी। हाँ, कलकत्ता-कौंसिलके कुछ सदस्योंको यह बात अवश्य बुरी मालूम हुई। कलकत्ता-कौंसिलमें मिस्टर आमियाट नामके एक सदस्य थे जिनका पद क्लाइवके बाद सबसे बड़ा था। उन्हें आशा थी कि क्लाइवके बाद मैं ही बंगालका गवर्नर होऊँगा। परन्तु उनकी आशा पूर्ण नहीं हुई। उनके रहते हुए मद्राससे वानसीटार्टको बुलाकर वह पद दिया गया। आमियाटको यह बात बहुत बुरी मालूम हुई। तबसे उन्होंने हर उचित या अनुचित मामलेमें वानसीटार्टका विरोध करनेका निश्चय कर लिया। इस अभिप्रायसे उन्होंने अपना एक अलग दल ही संघटित कर लिया। इस दलके सदस्योंका उद्देश्य यही था कि वानसीटार्टके हर कार्य्यमें अड़चन डाली जाय। यही कारण है कि जब मीर कासिमको नवाब-पद दिया गया तो उन्होंने इसका विरोध

किया । इस दलके प्रधान सदस्य मिस्टर एलिस, स्मिथ, वेरेलस्ट, आदि थे । इन लोगोंने एक विज्ञप्ति प्रकाशित करायी । उसमें यह दर्शाया गया कि "नवाब मीर जाफर-के पदच्युत करनेके सम्बन्धमें सिलेक्ट कमेटीकी काररवाई बोर्डकी रायके बिना हुई है । सिलेक्ट कमेटीके लिए इस तरहका मनमाना काम करना अनुचित है । नवाबको राज्य-प्रबन्धसे अलग कर हम लोगोंने उस सन्धिको तोड़ डाला जो उनके साथ हुई थी । इस तरहके विश्वासघातसे हम लोग बदनाम होंगे और हमारा प्रभुत्व इस देशसे नष्ट हो जायगा ।"

यथासमय मिस्टर वानसीटार्टने इस विज्ञप्तिका उत्तर प्रकाशित कराया । स्मिथ और वेरेलस्टके निराधार दोषा-रोपणपर इन्होंने आश्चर्य प्रगट किया । बोर्डकी राय न लेनेके सम्बन्धमें जो दोष इनके मत्थे मढ़ा गया था उसके विषयमें इन्होंने लिखा कि बोर्डकी राय इस कारणसे न ली गयी कि इस विषयको गुप्त रखना ही श्रेयस्कर समझा गया । अगर यह बात प्रगट हो जाती तो सफलताकी संभावना न थी । सिलेक्ट कमेटी ऐसे ही अवसरोंके लिए बनायी गयी है ।

मिस्टर वानसीटार्टकी विज्ञप्तिके उत्तरमें मिस्टर आमि-याटने एक अलग वक्तव्य प्रकाशित कराया जिसका आशय यह था—"घोषणा-पत्रमें मीर जाफरको पदच्युत करनेके सम्बन्धमें जो कारण बताये गये हैं वे यथेष्ट नहीं हैं । मीर जाफर द्वारा कुछ अनुचित कार्य्य अवश्य हुए हैं परन्तु जहाँ एक-व्यक्ति-प्रधान शासन है वहाँ ऐसे दोष अनिवार्य्य हुआ करते हैं । हम लोगोंको इस बातपर विचार करना

चाहिये था कि दिल्लीश्वरने मीर जाफरको नवाब मान लिया था। परन्तु मीर क़ासिमके लिए स्वीकृति मिलनेमें कठिनता होगी और खर्च भी बहुत होगा। घोषणा-पत्रमें यह भी दर्शाया गया है कि आरम्भमें हम लोग मीर क़ासिमको मीर जाफरका केवल सहायक बनाना चाहते थे। यह भी मिथ्या है। सन्धि-पत्रसे विदित होता है कि मीर क़ासिम नवाब बनना चाहते थे। यह इसीसे स्पष्ट है कि मीर क़ासिमने कम्पनीको तीन जिले देनेका वादा किया था। भला नायब होते हुए उनको ऐसा करनेका क्या अधिकार था? इसके अतिरिक्त मीर क़ासिम जब अपने श्वशुरके वफादार न हो सके तो हम लोग उनसे क्या आशा रख सकते हैं?"

वानसीटार्ट, कालियाड तथा सिलेक्ट कमेटीके अन्य सदस्योंने जिनकी रायसे मीर क़ासिम नवाब बनाये गये थे आमियाटकी इस विज्ञप्तिका भी यथोचित उत्तर दिया। उनके उत्तरका सारांश यह है—

"यदि आमियाटको विज्ञप्तिकी ध्यानपूर्वक समालोचना की जाय तो संसारको हमारे कार्य्यसे भ्रममें पड़ जानेकी संभावना है। अगस्त तथा सितम्बरके मासमें जब सिलेक्ट कमेटी देशकी विपत्तिजनक अवस्थापर विचार कर रही थी उसी समय मीर जाफरके विरुद्ध काफ़ी प्रमाण मौजूद थे जिनके आधारपर वह अपने पदसे हटाये जा सकते थे। मीर जाफ़रके साथ जो सन्धि हुई थी उसके द्वारा यह भी तै हुआ था कि हमारे शत्रु उनके भी शत्रु हैं। परन्तु उन्होंने डच लोगोंको हमारे विरुद्ध आक्रमण करनेके लिए प्रोत्साहित किया। उस समय यदि हम लोग भी उनसे

अपना सम्बन्ध त्याग देते तो उनका नाश अनिवार्य्य था। मीरनकी मृत्युके पश्चात् एक मीर क़ासिम ही ऐसे रह गये थे जो राज्यका तमाम प्रबन्ध समुचित रूपसे कर सकते थे। परन्तु मीर जाफ़र इस बातके लिए तैयार ही न थे कि मीर क़ासिम उनकी ओरसे राज्य-प्रबन्ध करें। अतएव ऐसी दशामें उनको राज्यच्युत करनेके अतिरिक्त और किया ही क्या जा सकता था? मीर क़ासिम पहलेसे ही सूबेदार होना चाहते थे, इसमें सन्देह नहीं, परन्तु मीर जाफ़रके जीवन-कालमें नहीं। उस समय वह नायब बन कर रहनेमें ही सन्तुष्ट थे। हाँ, मीर जाफ़रकी मृत्युके पश्चात् उन्हें नवाब बननेकी आशा अवश्य थी। रह गया कम्पनीके लिए ज़िलोंके देनेका प्रश्न। सो, यदि मीर कासिम नायब भी रहते तो भी नवाबपर अपना प्रभाव डालकर कम्पनीके लिए उन ज़िलोंको दिला सकते थे। अब हमें देखना यह है कि मीर क़ासिमके नवाब होनेसे लाभ क्या हुआ। पटनेकी अँगरेज़ी सेनाके लिए यथेष्ट धनकी व्यवस्था हो गयी। पाँच लाख रुपयोंकी सहायता भी मिली। सबको मानना पड़ेगा कि पूर्व नवाब कम्पनीको इतना लाभ नहीं पहुँचा सकते थे। मुग़ल-सम्राट्की स्वीकृति-प्राप्ति की कठिनाईका वर्णन आमियाटने किया है। इसका विचार करना अब निरर्थक है। उक्त स्वीकृतिका अब कोई महत्व नहीं रहा। यह भी ठीक ठीक पता नहीं कि इस समय मुग़ल-सम्राट् कौन है और भविष्यमें कौन होगा।"

इस प्रकार मीर क़ासिमके राज्याभिषेकके सम्बन्धमें कलकत्ता-कौंसिलके सदस्योंके दरमियान कुछ दिनोंतक वाद-विवाद जारी रहा। आमियाटने अपने दल सहित

भरसक चेष्टा की कि वानसीटार्टकी बात न रहे। परन्तु इस समयतक वानसीटार्टका ही दल कौंसिलमें अधिक संख्यामें मौजूद था अतएव आमियाटके किये कुछ भी न हो सका। बहुमतसे कलकत्ता-कौंसिलने सिलेक्ट कमेटीके निश्चयका ही समर्थन किया।

५—राजधानीमें शान्ति-स्थापना।

मीर क़ासिम अँगरेजोंकी सहायतासे ही नवाब हुए इसमें सन्देह नहीं, परन्तु वह उन लोगोंके ऋणी होना नहीं चाहते थे। उन लोगोंकी अधीनतामें रहना, उनके आज्ञानुसार चलना, उनके हाथोंका खिलौना बनना, उन्हें स्वीकार नहीं था। उनकी प्रकृति अपने श्वशुरसे बिलकुल भिन्न थी। नवाब होते ही उन्होंने निश्चय कर लिया कि मैं अपने घरका स्वामी स्वयं होकर रहूँगा। उन्हें अपने प्रबन्धमें अँगरेजोंका हस्तक्षेप पसन्द नहीं था। मीर जाफरकी तरह वह अँगरेजोंपर विश्वास करनेको भी तैयार नहीं थे। 'वास्तवमें वह बहुत शीघ्र उन लोगोंसे घृणा करने लगे। ऐसा करनेका उचित कारण भी था, क्योंकि जैसे व्यवहारका परिचय कलकत्तेकी अँगरेजी सरकारने मीर क़ासिमके समयमें दिया था। उससे बढ़कर नीच तथा निर्लज्ज व्यवहारका उल्लेख संसारके किसी भी राष्ट्रके इतिहासमें नहीं मिलता। इस क्षुद्र व्यवहारका एक मात्र कारण धनकी तृष्णा थी। किसी भी नीचसे नीच

उपायका अवलम्बन करनेमें भी, यदि उससे धनसंग्रहमें सहायता मिलती तो, वे नहीं हिचकते थे। यही तृष्णा मनुष्यको डाका डालने और हत्या करनेके लिए भी विवश करती है। वानसीटार्ट और हेस्टिंग्स्के अतिरिक्त कलकत्ता-कौंसिलके अन्य कोई सदस्य डाकुओं और लुच्चोंसे लेशमात्र भी कम न थे।'*

अपना काम निकालनेके लिए मीर क़ासिमने अँगरेज़ोंकी सहायता तो ली थी परन्तु जब उनकी मनोकामना पूर्ण हो गयी तो अब उन्हें यह चिन्ता हुई कि किस भाँति हम इन लोगोंसे पूर्णतः स्वतन्त्र हो जायँ। उन्हें भली भाँति मालूम था कि अँगरेज़ोंके आधिपत्यका प्रधान कारण उनके प्रति हमारा कर्ज़दार बना रहना है। सन्धि द्वारा जितना रुपया देनेकी प्रतिज्ञा उनसे की गयी है यदि वह उन्हें मिल जाय तो फिर उनके पास राज्य-प्रबन्धमें हस्तक्षेप करनेका कोई बहाना न रह जायगा।

---

* In a short time he had come to hate them and he had full reasons to do so, for the annals of no nation contain records of conduct more unworthy, more mean, and more disgraceful than that which characterised the English Government of Calcutta during the three years which followed the removal of Mir Jafar. That conduct is attributable to one reason only, the basest and meanest of all, the desire for personal gain by any means and at any cost. It was the same which animated the robber of the northern clime and the pirate of the southern sea, which had stimulated individuals to robbery and even to murder. In point of morality, the members of the governing clique of Calcutta from 1760-63, Messrs Vansittart and Hastings excepted, were not one whit better than the perpetrators of such deeds.

—Malleson's Decisive Battles of India P. 133.

नवाब मीर क़ासिमने देखा तो कोषमें केवल पचास हज़ार रुपये थे। बरतन और जवाहरात बेचकर चार-पाँच लाख और मिल सकते थे। हिसाब-किताब बिलकुल गड़बड़ीमें पड़ा हुआ था। एक तरफ अँगरेज़ोंका ऋण चुकाना था, दूसरी ओर सेनाका कई महीनोंका बकाया वेतन भी देना था। इस अवसरपर मीर क़ासिमने अपूर्व कार्य्यकुशलताका परिचय दिया। नवाबकी कार्य्यपटुता देखकर यह अनुमान हुए बिना नहीं रह सकता कि 'यदि वह स्वतन्त्रतापूर्वक शासन-कार्य्य करने पाते तो बड़े अच्छे शासक हो सकते थे'।* उन्होंने तमाम अफ़सरोंको बुलवाया और इस बातके लिए इन्हें मजबूर किया कि ये ठीक ठीक हिसाब बतलायें। हिसाबमें बहुतसी बेईमानियोंका पता लगा। कुछ पुराने अफ़सरोंको उन्होंने अपनी ओर मिला लिया और इनकी सहायतासे रुपये, जवाहरात तथा अन्य वस्तुओंका ठीक ठीक पता मालूम कर लिया। उन्होंने कई मित्रों और विश्वासपात्र व्यक्तियोंको मालगुज़ारीके रुपयोंका हिसाब जाँचनेका काम सौंपा। इन लोगोंमें एक अली इब्राहमखां भी थे। यह नवाब मीर क़ासिमके घनिष्ठ मित्र थे। हिसाब-किताबके मामलेमें यह बड़े चतुर थे। इनकी सहायताके निमित्त सीताराम नामक एक अफसर नियुक्त किये गये। सीताराम बड़े ही अक्खड़ पुरुष थे, किसी भी अफ़सरसे इनकी नहीं पटती थी। यही कारण है कि मीर क़ासिमने इन लोगाकी

---

*"......had he been left to the exercise of independent powers he might have become a very good ruler".—British History by Hugh Murray

त्रुटियोंका पता लगानेके लिए सीतारामको नियुक्त किया। दीवानखानेका हिसाब जाँचनेपर बहुत रुपयोंका ग़बन निकला। इस बातका भी पता चला कि चुन्नीलाल और मुन्नीलाल प्रजाका धन खा खा कर मालामाल हो गये हैं। मीर क़ासिमके आदेशानुसार ये दोनों क़ैद कर लिये गये और जो कुछ धन जनतापर अत्याचार करके तथा चुराकर इन लोगोंने इकट्ठा किया था वह ज़ब्त कर लिया गया। इस प्रकार नवाब मीर क़ासिमको यथेष्ट धनकी प्राप्ति हुई।

बचपनसे ही नवाब अलीवर्दीके परिवारसे मीर क़ासिमका सम्बन्ध था। यह मीर जाफ़रके दामाद थे और मीर जाफ़रकी सौतेली बहिनका विवाह अलीवर्दीसे हुआ था। उसीकी सिफ़ारिशसे मीर क़ासिमको सेनामें एक छोटी जगह मिल गयी थी। उसी समयसे तमाम दफ्तरोंमें जानेका अवसर मीर क़ासिमको प्राप्त होने लगा था। तभीसे वह अफसरोंके घरोंपर भी आया जाया करते थे। इन लोगोंसे मीर क़ासिमका विशेष रूपसे मेल-जोल हो गया था और इन लोगोंके स्वभावसे भी वह भली-भाँति परिचित हो गये थे। यही कारण है कि इन लोगोंकी बेईमानियोंका पता लगानेमें उन्हें विशेष कष्ट नहीं हुआ। इन लोगोंका हिसाब जाँचा गया और पापकी कुल कमाई ज़ब्त कर ली गयी। दीवानखानेके बही-खातोंसे मालूम हुआ कि अन्तःपुरमें काम करने वाली कुछ औरतोंके सिपुर्द बहुतसा जवाहरात, सोना तथा अन्य सामान किया गया था। पहले तो इन स्त्रियोंने अपनी अनभिज्ञता प्रगट की परन्तु जब डरायी धमकायी गयीं तो ये सब राहपर आ गयीं। कुल सामान इन्हें लौटाना पड़ा।

पुराने कर्मचारियोंमें एक राजा जगत्सिंह थे। इन्होंने बहुत कालतक जानकीराम और दुर्ल्लभरामकी मातहतीमें काम किया था। नौकरीके दिनोंमें इन्होंने बहुतसा धन उपार्जन किया था। वृद्ध होनेके कारण यह राज्य-कार्य्यसे अलग हो गये थे। जब इन्होंने देखा कि समय अनुकूल नहीं है तो अभी तक जो कुछ धन अनुचित उपायों द्वारा इन्होंने संग्रह किया था उस सबकी एक सूची तैयार की और कुल द्रव्य नवाबके पास भेज दिया। जगत्सिंहकी सचाईसे मीर क़ासिम बड़े प्रसन्न हुए और इन्हें वह सर्वदा सम्मानकी दृष्टिसे देखते रहे। जगत्सिंह द्वारा मीर क़ासिमको अच्छी रक़म हाथ लगी।

इधर नवाबने अपना निजी खर्च भी घटा दिया। बहुत सी फ़ज़ूलखर्चियाँ केवल प्रथाके कारण बहुत दिनों-से चली आती थीं। भेड़, बुलबुल, हिरन इत्यादि केवल तमाशेके लिए रक्खे जाते थे। नवाबने इन सबको बेच डाला। इस ढंगसे भी यथेष्ट धनकी प्राप्ति हुई। सेनाकी जो तनख्वाह शेष रह गयी थी उन्होंने दे डाली। सन्धिके अनुसार अँगरेजोंको जो कुछ रुपया देना रह गया था उसका भी दो-तिहाई उन्होंने तत्काल ही दे डाला। साथ ही सिलेक्ट कमेटीके सदस्योंका पुरस्कार भी दे डालनेके लिए वह तैयार थे। परन्तु उस समय उन लोगोंने लेनेसे इनकार किया और कहा कि राज्यकी व्यवस्था जब ठीक हो जायगी तब हम अपना पुरस्कार प्रसन्नतापूर्वक ले लेंगे। यह धन नवाबने थोड़े ही दिनों बाद उन्हें दे दिया।*

* Notwithstanding the reluctance in accepting them at his installation they were before very long actually paid.— Broome.

इस प्रकार हम देखते हैं कि थोड़े ही समयमें राजधानीका तमाम प्रबन्ध नवाब मीर क़ासिमने ठीक कर दिया। सैनिकोंका वेतन अब महीनों बाकी नहीं रहता था। हर महीने वे लोग अपना वेतन पा जाया करते थे। राज्यके तमाम मुहकमे यथोचित रूपसे कार्य्य करने लगे। राजधानीमें अब पूर्ण शान्तिका निवास था। मीर जाफरके समयमें राज्यके प्रजा-जन दुःखित थे। लालची मन्त्रियाके अत्याचारोंसे उनका जीवन कष्टमय और असह्य हो गया था। अब वे सुख और शान्तिके साथ अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। किसीमें अब यह साहस न था कि उन्हें किसी प्रकारका कष्ट पहुँचा सके। चारों ओर शान्ति और सुखका साम्राज्य था।

६—ज़मीन्दारोंका दमन।

जधानीमें तो शान्ति स्थापित हो गयी परन्तु राज्यके अन्य भागोंमें अभी तक गड़बड़ी मची हुई थी। चारों ओर अराजकताका साम्राज्य था। बिहार प्रान्त तो केवल नाम मात्रके लिए नवाबके अधीन रह गया था। पटना दुर्ग और चहलसतूनके अतिरिक्त तमाम प्रान्त उनके हाथसे निकल चुका था। कमकर खाँ दिल्लीश्वरके साथ मिल कर उत्पात मचा रहे थे। अवसर पाकर यहाँके ज़मीन्दार भी प्रबल हो उठे थे। सरकारी खज़ानेमें मालगुजारी देना

इन लोगोंने एकदम बन्द कर दिया था। साथ ही लूटपाट मचाना भी आरम्भ कर दिया था। यही हाल बंगालका भी था। मीर जाफरकी अव्यवस्थासे लाभ उठा कर यहाँके ज़मींदारोंने भी अपना सर ऊँचा किया और शक्तिशाली बन बैठे। चारों ओर अशान्तिका प्रकोप हो उठा था। जब नवाब मीर क़ासिमने राजधानीमें अमन और शान्ति पूर्ण रूपसे क़ायम कर ली तो उनका ध्यान इस ओर भी आकर्षित हुआ। पहले उन्होंने यही निश्चय किया कि ज़मीन्दारोंकी शक्तिको चूर्ण करें और उन्हें अपने बसमें करें।

इन दिनों बंगालमें सबसे प्रबल ज़मींदार बीरभूमके राजा थे। इनके पास एक बड़ी सेना थी। यह स्वयं भी अपनी शूरताके लिए प्रख्यात थे। पहले बीरभूमके जमींदार बदीउज़्ज़मा खाँ थे। यौवन-कालमें अपने समयका अधिकांश इन्होंने भोगविलासमें ही व्यतीत किया था। इसीसे अपनी रियासतका सारा प्रबन्ध इन्होंने अपने पुत्र अलीनक़ी खाँके जिम्मे कर रक्खा था। अलीनक़ी खाँ अभी पूर्ण यौवनको प्राप्त ही हुए थे कि शीघ्र ही वह इस संसारसे चल बसे। इस असामयिक दुर्घटनासे बदीउज़्ज़माके शोकका वारपार न रहा। राज्यका सारा प्रबन्ध अपने दूसरे पुत्र वासिदजमां खाँको सौंप वह स्वयं फकीर हो गये। इन्हीं दिनोंमें मीर क़ासिमको बंगालकी सूबेदारी मिली। नवाबको इस समय रुपयेकी बड़ी आवश्यकता थी। अतएव उन्होंने वासिदज़माँ खाँसे मालगुज़ारीके अतिरिक्त और भी कुछ रुपया माँगा। परन्तु वासिदने रुपया देनेसे इनकार किया। इसी बहानेसे मीर क़ासिमने बीरभूमपर चढ़ाई की।

नवाबने मुर्शिदाबादसे दस कोसकी दूरीपर बदगाँव नामक स्थानपर पड़ाव डाला। यहाँसे ख़्वाजा मुहम्मदी खाँको बीरभूमके राजाके विरुद्ध सेना लेकर आगे भेजा। मेजर योर्ककी अधीनतामें एक अँगरेज़ी सेना भी वहाँ भेजी गयी। ख़्वाजा मुहम्मदीको यह आज्ञा थी कि वह सेना लेकर आगे बढ़ें और यदि संभव हो तो अँगरेज़ोंके पहुँचनेके पहले ही युद्ध समाप्त कर दें। उधर वासिदज़मां-खाँने अपने पिताको राजधानीका कारोबार देखनेके लिए छोड़ दिया और स्वयं पाँच हज़ार घुड़सवार और बीस हज़ार पैदल सेना लेकर आगे बढ़े। करीआ नामके स्थान-पर उन्होंने अपना पड़ाव डाला और आस पासके रास्ते, घाटियों और पहाड़ियोंमें शत्रुओंकी बाढ़को रोकनेके लिए सेना तैनात कर दी।

नवाबकी जो सेना ख्वाजा मुहम्मदीके अधीन भेजी गयी थी उसने उनके आदेशका पालन नहीं किया। वह आगे बढ़कर शत्रुके मुक़ाबलेमें खड़ी न रह सकी। अँगरेज़ी सेनाने वासिदकी फौजपर आक्रमण किया। लड़ाई बहुत देरतक न हुई। थोड़ी ही देरमें अँगरेज़ोंने शत्रुदलके बहुतसे आदमियोंको मार गिराया। इस प्रकार वासिद जमाँकी सेनाकी हार हुई। मीर क़ासिम विजयी हुए परन्तु इसी युद्धसे उन्हें अपनी कमज़ोरी भी विदित हो गयी। उनकी एक बड़ी सेना खड़ी खड़ी मुँह देखती रही और केवल थोड़ेसे अँगरेज़ सिपाहियोंने उनका पक्ष ग्रहण कर वासिदके सिपाहियोंको नीचा दिखाया। मीर क़ासिम-ने इसी समय यह अनुभव किया कि हमें भी अपनी सेना-को अँगरेज़ी ढंगपर संघटित करनेकी आवश्यकता है।

बीरभूमके राजाको परास्त करनेके पश्चात् नवाबका ध्यान कुछ अन्य आवश्यक कार्य्योंकी ओर आकर्षित हुआ। सम्राट्के साथ युद्ध समाप्त हो चुका था और सन्धिकी बातचीत हो रही थी। नवाबको अजीमाबाद जाना पड़ा और वहाँ उन्हें कुछ दिनोंतक रुकना पड़ा। जब सम्राट् विहार प्रान्तसे चले गये और बिहारमें शान्ति-स्थापनके लक्षण दिखाई देने लगे तो उन्होंने वहाँके जमींदारोंकी भी खबर लेनी चाही। उन्होंने दरबारमें प्रान्तके मुख्य मुख्य जमींदारोंको बुलवाया। कमकरखाँको जब सरकारी परवाना मिला तो वह बड़े भयभीत हुए। उन्होंने बहुत दिनोंसे मालगुज़ारीका रुपया नहीं चुकाया था। इसके अतिरिक्त नवाबके खिलाफ़ उन्होंने दिल्लीश्वरका साथ दिया था। उन्हें भय था कि दरबारमें उपस्थित होनेपर कहीं हमारी खबर न ली जाय। इसी डरसे उन्होंने सरकारी आज्ञाकी अवहेलना की। वह अपनी सेनाके साथ रामगढ़की पहाड़ियोंको चले गये और वहीं छिप रहे। कमकरके अतिरिक्त दो मुख्य जमींदार बुनियादसिंह और फ़तहसिंह थे। इन लोगोंने सरकारी आज्ञाका पालन किया। ये तुरन्त अज़ीमाबादके लिए चल खड़े हुए और वहाँ पहुँचनेपर गिरफ़्तार कर लिये गये। फुलवनसिंह आदि शाहाबादके जमीन्दारोंकी भी दरबारमें तलबी थी। इन लोगोंने राज्यमें बड़े उत्पात मचाये थे और प्रजापर बहुत अत्याचार किये थे। अतएव इन्हें दरबारमें आनेका साहस नहीं हुआ। मीर क़ासिमने पहले तो अपने भतीजे अलीखाँको कमकरखाँका प्रदेश अधिकारमें करनेके लिए भेजा। तत्पश्चात फुलवनसिंह आदि जमींदारोंको दण्ड देनेके लिए

सहसराम और शाहाबाद जानेके लिए स्वयं प्रस्तुत हो गये। फुलवनसिंह आदि जमींदारोंका मीर क़ासिमके विरुद्ध बहुत देरतक ठहरना असंभव था। इन लोगोंने गङ्गा नदी पार की और गाज़ीपुर शुजाउद्दौलाके राज्यमें भाग गये। नवाबने इन लोगोंकी जमींदारियोंपर अधिकार कर लिया और अपने तहसीलदार और फौजदार उनकी देखरेखके लिए मुकर्रर कर दिये।

इस प्रकार नवाब मीर क़ासिमने जमींदारोंकी शक्ति बहुत कुछ चूर्ण कर दी। मीर क़ासिम अपने मनमें जमींदारोंसे बहुत कुढ़ते थे। मालूम होता है कि इस समय इन लोगोंके प्रति आमतौरसे घृणाके भाव लोगोंमें मौजूद थे। सैर-उल-मुताख़रीनके लेखक सैयद गुलाम हुसैनने एक जगह इन लोगोंकी बड़ी निन्दा की है। वह एक जगह लिखते हैं—"जमींदार बड़े विश्वासघाती, अदूरदर्शी और नमकहराम होते हैं। जरा भी घात लगी कि ये लोग अपने स्वामीको पीठ दिखाने और उत्पात मचानेके लिए तैयार हो जाते हैं।" जो हो उस समय तो ज़रूर ही ये लोग शासनकी निर्बलता और अराजकतासे लाभ उठा कर बड़े शक्तिशाली बन बैठे थे। इनके उत्पातसे राज्यके लिए शान्ति असम्भव सी हो गयी थी। मीर क़ासिमने इन लोगोंको नीचा दिखाया। इन लोगोंने कई छोटेमोटे क़िले भी बनवा डाले थे। उन सबको नवाबने धराशायी करवा डाला।

७—शाह आलमसे सन्धि।
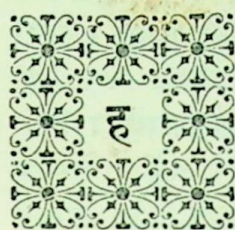
हम द्वितीय अध्यायमें लिख चुके हैं कि वर्षा ऋतुका आरम्भ हो जानेके कारण अँगरेजी सेना पटनेमें कुछ दिनोंके लिए निश्चेष्ट पड़ी रही। दिल्लीश्वर और मिस्टर लाके विरुद्ध वह कोई भी कार-रवाई न कर सकी। जब वर्षा समाप्त हो गयी तो अँगरेजी सेना शहरके बाहर आयी। यह निश्चय हुआ कि मिस्टर ला और कमकरखांके साथ मिलकर शाह आलम जो उत्पात मचाये हुए हैं वे शान्त किये जायँ। शहरके बाहर जाफरखां-बागमें इनका पड़ाव पड़ा। सेनापति मिस्टर चारनाकने रामनारायण तथा राजवल्लभके पास समाचार भेजा कि वे भी अपनी फौजोंके साथ आकर सम्मिलित हों। परन्तु इन दोनोंने चारनाकका साथ नहीं दिया और टालमटोल करते रहे। अतएव अँगरेजी सेना अकेले ही आगे बढ़नेके लिए प्रस्तुत हुई। चारनाकने नवाबके पास एक आदमी बदगाँवको भेज दिया जहाँ वह इस समय वीरभूमके राजासे लड़नेमें व्यस्त थे।

इस समय बादशाह शाह आलम गया-मानपुरमें थे। वहाँ चारनाक अपनी सेनाके साथ पहुँच गये। दोनों दलोंमें युद्ध हुआ। मिस्टर ला अपनी थोड़ी सी सेना और तोपोंके सहारे अँगरेजोंके साथ बड़ी बहादुरीसे लड़ते रहे। परन्तु विजयलक्ष्मी अँगरेजोंसे ही प्रसन्न थी। कमकरखाँ

तो मैदानसे भाग खड़े हुए। बादशाहको भी जब कुछ होते दिखाई नहीं दिया तो वह भी चल खड़े हुए। यह हाल देखकर मिस्टर लाके साथ जो थोड़ी सी सेना बची थी वह भी भाग खड़ी हुई। ला इस समय युद्धक्षेत्र-में अकेले थे, परन्तु लड़नेसे उन्होंने मुँह नहीं मोड़ा। वीर-ताके साथ वह डटे ही रहे। मेजर चारनाकको जब यह हाल मालूम हुआ तो वह अपनी रक्षाका कुछ प्रबन्ध किये बिना ही अपने सेनानायकोंके साथ उस ओर बढ़े। मिस्टर लाके निकट पहुँच कर सब लोगोंने सिरसे टोप उतार लिया और उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। मिस्टर लाने भी उसी भाँति टोप उतार कर सलामका उत्तर दिया। इसके बाद मिस्टर चारनाकने लाकी बहादुरी, उनके साहस और दृढ़ताकी प्रशंसा की और कहा "एक वीर मनुष्यसे जो कुछ आशा की जा सकती थी वह सब आपने कर दिखाया। इतिहासमें आपका नाम अमर हो कर रहेगा। अब कृपया मियानमें अपनी तलवार रख लीजिये। हम लोगोंमें सम्मिलित हो जाइये और अँगरेजों-के साथ लड़नेका विचार छोड़ दीजिये।" *

मिस्टर लाने उत्तर दिया "यदि आप यह बात स्वीकार करें कि मैं जिस अवस्थामें हूँ उसीमें आत्म-सम-र्पण करूँ तो इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु शस्त्रहीन होकर आत्म-समर्पण करनेको मैं तैयार नहीं हूँ।

* You have done everything that could be expected from a brave man and your name shall undoubtedly be transmitted to posterity by the pen of history, now loosen your sword from your loins, come amongst us and abandon all thoughts of contending with the English, Sayer-ul-Mutakherin, Vol. II, 401.

इस प्रकारकी आत्मग्लानि सहन करनेमें मैं असमर्थ हूँ।"* मेजर चारनाकने यह स्वीकार कर लिया। इसके बाद मिस्टर लाने आत्म-समर्पण किया। मेजर चारनाकने अपने अन्य अफसरोंके साथ मिस्टर लासे हाथ मिलाया। बिचारे ला अब कर ही क्या सकते थे। यथाशक्ति वह अँगरेज़ोंका मूलोच्छेद करनेके निमित्त निरन्तर चेष्टा करते रहे। समय समयपर उन्होंने अपनी वीरताका अलौकिक परिचय दिया। परन्तु अब वह निराश्रय थे, अतः अब अधिक कुछ करनेमें असमर्थ थे।

युद्ध समाप्त होनेके पश्चात् चारनाकने शितावराय द्वारा दिल्लीश्वरके पास यह सन्देशा भेजा कि हम आपके साथ शान्ति स्थापित करना चाहते हैं और आपसे मिलनेकी भी इच्छा रखते हैं। परन्तु शाह आलमने हामी नहीं भरी। उन्हें अभी कमकरखाँकी आशा बनी हुई थी। वह समझते थे कि उनकी सहायतासे बणिकोंको हम उनकी उद्दण्डता-का मज़ा चखावेंगे। उन्हें पता नहीं था कि इस समय अँगरेज़ोंका काफी संघटन है और हमारा मददगार इस अवसरपर वास्तवमें कोई नहीं है। ऐसी अवस्थामें अँग-रेज़ोंको नीचा दिखाना टेढ़ी खीर है। बिचारे शाह आलम-को यह कहाँ मालूम था कि वह दिन अब बहुत दूर नहीं है जब मुग़ल-साम्राज्यका जर्जरित दुर्ग भूतलशायी हो जायगा और यही वणिक जाति समस्त भारतवर्षकी अधी-

---

*The other answered that if they would accept of his surrendering himself just as he was, he had no objection; but that as to surrendering himself with the disgrace of being without his sword, it was a shame he would never submit to."

—Sayer-ul-Mutakherin, Vol. II, 402.

श्वर बन बैठेगी। उन्होंने शिताबरायसे साफ साफ कह दिया कि हमें सन्धि स्वीकार नहीं है। उक्त उत्तर देते समय बादशाहने शायद यह सोचा होगा कि बादशाह और साधारण प्रजामें सन्धि कैसी, सन्धि तो बराबरीके आदमियोंमें होती है। शिताबरायने बिदा होते समय यह भविष्यद्वाणी की थी कि "जिस सुलहको आज आप ठुकरा रहे हैं उसीके लिए आप एक दिन स्वयं प्रार्थना करेंगे, पर वह न मिलेगी और यदि अँगरेज सुलहके लिए तत्पर हुए भी, तो वे उतनी रियायत करनेके लिए तैयार न होंगे जितनीके लिए वे आज तैयार हैं।" बादशाहके हृदयपर इन बातोंका तनिक भी प्रभाव न पड़ा। शिताब-राय अपने कार्य्यमें असफल होकर लौट आये।

इसी समय दिल्लीमें एक बिचित्र परिवर्तन हुआ। शाही क़िलेपर मराठोंका अधिकार हो गया और उन लोगोंने शाहजहाँ नामक एक बालकको, जिसे वज़ीर उमाद-उल-मुल्कने गद्दीपर बैठाया था, कैद कर लिया। मराठे चाहते थे कि दिल्लीपर अपनी विजयपताका फहरा कर हम अवध आदि प्रदेशोंको भी विजय करें और फिर बंगालमें आकर अँगरेज़ोंसे टक्कर लें। वे चाहते थे कि हम समस्त भारत-वर्षके एकमात्र शासक हों। इसी दरमियानमें अहमदशाह अब्दालीने भारतपर आक्रमण किया। पानीपतके मैदानमें घमासान युद्ध हुआ। सुजाउद्दौला, नजीबउद्दौला, हाफिज़ रहमत खाँ आदि समस्त मुसलमान सरदारोंने अब्दालीका साथ दिया। मराठोंकी गहरी हार हुई। नौ महीनेतक दिल्लीमें रहकर अहमद शाह अपनी राजधानीको लौट गया। बिदा होते समय वह शुजाउद्दौला तथा अन्य मुस-

लमान सरदारोंको यह ताकीद करता गया कि शाह आलमको राजगद्दी देना और उन्हें अपना सम्राट् स्वीकार करना । तदनुसार शाह आलमको लानेके लिए शुजाउ-द्दौला बंगालकी सीमा तक गये । वहाँसे इन्होंने शाह आलमके पास पत्र भेजा और दिल्ली लौटनेकी प्रार्थना की । यह पत्र बादशाह शाह आलमको इन्हीं दिनोंमें मिला । दिल्ली लौटना उनके लिए परम आवश्यक था । वह अधिक दिनों तक नहीं ठहर सकते थे । यद्यपि उन्होंने शिताबरायको लौटा दिया था परन्तु थोड़ी ही देर बाद उन्हें अपनी भूल मालूम हुई । उन्हें यह बात भी मालूम हो गयी कि कमकरखाँसे सहायताकी आशा रखना बेकार है । अतएव उन्होंने एक पत्र लिख कर फिर शिताबराय-को बुलवाया । शिताबराय मेजर चारनाकसे आज्ञा लेकर बादशाहके पड़ावको फिर वापस आये । वहाँ यह निश्चित हुआ कि मेजर चारनाक बादशाहसे आकर मिलें ।

शिताबरायके लौटनेके पश्चात् बादशाहने अँगरेज़ी सेना-के पास ही अपना पड़ाव डाला । अगला दिन अँगरेज़ी सेनापतिसे भेंटके लिए निश्चित हुआ । हाथीपर सवार होकर बादशाह आगे बढ़े । उधरसे मेजर चारनाक अन्य सेनापतियोंके साथ आध कोसकी दूरीपर आते दिखाई दिये । वहाँसे मेजर अपने घोड़ेसे उतर पड़े । उन्होंने अपना टोप माथेसे अलग कर लिया और उसी अवस्थामें पैदल ही बादशाहकी ओर बढ़े । दिल्लीश्वरने अँगरेज़ी सेनापति चारनाकको घोड़ेपर सवार होनेकी आज्ञा दी । तदनुसार मेजर अपने घोड़ेपर सवार हो गये और बाद-शाहके साथ साथ चले । गयासे डेढ़ कोसकी दूरीपर

जमुनी नदीके किनारे इन लोगोंने अपना पड़ाव डाला। मेजरकी प्रार्थनासे शाह आलम कुछ और आगे बढ़े और गया शहरके निकटवर्ती एक बाग़में ठहरे। कुछ ही देरमें मेजर चारनाक अपने सेनानायकोंको लिये हुए रामनारायण, राजवल्लभ और अन्य कर्मचारियोंके साथ बादशाहके खेमेमें आये। सब सम्राट्के सामने ताज़ीम बजा लाये और नज़राना दिया। दूसरे दिन बादशाहने गयामें पड़ाव डाला। दो दिन विश्राम करनेके पश्चात् सब लोग अज़ीमाबादकी ओर बढ़े। सम्राट् दक्षिणकी ओर मतीपुरकी झीलके पास ठहरे। अँगरेज़ोंका पड़ाव बाँकीपुरमें पड़ा। रामनारायण शहरको गये और राजवल्लभने जाफ़रखाँके बाग़में डेरा डाला।

बादशाहके साथ अँगरेजोंकी सन्धि हो गयी, इसका संवाद नवाब मीर कासिमको भी बहुत शीघ्र मिल गया। बदगाँवमें अब वह अधिक न ठहर सके। उन्हें अज़ीमाबाद आना पड़ा। शहरके पास ही सेनाके साथ उन्होंने पड़ाव डाला। नवाबके आगमनकी सूचना जब रामनारायण और राजवल्लभको मिली तो वे लोग तत्काल उनसे मिलने आये और सम्मान प्रगट किया। थोड़ी देर बाद रामनारायण तो दुर्गको लौट गये परन्तु राजवल्लभने वहीं अपना पड़ाव डाल दिया। उपयुक्त समय पाकर अँगरेज़ सेनापति चारनाक भी नवाब मीर क़ासिमसे मिले। चारनाककी इच्छा थी कि नवाब और बादशाह दोनोंका परस्पर साक्षात्कार होजाय। परन्तु नवाब बादशाहके पड़ावमें जाकर उनसे मिलनेके लिए तैयार नहीं हुए। अन्तमें यह निश्चित हुआ कि अँगरेज़ी फैक्टरीमें बादशाहका दरबार हो और वहीं

मीर क़ासिम आकर बादशाहकी ताज़ीम बजा लायँ और उनकी अधीनता स्वीकार करें।

नियत दिनको अँगरेज़ोंने अपनी फैक्टरी सजायी। छोटी मोटी बेञ्चोंको जोड़जाड़ कर तख्त बनाया गया। वहीं आकर बादशाहने आसन जमाया। तख्तकी बाईं और दाहिनी ओर अँगरेज खड़े थे।

बादशाहने मेजर चारनाकको बैठ जानेकी आज्ञा दी। मेजरने सलाम कर उक्त आदेशका पालन किया। घण्टे भर बाद नवाब मीर क़ासिम भी उपस्थित हुए। उन्होंने बड़े सम्मानके साथ तीन बार झुककर सलाम किया और एक हज़ार एक अशर्फियाँ भेंट कीं। बादशाहने नज़र स्वीकार की। तत्पश्चात् नवाबको उन्होंने खिलत दिया। खिलत लेकर नवाबने तीन बार पुनः सलाम किया और दूसरे कमरेको चले गये। वहाँपर अँगरेज़ अफ़सरोंके साथ बादशाहको सालाना मालगुजारी देनेके सम्बन्धमें वादविवाद हुआ। अन्तमें यह निश्चित हुआ कि नवाब मीर क़ासिम बादशाहको चौबीस लाख रुपया मालगुज़ारी सालाना दिया करेंगे। अँगरेज़ोंसे सलाह कर बादशाहने यह मालगुजारी स्वीकार कर ली। फिर दरबार बरखास्त हुआ।

कुछ दिनोंतक बादशाह पटनेमें ही ठहरे रहे, फिर दिल्लीके लिए रवाना हुए। करमनासा नदी पार करते ही शुजाउद्दौलासे मुलाकात हुई। वह वहाँ पहलेसे ही बादशाहके आगमनकी राह देख रहा था। वहाँसे दोनों आगे बढ़े। यथासमय बादशाह अपनी राजधानी पहुँच गये।
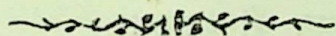
८—रामनारायणको दण्ड।

दिल्लीश्वरके चले जानेके बाद नवाब मीर क़ासिमका ध्यान रामनारायणकी ओर आकर्षित हुआ। नवाब अलीवर्दीके समयमें जैनउद्दीन पटनाके शासक थे। रामनारायण इन्हींके नायब थे। बादको विद्रोही अफ़गानों द्वारा जैनउद्दीन मार डाले गये। तबसे रामनारायणको ही पटना प्रान्तका शासन-भार सौंपा गया। जब मीर जाफर नवाब हुए तो इन्होंने तमाम हिन्दुओंको कुचल डालनेका निश्चय किया। रामनारायणको भी राज्य-प्रबन्धसे अलग करनेकी इनकी इच्छा थी। परन्तु क्लाइवने रामनारायणका पक्ष ग्रहण किया, अतः वह अपने पद-पर ही स्थित रहे और अँगरेज़ोंके भरोसे धीरे धीरे राज्यका कार्य्य स्वच्छन्दतापूर्वक करने लगे। अन्तमें एक प्रकारसे वह स्वतन्त्र ही हो गये।

नवाब मीर क़ासिमने तो नवाब होते ही यह निश्चय कर लिया था कि अपने राज्यमें मैं शान्तिकी स्थापना करूँगा। अपने किसी भी अफ़सरकी उच्छृङ्खलता और कुप्रबन्धको सहन करनेके लिए वह तैयार नहीं थे। ज्योंही दिल्लीश्वरसे उन्हें छुट्टी मिली रामनारायणकी ख़बर लेनेका उन्होंने निश्चय किया। उन्होंने तत्काल कलकत्ता-कौंसिलको एक पत्र लिखा और प्रार्थना की कि रामनारायणसे पिछले वर्षोंका हिसाब लेनेकी आज्ञा दी जाय।

नवाबने आज्ञा-प्राप्तिके लिए अपने प्रतिनिधि स्वरूप* सैयद गुलाम हुसैनको कलकत्ता भेजा। यह तो पहले ही बतला दिया गया है कि वानसीटार्टके आनेके पश्चात् कलकत्ता-कौंसिलमें दो दल हो गये थे। वानसीटार्टके प्रत्येक कार्य्यका विरोध करना मि० आमियाटने अपना कर्तव्य समझ रक्खा था। यह देखकर कि वानसीटार्टने नवाब मीर क़ासिमका पक्ष लिया है, आमियाटको नवाबके विरुद्ध रामनारायणका पक्ष लेना आवश्यक प्रतीत हुआ। सैयद गुलाम हुसैन जब कलकत्ता पहुँचे और मि० आमियाटसे अपने आनेका उद्देश्य प्रकट किया तो उन्होंने जवाब दिया —"यह आपको भली भाँति मालूम है कि रामनारायणके साथ मेरी घनिष्ठता नहीं है, उनके हानि-लाभकी मुझे तनिक भी परवा नहीं है, परन्तु वानसीटार्टसे मेरी अनबन है और उन्होंने मीर क़ासिमका पक्ष ग्रहण किया है, अतएव मेरे लिए यही उचित है कि उनके विरोधमें मैं रामनारायणका साथ दूँ।"† आपसकी इस तनातनीके कारण कुछ दिनोंतक नवाबको रामनारायणके विरुद्ध किसी तरहकी काररवाई करनेकी आज्ञा प्राप्त न हुई।

इन्हीं दिनोंमें जनरल कूट पटनेमें अँगरेज़ी सेनाके सेनापति होकर आये थे। इन्होंने ही क्लाइवकी आज्ञासे

---

* Sayed Ghulam Hussain, the author of Sayer-Mutakherin.

† He (Amyatt) spoke to me one day" "You know very well that I had never any particular attachment to Ramnarayan but as Mr. Vansittart promoted Mir Kassim, and has declared himself his protecter so it behoves me in consequence of that settled jealousy that subsists between us to side with Ramnarayan" Sayer Mutakherin Vol, II. 416.

मिस्टर लाका बक्सरतक पीछा किया था । बादको यह अपने देशको चले गये थे । इस बार फिर हिन्दुस्तानमें अँगरेज़ी सेनाके अध्यक्ष-पद पर नियुक्त होकर लौटे थे। ७ वैशाख (२२ अप्रैल) को मिस्टर कूट पटनेके लिए रवाना हुए । चलते समय सिलेक् कमेटीकी तरफसे इन्हें निम्नलिखित आदेश दिये गये थे:—

(१) नवाबकी सरकारसे हम लोगोंका जो कुछ पावना रह गया है उसे प्राप्त करनेका यत्न कीजिये ।

(२) नवाबको हर तरहकी उचित सहायता देते रहिये ।

(३) नवाब और रामनारायणके पारस्परिक कलहको दूर करनेकी कोशिश कीजिये और रामनारायणका नवाबके द्वारा कोई अनिष्ट न हो इसका ख्याल रखिये ।

रामनारायण समयपर चूकनेवाले मनुष्य नहीं थे। अवसर पाकर मिस्टर कूटको उन्होंने अपने पक्षमें मिला लिया । नवाबकी तरफसे उनके हृदयमें बुरे बुरे विचार उत्पन्न कर दिये । वानसीटार्टने नवाबको पहले ही लिख दिया था कि आप मिस्टर कूटके साथ मित्रताका व्यवहार करें। नवाबने उक्त आदेशका पूर्ण रूपसे पालन किया, परन्तु कूटने सर्वदा इसके विपरीत आचरणका अवलम्बन किया । वह नवाबके साथ किसी भी उचित कार्य्यमें सहयोग करनेको तैयार नहीं थे, वरन् नवाबका अनिष्ट करनेपर ही वह तुले हुए थे । हर तरहसे वह नवाबको नीचा दिखाना चाहते थे । शहरके फाटकोंपर अँगरेजी सिपाहियोंका पहरा बैठा दिया गया और नवाबके आदमियोंको भीतर बाहर आने जानेकी मनाही हो गयी ।

नवाबने कूटके पास एक पत्र लिख कर निवेदन किया कि सिपाही फाटकोंसे हटा लिये जायँ परन्तु मिस्टर कूटने इसपर ध्यान न दिया, उलटे बिगड़ खड़े हुए और कहा कि मैं नवाबसे अब किसी प्रकारका सम्बन्ध नहीं रक्खूँगा, फाटकसे सिपाही नहीं हटाये जा सकते, नवाबको मेरी आज्ञाओंका पालन करना पड़ेगा।

मिस्टर कूटका सहारा पाकर रामनारायणका दिमाग़ और भी बढ़ गया था। नवाबको अब अधिक कठिनाई पड़ी। उन्होंने कलकत्ता-कौंसिलको रामनारायण और कूट दोनोंकी शिकायत लिख भेजी। रामनारायणके सम्बन्धमें उन्होंने लिखा कि इसकी शरारत नित्य प्रति बढ़ती जा रही है और मेरे कारोबारका सत्यानाश हो रहा है। कलकत्ता-कौंसिलने कूटको आदेश किया कि आप रामनारायण और नवाबका झगड़ा पञ्चायतसे तै कर दें। कूटने कौंसिलकी आज्ञाओंका पालन नहीं किया, बहाने आदिमें ही तमाम समय टाल दिया। नवाबने यह इच्छा प्रगट की कि रामनारायण हिसाब ठीक होनेतक मुअत्तल रहे। उसे पदच्युत करनेकी बात तो दूर रही, कूट इसके लिए भी तैयार न थे कि हिसाब-किताब साफ़ हो। इस प्रकार समय व्यतीत होता गया। नवाबके लिए सुख स्वप्न सा हो गया।

रामनारायणको सर्वदा यही चिन्ता रहती थी कि किस तरहसे नवाबका सर्वनाश हो। झूठी झूठी ख़बरोंसे वह सर्वदा नवाबके विरुद्ध मिस्टर कूटके कान भरता था। एक दिन उसने मिस्टर कूटको यह खबर दी कि कल तड़के नवाब अँगरेज़ी सेनापर हमला करेंगे। मिस्टर कूटने

तत्काल सबको सचेत हो जानेकी आज्ञा दी और रातके समय थोड़ेसे सिपाहियोंको लेकर नवाबके पड़ावपर आ पहुँचे। नवाबके हरकारोंने उन्हें खबर दी परन्तु नवाबने अँगरेज़ी सेनाकी उच्छृंखलताका उत्तर नहीं दिया। इधर मिस्टर वाट्स नवाबके निवासस्थानमें घुस गये और ज़ोर ज़ोरसे पुकारने लगे "नवाब कहाँ है"? "नवाब कहाँ है?" इसके पश्चात् बड़े क्रोधके साथ मिस्टर कूट भी अपनी सेना सहित आ पहुँचे। अन्तःपुरमें जाकर इन लोगोंने शोरगुल मचाया। परन्तु नवाबकी ओर तो युद्धकी कोई तैयारी थी ही नहीं। नवाब अँगरेजोंपर आक्रमण करेंगे, यह समाचार बिलकुल निर्मूल प्रमाणित हुआ। अतएव ये लोग वापस लौट आये।

मीर क़ासिमने दूसरे ही दिन कलकत्तेको वानसीटार्टके पास पत्र लिखा। उसमें इन कुल घटनाओंका उल्लेख किया। अन्तमें लिखा कि "जब मेरे नौकर, मेरी सेना और मेरे अफसर यह बात सुनेंगे तो वे मेरे विषयमें क्या सोचेंगे, यह आप स्वयं विचार सकते हैं। उन्हें मालूम हो जायगा कि अँगरेज ही सब कुछ हैं और मैं तुच्छ हूँ। उनकी दृष्टिमें मैं गिर जाऊँगा!" नवाबने एक और भी पत्र वानसीटार्टके पास लिखा था उससे पता चलता है कि उन्हें इस समय कितनी परेशानी थी। वह लिखते हैं कि—"आठ महीनेसे एक दिन भी मैं चैनसे नहीं बैठ सका। मैं हर प्रकारके सङ्कटसे घिरा हूँ। सेना वेतनके लिए शोर मचा रही है। रामनारायणके कारण झगड़े तथा फसाद और भी बढ़ रहे हैं। मेरा जीवन खतरेमें है। ईश्वरके लिए मुझे निस्सहाय न छोड़िये वरन्

मेरी सहायता कीजिये। मेरी तमाम आशाएँ आपपर ही निर्भर हैं। मुझे डर है कि सेना मीर जाफरकी तरह मेरे घरको भी घेर लेगी। उस समय मेरी इज़्ज़त मिट्टीमें मिल जायगी।"

इन दिनों मिस्टर मेकगायर भी पटनेमें ही थे। उन्होंने भी एक पत्र वानसीटार्टके पास लिखा। पूर्वोक्त रात्रिकी सारी घटनाओंका उल्लेख करते हुए अन्तमें पत्रको यों समाप्त किया—"अपने सेनापतिको इतने अधिक अधिकार देनेमें क्या हानि है, यह मैंने प्रत्यक्ष देख लिया। नवाबको सर्वदा अपने ही आदमियोंसे डर रहता है। यदि आप नवाबकी सहायता करनेमें असमर्थ हैं तो रामनारायणको ही सूबेदार बना दें जिससे इन दुःखित महापुरुषको यह अवसर मिल जाय कि यह मुर्शिदाबाद जाकर एक दिन शान्तिसे बिता सकें जो इनके लिए अभी तक तो स्वप्न ही रही है"।*

वानसीटार्टने इस मामलेको कौंसिलमें पेश करते हुए कहा कि "नवाबको अनेक अनुचित कष्ट दिये गये हैं। उनका हम लोगोंमें विश्वास है, उनमें इनसाफ और नम्रता है। यदि उनके स्थानपर कोई और पुरुष होता तो अभी-तक हम लोगोंसे झगड़ा अवश्य छिड़ जाता।" वानसी-टार्टने अपनी यह राय प्रगट की कि मिस्टर कूट वहाँसे बुला

* If you find yourself unable to carry the Navab through his present difficulties let the Rajah be declared Subah and let this miserable great man return unglorious, disgraced and despised to Murshidabad to enjoy a single day of quiet to which he has been an entire stranger ever since his arrival here.

M' guire's letter to Mr. Vansittart, 17th June 1761

लिये जायँ और कोई अन्य आदमी उनके स्थानपर भेजा जाय जो हम लोगोंके आदेशका पालन करे। नवाबको यह अधिकार दे दिया जाय कि वह अपने आश्रितोंके साथ जिस तरहका व्यवहार उचित समझें करें। गवर्नरकी सलाह कौंसिलने मान ली। मिस्टर कूट बुला लिये गये और नवाबको यह अधिकार दे दिया गया कि रामनारायणका हिसाब-किताब वह देखभाल सकते हैं।

कलकत्ता कौंसिलसे जब रामनारायणके साथ यथोचित व्यवहार करनेकी आज्ञा नवाब मीर क़ासिमको मिल गयी तो उन्होंने रामनारायणको बुलवाया और आज्ञा दी कि दरबारमें तुम्हें अपने ही अफसरोंके सामने अपने प्रान्तकी मालगुज़ारीके रुपयेका हिसाब देना होगा और तमाम रसीदें भी पेश करनी होंगी। परन्तु रामनारायण हिसाब दे ही क्या सकता था? यदि ईमानदारीसे उसने अपने कर्तव्यका पालन किया होता तो हिसाब कभीका दे दिया गया होता। उसके हिसाब-किताबमें तो धूर्तता, चालबाज़ी, और बेईमानी भरी हुई थी।

जब हिसाब देनेकी बारी आयी तो रामनारायण बड़ा ही चिन्तित हुआ। उसका विश्वास था कि जबतक मिस्टर आमियाट कौंसिलमें हैं तबतक मेरा कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। परन्तु अब उसकी तमाम आशाओंपर पानी फिर गया। उसको यह बात अच्छी तरहसे मालूम होगयी कि अब चालाकी चल नहीं सकती। इसपर भी आरम्भमें उसने अपने आदमियोंको बहीखाते लेकर चम्पत हो जानेका आदेश किया, परन्तु नवाबके आदमियोंकी आँखोंको ये धोखा न दे सके। इनका पता लग

गया और ये गिरफ्तार कर लिये गये। पहले सुन्दरसिंह पकड़ा गया और कारावासमें बन्द कर दिया गया। इसको सेनाका हिसाब सौंपा गया था। उसमें बहुत सी भूलोंका पता लगा। बहुत कुछ रुपया सुन्दरसिंह हजम कर गया था। इसकी तमाम जायदाद ज़ब्त कर ली गयी। मनसाराम और गंगाविशुन नामके दो व्यक्तियोंपर यह अभियोग लगाया गया कि सुन्दरसिंहका बहुत कुछ धन इन लोगोंने चुरा रखा है। इस अपराधमें इनका धन भी ज़ब्त कर लिया गया। मुहमद अफ़ाक और राजा मुरलीधर रामनारायणके साथी थे। प्रजापर मनमाना अत्याचार कर इन लोगोंने बहुतसा रुपया इकट्ठा किया था। इन लोगोंको भी कारावासकी हवा खानी पड़ी। इनकी सारी जायदाद मीर क़ासिमको प्राप्त हुई।

रामनारायणने जब अपने साथियोंकी यह दुर्दशा देखी तो उसका कलुषित हृदय काँप उठा। उसको मालूम हो गया कि अब नवाबके क्रोधसे बचना असम्भव है। उसने नवाबकी दयापर ही अपनेको छोड़ देना उचित समझा। नवाबने रामनारायणको गिरफ़्तार कर लिया। उसका सब कुछ जब्त कर लिया गया। कुछ दिनोंतक तो वह अजीमाबादमें ही क़ैद रक्खा गया लेकिन बादको अपने सम्बन्धियोंके साथ मुर्शिदाबाद भेज दिया गया।

नवाब मीर क़ासिमने रामनारायणको दण्ड देकर अपने कर्तव्यका पालन किया, यह बात बहुतसे इतिहासज्ञ नहीं मानते। वे नवाब मीर क़ासिमको रामनारायणके प्रति उक्त व्यवहारके कारण दोषी ठहराते हैं और इस कार्यको अक्षम्य निर्दयता समझते हैं। साथ ही नवाबको कलकत्ता-

कौंसिलने अपने एक आश्रितके साथ यथोचित व्यवहार करनेकी आज्ञा दे दी, इसलिए कलकत्ता-कौंसिलपर भी कुछ इतिहास लेखकोंने क्रोध प्रगट किया है। थोरएटन साहब लिखते हैं "ब्रिटिश सरकारने रामनारायणकी रक्षा पहले कई वर्षोंतक की थी, उससे सहसा पराङ्मुख होकर कौंसिलने बड़ी गलती की।" * अब देखना यह है कि उक्त कार्योंके लिए नवाब मीर क़ासिम कहाँतक दोषी हैं। क्या सचमुच नवाबने अपने कर्तव्यके विपरीत आचरण किया ?

रामनारायण पटनेका नायब था। उसकी नियुक्ति नवाबकी ओरसे हुई थी। वह स्वतन्त्र नहीं था, नवाबका आश्रित मात्र था। परन्तु उसने अपने कर्तव्यका पालन नहीं किया। वह तो अपना स्वार्थ साधनेमें ही लगा रहा। हर तरहकी बेईमानी द्वारा उसने अपने धनकी वृद्धि की। अपने अन्नदाताके साथ उसने विश्वास-घात किया, नवाबके विरुद्ध उसने विद्रोह किया। हर प्रकारसे अपने मालिकका अनिष्ट करनेपर उसने कमर कस ली थी। कई बार तो उनकी जान लेनेका भी उसने यत्न किया। १८ वीं शताब्दीका ज़माना आज नहीं है, परन्तु इस २० वीं शताब्दीमें भी इतने बड़े अपराधका दण्ड मृत्यु है। नवाबने इस बड़े अपराधके लिए उस समय रामनारायणकी जान नहीं ली केवल क़ैदमें रक्खा और उसकी जायदाद

---

* The governor and the Council erred no less grossly and still more fatally in withdrawing from the person of Ramnarayan that protection which the continued countenance of the British government for several years entitled him to expect.

Thoronton's History of the British Empire p. 421.

जब्त कर ली। यदि निष्पक्ष भावसे विचार किया जाय तो कहना होगा कि इससे कम दण्ड इतने बड़े अपराधीके लिए नहीं हो सकता था। नवाबने वही किया जो एक न्यायी शासकको करना चाहिये था।

६—सैनिक सङ्घटन।

जब नवाब मीर क़ासिमने जमीन्दारोंकी शक्ति पूर्णतः विच्छिन्न कर दी और रामनारायणको भी पदच्युत कर दिया तब धीरे धीरे तमाम राज्यमें शान्तिकी स्थापना हो गयी। कर-वसूलीकी व्यवस्था भी बड़े ही अच्छे ढङ्गपर कर दी गयी जिससे आमदनी बहुत अधिक बढ़ गयी। अब नवाबका ध्यान सैनिक सङ्घटनकी ओर आकर्षित हुआ।

नवाब मीर क़ासिमकी यह प्रबल इच्छा थी कि अँगरेज़ोंसे हम पूर्णतः स्वतन्त्र होकर रहें, हमारे शासन-प्रबन्धमें ये लोग किसी प्रकारका भी हस्तक्षेप न कर सकें। उन्हें डर था कि सिराजुद्दौला और मीर जाफरके विरुद्ध जिस कुटिल नीतिका अवलम्बन किया गया था कहीं मैं भी उसी नीतिका शिकार न बनूं। अँगरेज़ोंपर उनका तनिक भी विश्वास नहीं था और संभवतः वे विश्वास-के पात्र थे भी नहीं। अतएव नवाबने अपनी रक्षाका प्रबन्ध करना परम आवश्यक समझा। अपनी सैनिक शक्तिकी दुर्बलताका अनुभव पहले पहल उन्हें बदगाँवमें हुआ था। वीरभूमके राजाके विरुद्ध लड़ाईमें नवाबकी

बड़ी सेना कुछ भी नहीं कर सकी थी। वह निश्चेष्ट खड़ी रही। केवल थोड़ेसे अँगरेजोंने राजाकी बड़ी सेनाको पराजित किया। उस बार नवाबको मालूम हो गया कि जिस ढङ्गपर हमारी सेना सङ्घटित है वह ठीक नहीं है। अँगरेज़ी सेनाकी उत्तमता उनके हृदयमें बैठ गयी। उन्होंने साफ साफ देख लिया कि यदि अँगरेज़ोंके मुकाबलेमें हमें मज़बूत बनना है तो सेनाका सङ्घटन उन्हींके ढङ्गपर करना होगा।

नवाब मीर क़ासिम योग्य और अनुभवी सेनापतियोंको ढूँढनेमें तत्पर हो गये। गुरगीन ख़ाँ इनके प्रधान सेनापति थे। इनपर नवाबका बड़ा विश्वास था। मुताखरीनके लेखक सैयद गुलाम हुसैनने गुरग़ीन खाँकी बड़ी निन्दाकी है। वह लिखता है "यदि नवाबके साथ किसीने विश्वासघात किया तो वह गुरग़ीन खाँ था। शैतानकी तरह वह मीर क़ासिमके पीछे पड़ा था। गुरग़ीन प्रधान सेनापति बनाया गया। परन्तु कपड़ा बेचनेवाले एक मामूली व्यापारीमें भला यह योग्यता कहाँ कि सेनाका सञ्चालन वह कर सके।" वास्तविक घटनाओंपर दृष्टिपात करनेसे उक्त लेखककी ये बातें पूर्णतः मिथ्या सिद्ध होती हैं। इतिहाससे प्रगट है कि यह गुरगीन खांके ही परिश्रम और अनुभवका परिणाम था कि नवाबकी पैदल और घुड़सवार सेनाएँ अँगरेज़ी ढंगपर संघटित हुईं। गुरगीन अभी नवाबके सिपाहियोंको पूरे तौरसे तैयार न कर सके थे, तो भी इनके द्वारा तैयार किये गये केवल थोड़ेसे सिपाहियोंने कारस्टेयर* की एक बड़ी सेनाको

---

* Carstair.

पराजित किया था। यदि गुरग़ीनको तैयारीके लिए दो वर्षका समय और मिल जाता तो निस्सन्देह वह नवाबकी सैनिक शक्ति इतनी प्रबल कर देते कि अँगरेजोंको उससे पार पाना असंभव हो जाता। अँगरेज़ोंके कुव्यवहारसे रुष्ट होकर जब नवाब कभी कभी आपेसे बाहर हो जाते तो गुरग़ीन उनको शान्त करते और कहते कि सहन करते जाइये। अभी आप तैयार नहीं हैं। क्रोधको तबतक दबाये रखिये जबतक वह समय न आजाय कि आपके डैनोंमें भी पंख लग जायँ।

नवाबके मुख्य सेनापतियोंमें फारसके रहनेवाले मुहम्मद तकी खां भी थे। नवाबकी तरफ़से वह वीर-भूमके फ़ौजदार नियत हुए थे। उन्हें आज्ञा थी कि सेना संग्रह करो और सैनिकोंको शिक्षा दो। उक्त आदेशानुसार मुहम्मद तकीने एक अच्छी सेना तैयार कर ली।

समरू नामके एक अन्य योग्य व्यक्तिका पता भी नवाबको लगा। समरूकी राष्ट्रीयताका ठीक ठीक हाल विदित नहीं है। इस विषयमें विद्वानोंमें बड़ा ही मतभेद है। फ्रांसीसी लेखक मुसतक़ाके कथनानुसार समरू जरमन थे। सलीमन लिखते हैं कि समरू आस्ट्रिया-निवासी थे। किसी किसीका कहना है कि यह फ्रांसीसी थे। पहले यह फ्रांसीसियोंकी नौकरीमें थे। तत्पश्चात् अन्य बहुतसे फ्रांसीसियोंके साथ इन्होंने अँगरेज़ोंके यहाँ नौकरी कर ली। जब सिराजने कलकत्ता अँगरेज़ोंके हाथसे ले लिया तो समरू फिर फ्रांसीसियोंकी ओर लौट आये, किन्तु इन्हें फिर उनका साथ छोड़ना पड़ा। जब यह इधर उधर भटक रहे थे तो नवाब मीर क़ासिमसे

इनकी भेंट हुई। नवाबने इन्हें अपने यहाँ नौकर रख लिया। इनके द्वारा अपनी सैनिक-शक्ति दृढ़ करनेमें नवाबको यथेष्ट सहायता मिली। मारकर नामके एक अन्य व्यक्तिको भी नवाबने अपनी सेनामें स्थान दिया था। इस प्रकार उन्होंने कई योग्य सेनापतियोंको चुन चुनकर सेना-सञ्चालनके कार्यपर नियुक्त किया।

नवाब मीर क़ासिमने बन्दूक, गोले, बारूद, पिस्तौल और युद्धकी अन्य आवश्यक सामग्रीका संग्रह करना तथा तैयार कराना भी आरम्भ कर दिया था। नवाबके यहां जो गोले तैयार होते थे वे बहुत अच्छे होते थे। विलायतसे जो अँगरेजी गोले कम्पनीके प्रयोगके लिए मँगाये जाते थे वे भी उनकी बराबरी नहीं कर सकते थे। कलकत्ता-कौंसिलके आदेशानुसार कुछ अफसर इस बातकी जाँचके लिए नियुक्त हुए थे। उनकी भी यही राय थी कि नवाबके गोले और पिस्तौल आदि कम्पनीके गोलों आदिसे अच्छे हैं।

१०—गुप्तचर-विभाग।

राज्य-प्रबन्धका कार्य उचित रूपसे सम्पादित करनेके लिए तथा अपनी शक्ति स्थायी बनाये रखनेके लिए यह आवश्यक होता है कि गुप्तचर-विभाग भी शासनकी ओरसे क़ायम किया जाय। नवाब मीर क़ासिमके लिए तो यह बहुत ही आवश्यक था। सिराजुद्दौलाको पदच्युत करनेके लिए षड्यन्त्र रचा जा चुका था। मीर जाफर भी बहुत दिनों तक शान्तिसे राज्य न कर पाये थे। अब मीर क़ासिम नवाब हुए। इन्हें भी शत्रुओंसे आशङ्का बनी रहती थी। बिहारमें विशेषतः शाहाबादकी ओर तो बिलकुल नये सिरेसे इनकी शक्ति स्थापित हुई थी। यहाँ पहले ज़मींदारोंकी तूती बोलती थी। नवाबने उनकी शक्तिका पूर्णतया विच्छेद किया था। नवाबका दबदबा यहाँ एकदम नया था। अतः उन्हें सर्वदा यह भय बना रहता था कि भागे हुए ज़मींदार कोई षड्यन्त्र न रचें, कोई नया उत्पात न खड़ा करें। इन्हीं कारणोंसे नवाबने गुप्तचर-विभागकी स्थापना की। राजा सुखलाल नवाबके प्रधान गुप्तचर थे। इनके अतिरिक्त दो और मुख्य गुप्तचर थे। इनमेंसे प्रत्येकके अधीन लगभग दो सौ आदमी नियत थे। इन्हीं गुप्तचरों द्वारा हर प्रकारके समाचार प्रधान गुप्तचरोंको मिलते थे। जो जो बातें इन्हें मालूम होती थीं, उन्हें ये लोग नवाबके कानोंतक पहुँचा देते थे।

गुप्तचर-विभागके कारण राज्यप्रबन्धमें नवाबको बड़ी सुविधा हुई । उन्हें बहुतसी ऐसी गुप्त बातोंका पता लगता रहता था जिन्हें न जाननेसे शासन-कार्य्यमें विशेष हानिकी संभावना थी ।

कल्ब अलीखाँ और हैदर अली खाँ भागलपुरके फौजदारके पुत्र थे । ये लोग गोरखपुरके राजाके साथ नवाबकी इच्छाके विरुद्ध पत्रव्यवहार कर रहे थे । नन्नूमल नामके गुप्तचरने इस बातका पता लगाया । दोनों भाई क़ैद कर लिये गये ।

राजा सीताराम नवाबके मन्त्रियोंमेंसे थे । इनके द्वारा शाहाबादकी ओर नवाबके बहुतसे आवश्यक कार्य्य सम्पादित होते थे । इन्होंने अत्याचारपर कमर कस ली थी और रिश्वत लेनेमें भी यह कोई संकोच न करते थे । जिन लोगोंका इनसे काम पड़ जाता था उनसे मनमाना रुपया वसूल करते थे । बिचारे असहाय प्रजाजन निरर्थक सताये जाते थे और रुपयेवाले रुपया देकर छुटकारा पा जाते थे । इस प्रकार प्रायः न्यायका गला घोंटा जाता था । नवाबके राज्यसे ग़ाज़ीपुरमें भागे हुए कुछ जमींदारोंके साथ यह पत्र-व्यवहार भी कर रहे थे ।❀ नवाबने इन्हें भी क़ैद करनेकी आज्ञा दी ।

❀ सीतारामने निम्नलिखित आशयका पत्र फुलवनसिंहको लिखा था :—

मैं आपको देखनेकी बहुत इच्छा रखता हूँ । ईश्वर करे आप अपने देशको तुरन्त लौट आवें । और ऐसा होनेकी बहुत संभावना भी है, क्योंकि नवाब और अँगरेजोंमें अनबन है । गुरगीनखाँ और एलिसमें भी दुश्मनी है । एलिसने मुंगेरके किलेपर दखल-

इन लोगोंके अतिरिक्त सैदुल्ला भी नवाबके क्रोधके शिकार हुए। ग़ाज़ीपुरमें भागे हुए जमींदारोंके साथ यह भी पत्र-व्यवहार कर रहे थे। गुप्तचरोंने इनके पत्रोंका पता लगाया और नवाबके सामने उन्हें पेश किया। यह भी गिरफ्तार कर लिये गये।

११—मुङ्गेरको राजधानी बनाना।

शाहाबादके जमींदारोंकी शक्ति चूर्ण कर नवाब कुछ दिनोंतक सहसराममें ठहरे रहे। वहाँसे वह रोहतासगढ़की देखभालके लिए रवाना हुए। अपने आनेका समाचार नवाबने रोहतासगढ़के गवर्नर नासिर अलीखाँ और उनके नायब शाहूमलको पहलेसे ही भेज दिया था। रोहतासगढ़में पहुँच कर नवाबने क़िलेकी परिक्रमा की। वहाँ दो एक दिन रहकर वह सहसरामको लौट आये। नवाबके आज्ञानुसार शाहूमल गिरफ़्तार कर लिये गये। मीर मेहँदीखाँ शाहाबादके गवर्नर नियुक्त हुए। इन्हींके अधीन रोहतासगढ़का क़िला भी रखा गया। इनकी सहायताके लिए शाह मुहम्मद

करनेके लिए सेना भी भेजी है। ऐसी अवस्थामें नवाब यहां नहीं रह सकते। शायद वह दिल्ली जायँगे। शुजाउद्दौला उस सूबेका मालिक हो जायगा और आपको अपनी जमीन्दारी वापिस मिल जायगी।—'नैरेटिव आफ वानसीटार्ट'से अनुवादित।

अकबर खाँ नियत किये गये। इन्हें शाहाबादकी सीमा परके जमींदारोंपर कड़ी निगाह रखनेका आदेश दिया गया था। समरूको थोड़ीसी सेनाके साथ बकसरमें रहनेकी आज्ञा दी गयी।

शाहबादमें शान्तिकी व्यवस्था कर नवाब अज़ीमाबादके लिए रवाना हुए। जानेके पहले उन्होंने राजवल्लभको बुलवाया और उन्हें क़ैद कर लिया। उनके स्थानपर राजा नौबतराय अज़ीमाबादके नायब मुक़र्रर हुए। तत्पश्चात् बड़ोही धूमधामसे नवाब अज़ीमाबादमें दाख़िल हुए। उन्होंने आज्ञा दी कि क़िला और शहरकी दीवारें मज़बूत की जायँ। अज़ीमाबादके शासनका उचित प्रबन्ध करनेके बाद नवाब मुंगेरको चल दिये।

इसके पश्चात् प्रधानतया अँगरेजोंके हस्तक्षेपसे बचनेके उद्देश्यसे नवाबने मुर्शिदाबादसे हटाकर मुंगेरमें अपनी राजधानी स्थापित की। मुंगेर कलकत्तेसे बहुत दूरीपर था। वहाँ रहकर नवाब स्वतन्त्रताके साथ अपना शासन-प्रबन्ध कर सकते थे। इसके अतिरिक्त मुंगेरकी स्थिति भी ऐसी थी कि नवाब वहाँ अपनी रक्षाके विषयमें बहुत कुछ निश्चिन्त रह सकते थे। मुंगेर आकर वह बड़े ही उत्साहके साथ राज्य-प्रबन्धमें प्रवृत्त हो गये।

१२—नवाबकी शिकायत।

नवाब मीर क़ासिम अँगरेजोंसे डरते थे, यह बात नहीं थी। हाँ, इसमें सन्देह नहीं कि नवाबका सैनिक संघटन अभी पूरा नहीं हुआ था। अभी वह अपनेको इस योग्य नहीं समझते थे कि अँगरेजोंसे युद्ध ठान सकें। परन्तु वास्तविक बात यह थी कि वह शान्तिसे काम निकालना चाहते थे। उन्होंने गवर्नर वानसीटार्टके पास एक पत्र लिखा जिसका आशय इस प्रकार है—

"जिस दिनसे मेरे और आपके वोच सन्धि हुई और मैं बंगालसे बिहार प्रान्तको आया उस दिनसे आजतक सन्धिका मैंने अक्षरशः पालन किया। मैंने न तो आपके किसी भी आदमीको तंग किया, न आपके व्यापारमें ही अड़चन डाली और न मैंने उन प्रान्तोंमें एक भी आदमी मालगुजारी वसूल करनेके निमित्त भेजा जो सन्धिके द्वारा मैंने कम्पनीको दे दिये हैं। मेरी तरफसे कोई ऐसा कार्य्य नहीं हुआ जिससे यह प्रमाणित हो कि मेरा कोई भी आदमी हम लोगोंके बीच अविश्वास उत्पन्न करना चाहता है।

"अब आप कृपा कर अपने लोगोंके कारनामे भी सुन लीजिये। वे लोग हर जगह उत्पात मचाते हैं और प्रजाको लूटते हैं। वे हमारे नौकरोंकी बेइज़्ज़ती करते हैं और इस बातपर तुले हुए हैं कि तमाम भारतवर्षमें मेरे प्रति घृणा-का भाव लोगोंमें उत्पन्न हो। हर गाँव और परगनेमें दस

दस पन्द्रह पन्द्रह फैक्टरियाँ उन लोगोंने बना ली हैं और अँगरेजी झण्डे तथा कम्पनीके दस्तकके बलपर हर प्रकार-से देशी व्यापारियों और असहाय प्रजापर अत्याचार करते हैं।

"आपने मुझे एक दस्तक दिया था जिसके द्वारा मुझे यह अधिकार प्राप्त है कि मैं नावोंकी तलाशी ले सकता हूँ। उक्त दस्तकको अपने अफसरोंके पास हर चौकीपर मैंने भेज दिया। परन्तु अँगरेजी व्यापारी उस दस्तककी अवहेलना करते हैं। मना करनेपर मेरे अफसरोंको गालियाँ देते हैं और उनके लिए अपमानजनक शब्दोंका प्रयोग करते हैं। वे लोग इस प्रकारका व्यापार करने लगे हैं जो कम्पनीने आजतक नहीं किया। हर स्थानपर वे नमक, पान, घी, चावल, मांस, मछली, तम्बाकू इत्यादि वस्तुओंका व्यापार करते हैं। चौथाई मूल्य देकर लोगोंसे सामान खरीदते है और जबर्दस्ती बेच कर पँचगुनी कीमत वसूल करते हैं। हर साल मुझे २५ लाख रुपयेका घाटा है। गुमाश्तेको यह अधिकार प्राप्त है कि वह हमारे कल-कृरोंको क़ैद कर सकता है।

"मैं आशा करता हूँ कि खरीद और बिक्रीके इन घृणित ढँगोंको रोकनेका प्रबन्ध आप करेंगे। ईश्वरकी कृपासे मैंने सन्धिकी कोई भी शर्त आजतक नहीं तोड़ी, न तोड़ता हूँ और न आगे तोड़ूँगा। तब क्या कारण है कि अँगरेज़ लोग मुझे हानि पहुँचानेपर तुले हैं? कृपया बिना विलम्ब इन बातोंपर विचार कीजिये, क्योंकि इन दोषोंके कारण प्रजामें मेरे शासनकी ओरसे घृणा-भावकी वृद्धि हो रही है।"

जब गवर्नर वानसीर्टाटको नवाबका यह पत्र मिला तो उन्होंने बोर्डकी एक बैठक करवायी और पत्र वहाँ पेश किया। यह तै हुआ कि गवर्नर मुंगेर भेजे जायँ और इनके साथ मिस्टर हेस्टिङ्ग्ज़ भी जायँ। ये झगड़ोंके मूल कारणोंका पता लगावें और उन्हें दूर करनेका प्रबन्ध करें।
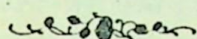
१३—मुंगेरका निश्चय।

कौंसिलके निर्णयानुसार गवर्नर वानसीटार्ट और मिस्टर हेस्टिङ्ग्ज़ने नवाबसे मिलनेके निमित्त कलकत्तेसे प्रस्थान किया। यथासमय कासिम बाज़ार, मुर्शिदाबाद और बर्दवान होते हुए ये लोग मुंगेर पहुँचे। नवाब राजधानी छोड़ कर तीन कोस आगे इनके स्वागतार्थ पहिलेसे ही आये हुए थे। वहाँसे तीनोंने साथ साथ चल कर शहरमें प्रवेश किया। गवर्नर और हेस्टिङ्ग्ज़के ठहरनेका प्रबन्ध सीताकुण्डके पास किया गया। अतिथि-सत्कारका भार गुरग़ीन खाँके सिपुर्द हुआ। अतिथियोंके सुविधार्थ हर प्रकारका उचित प्रबन्ध कर नवाब अपने डेरेको लौट आये। दूसरे दिन वानसीटार्ट नवाबसे भेंट करने गये। नवाबने उनका बड़ा आदर किया। अपने मसनदपर उन्हें बिठाया और बहुत सी मूल्यवान् वस्तुएं उन्हें भेंट कीं। दो दिन बाद नवाब भी गवर्नरके पड़ावमें गये। चलते समय वानसीटार्टने चीन और विलायतके बने हुए बहुतसे बहुमूल्य

पदार्थ भेंटमें दिये। चौथे दिन नवाबने गवर्नरको तोपघर, बन्दूक, पिस्तौल, गोले, बारूद इत्यादि दिखाये और उनके सामने गोलन्दाज़ सेनाकी क़वायद करवायी।

गवर्नर वानसीटार्टने जब ये तैयारियाँ देखीं तो उन्हें इसका अर्थ समझनेमें देर न लगी। उनका माथा ठनका और उन्होंने नवाबको निम्नलिखित उपदेश दिया—"मैंने आपकी सेना देखी और मैं इस बातको स्वीकार करता हूँ कि आपने इसे बड़े अच्छे ढंगपर संघटित किया है। परन्तु इसका प्रयोग हिन्दुस्तानियोंके ही विरुद्ध हो सकता है। इस सेनाके भरोसे अँगरेज़ोंसे युद्ध करनेका विचार आप कभी न करना। नहीं तो आप पछतायँगे। व्यर्थ ही आपके देशके सम्मानपर बट्टा लग जायगा क्योंकि यदि आप अपनी सर्वोत्तम सेना सहित पराजित हुए तो यूरोपवाले अन्य सभी हिन्दुस्थानियोंको तुच्छ दृष्टिसे देखने लगेंगे। यदि हम लोगोंसे लड़ना है तो दलीलोंसे लड़िये और रुपयेसे काम लीजिये। इस प्रकारकी तैयारियाँ त्याग दीजिये क्योंकि यदि लड़ाई हो गयी तो आपके नाशके साथ साथ असंख्य आदमियोंका नाश होगा।"*

मिस्टर वानसीटार्टकी शिक्षासे क्या अर्थ निकलता है, यह पाठक भली प्रकार समझ सकते हैं। यद्यपि उन्होंने बनावटी तौरपर कह दिया कि तुम्हारी सेना अँगरेज़ोंके साथ लड़कर सफलता प्राप्त नहीं कर सकती पर वास्तवमें उनके पेटमें खलबली मची हुई थी। अभीतक तो वह यही समझे हुए थे कि नवाब असहाय हैं, केवल हमारी कृपाके भिखारी हैं। परन्तु आज उन्हें पहले पहल मालूम

* सैर-उल-मुताखरीन, जिल्द २, पृष्ठ ४४४-४५.

हुआ कि नवाब अभीतक बैठे नहीं थे। अब केवल भिक्षाका ही अवलम्ब उन्हें न था। वह दृढ़ तैयारियोंमें लगे हैं। यदि अँगरेज़ सीधे तौरसे न माने तो वह संभवतः अपने बाहुबलसे इन्हें ठीक करनेका उद्योग करेंगे।

यथासमय व्यापार सम्बन्धी कुरीतियोंपर नवाबके साथ गवर्नर और मिस्टर हेस्टिंग्ज़की बातें हुईं। नवाबका कहना था कि "अँगरेज़ोंको बंगाल प्रान्तके भीतर निःशुल्क व्यापार करनेका अधिकार फ़रमानके द्वारा प्राप्त नहीं है। फ़रमानका आशय केवल यही है कि बंगालसे जो वस्तुएँ विदेश जायँ या विदेशसे जो चीज़ें यहाँ आवें उनका निःशुल्क व्यापार अँगरेज कर सकते हैं। इस प्रकारके व्यापारसे भारतवर्षका भी फ़ायदा है और अँगरेजोंका भी। इस प्रान्तके भीतर यहाँकी वस्तुओंमें ही यदि अँगरेज निःशुल्क व्यापार करेंगे तो वह इस देशके लिए लाभदायक नहीं होगा। यहाँकी प्रजाको उससे क्षति पहुँचेगी और उससे अँगरेज ही नफा उठायँगे।" गवर्नर और हेस्टिंग्जने नवाबकी बातोंका समर्थन किया। बंगालके भीतर व्यापार सम्बन्धी कुरीतियोंको रोकनेके लिए उन्होंने निम्नलिखित नियम नवाबके सामने पेश किये और इसकी सूचना कलकत्ता-कौन्सिलको भी दी—

(१) विदेशसे आयी हुई तथा वहाँ जानेवाली चीज़ोंपर कम्पनीका दस्तक रहेगा और वे चीजें बिना शुल्क दिये ही आसानीसे जा सकेंगी।

(२) यहाँकी वस्तुओंपर भीतरी व्यापारके निमित्त कम्पनीका दस्तक न दिया जायगा। ऐसी वस्तुओंके लिए स्थानीय सरकारी अफसरके दस्तककी आवश्यकता होगी।

(३) दस्तक प्राप्त करते समय और माल भेजनेके पहले शुल्क देना पड़ेगा।

(४) एक बार इस प्रकार शुल्क दे देनेके पश्चात् किसी चौकीपर फिर सरकारी अफसरोंको शुल्क माँगनेका अधिकार नहीं होगा।

(५) जिन वस्तुओंके लिए सरकारी या कम्पनीका दस्तक होगा उनके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी रुकावट न होगी। चौकियोंके पहरेदारोंको केवल दस्तक देखनेका अधिकार होगा। परन्तु यदि नावोंमें दस्तकके आशयसे अधिक पदार्थ हों अथवा दस्तकमें जो चीजें लिखी हैं उनके अतिरिक्त अन्य प्रकारका माल हो तो उस हालतमें पहरेदारोंका यह काम होगा कि इसकी खबर वे निकटस्थ अँगरेजी फैक्टरी और सरकारी अफसरको दें ताकि उक्त वस्तुओंकी अच्छी तरह जाँच की जाय।

(६) यदि कोई मनुष्य कम्पनीके या सरकारी दस्तकके बिना सामान ले जाना चाहता है या उसके पास बङ्गालमें उत्पन्न चीजोंके लिए कम्पनीका दस्तक है तो ऐसी चीज़ें रोक ली जायँगी और ज़ब्त कर ली जायँगी। चौकियोंके पहरेदारोंका यह कर्तव्य होगा कि वे ऐसी वस्तुओंको रोक लें और इसकी सूचना पासकी अँगरेजी फैक्टरी और सरकारी अफसरको दें।

(७) हर स्थानपर गुमाश्ते बतौर व्यापारीके तिजारत कर सकेंगे। परन्तु उनको यह अधिकार कदापि न होगा कि वे खरीद और बिक्रीमें बलप्रयोग करें। यदि उनके व्यापारमें किसी प्रकारकी रुकावट होती है तो गुमाश्तेको अपनी शिकायत उस स्थानके फौजदार या अन्य सरकारी

अफसरके सामने पेश करनी होगी। वह उसे तै करेगा। उसी प्रकार यदि कोई अँगरेजी गुमाश्तोंके अत्याचारसे पीड़ित होगा तो वह निकटस्थ सरकारी अफसरसे शिकायत करेगा। समन भेजनेपर गुमाश्तेको सरकारी अफसरके सम्मुख जाना होगा और जो दोष उसपर आरोपित होंगे उनका जवाब देना होगा।

(८) फौजदार या अन्य सरकारी अफसरको मुकदमेकी पूरी कार्रवाई नवाबके पास भेजनी होगी और एक प्रति गुमाश्तेको भी देनी पड़ेगी। यदि गुमाश्ता समझता है कि हमारे साथ अन्याय किया गया है तो वह मुकदमेकी तमाम कार्रवाई अपने मालिकके पास भेज देगा और वह मालिक प्रेसीडेण्टके पास उसे भेज सकता है। यदि प्रेसीडेण्ट समझे कि सचमुच फौजदारने अन्याय किया है तो वह इसकी सूचना नवाबको देगा। यदि किसी फौजदारपर इस तरहका दोष प्रमाणित हो जाय तो नवाब उसको काफी दण्ड देंगे।

पहले तो नवाब मीर क़ासिम इन नियमोंको स्वीकार करनेके लिए तैयार न हुए। वे समझते थे कि प्रचलित कुरीतियोंको रोकनेके लिए ये काफी नहीं हैं। किन्तु जब वानसीटार्टने यह विश्वास दिलाया कि भविष्यमें किसी प्रकारकी गड़बड़ीकी आशङ्का नहीं है, तब नवाबने इन नियमोंको स्वीकार किया। परन्तु यह बात उन्होंने साफ साफ कह दी कि यदि भविष्यमें व्यापार सम्बन्धी कुरीतियाँ पूर्ववत् प्रचलित रहीं तो मैं तमाम व्यापार निःशुल्क कर दूँगा। उसके बाद नवाबने गवर्नरसे पत्र लिख कर निम्नलिखित बातोंकी स्वीकृति चाही।

"हमारे राज्यमें बहुतसे स्थानोंमें अँगरेजी गुमाश्ते और अन्य नौकर अत्याचार करते हैं। आप हर फैकृरीके सरदारके पास लिख भेजें कि किसी भी गुमाश्तेको दस्तक न दें और कम्पनीके व्यापारी जहाजोंके अतिरिक्त और किसीको अँगरेजी झण्डेका प्रयोग न करने दें। इस देशकी जो चीज़ें खरीद कर वे यहाँ व्यापार करना चाहें उसपर नौ फी सदी शुल्क दें। रैयतों या सौदागरोंके घरों और गोलोंपर अधिकार न करें। सनद्वीपमें अँगरेजी गुमाश्ते नमक तैयार करते हैं। उन्हें लिखिये कि भविष्यमें वे ऐसा न करें। कलकत्तेके सिवाय और कहीं रुपया न ढाला जाय। इससे मेरी आमदनीमें फ़र्क़ पड़ता है। दो वर्ष पूर्व आसामसे मुझे पचास हजारकी वार्षिक आमदनी थी। सरकारी आदमियोंको छोड़ कर वहाँवालोंसे किसीको भी व्यापार करनेका अधिकार नहीं था। दो वर्ष हुए वहाँ मिस्टर शिवालीयर गये और सरकारी व्यापारको एकदम रोक कर स्वयं व्यापार करने लगे। मुझे इससे बहुत घाटा हो रहा है। यह ताल्लुकेदारों और रैयतको जबरदस्ती पकड़ कर उनसे लकड़ी कटवाते हैं। चावल थोड़ीसी क़ीमत देकर खरीदते और अधिक मूल्य लेकर बलपूर्वक बेचते हैं। प्रजा बहुत कष्टमें है।"

गवर्नरने नवाबके पत्रका जो उत्तर दिया उसका आशय इस प्रकार है—"अपनी फैक्टरियोंको मैं लिख दूँगा कि भीतरी व्यापारके लिए दस्तक न दिया जाय। इस प्रकारके व्यापारमें आपको नौ प्रति सैकड़ा शुल्क मिलेगा। गुमाश्ते अत्याचार, बलात्कार और बेईमानी नहीं कर सकेंगे। हर फैकृरीके सरदारके पास यह सूचना भेज दी

जायगी कि वह सरकारी प्रबन्धमें बाधा न होने दें। भविष्यमें यदि ऐसा हुआ तो आप जो मुनासिब समझें कर सकते हैं। आपसे भी मेरा सविनय निवेदन है कि फौजदार और अन्य अफसरोंको लिख दें कि अँगरेजी गुमाश्तोंके झगड़ोंको तै करनेमें पक्षपात न करें। इसलामाबाद और लखीपुरके सरदारोंको लिख दिया गया है कि भविष्यमें वे नमक तैयार न करें। तमाम फैकृरियोंके सरदारों और नौकरोंके पास यह सूचना भेज दी जायगी कि वे ज़मीन न खरीदें और खेती न करें। यदि उनके पास ज़मीन है तो उसको छोड़ दें। आप भी उन्हें यह अधिकार दे दें कि जो ज़मीन वे खरीद चुके हों उसे वे बेंच सकें। कई स्थानोंसे यह खबर आयी है कि सरकारी अफसर पिछले शुल्कके लिए तंग करते हैं। यह अनुचित है। आप यह आज्ञा दें कि पुराना हिसाब न माँगा जाय और यदि कुछ वसूल किया गया हो तो लौटा दिया जाय। आप एक परवाना इस आशयका प्रकाशित करें कि हमारे सिक्कोंपर बट्टा न लगे और यदि कोई बट्टा माँगे तो उसको दण्ड दिया जाय। आसामके अँगरेजी अफसरको यह सूचना भेज दी जायगी कि वह वहाँवालोंसे व्यापार न करें। जो कुछ खरीदना या बेचना हो वह वहाँके सरकारी अफसरके द्वारा करें।"

इस प्रकार गवर्नर वानसीटार्टने व्यापार सम्बन्धी दोषोंको रोकनेके निमित्त नवाबके साथ मिलकर नियम बनाये। नवाबने इन नियमोंकी एक एक प्रति हर जगह अपने अफसरोंके पास भेज दी और उनसे ताकीद कर दी कि वे इन्हीं नियमोंके अनुसार कार्य्य करें।

१४—कौंसिलका विचित्र निर्णय।

व्यापार सम्बन्धी कुरीतियोंको रोकनेके लिए गवर्नर वानसीटार्टने नवाबके साथ जो नियम निर्धारित किये थे उनकी सूचना यथासमय कलकत्ता भी पहुँची। उक्त नियमोंपर विचार करनेके लिए बोर्डकी बैठक हुई और निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुए—

(१) प्रेसीडेण्टने नवाबके साथ मिलकर जो नियम बनाये हैं वे हम लोगोंके लिए (बहैसियत अँगरेज होनेके) लज्जाजनक हैं। इनका अनिवार्य्य परिणाम यही होगा कि हर प्रकारका अँगरेज़ी व्यापार नष्ट हो जायगा।

(२) हम लोगोंकी सम्मति लिये बिना उक्त नियम बनाकर प्रेसीडेण्टने हम लोगोंके अधिकारकी अवहेलना की है।

(३) पटना और चटगाँव बहुत दूर हैं, अतएव इन स्थानोंके अतिरिक्त और हर स्थानसे बोर्डके तमाम सदस्य बुलाये जायँ और अँगरेज़ी व्यापारकी रक्षा तथा सुसञ्चालनके सम्बन्धमें विचार कर नियम बनाये जायँ।

वानसीटार्टका सारा परिश्रम धूलमें मिल गया। कलकत्ता-कौन्सिलने प्रेसीडेण्ट द्वारा निर्धारित नियमोंको अँगरेज़ी राष्ट्रके लिए लज्जाजनक समझा। आश्चर्य तो इस बातका है कि कौन्सिलने 'लज्जा' शब्दका भी अर्थ न समझा। उसने निर्लज्जता और नीचताको ही अपने राष्ट्र-

का सम्मान समझा। उसके सदस्योंकी समझमें शायद अँगरेज़ी राष्ट्रका गौरव असहायोंपर अत्याचार करने, ग़रीबोंका गला घोंटने तथा कुटिल नीतिके अनुसरण करनेमें ही था। तब भला इन लोगोंको गवर्नर द्वारा बनाये गये न्याययुक्त नियम कैसे स्वीकार हो सकते थे? न्यायसे तो इनके राष्ट्रीय गौरवमें बट्टा लगता था। इतिहास-लेखकोंने कलकत्ता-कौन्सिलके इस विचित्र निर्णयपर आश्चर्य प्रकट किया है। ग्लीग लिखते हैं "यह समझमें नहीं आता कि किस सिद्धान्तपर बोर्डने इन नियमोंको अस्वीकार किया। वे तो सबके लिए सन्तोषजनक थे। विशेषतः अँगरेज़ोंको तो उनसे बड़ा लाभ था। अधिक आश्चर्य्य तो इस बातका है कि बोर्डके सदस्योंने इन नियमोंको अपने राष्ट्रके लिए लज्जास्पद समझा और वे उन्हीं अधिकारोंको प्राप्त करनेपर तुल गये जिनका अनिवार्य्य परिणाम देशी व्यापारियोंका सत्यानाश था।"*

मैलिसन लिखते हैं "उक्त नियम अँगरेजोंके लिए विशेष रूपसे ही नहीं वरन् अनुचित रीतिसे लाभदायक थे" †। मिलने भी लिखा है कि "संसारके इतिहासमें अन्याय

---

* It seems difficult to understand upon what principle propositions fair to all parties and at the same time so advantageous to the English should have been rejected. Rejected, however, they were. The majority in the Council denounced the governor's plan as insulting to the honour of the English name and insisted upon their own rights and the rights of their servants, to trade upon terms, which must bring ruin upon all the native merchants.

Extracts from the Memoirs of the Life of Warren Hastings by Gleig

† The compromise contained provisions not only greatly but unduly favourable to the English—Malleson.

और निर्लज्जताके जो दृष्टान्त मिलते हैं उनमें इस अवसर-पर किया गया कम्पनीके नौकरोंका यह बर्त्ताव भी एक प्रधान दृष्टान्त है।"*

गवर्नर वानसीटार्टने कलकत्ता पहुँचने पर बोर्डका निर्णय सुना। जब बोर्डकी बैठक हुई तो उसमें उन्होंने निम्नलिखित आशयका वक्तव्य पेश किया—

"मेरे प्रति आप लोगोंने जो अन्याय किया है उस पर मुझे आश्चर्य्य होता है। डाइरेकृरोंकी सम्मतिमें भी भीतरी व्यापार और उस व्यापारमें अन्तर है जो बाहर-की वस्तुओंमें होता है। बाहरकी वस्तुओंके व्यापारके लिए कम्पनीका ही दस्तक है। परन्तु भीतरी व्यापारके लिए सरकारी दस्तक प्राप्त करना आवश्यक है और उसके लिए शुल्क भी देना ज़रूरी है। यह देख कर कि स्थान स्थानपर भिन्न भिन्न प्रकारका शुल्क लिया जाता है, मैंने नियमित रूपसे नवाबके साथ मिल कर यह तै किया कि नौ फ़ी सैकड़ा शुल्क हम लोग दें। हमारे मालिकोंने कई बार यह आदेश भेजा है कि सरकारी खजानेको क्षति पहुँचा कर भीतरी (इनलैण्ड) व्यापार नहीं किया जा सकता। मैं चाहता हूँ कि आप लोग यह प्रमाणित करें कि नवाबके साथ नियम बना कर मैंने अनधिकार कार्रवाई की है और यह भी दिखलावें कि उक्त नियम हमारे राष्ट्रीय सम्मानमें बाधक हैं। आप लोग यह भी बतलानेकी कृपा करें कि इन नियमोंके कारण हमारा व्यापार किस तरह नष्ट होता

* The conduct of the company's servants upon this occasion furnishes one of the most remarkable instances upon record of the power of interest to extinguish all sense of justice and even of shame.—J. MILL'S HISTORY OF BRITISH India Vol. III, p. 337.

है। मैं आप लोगोंसे प्रार्थना करूँगा कि यदि आपको ये नियम स्वीकार नहीं हैं तो इनसे अच्छे नियम बतलाइये।

"मेरी समझमें तो हमारे राष्ट्रकी इज्ज़त दस्तकके सदुपयोग करनेमें, उसका दुरुपयोग करनेकी अपेक्षा, कहीं अधिक है। अपने गुमाश्तोंको इतना अधिक अधिकार दे देनेके बजाय कि वे प्रजापर मनमाना अत्याचार करें उन्हें उचित दबावमें रखनेमेंही हमारे राष्ट्रका सम्मान अधिक है। ढाका-वाले अँगरेज लिखते हैं कि इन नियमोंसे उन्हें बड़ी सुविधा होगी। शुल्ककी उन्हें शिकायत नहीं है। उन्हें कष्ट इस बातका होगा कि नवाबके अफसरोंके पास दस्तकके लिए निवेदन करना होगा। यह कारण तो पूर्णतया निर्मूल है। हम लोगोंने सरकारी अफसरोंसे कई बार दस्तकके लिए निवेदन किया है और हमें इसमें तनिक भी लज्जा आजतक मालूम नहीं हुई। फरमानके द्वारा भीतरी व्यापारका अधिकार हमें कभी भी प्राप्त नहीं हुआ। अभीतक हम लोगोंको इसीमें सन्तोष रहा कि सरकारी दस्तकके द्वारा शुल्क देकर व्यापार करें। शुल्क देकर व्यापार करनेका अधिकार स्थायी करनेके निमित्त ही ये नियम बनाये गये हैं।

"महाशय, जैसा कि मैं पहिले कह चुका हूँ, यदि आप लोग हमारे बनाये नियमोंको पसन्द नहीं करते तो मैं आप लोगोंसे प्रार्थना करूँगा कि आप इनसे अधिक अच्छे नियम बनावें। परन्तु यदि आप लोग यह समझें कि हम लोगोंका व्यापार उस समयतक असंभव होगा जबतक कि हम अपने गुमाश्तोंको इतनी शक्ति न प्रदान करें कि वे मनमाने अत्याचार प्रजापर करें तो मैं यह समझता हुँ कि ऐसा व्यापार रोक देना ही अच्छा होगा। हम लोग केवल कम्प-

नीका ही व्यापार करें। हे और जौनस्टनका कहना है कि मैं औरोंके गुमाश्तोंपर इसलिए दबाव डालना चाहता हूँ कि मेरे गुमाश्ते अधिक शक्तिशाली रहें। मैं समझता हूँ कि जो नियम मैंने बनाये हैं उनसे जिस प्रकार औरोंकी क्षति होगी मेरी भी वैसी ही होगी। मैं बोर्डसे प्रार्थना करता हूँ कि वह हे और जौनस्टनसे जवाब तलब करे कि कब मैंने इस प्रकारका आचरण किया। आश्चर्य और दुःख तो इस बातका है कि बोर्डने जौनस्टन और हेके पत्रपर असन्तोष न प्रगट कर उनकी प्रशंसा की है। मेरे लिए यह पत्र बड़ा ही अपमानजनक है। मैं इसके सम्बन्धमें डाइरेक्टरोंको लिखूँगा जो मेरे साथ अधिक न्याय कर सकेंगे।

"मैं चाहता हूँ कि हम लोगोंके नियम ऐसे हों जिनकी सहायतासे हम लोग और नवाब अपने उचित अधिकारोंकी रक्षा कर सकें। हम लोगोंके नौकर उन नियमोंका उल्लंघन न कर सकें। यह ठीक है कि कभी कभी अच्छे नियमोंका भी लोग उल्लंघन कर डालते हैं, किन्तु इस प्रकारके कष्टों-के ही आधारपर उन नियमोंका विरोध करना ठीक नहीं। केवल उन कष्टोंके निवारणनका उपाय करना चाहिये।"

आमियाटने वानसीटार्टकी बातोंका विरोध किया। उन्होंने जो कुछ कहा उसका आशय यह है—"नवाबके साथ गवर्नरने जो नियम निर्धारित किये हैं उनपर बोर्ड-की बैठकमें किसी अन्य दिन विचार होगा। इस समय मुझे जो कुछ कहना है वह यही है कि प्रेसीडेण्टने अधि-कार न होते हुए भी इन नियमोंका निर्माण किया। पिछल बैठकमें इस सम्बन्धकी तमाम कार्रवाई पढ़ी

गयी। परन्तु उसमें मुझे एक भी ऐसी बात न मिली जिससे यह पता चले कि बोर्डने प्रेसीडेण्टको वे अधिकार दिये जिनका उन्होंने प्रयोग किया। मुझे अफ़सोस है कि शब्दोंको तोड़ मरोड़ कर उनका मनमाना अर्थ निकाला जाता है। प्रेसीडेण्टने जौनस्टन और हेके पत्रका वर्णन किया है। यद्यपि मैं प्रेसीडेण्टके साथ इस विषयपर सहमत नहीं हूँ कि उक्त पत्रमें अपमानजनक शब्दोंका प्रयोग किया गया है फिर भी मैं यह बात माननेके लिए तैयार हूँ कि यह मामला डाइरेक्टरोंके सामने पेश किया जाय।"
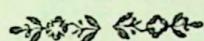
१५—दरबारकी कुछ घटनाएँ।

मीर क़ासिमके दरबारमें सर्वदा परिवर्तन होते रहते थे। इसका कारण यह है कि नवाब हमेशा चौकन्ने रहते थे। उन्हें हमेशा इस बातकी आशंका बनी रहती थी कि मीर जाफर इत्यादिकी तरह मेरे विरुद्ध भी कोई षड्यन्त्र न रचा जाय। इसी ख्यालसे वह किसी भी अफ़सरको एक जगहपर अधिक दिनोंतक नहीं रहने देते थे।

शाह अब्दुल्ला दरबारके सुपरिण्टेण्डेण्ट थे। पहले यह जगतसेठके यहाँ नौकर थे। गुरग़ीन खाँकी सिफारिशसे यह अपने वर्तमान पदपर नियुक्त हुए थे। एक दिन नवाबको शाह अब्दुल्लाने यह सूचना दी कि गुरग़ीन खाँने मुहम्मदअली, बरकत अली और फरहाद अली नामके तीन

सेनापतियोंके साथ गुप्त सन्धि की है। नवाबको यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। नित्य सन्ध्या समय गुरग़ीन खाँ नवाबसे मिलने आया करते थे। उस दिन शामको जब वह आये तो नवाबने गुरग़ीनसे यह बात कहीं और साथ ही साथ कई प्रश्न भी किये। गुरगीन खाँने उत्तर दिया कि "हम लोगोंने सन्धि अवश्य की है। परन्तु किस उद्देश्यसे ? यह कार्य्य हम लोगोंने केवल आपकी रक्षाके लिए किया है। जिसने हमारी तरफसे आपके हृदयमें बुरा भाव उत्पन्न किया है वह आपका शत्रु है और वह आपकी शक्तिको नष्ट करना चाहता है।" ऐसा सन्देह हुआ कि यह जगतसेठकी कारसाजी है। उसीके इशारेसे शाह अब्दुल्ला नवाब और उनके सेनापतियोंमें द्वेष पैदाकर सेनामें विद्रोह उत्पन्न करना चाहते थे। नवाबने मुहम्मद अली, बरकत अली और फरहाद अली तीनोंको बुलवाया और कहा कि जब तुम पहले पहल आये थे तो तुम्हारे तनपर गुदड़ी भी नहीं थी। हमारी ही कृपासे अब तुम लोग सेनापति हो गये हो। गुरगीन खाँ भी पहले कपड़ा बेचनेवाला व्यापारी था परन्तु हमारी दयासे वह प्रधान सेनापति हो गया है। किस उद्देश्यसे तुम लोगोंने उसके साथ गुप्त सन्धि की है ?

नवाबके प्रश्नका तीनोंने यह जवाब दिया, "जो कुछ हुजूर कह रहे हैं ठीक है। परन्तु हम लोग अपने कर्तव्यसे विमुख नहीं हुए। केवल आपकी रक्षाके लिए यह सन्धि हम लोगोंने की थी। यदि हम लोग दोषी प्रमाणित हों तो हमें दण्ड दिया जाय"। नवाबने तब शाहअब्दुलाको बुलवाया और कहा कि "तुमने मुझसे इन लोगोंके विरुद्ध जो कुछ

कहा है उसका प्रमाण पेश करो। यदि तुम ऐसा न कर सकोगे तो तुम्हें दण्ड दिया जायगा क्योंकि तब यह समझा जायगा कि तुम मेरे और मेरे सेनापतियोंके बीच झगड़ा कराना चाहते थे।" शाह अब्दुलाने देखा कि कलई खुल गयी। गवाह भी पेश करना बेकार है। उन्होंने कुछ भी जवाब नहीं दिया। केवल झुककर सलाम किया। नवाबके आज्ञानुसार शाह अब्दुल्ला कैद कर लिये गये और पुर्निया भेज दिये गये।

दूसरा व्यक्ति, जिसकी शरारतका पता नवाब मीर क़ासिमको लगा, चिन्तामणिदास था। यह पहले शाहाबाद ज़िलेके अन्तर्गत भोजपुरमें मुहर्रिर था। इसकी योग्यता देखकर नवाबने इसे उस स्थानके तहसीलदारके पदपर नियुक्त कर दिया था। यह शाहाबादसे भागे हुए जमीन्दा-रोंके साथ पत्र-व्यवहार कर रहा था। पत्र पकड़े गये। चिन्तामणि गिरफ़ार होकर नवाबके सामने पेश किया गया। इसका कहना था कि पत्र जाली हैं। परन्तु अपने कथन-की सत्यता यह प्रमाणित न कर सका। नवाबने कहा कि लिखावट तुम्हारी है और तुम्हारी मुहर भी लगी हुई है। जिन लोगोंका तुमसे सम्बन्ध नहीं, और न कोई शत्रुता है, उन लोगोंने देखभाल कर यह तै किया है कि ये पत्र तुम्हारे हाथके लिखे हैं। चिन्तामणि अपनेको निर्दोष प्रमाणित न कर सका, अतः उसे मृत्युदण्ड हुआ।

तीसरा आदमी, जो नवाबकी क्रोधाग्निका शिकार हुआ, रहीमउल्ला खाँ था। यह पञ्जाबका रहनेवाला था। तीर चलानेकी विद्यामें इसने निपुणता प्राप्त की थी। रहीमउल्लाका बङ्गालकी एक प्रधान स्त्रीसे सम्बन्ध था।

उस स्त्रीने रहीमउल्लासे तीन हज़ार रुपयेका एक घोड़ा खरीदनेको कहा था। इसके अतिरिक्त रहीमउल्लाका शुकरुल्ला खाँसे बहुत प्रेम था। शुकरुल्ला जहाँगीरनगरमें नवाबकी आज्ञासे क़ैद किया गया था। कारागारसे मुक्त होनेके निमित्त वह अपने आदमियों द्वारा नवाबके पास दरख़्वास्त भेजा करता था। रहीमउल्लाने एक बार शुकरुल्लाके आदमीको अपने यहाँ ठहरा लिया। इससे रुष्ट होकर नवाबने उसकी गिरफ़्तारीकी आज्ञा दी। जब वह नवाबके सामने पेश किया गया तब नवाबने उससे पूछा "तुम्हारा उस स्त्रीसे क्या सम्बन्ध है? यदि तुम्हारा उसके साथ कुछ सम्बन्ध नहीं है तो तुम उसके लिए तीन हज़ार रुपयेका घोड़ा क्यों ख़रीदते हो? तुम्हारा वेतन केवल डेढ़ सौ रुपया है, फिर तुम इतना रुपया कहाँसे लाये?" रहीमउल्ला कोई उचित उत्तर न दे सका। नवाबने फिर दूसरा प्रश्न किया, "यह जानते हुए कि शुकरुल्ला मेरा शत्रु है, तुमने उसके नौकरको अपने यहाँ क्यों ठहरने दिया?" नवाबने इस प्रश्नका भी कोई सन्तोषपूर्ण उत्तर नहीं पाया। उसको राज्य-निष्कासनका दण्ड दिया गया। इसके पूर्व उसकी नाक काट ली गयी और वह गधेपर चढ़ा कर सारे शहरमें घुमाया गया।

मीर क़ासिम अपने शत्रुओंकी ओरसे हमेशा सावधान रहते थे। जहाँ किसीने इनके विरुद्ध सिर उठाया कि उसको दबानेमें यह तनिक भी विलम्ब न करते थे। इस कारण किसीको यह साहस नहीं होता था कि नवाबकी इच्छाके विरुद्ध कुछ कर सके। पिछले नवाबोंके समयमें जो षड्यन्त्र हुए थे उन्हें देखकर यह सम्हल गये थे।

गुप्तचर-विभाग द्वारा इन्हें छोटी छोटी बातों तकका पता लग जाता था। जहाँ कहीं किसीपर कुछ भी सन्देह हुआ कि उसको दबानेमें यह तत्पर हो जाते थे।

१६—मुंगेरके किलेकी तलाशी।

इवके स्वदेश लौटनेके कुछ ही दिन पूर्व कलकत्ता-कौंसिलने एक पत्र डाइरेक्टरोंके पास इंग्लैण्ड भेजा था। इसमें कौंसिलने उस पत्रके सम्बन्धमें अपना असन्तोष प्रगट किया था जिसके द्वारा डाइरेक्टरोंने कौंसिलके कुछ कार्यों की निन्दा की थी। उक्त पत्रपर क्लाइवके अतिरिक्त हालवेल, सेंडल, समनर और गायरके हस्ताक्षर थे। पत्रमें कुछ कड़े शब्दोंका प्रयोग भी किया गया था। रुष्ट होकर डाइरेक्टरोंने हस्ताक्षर करनेवालोंको बरखवास्त कर दिया। क्लाइव पहले ही लौट गये थे और हालवेल भी पदत्याग कर चुके थे। बरखवास्तगीकी आज्ञा आनेपर शेष तीन व्यक्तियोंको भी नौकरी छोड़ देनी पड़ी। ये तमाम मेम्बर गवर्नर वानसी-टार्टकी नीतिके समर्थक थे। अतः इस परिवर्तनका भविष्यमें बहुत बुरा परिणाम हुआ। खाली स्थानोंको पूरा करनेके लिए जिन लोगोंकी नियुक्ति हुई उनके आनेसे गवर्नरके विरोधियोंकी संख्या बढ़ गयी। परिस्थिति ऐसी हो गयी कि गवर्नरके लिए कोई भी कार्य्य करना प्रायः असंभव हो गया। इनके विरोधी दलकी यह नीति थी कि कौंसिलमें

गवर्नरके प्रत्येक प्रस्तावका—चाहे वह अच्छा हो या बुरा—विरोध किया जाय। वे लोग जो चाहते थे बहुमतसे कर बैठते थे।

जो लोग नियुक्त हुए थे उनमें मिस्टर एलिस भी थे। यह पटनेके अँगरेजी शासकके पदपर नियुक्त हुए थे। एलिस गवर्नरके कट्टर विरोधियोंमें थे। इनके कारण आगे चलकर बहुतसे बखेड़े हुए। जान-बूझ कर यह ऐसे कार्य करनेपर तुले हुए थे, जिनसे नवाबके शासनकार्य्यमें विघ्न हो और उन्हें नीचा देखना पड़े। एक अँगरेज इतिहास-लेखकने इनके विषयमें लिखा है कि "यह मूर्ख और मोटी अक़्क़के आदमी थे। इनका कोई भी निश्चित सिद्धान्त नहीं था। यह बड़े ही दुर्भाग्यका विषय था कि पटनेके शासनकार्य्यपर इनकी नियुक्ति हुई।"*

पटना पहुँचनेके कुछ ही दिनों बाद एलिसने नवाबके साथ छेड़खानी शुरू कर दी। इन्हें पता लगा कि दो अँगरेजोंने भागकर मुंगेरके क़िलेमें शरण ली है। एलिसने पटनेमें स्थित नवाबके नायबको पत्र लिखा कि तलाशीके निमित्त क़िलेके अफ़सरके नाम परवाना दिया जाय। नायबने इस बातसे इनकार किया। सिपाहियोंकी तीन कम्पनियोंको लेकर मिस्टर एलिस मुंगेर पहुँचे और वहां शहरसे बाहर ही पड़ाव डाला। वहांसे उन्होंने एक घुड़सवार किलेकी तलाशीके लिए भेजा। जो अफसर क़िलेकी रक्षा थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ कर रहा था उसने घुड़सवारको आगे

---

* Mr. Ellis was headstrong and foolish as well as unprincipled. It was a great misfortune that owing to the dismissal of Mr. McGuire by the Company for joining in an insubordinate letter to them Mr. Ellis became the chief of Patna.—Beveridge.

बढ़नेसे रोका। उसके न माननेपर उसने घोड़ेकी लगाम पकड़ ली। इसपर घुड़सवारने तलवार खींची। दुर्गरत्तकने उसके हाथसे तलवार छीन ली। जब एलिसको उक्त घटनाका पता लगा तो उन्होंने दुर्गरत्तककी गिरफ्तारीके लिए थोड़ेसे सिपाहियोंको भेजा। नवाब मीर क़ासिमके दीवान राज-दुर्लभने जब यह सुना तो उसने दुर्गरत्तकको और गिरफ़ारीके लिए आये हुए सिपाहियोंको अपने पास बुलाया और मधुर भाषण द्वारा उन्हें शान्त करनेका यत्न किया। परन्तु सिपाही सन्तुष्ट नहीं हुए। फाटकपर बैठनेकी तो आज्ञा मिली नहीं, अतः वे राहमें ही घेरा डाले रहे। एलिसको समझानेका बहुत यत्न किया गया, परन्तु वह तो फ़साद खड़ा करना चाहते ही थे। उन्होंने जवाब दिया "जब तक दुर्गरत्तक न लाया जायगा मैं सिपाहियोंको वापस न बुलाऊंगा"। लेकिन नवाब अपने निर्दोष और कर्तव्य-परायण नौकरको एलिसके चंगुलमें क्यों छोड़ते! इधर एलिस भी झगड़ा मोल लेनेपर तुल गये।

नवाब मीर क़ासिमको एलिसका यह हस्तक्षेप बहुत बुरा लगा। गवर्नरको उन्होंने एक पत्र लिखा और मिस्टर एलिसके कार्य्यपर असन्तोष प्रगट किया। पत्रका आशय इस प्रकार है—"एलिसने बहुतसे सिपाहियों-को लाकर मुंगेरके क़िलेपर आक्रमण करना निश्चय किया है। जो सन्धि हम लोगोंके बीच स्थापित हुई थी, हमने सर्वदा उसके अनुसार ही कार्य्य करनेकी चेष्टा की है। परन्तु मालूम नहीं क्यों आप लोग हमारे किलों और नौकरोंके विरुद्ध ज्यादती करनेपर तुले हुए हैं। हमारे विरुद्ध सेना भेजनेकी क्या ज़रूरत थी? एलिसके द्वारा

हमारी हुकूमतपर जो धब्बा पहुँचा है उसका वर्णन करना असम्भव है।" इसी भांति तीन महीनेतक आपसमें वादविवाद चलता रहा। इस बीचमें एलिसको क़िलेकी तलाशीकी आज्ञा नहीं मिली परन्तु वह इन तीनों महीने सेनाके साथ मुंगेरमें पड़े रहे।

अन्तमें यह तै हुआ कि क़िलेकी तलाशी हो, परन्तु सिपाहियोंको क़िलेमें जानेकी आज्ञा न मिल सकी। गवर्नरने मिस्टर आइरनसाइडको* उक्त कार्य्यके लिए नियुक्त किया। आइरनसाइडने ऐसे एक सारजण्ट और दो सिपाहियोंको अपने साथ लेलिया जो क़िलेके कोने कोनेसे परिचित थे। इन लोगोंने चारों तरफ छानबीन की, परन्तु कहीं कुछ न मिला। आइरनसाइडने इस तलाशीका वर्णन स्वयं किया है। उन्होंने एक पत्र गवर्नरके पास मुंगेरसे लिखा था, जिसमें तलाशीका पूरा ब्यौरा दिया था। उन्हींके शब्दोंमें जाँचका विवरण यहांपर दिया जाता है। वह लिखते हैं कि "हम लोगोंने तमाम क़िला छान डाला लेकिन कहीं कुछ न मिल सका। केवल एक फ्रांसीसी देखनेमें आया। उसके पैर टूटे हुए थे। फ्रांसीसी छः माससे उस क़िलेमें बन्द था। भागे हुए दोनों अँगरेज़ोंके सम्बन्धमें मैंने उससे बहुत पूँछपाछ की, इनाम देनेका भी वादा किया, परन्तु उसने साफ साफ कहा कि मैं जबसे यहां आया हूँ मैंने किसीको नहीं देखा है।"

कुछ इतिहासलेखकोंने एलिसको निर्दोष प्रमाणित करनेका यत्न किया है। थोरएटन लिखते हैं कि संभव है तीन मासतक जब मिस्टर एलिस मुंगेरमें बेकार बैठे हुए

* Ironside

थे, तब उन दोनों अँगरेज़ोंको भागनेका मौक़ा मिल गया हो । * किन्तु यदि ऐसा होता तो उस फ्रांसीसी क़ैदीको जो वहाँ छः माससे बन्द था इस बातका पता अवश्य होता । मिस्टर आइरनसाइड लिखते हैं "वह मनुष्य अपने छुटकारेके लिए बहुत चिन्तित है । मैंने छुटकारा दिलाने तथा धन देनेका भी वादा किया । यदि सचमुच कोई अँगरेज़ यहाँ छिपे रहते तो रिहाई और धनके प्रलोभनसे वह वास्तविक बातें अवश्य बतला देता" । आइरनसाइडके इस कथनसे मिस्टर थोरण्टनका उक्त सन्देह निर्मूल प्रमाणित होता है ।

१७—अँगरेज़ोंके व्यापारका एक दृश्य ।

हम पहिले बतला ही चुके हैं कि कम्पनीको बङ्गालमें निःशुल्क व्यापार करनेके निमित्त जो शाही फ़रमान प्राप्त हुआ था उसका आशय केवल यही था कि बङ्गालसे जो चीजें कम्पनी विदेश भेजे या विदेशसे जो वस्तुएँ यहाँ आवें उनपर उससे शुल्क न लिया जाय । फ़रमानका मतलब यह कदापि न था कि बङ्गाल प्रान्तके भीतर यहाँकी ही चीज़ोंमें कम्पनी निःशुल्क व्यापार कर सके । विदेशसे भी व्यवसाय करनेका अधिकार केवल कम्पनीको ही था; हर अँगरेजको निजी ढङ्गपर तिजारत

* Thoronton's History of the British Empire Vol. I, p. 425.

करनेका अधिकार नहीं था। कम्पनीके मालके साथ कलकत्तेके प्रेसीडेण्ट द्वारा हस्ताक्षर किया हुआ एक दस्तक सर्वदा रहता था। उसे ही दिखाकर कम्पनीका माल आता जाता था। बहुत दिनोंतक उस नियमका पालन होता रहा किन्तु नवाब अलीवर्दीके समयमें लुक-छिप कर अँगरेज़ोंने फरमानका अनुचित लाभ उठाना आरम्भ कर दिया। दस्तक दिखाकर, कम्पनीका नाम लेकर, ये लोग निजी तौरपर भी तिजारत करने लगे। पर सिराजुद्दौलाके समयमें इनकी दाल न गली। वह इनकी धूर्तताको भली-भाँति पहचानते थे। यही कारण है कि सिराज इनकी आँखोंके कण्टक बने हुए थे। जब कभी नवाब सिराजुद्दौलाको मालूम होता कि अँगरेज़ बनिये फ़रमानका दुरुपयोग कर रहे हैं तो वह उन्हें उपयुक्त दण्ड देते थे। उन्हें सर्वदा इस बातका ख़्याल रहता था कि नियमके प्रतिकूल कोई कार्रवाई न हो।

पलासी-षड्यन्त्रने अवस्थामें एक विचित्र उलट-फेर उत्पन्न कर दिया। ईस्ट इण्डिया कम्पनीके नौकरोंने निजी ढङ्गपर बङ्गाल प्रान्तके भीतर भी निःशुल्क व्यापार करना आरम्भ कर दिया। सिराजुद्दौलाके पश्चात् मीर जाफ़र एक अयोग्य शासक हुए। इनके रास्तेमें कोई रुकावट न रही। अँगरेज बंगाल प्रान्तके भीतर निःशुल्क व्यापार करना अपना अधिकार समझने लगे। वास्तवमें मीर जाफरके साथ अँगरेजोंकी जो सन्धि हुई उससे व्यापारके सम्बन्धमें उन्हें कोई नया अधिकार नहीं मिला था। परन्तु इस समय बंगालमें उनकी धाक जम गयी थी। वे अब अपनी बढ़ती हुई शक्तिका दुरुपयोग करने लगे। वे उन

वस्तुओंका भी व्यापार करने लगे जिनका व्यापार करनेकी पहले उन्हें मनाही थी।" *

अँगरेजोंने हर जगह अपने गुमाश्ते नियत कर दिये थे। इन्हीं लोगोंके द्वारा उनका व्यापार होता था। ये गुमाश्ते प्रजापर मनमाना अत्याचार करते थे। हर ग्राम और परगनेमें ये लोग नमक, पान, घी, चावल, बाँस मछली, चीनी, तम्बाकू, अफीम इत्यादि बहुत सी चीजें खरीदते तथा बेचते थे। ये बलपूर्वक केवल चौथाई मूल्य देकर तमाम वस्तुएँ ले लेते और पाँचगुना मूल्य वसूल करते थे। जो लोग इनसे खरीदना अथवा इनके हाथ बेचना नहीं चाहते थे उन्हें ये कोड़ोंसे मारते थे और कैद भी कर लेते थे। इन गुमाश्तोंके दलाल होते थे। दलालोंके द्वारा ये लोग हर गाँवके जुलाहोंको बुलाते थे। उनसे जबरदस्ती शर्तनामा लिखवा कर मनमाने मूल्यपर कपड़ा लिया जाता था। यदि वे शर्तनामा लिखनेमें तनिक भी आनाकानी करते तो उन्हें रस्सीसे बाँध कर कोड़ोंकी मार दी जाती थी। जुलाहोंका एक रजिस्टर रहता था। ये अँगरेजोंके सिवा और किसीके हाथ कपड़ा नहीं बेच सकते थे। और स्थानोंमें जिस भाव कपड़ा बिकता था उससे आधे दामपर इन्हें गुमाश्तोंके हाथ बेचना पड़ता था। इस प्रकार बिचारे जुलाहोंका भी सत्यानाश हो गया। अत्याचारोंसे पीड़ित

---

* With respect to trade no new privileges were asked of Mir Jafer. However our influence over the country was no sooner felt than many innovations were practised by the Company's servants. They began to trade in articles which were before prohibited.—Narrative of Vansittart.

होकर शहरोंको छोड़ छोड़ कर ये लोग भागने लगे। जिन शहरोंमें पहले कलाकौशल उन्नत अवस्थापर था वे निर्जन हो चले। पहले न्यायके लिए कचहरियाँ थीं। परन्तु अब यही गुमाश्ते न्यायाधीश बना दिये गये। मि० वैरेलस्ट लिखते हैं "विना शुल्क व्यापार करना अँगरेजोंने शुरू कर दिया था। अगणित अत्याचार होने लगे थे। प्रजापर अत्याचार कर यदि गुमाश्तों या कंपनीके एजेण्टोंको सन्तोष न होता था तो वे नवाबके अफ़सरोंको भी कैद कर लेते थे।"*

केवल अँगरेज ही इस अनुचित ढंगसे व्यापार नहीं करते थे, कई देशी व्यापारी भी इन लोगोंसे मिल गये थे। ये लोग कंपनीके एजेण्टोंको रुपया दे देते थे। उसके बदलेमें उन्हें अँगरेजी दस्तक मिल जाता था। उन्हीं दस्तकोंको दिखाकर और अँगरेज़ी झंडोंको अपनी नावोंपर लगाकर ये लोग भी विना शुल्क व्यापार करने लगे थे। नवाबको प्रति वर्ष पच्चीस लाख रुपयेका घाटा होने लगा।

अँगरेजोंकी इन मनमानी कार्रवाइयोंका बुरा प्रभाव खेतीपर भी पड़ा। सर्वसाधारण प्रायः खेती भी किया करते थे और अन्य वस्तुएँ भी उत्पन्न करते थे। गुमाश्ते उन्हें तङ्ग करने लगे। अपनी इच्छाके विरुद्ध अब उन्हें अपना अधिकतर समय गुमाश्तोंकी ज़रूरतकी चीज़ें उत्पन्न

---

* A trade was carried on without payment of duties in the prosecution of which infinite oppressions were committed. English agents or Gumashtas not content with injuring the people trampled on the authority of the Government binding and punishing the Navab's officers.—Verelst (from the Economic History of British India by Dutta P. 20.)

करनेमें ही व्यतीत करना पड़ता था। इसलिए खेतीकी हालत बिगड़ने लगी। लोग उसकी तरफ अधिक ध्यान न दे सके। ज़मीनसे मालगुजारी तकका मिलना कठिन हो गया। तहसीलदार यदि मालगुजारीके लिए तङ्ग करते तो इन्हें अपने बच्चोंको बेचकर उसे पूरा करना पड़ता था।

अँगरेजोंकी स्वार्थपरता तथा उनके मनमाने अत्याचारका परिणाम बहुत बुरा हुआ। कलाकौशलका नाश हो गया। जुलाहोंने अपने प्राण बचानेके लिए अपनी अँगुलियाँ काट डालीं। देशी व्यापारी तबाह हो गये। एक तरफ तो अँगरेज कुछ भी शुल्क नहीं देते थे, दूसरी तरफ देशी व्यापारियोंको लगभग दस फी सदी कर देना पड़ता था। अतः यह लोग अँगरेजोंके मुकाबलेमें नहीं ठहर सके। इन्हें व्यापार बन्द करना पड़ा। सैर-उल-मुताखरीनके लेखक सैयद गुलाम हुसैनने अँगरेजोंकी बड़ी तारीफ की है। परंतु व्यापार सम्बन्धी उनके इस स्वार्थपूर्ण व्यवहारके सम्बन्धमें उसे भी विवश होकर यह लिखना पड़ा है कि 'बंगालकी प्रजाकी भलाईकी तरफसे ये लोग इतने उदासीन हैं कि उनके प्रभावक्षेत्रके भीतर रहनेवाले लोग त्राहि त्राहि पुकार रहे हैं। प्रजा निर्धनतासे पीड़ित हो रही है। हे परमात्मा, आओ, और अपने सेवकोंकी रक्षा करो। उन्हें अन्यायियोंके पंजेसे छुटकारा दिलाओ" *

---

* But such is the little regard which they show to the people of these kingdoms and such is their apathy and indifference to their welfare that the people under their dominion groan everywhere and are reduced to poverty and [distress. [O God, come to the assistance of thy afflicted servants and deliver them from the oppressions they suffer." Sayer-ul-Mutakherin.

मिस्टर हेस्टिंग्ज़ने बड़े मार्मिक शब्दोंमें उस समयकी अवस्थाका वर्णन किया है। वह लिखते हैं कि "जहाँ जहाँ मैं गया वहाँ वहाँ अँगरेज़ी झण्डेको देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। नदीमें मैंने कोई भी ऐसी नाव नहीं देखी जिसपर अँगरेज़ी झण्डा न फहराता हो। मेरी यह धारणा है कि इस तरहकी कार्रवाईसे नवाबकी आमदनीको कोई लाभ नहीं हो सकता। देशमें शान्ति भी नहीं रह सकती और इससे हमारे राष्ट्रकी इज्जत भी कायम नहीं रह सकती। इसके प्रतिकूल इससे तीनोंकी हानि ही होती है। राहमें कुछ अँगरेज़ी सिपाहियोंकी क्रूरता और अत्याचारपूर्ण व्यवहार देखकर मुझे मालूम हो गया कि इनपर कुछ दबाव न होनेसे ये किस तरहकी मनमानी कार्रवाई करते हैं। राहमें उनके विरुद्ध बहुतोंने शिकायत की। हम लोगोंके पहुँचने पर हमारी ओरसे अत्याचार होनेके भयसे, बहुतसी सरायें और शहर लोगोंके भाग जानेके कारण बिल्कुल खाली हो गये"। *

* I have been surprised to meet with several English flags flying in places which I have passed and on the river I donot believe I passed a boat without one. By whatever title they have been assumed I am sure their frequency canbode no good to the nobob's revenues, the quiet of the country or the honour of our nation, but evidently tends to lessen each of them. A party of sepoys who were on the march before us afforded sufficient proof of the rapacious and insolent spirit of those people, where they are left to their own discretion. Many complaints were made me on the road against them and most of the towns and serais were deserted at our approach and the shops shut up from the apprehension of the same treatment from us.—Hasting's letter, dated 25th April 1762.

श्रीरमेशचन्द्र दत्त लिखते हैं कि "बङ्गालकी जनतापर इससे भी पहले अत्याचार हुए थे। परन्तु उनपर इतना-अधिक व्यापक अत्याचार कभी भी नहीं किया गया था जिसका कुप्रभाव हर बाज़ार तथा हर जुलाहेपर पड़ा हो। उनके व्यापार, उद्योग और जीवनपर कभी कुठाराघात नहीं किया गया था। कलाकौशलका स्रोत ही बन्द कर दिया गया; उनके धनोत्पत्तिके साधन चूस लिये गये"।*

प्रायः सभी अँगरेज़ इतिहास-लेखकोंने अपने देशवासियोंके इस क्रूरतापूर्ण व्यवहारपर असन्तोष और लज्जा प्रगट की है। मैलिसन लिखते हैं कि "१२० वर्ष पहले अँगरेजोंने एक देशी शासकके साथ जिस कुटिल नीतिका अवलम्बन किया था उसका हाल पढ़कर प्रत्येक सच्चे अँगरेजका मुख लज्जासे अवनत हो जायगा। उस शासकका अपराध उनके सामने केवल यही था कि अँगरेजोंके अत्याचारसे वह अपनी प्रजाकी रक्षा करना चाहता था। किसी भी राष्ट्रके इतिहासमें ऐसे नीच, लज्जाजनक और अयोग्य व्यवहारका वर्णन नहीं मिलता।"†

---

* The people of Bengal had been used to tyranny but had never lived under an oppression so far reaching in its effects, extending to every village-market and every manufacturer's loom. They had never suffered from a system which touched their trades, their occupations, their lives so closely. The springs of their industry were stopped, the sources of their wealth were dried up.—R. C. Dutt's Early British Rule in India, p. 27.

† "The cheek of every honest Englishman must burn with shame as he reads the account of the policy adopted by the leading men amongst their country-men in India 120 years ago towards the native ruler. Malleson's Decisive Battles of India p. 136.

इसके विपरीत कुछ संकुचित-हृदय इतिहास-लेखकोंने अँगरेज़ वणिकोंकी इस निर्लज्ज नीतिका समर्थन भी किया है। व्हीलर साहबका कहना है कि "ये सन्धियाँ ऐसे समयमें हुई थीं जब कि देशमें एक बड़ी क्रान्ति मची हुई थी। अँगरेज सब कुछ माँग सकते थे और किसीको इनकार करनेका हक़ नहीं था। इतना समय ही नहीं था कि सन्धिकी हर शर्तकी व्याख्या हो सके। निःशुल्क व्यापारका मतलब हर प्रकारके व्यापारसे था।"* किन्तु फिर भी जिन लोगोंने नवाबके साथ सन्धि की थी उनका कथन इस सम्बन्धमें अधिक विचारणीय है। मिस्टर हेस्टिंग्ज और वानसीटार्टने मीर क़ासिमके साथ सन्धि करनेमें मुख्य भाग लिया था। उन्होंने साफ साफ कहा है कि सन्धिके द्वारा अँगरेजोंको व्यापारके सम्बन्धमें कोई नये अधिकार प्राप्त नहीं हुए। अपने देशवासियोंके अन्यायोंको छिपानेके अभिप्रायसे व्हीलर महाशय जो चाहें कह सकते हैं परन्तु इतिहास तो यही बतलाता है—और हेस्टिंग्ज़ तथा वानसीटार्टके पत्र इस बातके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं—कि अँगरेज वणिकोंने जिस नीतिका अनुसरण किया वह सर्वथा निन्दनीय थी।

---

* The plain truth was that the so-called treaties were mere agreements patched up on the eve of a revolution. The English were in a position to demand anything, the expectant could refuse nothing.... The term 'duty free' meant any thing and everything.—Wheeler's Early Records of British India p. 316.

१८—व्यापार सम्बन्धी झगड़ोंका सूत्रपात।

जिस समय मीर क़ासिम नवाब-पदपर अभिषिक्त हुए थे उसी समयसे उन्हें अँगरेज वणिकोंकी कुरीतियों और उनके मनमाने अत्याचारोंको देखनेका अवसर प्राप्त हो रहा था। मीर जाफ़रकी शिथिलतासे लाभ उठाकर बंगालकी जनतापर अँगरेज़ोंने जो क्रूरताएँ की थीं, स्वार्थ-सिद्धिके विचारसे प्रेरित होकर सरकारी मालगुज़ारीको जो क्षति पहुँचायी थी, उनका मीर कासिमको प्रत्यक्ष ज्ञान होगया। वह तो बंगालकी शोचनीय अवस्थाको सुधारनेके निमित्त ही नवाब हुए थे। अतः वह इस बातको चुपचाप कैसे देख सकते थे कि बाहरसे आये हुए व्यापारी अधिक सुविधाएँ प्राप्त कर इस देशके ही व्यापारियोंको व्यापारिक प्रतियोगितामें परास्त करें। मीर क़ासिम मीर जाफ़र-की तरह अँगरेज़ोंके इशारेपर नाचनेवाले न थे। वह पूरे स्वाभिमानी थे। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि जिस तरह बन पड़ेगा उस तरह बंगालमें बसे हुए अँगरेज़ोंके अत्याचारोंसे प्रजाकी रक्षा करूंगा।

जबतक देशमें अराजकता रही मीर क़ासिम इस सम्बन्धमें कुछ भी न कर सके। जब बादशाह दिल्लीको चले गये, रामनारायणका मामला तै होगया और ज़मींदारोंकी शक्तिका पूर्णतः दमन होगया तो नवाबका ध्यान प्रजाके कष्टों और अँगरेज़ वणिकोंके कुव्यवहारोंकी ओर आकर्षित

हुआ । इस समय पटनेमें विहार प्रान्तके अँगरेज़ी शासक मिस्टर एलिस थे। नवाब मीर क़ासिमने सुना कि पुर्निया फैक्टरीके अँगरेजी एजएट मिस्टर जार्ज ग्रेने बहुतसे सिपाहियोंको हर स्थानपर भेजा है कि वे फैक्टरियां स्थापित करें और लोगोंसे ज़बरदस्ती गल्ला खरीदें । इन सिपाहियोंने नवाबके एक पेशकार हीरामनको कैद भी कर लिया था । जब नवाबके कानोंमें यह बात पड़ी तो उन्होंने पत्र द्वारा मिस्टर एलिसको उक्त घटनाओंसे परिचित किया और लिखा कि जो सन्धि हम लोगोंके बीच हुई है, ये कार्रवाइयाँ उसके प्रतिकूल हैं ।

एलिसने उक्त पत्रका जो जवाब दिया उससे पता चलता है कि नवाबके प्रति उनके हृदयमें कितने अनादर और घृणाका भाव था । उनके पत्रका आशय यह है—"कम्पनीके गुमाश्तोंको हर स्थानपर व्यापार करनेका अधिकार प्राप्त है । आप पुर्नियामें स्थित अपने अफसर शेरअलीको लिख भेजिये कि वह अँगरेज़ी गुमाश्तोंकी कोई भी वस्तु कहीं न रोकें । इसी आशयकी आज्ञा शेरअली अपने अधीन अन्य अफसरोंको भी दे दें ।" * मिस्टर एलिसने जिस समय यह पत्र लिखा था, उस समय शायद वह भूल गये थे कि हम यह पत्र अपने शासक प्रान्तके नवाबको लिख रहे हैं । वह तो समझे बैठे थे कि नवाब अँगरेज़ोंके आश्रित, उनकी इच्छाओंको पूर्ण करनेके निमित्त, दलाल मात्र

---

* The Company's Gumashtas have the free liberty of trading everywhere; ...... it is needless to enumerate particulars. Write a Parwana to Sher Ali Khan to forbid his officers to stop any goods of the Gumashtas in Purneah".

Extracts from Ellis's letter to the Navab Mir Kassim.

हैं। बिहार प्रान्तका अधीश्वर तो वह अपनेको ही समझ रहे थे।

मिस्टर एलिस यह पत्र लिखकर ही सन्तुष्ट नहीं हुए। नवाबके आदेशानुसार, पुर्नियामें सिपाहियों द्वारा किये गये अत्याचारोंको रोकना तो दूर रहा, उन्होंने थोड़े ही दिनों बाद एक बार फिर अपने दुष्ट स्वभावका परिचय दिया। नवाबका एक अफ़सर कहीं शोरा खरीदते पाया गया। एलिसने उसे तत्काल पकड़वा मँगाया और पैरोंमें बेड़ियाँ डाल कर कलकत्ता भेज दिया। कलकत्ता कौंसिल-की बैठक हुई और इस विषयपर वादविवाद हुआ कि उक्त अफसरके साथ क्या व्यवहार किया जाय। कुछ लोगोंकी राय थी कि उसको कोड़ोंसे मारा जाय। जौनस्टन-की इच्छा थी कि उसके कान काट डाले जायँ। किन्तु कौंसिलके अन्य सदस्योंने थोड़ी बुद्धिमानीसे काम लिया। यह तै हुआ कि वह अफसर नवाबके पास मुंगेर भेज दिया जाय और उनसे यह प्रार्थना की जाय कि उसे वह उचित दण्ड दें। इसके थोड़े दिन पश्चात् मिस्टर एलिस किलेकी तलाशीके निमित्त सेना लेकर मुंगेर पहुंचे जिसका पूरा विवरण पहिले दिया ही जा चुका है।

नवाब मिस्टर एलिसके उत्पातोंसे तङ्ग आ गये। कल-कत्तेके गवर्नर मिस्टर वानसीटार्टके पास उन्होंने एक पत्र लिखा और एलिसके दुष्ट व्यवहारोंपर असन्तोष प्रगट किया। पत्रसे नवाबके हृदयकी उद्विग्नता साफ साफ प्रगट होती है। नवाब लिखते हैं कि "हम लोगोंके बीच जो सन्धि हुई थी मैंने सर्वदा उसका पालन किया है। परन्तु आप लोग सन्धिके विरुद्ध मेरे किलोंपर क्यों

हमला करते हैं और मेरी प्रजापर अत्याचार क्यों करते हैं ? मेरे अधिकारपर नित्य प्रति जो धक्का लग रहा है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता "। *

१६—नवाबसे हेस्टिंग्जकी भेंट।
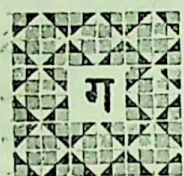
गवर्नर वानसीटार्टने कौंसिलके सामने नवाबका पत्र पेश किया। साथ ही साथ यह प्रस्ताव भी रक्खा कि कौंसिलकी तरफ़से मिस्टर हेस्टिंग्ज मुंगेर भेजे जायँ और वह नवाब तथा एलिसके पारस्परिक झगड़ोंको तै करें। कलकत्ता-कौंसिलने गवर्नरका प्रस्ताव स्वीकृत किया। मिस्टर हेस्टिंग्जको बहुत सी हिदायतें दी गयीं। अन्तमें मिस्टर आमियाटने एक बात और जोड़नी चाही। उनका प्रस्ताव था कि "नवाब मीर क़ासिमने जो "बीस लाख रुपया सिलेक्ट कमेटीको देनेका वादा किया था वह कम्पनीको इस समय दे दें। क्योंकि यदि वह रुपया सिलेक्ट कमेटीके मेम्बरोंको मिलेगा तो उसका यह अर्थ होगा कि बङ्गालकी सूबेदारी मीर क़ासिमके हाथ बेची गयी है।"

जौनस्टनने उक्त प्रस्तावका समर्थन किया और कहा कि सिलेक्ट कमेटीने मीर कासिमको नवाब बना कर शासनमें जो परिवर्तन किया था वह कम्पनीकी तरफसे ही हुआ था। अतएव कम्पनीको ही वह रुपया मिलना चाहिये।

---

* Navab Mir Kassim's letter, dated 22 Feb. 1762. to Mr. Vansittart

मेजर चारनाकका कहना था कि सिलेक्ट कमेटीके मेम्बरोंको भले ही यह बात मालूम न हो परन्तु दुनिया जानती है कि मीर क़ासिमको नवाब बनानेके बदलेमें सिलेक्ट कमेटीको रुपया मिल चुका है। यदि यह प्रस्ताव रखा जाता है तो यही समझा जायगा कि उन्हें अभीतक कुछ भी नहीं मिला है।

गवर्नर वानसीटार्टने आमियाटके प्रस्तावका घोर विरोध किया। उनका ख्याल था कि इस प्रस्तावसे शान्ति स्थापित होना तो दूर रहा, आपसमें विद्वेष और सन्देहकी मात्रा अधिक बढ़ जायगी। कौंसिलमें गवर्नरके विरोधियोंकी संख्या अधिक थी। उन्होंने इन बातोंपर तनिक-भी ध्यान नहीं दिया। "गवर्नरके साथ व्यक्तिगत शत्रुता होनेके कारण उन्होंने अपना कर्तव्य भुला दिया। आमियाटका प्रस्ताव बहुमतसे स्वीकृत हुआ।" *

मार्गमें मिस्टर हेस्टिंग्ज़को व्यापार सम्बन्धी बुराइयाँ देखनेका पूरा अवसर प्राप्त हुआ। भागलपुर पहुँच कर उन्होंने गवर्नरके पास एक पत्र भेजा। उसमें उन्होंने लिखा था कि "मैं आपको कुछ दोष और कुरीतियाँ बतलाता हूँ जिनका शीघ्र निवारण होना आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं हुआ तो नवाब और कम्पनीके बीच स्थायी शान्तिका स्थापित होना असंभव होगा। मेरा आशय उन अत्याचारोंसे है जो अँगरेज़ोंकी आज्ञासे उनके नामपर किये जाते हैं। मुझे विश्वस्त सूत्रसे मालूम हुआ है कि इस

---

* The private feelings of the Governor's enemies overcame their sense of public duty and they succeeded in carrying their motion.
—Thoronton.

तरहके निन्दित कार्य्य केवल हमारे ही आदमी नहीं करते । अपनेको हम लोगोंका सिपाही या गुमाश्ता बतला कर और भी बहुतेरे आदमी निःशुल्क व्यापार कर रहे हैं । × × मेरी धारणा है कि इस तरहकी कार्रवाइयोंसे देशमें शान्ति स्थापित नहीं हो सकती और न नवाबके शासन-प्रबन्धमें सुविधा हो सकती है । इससे हमारे राष्ट्रकी मर्यादाका भी बना रहना असम्भव है ।" *

यह बात निःसंकोच माननी पड़ेगी कि उस समय वानसीटार्टके अतिरिक्त केवल हेस्टिंग्ज ही कौंसिलके एक ऐसे सदस्य थे जिन्हें अपने कर्तव्यका कुछ ख्याल था, जो आँखें खोल कर कुल बातें देखते थे और उचित कार्य्यका समर्थन तथा अनुचित कार्यका विरोध करनेके लिए तैयार रहते थे ।

नवाब मिस्टर हेस्टिंग्ज़से सहसराममें मिले । नवाबने हर प्रकारसे उनका सत्कार किया, उनके आरामके लिए सब तरहकी सुविधाओंका प्रबन्ध किया । एलिस पन्द्रह मीलकी दूरीपर लिंगिया नामके स्थानपर ठहरे हुए थे । वह हेस्टिंग्ज़से मिलने नहीं आये । सहसराम पहुँच कर मिस्टर हेस्टिंग्ज़ने एलिसको एक पत्र लिखा । पत्रका आशय इस प्रकार है— "आपको पटनेमें न देख कर मुझे बड़ी निराशा हुई । आप इस बातसे अनभिज्ञ नहीं रह सकते कि मैं कौंसिलकी तरफसे नवाब और कम्पनीके नौकरोंमें शान्ति-स्थापनार्थ आया हुआ हूँ । मुझे आशा थी कि यहाँपर आपसे मिलकर मुझे उन सारी बातोंका ज्ञान होगा जिनके कारण आपके और नवाबके

*Hasting's letter to Mr. Vansittart dated 25th April, 1762.

बीच झगड़ा है और हम दोनों मिलकर इसका कुछ उपाय सोचेंगे।"

मिस्टर हेस्टिंग्ज़ समझते थे कि इस पत्रको देख कर एलिस लज्जित होंगे और तत्काल आकर मिलेंगे। परन्तु एलिससे तो इस तरहकी आशा रखना ही बेकार था। इन्होंने साफ़ साफ़ लिख भेजा कि "इतनी गर्मीमें पन्द्रह मील जानेका कष्ट मैं सहन नहीं कर सकता।"* एलिसकी गति देखकर हर निष्पक्ष इतिहासज्ञको यह मानना पड़ेगा कि यह झगड़ा करनेपर ही तुले हुए थे। शान्ति तो इन्हें स्वीकार ही न थी।

यथासमय हेस्टिंग्जने नवाबसे पूछा कि आपको किन बातोंकी शिकायत है। नवाबने जो कुछ जवाब दिया उससे यह स्पष्ट है कि वह शान्तिके लिए बड़े उत्सुक थे। नवाबके कथनका सारांश यह है—"यदि यह बात प्रमाणित हो जाय कि हम लोगोंके बीच मेरे किसी नौकरने असन्तोष फैलानेका यत्न किया है तो मैं उसका सिर काटनेको तैयार हूँ। परन्तु यदि आपको अभी तक यह बात मालूम नहीं हुई कि आप लोगोंमें कौन ऐसा आदमी है जो झगड़ा पैदा करना चाहता है तो मैं उसका नाम बतलाना चाहता हूँ। वह मिस्टर एलिस हैं। एलिसने हमारे नौकरोंपर जो ज़ुल्म किया है और मेरे अधिकारपर जिस प्रकार यह कुठाराघात कर रहे हैं उससे मेरे शत्रुओं-का साहस बढ़ गया है। इनके कारण शुजाउद्दौलाके

---

* He wrote that he could not be expected to pay him the complement of travelling such a distance in the hot weather.

—Bengal Dist. Gazetteer.

दरबारमें मेरे शासनके विरुद्ध ऐसी बातें फैल गयी हैं जो मेरे प्रबन्धके लिए बड़ी हानिकारक हैं।"

कुछ ही दिनोंमें हेस्टिंग्जको मालूम हो गया कि जो बातें नवाबने उनसे कही थीं वे अक्षरशः सत्य हैं। गवर्नर वानसीटार्टको एक पत्रमें उन्होंने लिखा कि "संसार देख रहा है कि नवाबके अधिकारकी क्या भद्द हो रही है, उनके अफ़सर क़ैद कर लिये जाते हैं और उनके क़िलोंके विरुद्ध सिपाही भेजे जा रहे हैं। नवाबसे कहा जाता है कि बिहारका अँगरेज़ी अफसर एलिस उन्हें नवाब नहीं मानता। इसका परिणाम केवल युद्ध होगा।" इसी आशापर नवाबके शत्रुओंको भी उत्तेजना मिलती है। नवाबपर एलिस द्वारा की गयी ज्यादतियोंको देखकर उनके सब्रपर हेस्टिंग्ज़को आश्चर्य हुआ था। वानसीटार्टको वह लिखते हैं कि "यदि मैं नवाबके स्थानपर होता तो इस बातके निश्चय करनेमें मुझे तनिक भी हिचकिचाहट न होती कि अत्याचारोंसे अपनी प्रजाकी किस प्रकार रक्षा करूँ।"*

गवर्नर वानसीटार्टके आदेशानुसार हेस्टिंग्ज़ने व्यापार सम्बन्धी कठिनाइयोंको दूर करनेके निमित्त निम्नलिखित उपाय नवाबके सामने पेश किये—

(१) हर चौकीके दारोगाको यह आज्ञा भेजी जाय कि वह बिना दस्तक देखे किसी भी अँगरेज़ी नावको न जाने दे।

(२) जिन नावोंपर केवल अँगरेजी झण्डा हो परंतु दस्तक न हो वे रोक ली जायँ। अगर सामान किसी अँगरेजका हो तो सबसे निकटकी अँगरेजी फैक्टरीके अफसरको

---

* Hasting's letter dated 25th April 1762.

इसकी सूचना दी जाय। यदि सामान किसी सरकारी प्रजाका हो तो इस अवस्थामें नवाब जो चाहें कर सकते हैं।

(३) हर सरकारी अफसर और फौजदारको यह सूचना दी जाय कि अँगरेजी गुमाश्तोंको अत्याचार करने तथा सरकारी प्रबन्धमें हस्तक्षेप करनेसे रोकें और यदि कोई गुमाश्ता आनाकानी करे तो उसके साथ बलका प्रयोग करें।

(४) कलकत्तेसे यह आज्ञा हर जगह भेजी गयी है कि अँगरेजी गुमाश्ते या फैक्टरीके नौकर नवाबके शासन-प्रबन्धमें बाधा न डालें। इसी प्रकार सरकारी अफ़सरोंको भी आज्ञा दी जाय कि वे कम्पनीके व्यापारमें विघ्न न डालें।

(५) कम्पनीके गुमाश्तोंको वहादारी, खेत या किसी प्रकारकी सरकारी नौकरी न दी जाय।

(६) केवल कम्पनीके गुमाश्तोंको अँगरेजी झण्डे रखनेका अधिकार होगा।

(७) बोर्डकी आज्ञाके विना कोई यूरोपियन नौकर नहीं रखा जा सकेगा। नौकरी पानेके पहले हर यूरोपियनको इस बातकी जमानत देनी होगी कि किसी सरकारी प्रबन्धमें वह हस्तक्षेप न करेगा।

नवाबने ये बातें मान लीं। साथ ही उन्होंने यह शर्त भी जोड़नेकी इच्छा प्रगट की कि गुमाश्तोंको सरकारी प्रजासे उनकी इच्छाके विरुद्ध कोई वस्तु खरीदने या उनके हाथ बेचनेका अधिकार न होगा और प्रजा मात्रको यह स्वतन्त्रता रहेगी कि जो वस्तु जहाँसे चाहे खरीदे या जहाँ चाहे वहाँ बेचे।

नवाबने हेस्टिंग्जसे प्रार्थना की कि इन हिदायतोंपर प्रेसीडेण्टका, और यदि संभव हो तो समूची कौंसिलका भी, हस्ताक्षर रहे। हेस्टिंग्जने गवर्नरको नवाबकी इच्छा लिख भेजी। वानसीटार्टने हेस्टिंग्जके पत्रका जो उत्तर दिया वह इस प्रकार है—"अन्य शासकोंकी भाँति नवाबको भी यह अधिकार है कि यदि उनकी प्रजापर कोई किसी तरहका अत्याचार करता है तो वह उसे रोकें और यदि शान्तिसे काम नहीं निकलता तो बलप्रयोग भी करें। नवाबके इस अधिकारकी पुष्टि क़ानूनके द्वारा करना फज़ूल है। कोई भी मनुष्य क्यों न हो, यदि वह नियमके विरुद्ध कार्य करता है तो सरकारी अफसर उसको सीधे-सादे ढंगसे रोक सकते हैं और यदि यों काम न निकले तो बलप्रयोग करनेका अधिकार भी उन्हें प्राप्त है। किसी भी निष्पक्ष मनुष्यको इस उचित बातके सम्बन्धमें शिकायत करनेका स्थान नहीं है।" *

यद्यपि प्रेसीडेण्टने हेस्टिंग्ज़ द्वारा बताये गये उपायोंके पक्षमें ही अपनी राय दी, तो भी कलकत्ता-कौंसिलके मेम्बरोंने उनका विरोध किया। बंगाल जहन्नुममें चला जाय, इसकी इन्हें क्या परवाह थी? इन्हें तो अपने लाभसे

* It is a natural right which the Nabob has in common with all the governments to prevent by force if fair means fail, any injury being done to his subjects by any other person. It would be almost absurd to give consent to this by any public act. Where-ever unlawful attempts are made by our people, officers of the government must prevent them by fair means if possible, if not oppose them by force and it is what no reasonable man can complain.—Extracts from Vansittart's speech in the meeting of the Calcutta Council.

मतलब था। बंगालका शिल्पव्यवसाय भले ही नष्ट हो जाय, बिचारी प्रजा भले ही नाना कष्ट उठाती रहे इनके लिए तो केवल एकही प्रश्न था। वह यह कि हमारे व्यापारकी किस प्रकार वृद्धि हो और हम किस तरह मजे उड़ावें।

२०—बरवना फाटकका बन्द होना।

व्यापार सम्बन्धी नियमोंके निर्धारित करनेके पहले कलकता-कौंसिलके सामने बरवना फाटक और बुर्जका* मामला आ पड़ा। पटना शहर नदीके किनारे किनारे पूरबसे पश्चिमतक दो मीलकी दूरीपर बसा था। दोनों तरफ दो फाटक थे। पश्चिमी फाटक और नदीके बीच बरवना फाटक था। वास्तवमें यह एक छोटी सी खिड़की थी जिससे होकर शहरको रास्ता था। अँगरेज़ी फ़ैक्टरीसे यह खिड़की केवल दो या तीन सौ गज़की दूरीपर थी। अतएव इधरसे शहर जानेमें वहाँवालोंको सुविधा थी। मुख्य फाटक शहरसे आध मीलकी दूरीपर था। संवत् १८१६ (सन् १८६२) में कप्तान कारस्टेयरके अधीनस्थ कई आदमी काम छोड़कर भाग गये। उस समय मिस्टर एलिसने राजवल्लभको लिखा कि हमारे किसी भी सिपाहीको शहरमें न जाने दीजिये। राजवल्लभने नवाबको उक्त सूचनासे परिचित किया। नवाबने आज्ञा

* Bastion.

दी कि पूरब और पश्चिमके दो मुख्य फाटकोंके अतिरिक्त और कुल रास्ते बन्द कर दिये जायँ।

एलिसको जब यह बात मालूम हुई तो राजवल्लभके पास पत्र लिखकर उन्होंने इस आज्ञाका विरोध किया। बोर्डको भी पत्र लिखा कि बरवना फाटक बन्द किया जा रहा है। मुख्य फाटक फैकृरीसे आध मीलकी दूरीपर है। बरवना फाटकके बन्द होनेसे फैकृरीका सारा काम रुक जायगा। बोर्डने उस समय यह तै किया कि गवर्नर वानसीटार्ट नवाबको लिखें कि बरवना फाटक खोल दिया जाय। नवाबने उक्त आदेशका पालन किया, परन्तु बादको बरवना फाटकके खुलनेसे बडा उत्पात मचने लगा। फ़ैकृरीके सिपाही इधरसे घुसकर शहरमें लूटपाट मचाते थे, शहरवालोंको तंग करते थे, और फिर उधरसे ही शीघ्र निकल भागते थे। अतएव नवाबने बरवना फाटकको बन्द करवा दिया।

पटना शहर एक दीवार और एक खाईसे घिरा था। केवल नदीकी तरफ कोई दीवार नहीं थी। पश्चिमोत्तर किनारेपर बुर्ज़ था। नदीसे उस बुर्ज़ होकर शहरको रास्ता था। नवाबके आज्ञानुसार राजवल्लभने बुर्ज़से फैकृरी होते हुए नदीतक एक दीवार खड़ी करनी शुरू कर दी थी। एलिसने बोर्डसे शिकायत की कि यदि यह दीवार खड़ी हो जायगी तो नावें फैकृरीके पास न लग सकेंगी, नदीके उस पारही उन्हें रखना होगा। बोर्डके निर्णयानु-सार गवर्नर वानसीटार्टने नवाबको फिर लिखा कि दीवार न उठायी जाय। नवाबने इस आज्ञाका भी पालन किया। परन्तु बादको जब बरवना फाटककी तरह इस ओर होकर भी

फ़ैक्टरीके सिपाही शहरवालोंपर अत्याचार करने लगे तब नवाबने पुनः दीवार उठानेका कार्य्य शुरू कर दिया।

एलिसने कलकत्ता-कौंसिलसे फिर शिकायत की। एलिसके पत्रपर विचार करनेके लिए ९ फाल्गुन (१९ फरवरी) को बोर्डकी बैठक हुई। बोर्डके विचारार्थ जो प्रश्न उपस्थित किया गया वह यह था "क्या नवाबको बरवना फाटक और बुर्ज़ तथा नदीके बीचका रास्ता बन्द करनेकी आज्ञा दी जाय?"

प्रेसीडेण्टने बुर्ज और नदीके बीचका रास्ता बन्द करनेके ही पक्षमें अपनी राय दी। उनका विचार था कि यद्यपि बरवना फाटकसे आने जानेमें फैक्टरीके लोगोंको अधिक सुविधा थी तथापि उसके बन्द होजानेसे कोई विशेष असुविधा भी नहीं है। कम्पनीके व्यापारको उक्त फाटकके बन्द होनेसे कोई हानि पहुँचनेकी सम्भावना नहीं है क्योंकि शहरमें तो कम्पनीका कुछ व्यापार होता ही नहीं है। बुर्ज़ और नदीका रास्ता खुला रखना तो उस मनुष्यके लिए असंभव है जिसके ऊपर शहरकी रक्षाका भार है। किसी शत्रुके लिए इस राहसे होकर शहरमें घुस जाना बड़ा ही आसान है। एलिसने लिखा है कि नावोंको फैक्टरीके पास न लगा कर नदीके उस पार लगाना होगा, यह बात असत्य है। शहर नवाबके अधिकारमें है। शहरवालोंकी जान और मालकी रक्षाका भार उनके ऊपर है। उन्हें यह अधिकार है कि हर उपायसे शहरकी रक्षा करें।

मिस्टर वाट्सने फाटक खोलने और बुर्ज़वाली दीवार गिरानेके पक्षमें राय दी। मेरीयाटने भी इस बातका सम-

र्थन किया। मिस्टर हेने यह संशोधन उपस्थित किया कि यदि नवाब हमारी बातोंको माननेके लिए तैयार न हों तो एलिसको बलपूर्वक ऐसा करनेका अधिकार दिया जाय। जौनस्टनने संशोधनका समर्थन किया। हेस्टिंग्ज़की राय थी कि फाटक खोल दिया जाय परन्तु एलिसको बलप्रयोग करनेकी आज्ञा न दी जाय। मिस्टर कारस्टेयरने हेके संशोधनके पक्षमें अपनी राय दी। उनका कहना था कि नवाबका यह कार्य्य अँगरेज जातिको चिढ़ानेके अभिप्रायसे किया गया है। अन्तमें यह तै हुआ कि गवर्नर वानसीटार्ट नवाब मीर क़ासिमके पास निम्नलिखित आशयका पत्र लिखें—
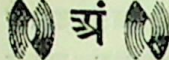
"पटना फैक्टरीके सरदार और कलकत्ता-कौंसिलने मुझसे यह शिकायत की है कि बरवना फाटकके बन्द हो जानेसे फ़ैक्टरीके नौकरोंको बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती है, कम्पनीके कारोबारमें रुकावट होती है। बुर्ज़से नदीतक दीवार खड़ी करनेसे भी हम लोगोंको हानि पहुँचती है। नावोंको नदीके दूसरी ओर लगाना पड़ता है। बीस वर्षसे हम लोग बरवना फाटकको खुला पाते आये हैं। एक बार जब शहरपर घेरा था तो इसी राहसे रसद पहुँचती थी। इस समय फाटकको बन्द करना उचित नहीं है। इससे लोगोंमें सन्देह पैदा होता है। वे समझते हैं कि अँगरेजोंके साथ नवाबकी मित्रता नहीं है। कौंसिलके आदेशानुसार मैं आपको सूचित करता हूँ कि आप पूर्ववत् फाटकको खुला रहने दें और बुर्ज़से नदीतक दीवार इस ढंगकी बनायी जाय कि नावोंको फैक्टरीके पास ठहरनेकी गुंजाइश हो।"

इस प्रस्तावको स्वीकार कर बोर्डने अपने अधिकारका दुरुपयोग किया, यह बात हर निष्पक्ष इतिहास-लेखकको माननी पड़ेगी। मर्यादाकी सीमासे बाहर होकर उन्होंने नवाबके शासन-कार्य्यमें बाधा पहुँचायी। नवाबके पास जो पत्र लिखनेका आदेश गवर्नरको किया गया था उसमें कहा गया है कि बीस वर्षसे यह फाटक बराबर खुला रहता है, अब कोई कारण नहीं कि बन्द कर दिया जाय। यदि बोर्डके सदस्य अपनी बुद्धिको तनिक भी कष्ट देते तो उन्हें मालूम हो जाता कि तब और आजके समयमें बहुत अन्तर है। संवत् १८१४ (सन् १७५७ ई०) से पहले उनमें इतना साहस न था कि किसी नवाबको इस तरहकी आज्ञा दे सकते। इस समय उन्हें यह कहनेकी भी हिम्मत हो गयी कि यदि आवश्यकता पड़े तो बलपूर्वक फाटक खोल दिये जायँ। उस समय नवाबके सन्मुख ज़बान हिलानेकी भी शक्ति उनमें नहीं थी, तब वे नवाबकी कृपाके भिखारी थे, किन्तु अब वे अपनेको बंगालका भाग्य-विधाता समझते हैं। नवाब आज उनके आश्रित हैं। तब बरवना फाटकसे होकर शहरमें उत्पात मचानेका साहस एलिस और उनके अन्य सिपाहियोंको कदापि न होता। परन्तु आज उन्हें प्रजाकी लूटपाट और उनपर मनमाने अत्याचार करनेमें किसी प्रकारकी रुकावट नहीं है। इसी कारण नवाब आज बरबना फाटकको बन्द रखना चाहते हैं।

२१—निःशुल्क व्यापारका प्रश्न ।

गरेजोंके व्यापार सम्बन्धी स्वत्वोंकी रक्षाके निमित्त कलकत्ता-कौंसिलका अधिवेशन १० फाल्गुन (२२ फरवरी) को हुआ । निम्न-लिखित प्रश्न विचारार्थ उपस्थित थे ।

(१) फ़रमान तथा बादकी सन्धियों द्वारा क्या हम लोगोंको यह अधिकार प्राप्त है कि हम हर वस्तुका बंगाल प्रान्तके भीतर या विदेशसे बिना शुल्क व्यापार कर सकें ?

(२) क्या नमक, पान, तम्बाकू या अन्य किसी वस्तु-पर हमें नवाबको शुल्क देना चाहिये ?

(३) क्या इस प्रकारकी वस्तुओंके लिए भविष्यमें कम्पनीका दस्तक दिया जायगा ?

(४) क्या भविष्यमें कम्पनीके नौकरोंके अतिरिक्त अन्य किसीको सर्टिफ़िकेट दिया जाना चाहिये ?

(५) क्या अँगरेज़ी गुमाश्ते किसी सीमातक सरकारी अफ़सरोंके अधीन रहेंगे ? अगर रहेंगे तो किस हद्दतक ?

(६) यदि नहीं तो हमारे गुमाश्तों और सरकारी अफ़-सरोंके झगड़े किस प्रकार तै होंगे ?

वाट्सकी राय थी कि फ़रमानके द्वारा हम लोगोंको हर प्रकारका व्यापार बिना शुल्क करनेका अधिकार है । नमक, पान आदि हर वस्तुके लिए कम्पनीका दस्तक दिया जाना चाहिये । हम लोगोंके गुमाश्ते सरकारी अफ़सरोंके मातहत किसी प्रकार भी नहीं रखे जा सकते । ऐसा करनेसे हमारे व्यापारको क्षति पहुँचेगी । मिस्टर

मेरीयाटने भी यही सम्मति प्रगट की। वह केवल नमकपर थोड़ासा शुल्क देनेके पक्षमें थे। इस बातको सहन करनेके लिए वह तैयार नहीं थे कि अँगरेजी गुमाश्ते किसी भी रूपमें सरकारी अफ़सरोंके अधीन रहें। अपने गुमाश्तोंको सरकारी अफ़सरोंके मातहत रखना वह अँगरेज जातिके लिए लज्जाजनक समझते थे। हेने भी वाट्सका समर्थन किया।

यद्यपि कारस्टेयरका भी ख्याल यही था कि फरमानके द्वारा उन्हें प्रत्येक वस्तुका निःशुल्क व्यापार करनेका अधिकार है, तो भी अपनी उदारताके कारण उन्होंने यह स्वीकार किया कि नमक और तम्बाकूपर थोड़ा सा शुल्क नवाबको दिया जाय। गुमाश्तोंको तो सरकारी अफसरोंके अधीन वह भी नहीं रखना चाहते थे। आपसके झगड़े तै करनेके सम्बन्धमें उन्होंने यह राय दी कि यदि अभियोगी हमारा नौकर नहीं है तो उसे स्थानीय मैजिस्ट्रेटसे शिकायत करनी चाहिये। मैजिस्ट्रेटको स्वयं निर्णयका अधिकार न रहे। वह केवल शिकायतको निकटस्थ फैक्टरीके सरदारके पास निर्णयार्थ भेज दें। मि० वैरेल्स्टने यह मत प्रगट किया कि हमारे गुमाश्तों और सरकारी अफसरोंके झगड़ोंको तै करनेका यही उपाय है कि इनमेंसे यदि एकको दूसरेके विरुद्ध कुछ शिकायत हो तो वह वहाँकी फैक्टरीके सरदारके पास दरख्वास्त दे और यदि उसके निर्णयसे सन्तोष न हो तो वह कलकत्ता-कौंसिल और गवर्नरके यहाँ अपील करे। मिस्टर वाटसनकी राय थी कि नमक और तम्बाकूपर उतना शुल्क दिया जाय जितना नवाब मीर जाफरके समयसे हम लोग देते आ रहे हैं।

परन्तु यह कार्य्य प्रकाश्य रूपसे किसी घोषणापत्र द्वारा नहीं होना चाहिये । चारनाक, आमियाट और आदमने ज़ोरदार शब्दोंमें इस बातका समर्थन किया ।

पाठक कहीं यह न समझें कि कलकत्ता-कौंसिल स्वार्थान्ध, लज्जाशून्य और क्षुद्र प्रकृतिके मनुष्योंसे ही भरी पड़ी थी । सर्पके मस्तकपर मणि भी होती है और सिवार-में कमल भी छिपे रहते हैं । यद्यपि साधारणतः भारतवर्षमें आये हुए अँगरेजोंका नैतिक अधःपतन उस समय पूर्ण रूप-से हो चुका था, तो भी कलकत्ता-कौंसिलमें ऐसे दो आदमी वर्तमान थे जिन्हें न्यायका ख्याल अब भी थोड़ा बहुत बना हुआ था । उनमें एक तो गवर्नर वानसीटार्ट और दूसरे वारन हेस्टिंग्ज थे । वारन हेस्टिंग्जने और सदस्योंके प्रति-कूल अपनी राय प्रगट की । उन्होंने साफ साफ कह दिया कि फरमानके आधारपर हम बंगाल प्रान्तके भीतर यहाँ-की वस्तुओंमें व्यापार नहीं कर सकते । इन चीज़ोंके लिए कम्पनीका दस्तक देना अनुचित है । गुमाश्तोंपर सरकारी अफसरोंका दबाव अवश्य होना चाहिये । गव-र्नरने भी इसके अनुकूल ही अपना मत प्रगट किया । अन्तमें बहुमतसे निम्नलिखित बातें तै हुईं—

(१) फरमानके द्वारा अँगरेजोंको हर प्रकारका व्यापार निःशुल्क करनेका अधिकार है । फिर भी प्रथानुसार थोड़ा सा शुल्क नवाबको दिया जाय । नवाबको शुल्क माँगनेका अधिकार नहीं है । स्वेच्छासे कुछ शुल्क देना हम लोगों-को कृपा ही होगी ।

(२) यदि अँगरेजी गुमाश्तेको किसी सरकारी अफसरके द्वारा किसी प्रकारका कष्ट पहुँचे तो वह निकटस्थ सरकारी

अफसरको न्याय करनेके लिए लिखे । यदि उसके निर्णयसे उसका सन्तोष न हो तो पासकी फैक्टरीके सरदारको लिखे । फैक्टरीका सरदार सरकारी अफसरसे जवाब तलब कर सकता है । वे जुलाहे जिन्हें वस्तुओंके लिए बयाना दिया गया है हर प्रकारसे गुमाश्तोंके अधीन रहेंगे । यदि किसी सरकारी अफसरको किसी गुमाश्तेके द्वारा क्षति पहुँची हो तो वह पहले उसी गुमाश्तेसे कहे कि मामला तै कर दो । यदि वह ऐसा नहीं करता है तो निकटस्थ फैक्टरीके सरदारको न्याय करनेके लिए लिखे और वह सरदार उचित रूपसे न्याय करे ।

(३) कासिमबाज़ार-कौंसिलमें एक और उच्च श्रेणीका नौकर (सिनियर सर्वेण्ट) बढ़ाया जाय । वही रङ्गपुरमें रेज़ीडेण्ट नियत हो । वह उन तमाम स्थानोंकी देखरेख करे जहाँ फैकृरियाँ नहीं हैं । *

कलकत्ता कौंसिलकी कार्रवाईके विषयमें दो मत नहीं हो सकते । व्यापार-सम्बन्धी संकुचित स्वार्थने हेस्टिंग्ज़ और वानसीटार्टके अतिरिक्त अन्य तमाम सदस्योंके मनसे न्याय, कर्तव्य तथा उचित-अनुचितका भाव निकाल दिया और उन्हें उपर्युक्त निर्णय करनेके लिए प्रेरित किया । †

---

* पिछले दो प्रस्ताव एक और बैठकमें (५ मार्चको) तै हुए थे ।
—लेखक

† The narrow-sighted selfishness of commercial cupidity had rendered all members of the council with the two honourable exceptions of Hastings and Vansittart, obstinately inaccessible to the plainest dictates of reason, justice and policy—Wilson.

२२—कौंसिलमें पुनर्विचार ।

पिछले अधिवेशनमें यह निर्णय हो चुका था कि कुछ वस्तुओंपर नवाबको शुल्क दिया जाय । आज यह सवाल पेश था कि किन किन वस्तुओंपर कितना कितना शुल्क दिया जाय । मिस्टर हेने यह प्रश्न उपस्थित किया कि कम्पनीके अधीन स्थानोंमें पैदा हुई चीज़ोंके लिए शुल्क दिया जाय या न दिया जाय । मिस्टर वाटस्‌ने यह बात विचारार्थ रखी कि हम लोगोंको पटने और ढाकेकी टकसालोंमें सिक्का ढालनेका अधिकार है या नहीं ?

वाट्‌स कट्टर अपरिवर्तनवादी थे । स्वार्थ ही उनका सिद्धान्त था । तब भला नवाबको किसी वस्तुपर कर देकर वह अपने स्वार्थके प्रतिकूल आचरण कैसे कर सकते थे ? उन्होंने अपनी राय पूर्ववत् ही प्रगट की कि हमें किसी वस्तुपर भी नवाबको शुल्क न देना चाहिये, हम नवाबके साथ किसी प्रकारकी रियायत भी करनेको तैयार नहीं हैं, क्योंकि नवाबकी सर्वदा यही कोशिश रही है कि अँगरेज़ोंके सम्मानपर धक्का पहुँचावें । उनके कारण छः महीनेसे हम लोगोंका कारोबार रुका हुआ है । परन्तु यदि बोर्डके बहुसंख्यक लोगोंकी राय हो कि नवाबको कुछ कर दिया ही जाय तो नमकपर अढ़ाई फी सैकड़ा कर मञ्जूर किया जाय । कम्पनीके अधीन स्थानोंमें उत्पन्न होनेवाली वस्तुओं-पर शुल्क नहीं देना चाहिये । हम लोगोंको हर टकसालमें रुपया ढालनेका अधिकार है ।

मेरीयाटकी सम्मति थी कि केवल नमकपर अढ़ाई फी सैकड़ा महसूल दिया जाय। आप नवाबसे इस अनुग्रहके लिए कृतज्ञता और धन्यवादकी आशा करते थे। आपकी राय थी कि नवाबको यह लिख दिया जाय कि हम लोग फ़रमानके विरुद्ध बतौर रियायतके ऐसा कर रहे हैं। कम्पनीके अधीन स्थानोंमें उत्पन्न की गयी वस्तुओंपर भी शुल्क देनेके पक्षमें आप थे। आपका ख्याल था कि हर टकसालमें हमें रुपया ढालनेका अधिकार है।

हेका मत था कि "यद्यपि फ़रमानके द्वारा हम लोगोंको निःशुल्क व्यापारका पूर्ण अधिकार है तो भी जितना शुल्क मीर जाफरके समयमें हम लोग दिया करते थे उतना इस समय भी दें। कम्पनीकी ज़मीनपर तैयार की गयी चीज़ोंपर शुल्क न देना चाहिये। हमें हर टकसालमें रुपया ढालनेका अधिकार है।" जौनस्टनने भी आपका समर्थन किया। कारटेयर भी इसी रायके थे। भेद यही था कि आप कम्पनीकी ज़मीनपर बनाये गये नमकपर भी शुल्क देना चाहते थे। मि० वैरैल्स्टने आपका समर्थन किया। आमियाटकी सम्मति थी कि कुल वस्तुओंपर हर स्थानमें अढ़ाई फी सैकड़ा शुल्क दिया जाय। यथा-समय मिस्टर हेस्टिंग्ज़ने भी अपनी निष्पक्ष और न्याययुक्त सम्मति प्रगट की। आपने कहा कि हमें अन्य व्यापारियोंकी तरह नौ फी सैकड़ा शुल्क कुल चीज़ोंपर देना चाहिये। कम्पनीके अधीन स्थानोंमें उत्पन्न की गयी वस्तुओंपर भी महसूल दिया जाय। नवाबकी टकसालोंमें रुपया ढालनेका हमें कुछ भी अधिकार नहीं है। गवर्नर वानसीटार्टने ज़ोरदार शब्दोंमें हेस्टिंग्ज़का समर्थन किया।

अन्तमें यही तै रहा कि "केवल नमकके लिए हर स्थान-पर ढाई रुपये फी सैकड़ा शुल्क दिया जाय। साथ ही यह भी निश्चित हुआ कि रुपया हर टकसालमें ढाला जा सकता है और अंगरेज़ यह कार्य्य करनेमें स्वतन्त्र हैं। यह भी तै हुआ कि गवर्नर वानसीटार्ट नवाबके पास एक पत्र लिखें और बोर्डके निर्णयकी सूचना उन्हें दें। पत्रमें यह बात भी जोड़नेका निश्चय हुआ कि गवर्नर द्वारा लिखे गये पत्रको (जिसमें व्यापार सम्बन्धी सारे नियम दिये गये थे) नवाब लौटा दें।

२३—नैपालपर आक्रमण।

व्यापार संबन्धी नियमोंके निर्धारित करनेके कुछ दिनों बाद नवाब मीर क़ासिमने गुरगीन खाँ-की सलाहसे नैपालपर आक्रमण किया। नैपाल उस समय प्रचुर धन तथा सोनेके लिए विख्यात था। नैपालपर हमला करनेकी गुरगीनकी इच्छा पहलेसे ही थी। इसी उद्देश्यसे उन्होंने उस भागमें रहनेवाले संन्यासियों और फ़क़ीरोंसे सम्बन्ध स्थापित करना आरम्भ कर दिया था। वास्तवमें उनकी मंशा उन सिपाहियोंकी परीक्षा लेनेकी थी जिन्हें नियमित रूपसे उन्होंने संघटित किया था। उन्होंने पहाड़ी रास्तोंका पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया था और रास्ता बतलानेके लिए कई आदमियोंको नौकर भी रख लिया था।

इसके कुछ ही दिनों पूर्व नवाबने वेतिया नामके स्थान-पर अधिकार प्राप्त किया था। यह स्थान नैपालके बिलकुल निकट है। वहाँ शान्ति स्थापित करनेके बहाने नवाब रवाना हुए। वेतिया पहुँचनेपर वह वहीं ठहर गये और गुरगीन खाँ अपनी सेना लेकर आगे बढ़े। घाटियों और पहाड़ियोंको पारकर गुरगीन नैपालकी तराईमें पहुँचे। वहाँपर नैपाली सेनाने इनका सामना किया। घमासान युद्ध हुआ और नैपालियोंको पीछे हटना पड़ा। परन्तु गुरगीन खाँके बहुतसे आदमी मारे गये। कुछ दूर और आगे बढ़नेके पश्चात् रात्रि होनेके कारण सेनाने पड़ाव डाल दिया। अभी रात बहुत नहीं गयी थी कि नैपालियोंने झाड़ियों, पहाड़ियों आदिसे निकलकर गुरगीन खाँकी सेनापर चढ़ाई कर दी। नवाबी सेनामें, एकाएक आक्रमण होनेके कारण, गड़बड़ी मच गयी। नैपालियोंने पत्थरों और तीरोंसे प्रहार करना आरम्भ कर दिया। नवाबी सेनाको ठहरना कठिन हो गया। जिधर जिसने रास्ता पाया उधर ही भागना आरम्भ किया। नैपालियोंने नवाबकी आशा और मनसूबोंपर पानी फेर दिया।

जब गुरगीनने अपनी सेनाकी यह दुर्दशा देखी तो वह चकित होकर रह गये। अपना मुँह दिखाना उन्हें कठिन हो गया। जीवन उन्हें असह्य हो गया। वह वहींके वहीं रह गये और आगे बढ़नेको प्रस्तुत नहीं हुए।* उसी प्रकार नवाबने जब अपनी सेनाकी दुर्दशाका हाल सुना तो उन्हें भी बड़ा ही दुःख हुआ। गुरगीन खाँको उन्होंने लौट आनेकी आज्ञा दी। परन्तु गुरगीन इतने लज्जित थे

* Sayr-ul-Mutakherin Vol. II. p. 448.

कि नवाबकी आज्ञा होनेपर भी वह लौटनेको तैयार नहीं हुए। नवाबको जब यह खबर लगी तो उन्होंने एक ऐसे आदमीको भेजना उचित समझा जिसकी बातोंका प्रभाव गुरगीन खाँपर पड़ना संभव था। इसी उद्देश्यसे नवाबने अली इब्राहम खाँको भेजा। अली इब्राहमको राहमें बहुतसे सिपाही लौटते मिले। ये लोग बेतिया जा रहे थे। अली इब्राहमने उनसे ठहरनेको कहा और सलाह दी कि गुरगीन खाँ आवें तो उन्हींके साथ लौटें। सिपाहियोंने इनकी बात मान ली। तत्पश्चात् यह गुरगीन खाँके पड़ावमें पहुँचे और उनको बहुत कुछ समझा बुझाकर वापस लाये। बेतिया पहुँचनेपर सब लोग अज़ीमाबादके लिए चल पड़े।

नैपालके आक्रमणमें नवाब मीर क़ासिमको सफलता प्राप्त न हुई, इससे यह न समझना चाहिये कि गुरगीन खाँ अयोग्य सेनापति थे अथवा इनका सैनिक संघटन ठीक नहीं था। नैपाल ऐसा देश है जो पहाड़ियों और घाटियोंसे घिरा है और उसपर विजय प्राप्त करना बड़ीसे बड़ी सुसंघटित एवं सुसज्जित सेनाके लिए भी प्रायः असंभव था। इस बातके समर्थनमें कुछ अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं। सैकड़ों वर्ष व्यतीत हो गये, आज भी नैपाल नैपालियोंका ही देश है। आजतक वहां किसीकी दाल न गल सकी।
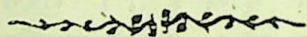
२४—अँगरेज़ वणिकोंका उत्पात।

हम यह बतला चुके हैं कि कलकत्ता-कौंसिलने गवर्नर वानसीटार्ट द्वारा निर्धारित नियमोंको अस्वीकार किया। इधर नवाबने हर स्थानमें अपने अफसरोंके पास इन नियमोंकी प्रति भेज दी थी और उन्हें आज्ञा दी थी कि उन्हींके अनुसार कार्य करें। किन्तु कलकत्ता-कौंसिलने तो अँगरेज़ वणिकोंकी पीठ ठोक ही दी थी, अतः इन लोगोंने उक्त नियमोंकी कुछ परवा न की। सरकारी अफसरोंने नवाबके आज्ञानुसार शुल्क लेना और शुल्क न देनेपर नावोंको रोकना शुरू किया। अँगरेजी फैक्टरियोंके अफसरोंने भी धर-पकड़ आरम्भ कर दी। जहाँ कहीं नवाबके अफसर उनके व्यापारमें बाधा पहुँचाते, उन्हें वे तत्काल गिरफ्तार कर लेते और भिन्न भिन्न फैक्टरियोंमें उन्हें क़ैद कर रखते। विशेष झगड़ेकी जड़ पटनेके अँगरेज़ सरदार मिस्टर एलिस और जहाँगीर नगरके अँगरेज़ी शासक मिस्टर वाटसन थे। इन लोगोंने नवाबके दो मुख्य सरदारोंको सेना भेज कर गिरफ़्तार करवा लिया और कलकत्ता भेज दिया।

जब नवाब मीर क़ासिम नैपालसे लौट कर आये तो उन्हें अँगरेज़ वणिकोंके इस उच्छृंखल आचरणका पता लगा। कलकत्ता-कौंसिलने वानसीटार्टके बनाये हुए

नियमोंको तिरस्कृत कर जिस स्वार्थ-नीतिका अवलम्बन किया था वह भी उन्होंने सुनो।

जब नवाबने देखा कि अपने शासनकी सम्मान-रक्षाके लिए यह आवश्यक है कि हम भी कुछ अँगरेज़ सरदारोंको पकड़ कर कैद कर रखें तब उन्होंने आज्ञा भेजी कि कुछ अँगरेज पकड़ लिये जायँ। आज्ञाका उचित रूपसे पालन हुआ। कई अँगरेज़ पकड़ लिये गये और नवाबने अपने कैदियोंकी जमानतके तौरपर इन्हें क़ैद रखा। तत्पश्चात् गवर्नर वानसीटार्टके नाम तीन पत्र नवाबने लिखे। अँगरेज व्यापारियोंके अत्याचारोंको देखते देखते नवाब मीर क़ासिम कितने अधिक उद्विग्न हो गये थे, उनके दुःसाहसको सहन करते करते वह कितने तंग आगये थे, इसका पता पाठकोंको इन पत्रोंसे मिल सकता है—

२१ फाल्गुन १८१९ (५ मार्च सन् १७६३ ई०) के पत्रमें नवाब एक स्थानपर लिखते हैं—"मेरा देश नष्ट हो रहा है किन्तु मैं एक शब्द भी उच्चारण नहीं कर सकता। मेरे अफसरोंके विरुद्ध अँगरेज़ी फौज भेजी जाती है। ऐसी अवस्थामें मुझे मालूम नहीं होता कि मैं किस प्रकार राज्य-कार्य्यका सम्पादन करूँ। जब कि कलकत्ता-कौंसिल इस प्रकारके नियम बना रही है तो ऐसी अवस्थामें मेरा शासन-भार वहन करना संभव नहीं। अतएव मुझे इस भारसे मुक्त कीजिये और मेरे स्थानमें किसी ऐसे पुरुषको नवाब बनाइये जिसे कलकत्ता-कौंसिल अधिक योग्य समझे।"

नवाबने दूसरा पत्र गवर्नरके पास ३० फाल्गुन (१४ मार्च) को लिखा। उसका आशय इस प्रकार है—"मैंने

अभीतक सब कुछ सहन किया। परन्तु अब अधिक सहन करनेकी मुझमें शक्ति नहीं रही। जो कुछ आपको मेरे साथ करना हो सो कीजिये। आप अपने नौकरों और नीच मनुष्योंके द्वारा मेरा अपमान क्यों कराते हैं? हम लोगोंके बीच जो सन्धि हुई, मैंने सर्वदा उसका पालन करनेका यत्न किया है। मिस्टर एलिसने सिपाहियोंकी तीन कम्पनियोंको त्यागीपुरमें स्थित मेरे दुर्गको घेरनेके लिए भेजा है। इसके अतिरिक्त और भी कई कम्पनियाँ दरभंगा, सारन, तिगरा आदि स्थानोंमें भेजी गयी हैं। मेरे प्रबन्धपर इतना बुरा असर पड़ा है कि मालगुजारीका मिलना एकदम रुक गया है। दो वर्षोंसे एलिस मुझे केवल नीचा दिखानेके लिए ये कार्रवाइयाँ कर रहे हैं।"

दूसरे ही दिन नवाबने फिर एक पत्र गवर्नरके पास भेजा। इसमें उन्होंने लिखा कि जिस प्रकार अँगरेज़ उत्पात मचा रहे हैं वैसा उन्होंने पहले मीर जाफरके समय कभी नहीं किया था। यदि इस उद्दण्डताका प्रयोग बराबर जारी रहा तो मुझे भी उन्हीं ढंगोंको काममें लाना होगा जो मेरे विरुद्ध प्रयुक्त किये जा रहे हैं। मुझे अपना सम्मान जीवनसे भी अधिक प्रिय है। यदि आप चाहते हैं कि हम लोगोंके दरमियान मित्रता क़ायम रहे तो तमाम झगड़ों और फसादोंको रोकिये। यदि आप झगड़ा ही मोल लेना चाहते हैं तो इसकी भी शीघ्र सूचना दीजिए।"

"मुझे अपना सम्मान जीवनसे भी अधिक प्रिय है" इस वाक्यसे नवाबकी अटल दृढ़ता प्रगट होती है। नवाब मीर क़ासिमने कलकत्ता-कौंसिलको यह बात साफ साफ बतला दी कि स्वार्थके वशीभूत होकर मैं राज्य नहीं कर

रहा हूँ । मैं तुम्हारी इच्छाका दास होकर नहीं रह सकता। मैं कर्तव्य-पालनार्थ ही नवाब हुआ हूँ, अतएव मैं उन नियमोंको माननेको तैयार नहीं जिनके कारण मेरी प्रजा दुःखसे रहे और अत्याचारसे पीड़ित होती रहे ।

यथासमय नवाबके पत्र गवर्नरको मिले और उन्होंने कलकत्ता-कौंसिलके सम्मुख उन्हें पेश किया । यह तै हुआ कि प्रेसीडेण्ट वानसीटार्ट निम्नलिखित आशयका पत्र नवाबके पास भेजें—"हम लोगोंके कारोबारमें आपके अफ-सरों द्वारा इतनी अधिक बाधा पहुँचायी गयी कि हम लोगोंका व्यापार एकदम रुक गया । हम लोगोंके पास बलप्रयोग करनेके सिवा और कोई साधन रहा ही नहीं । यही कारण है कि तमाम फैक्टरियोंके अफसरोंके पास हम लोगोंने आज्ञा भेजी कि वे हर प्रकारके साधन काममें लावें । मिस्टर एलिसने जो कुछ किया है उसमें उनका तनिक भी दोष नहीं । उन्होंने केवल हमारी आज्ञाका पालन किया है । मैंने आपको पहले ही लिख दिया कि हमारी क्या माँगें हैं । मैं आपको फिर यह बतलाना चाहता हूँ कि हम लोग उन तमाम माँगोंकी पूर्तिकी आपसे आशा करेंगे । हम लोग आपके शासनमें हर प्रकारकी सहायता देनेको तैयार हैं। परन्तु जिन आज्ञाओंको पालन करनेका आदेश हम लोगोंने अपने आदमियोंको दिया है उनके पालनमें आप रुकावट उत्पन्न करें तो हम लोग यही समझेंगे कि आप लड़ाई करनेपर तुले हुए हैं । आपने "नौकर" और "नीच मनुष्य" आदि शब्दोंका प्रयोग किन लोगोंके लिए किया है, इसका मैं आपसे जवाब तलब करना चाहता हूँ । मैं नहीं समझता कि आपका मतलब

बोर्डके मेम्बरोंसे है। परन्तु उनकी इच्छा है कि आप इस बातको स्वयं साफ कर दें क्योंकि हम लोग नहीं चाहते कि हम लोगोंका अपमान इस प्रकार किया जाय।"

नवाबको कलकत्ता-कौंसिलका पत्र मिल गया। उन्हें अब मालूम हो गया कि अँगरेज़ अपनी स्वार्थनीतिसे एक पग भी पीछे नहीं हटना चाहते। नवाबने देख लिया कि यदि हमें अपनी प्रजाका हित करना है, यदि हम चाहते हैं कि हमारे देशी व्यापारी अँगरेज़ोंकी स्वार्थपरतासे अधिक हानि न उठावें, तो हमें वही अधिकार उन्हें भी देने होंगे जो अँगरेज वणिकोंने बलपूर्वक ले लिये हैं। यही समझ कर नवाब मीर क़ासिमने घोषित कर दिया कि भविष्यमें किसी भी व्यापारीको शुल्क न देना पड़ेगा। उन्होंने निम्नलिखित पत्र गवर्नर वानसीटार्टके पास भेजा—

"आपने ढाका और लखीपुरमें तम्बाकूके लिए और साधारणतः नमकके लिए ढाई फी सैकड़ा शुल्क देना स्वीकार किया है। इतना कष्ट भी सहन करनेकी आप लोगोंको क्या आवश्यकता है? अब मैंने शुल्क लेना बिलकुल ही बन्द कर दिया है। आप लोगोंने यह तै किया है कि सरकारी अफसरोंके साथ जो झगड़े होंगे उनका फैसला फैक्टरियोंके सरदार करेंगे। आपके सरदारोंकी नीति तो यही है कि वे मेरे अफसरोंको गाली देते और मारते हैं और बाँध कर पकड़ भी ले जाते हैं। आपने लिखा कि मैं अपने अफसरोंके पास परवाना भेज दूँ कि वे अँगरेजी व्यापारमें बाधा न पहुँचावें। मैंने अपने कुल अफसरोंके पास लिख दिया है कि वे किसीसे भी शुल्क वसूल न करें। आपके पास भी परवानेकी नक़ल भेजी जाती है।

यदि मेरा कोई अफसर भविष्यमें आपके काममें बाधा पहुँचावेगा तो उसको दण्ड दिया जायगा। आप लिखते हैं कि हम लोगोंके दरमियान जो नियम बने उन्हें मैं आपके पास भेज दूँ। हम लोगोंमें जो कुछ समझौता हुआ था वह एक पत्रके द्वारा आपने मुझे सूचित किया। उक्त पत्र मैं आपके पास भेज देता हूँ। यदि इसके पहले आप लोगोंके साथ मेरी जो सन्धि हुई थी उसे भी आप वापस चाहें तो मैं भेज सकता हूँ।"

२५—कौंसिलका अधिवेशन।

यथासमय कलकत्ता-कौंसिलको नवाबके निर्णयकी सूचना मिली। उसके ऊपर तो मानो वज्रपात हो गया। आज उसके सदस्योंको मालूम हो गया कि फरमानका सहारा लेकर देशी प्रजाका गला घोंटना अब संभव नहीं। शीघ्र ही कौंसिलका एक अधिवेशन हुआ। प्रश्न यह था कि अब क्या करना चाहिये। पहले तो इस विषयपर वादविवाद चला कि नवाबको सबके लिए व्यापार निःशुल्क कर देनेका अधिकार है अथवा नहीं। जौनस्टनका कहना था कि नवाबको व्यापार निःशुल्क करनेका कोई अधिकार नहीं है। हम लोगोंको जो शाही फरमान प्राप्त हुआ है उसके विरुद्ध यह कार्रवाई हुई है। वाट्सने भी इसका समर्थन किया और कहा कि नवाबको लिखा जाय कि वह और व्यापारियोंसे

पूर्ववत् शुल्क वसूल करें। हेने कहा कि नवाबने केवल कम्पनीके व्यापारको हानि पहुँचानेके अभिप्रायसे ऐसा किया है।

इस प्रकार कारटेयर, वाटसन और आमियाटने भी नवाबके निर्णयपर असन्तोष प्रगट किया। अन्तमें मिस्टर हेस्टिंग्ज़ और गवर्नर वानसीटार्टने भी अपना मत प्रगट किया। उनके कथनका आशय यह है "हम नवाबको इस विषयमें दोषी नहीं ठहरा सकते। वह इसके अतिरिक्त और कर ही क्या सकते थे ? हम लोगोंकी यह इच्छा भले ही हो कि व्यापारकी समस्त बागडोर हमारे ही हाथमें रहे, हम लोग ही देशकी तमाम उपज खरीद कर जहाँ चाहें बेचें, तो भी नवाबसे यह आशा नहीं की जा सकती कि वह देशी व्यापारियोंके कारोबारका मूलोच्छेद करनेमें हम लोगोंका साथ देंगे। प्रत्येक शासकका यह कर्तव्य है कि अपनी प्रजाकी रक्षाके निमित्त हर उचित उपायका अवलम्बन करे। नवाबको पूर्ण अधिकार है कि वह सबके लिए व्यापार निःशुल्क कर दें।"

वाद-विवादके पश्चात् बहुमतसे यह निश्चित हुआ कि "नवाबके पास मिस्टर आमियाट और हे व्यापार सम्बन्धी झगड़ोंको तै करनेके लिए भेजे जायँ। नवाबको लिखा जाय कि वह इन लोगोंके डेपुटेशनको स्वीकृत करें। जब तक इस सम्बन्धमें नवाबका जवाब न आ जाय तबतक आमियाट और हे क़ासिमबाज़ारमें जाकर ठहरें।" तदनुसार ये दोनों कासिमबाज़ारके लिए रवाना हुए। जाते समय कलकत्ता-कौंसिलकी ओरसे इन्हें निम्नलिखित आदेश दिये गये—

"हम लोगोंके व्यापारमें सरकारी अफसरों द्वारा कई महीनोंसे रुकावटें डाली जा रही हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि दोनों तरफसे झगड़े-फसाद हुए। इन्हीं कारणोंसे बहुत सोच विचार कर व्यापारके सुसंचालनके सम्बन्धमें हम लोगोंने कुछ नियम बनाये। आपकी योग्यता, दूरदर्शिता और उत्साहमें हम लोगोंका पूरा विश्वास है, अतएव हम लोगोंने आप दोनों सज्जनोंको नवाबके पास इस लिए भेजनेका निश्चय किया है कि आप उन्हें जाकर बोर्डके निर्णयोंसे परिचित करें।

"आप नवाबको समझा दें कि गवर्नर वानसीटार्टने व्यापार सम्बन्धी जो नियम बनाये थे वे अब बेकार हैं, अतएव उस पत्रको नवाब लौटा दें। आप नवाबको इस बातके लिए मजबूर करें कि यदि उन्होंने अपने अफसरोंके पास उक्त नियमोंके विरुद्ध आज्ञा न भेजी हो तो अब भेज दें।

"फरमानकी प्रतियाँ अँगरेज़ी और फ़ारसी भाषाओंमें आपको दी जायँगी। आप नवाबको बतला दें कि उक्त फरमानका आशय यही है कि हम लोग हर तरहका व्यापार विना शुल्क दिये कर सकें।

"जब नवाब फरमानका अर्थ पूरे तौरसे समझ लें तो आप उनको बतलावें कि नमकपर ढाई फी सैकड़ा शुल्क देनेका हम लोगोंने निश्चय किया है। इसका कारण यह है कि हम लोग यह नहीं चाहते कि इस मदसे नवाबको जो आमदनी होती थी वह एकदम बन्द हो जाय और उनकी मालगुजारीमें कोई अन्तर, हम लोगोंके कारण, पड़े।

"नवाबने लिखा है कि कौंसिलके अधिकारोंको हम नहीं जानते, प्रेसीडेण्टने नवाबको इसका उत्तर पहले ही लिख

भेजा है। आप भी नवाबको बतला दें कि कौंसिलके क्या अधिकार हैं ताकि भविष्यमें इस बहानेसे पुनः हम लोगोंके व्यापारमें रुकावट न डाली जाय।

"नवाबके पिछले पत्रोंसे मालूम होता है कि हम लोगोंकी मित्रतामें उन्हें सन्देह है। आप इस सन्देहको दूर करनेका यत्न करें। आप लोग उन्हें बतलावें कि यदि हमारे व्यापारमें बाधा न डाली गयी तो हम लोग उनके शासन-कार्य्यमें हर प्रकारकी उचित सहायता देंगे।

"नवाबके लिए यह उचित होगा कि व्यापार सम्बन्धी नियमोंको अपने हस्ताक्षर और मुहर लगा कर घोषित कर दें। आप ख्याल रखियेगा कि वे नियम फरमानके विरुद्ध न हों। उक्त घोषणा-पत्रपर आप भी हस्ताक्षर करेंगे। परन्तु इसको मंजूर करनेका अधिकार हम लोगोंके लिए रख छोड़ियेगा।

"नवाब और कम्पनी दोनोंके हितके लिए हम लोग यह आवश्यक समझते हैं कि दरबारमें एक रेजीडेण्ट रहा करे। हम लोगोंने टामसन आम्फिलको इस कार्य्यके लिए नियत किया है। आप इनका परिचय नवाबसे करा दें।

"हम लोगोंको मालूम हुआ है कि नवाबने व्यापार सबके लिए निःशुल्क कर दिया है। हम लोग समझते हैं कि यह कार्य्य कम्पनीको हानि पहुँचानेके अभिप्रायसे हुआ है। आप नवाबसे कहें कि अन्य व्यापारियोंसे वह पूर्ववत् शुल्क वसूल करें।

"शराफ हमलोगोंके सिक्के लेनेमें हिचकते हैं। आप नवाबसे कहें कि वह तमाम शराफोंको हम लोगोंके सिक्के लेनेमें आगापीछा न करनेकी आज्ञा दें। आप नवाबसे इस

आशयकी आज्ञा प्राप्त कर लें कि हम लोग हर टकसालसे तीन लाख रुपया सालाना ढाल सकें।"

आमियाट और हेको यही आदेश दिये गये। साथ ही, जैसा कि ऊपर कह आये हैं, यह निश्चित हुआ कि जब तक नवाबके पास भेजे गये गवर्नर वानसीटार्टके पत्रका उत्तर न आ जाय तबतक ये लोग क़ासिमबाजारमें ही ठहरें।

२६—नवाबका उत्तर।

यथासमय गवर्नर वानसीटार्टका पत्र नवाब मीर क़ासिमको मिला। संवत् १८१६ के १६ चैत्र (दूसरी अप्रैल १७६३ ई०) तथा २८ चैत्र (११ अप्रैल) को नवाबने उत्तरमें गवर्नरके नाम दो पत्र लिखे। प्रथम पत्रका आशय यह है—

"आपने आमियाट और हेको मेरे पास भेजनेकी बात लिखी है। मैं आपको पहले ही सूचित कर चुका हूँ कि व्यापार सम्बन्धी बातें अब कुछ भी निश्चित करनी नहीं रह गयीं। मुझे अब केवल थोड़ासा भूमिकर ही मिलता है। यदि उसके विषयमें नियम बनानेके अभिप्रायसे आप उन्हें भेजना चाहते हों तो सूचित कीजिये। आप लोगोंने "नौकर" और "नीच पुरुष" आदि शब्दोंके विषयमें मुझसे जवाब तलब किया है। मैं कहता हूँ कि जो हम लोगोंके बीच झगड़ा-फसाद और अविश्वास उत्पन्न करना चाहता

है वही नीच है। जहाँ व्यापार सञ्चालनार्थ आपका एक पत्र काफी होता वहाँ मेरे अफसरोंके विरुद्ध सेना भेजकर उन्हें बाँधना, पकड़ना, और अपमानित करना आदि कार्य्य नीच और कमीने पुरुषोंका है या बड़े और श्रेष्ठ मनुष्योंका, इसका विचार आप स्वयं करें।"

दूसरे पत्रमें आमियाट और हेके सम्बन्धमें उन्होंने लिखा कि "यदि मिस्टर हे और आमियाट केवल-यात्राके विचारसे यहाँ आवें तो मेरा घर उन्हींका है। परन्तु मैं आपको बतला देना चाहता हूँ कि उन लोगोंका यहाँ आना मुझे तभी स्वीकार है जब वे केवल थोड़ेसे ज़रूरी आदमियोंको लेकर आवें।"

ज़ोरदार और गौरवयुक्त शब्दोंसे परिपूर्ण नवाबके दोनों पत्र गवर्नर वानसीटार्टको मिले और उन्होंने विचारार्थ उन्हें कलकत्ता-कौंसिलके सम्मुख पेश किया। अब यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि नवाबके पत्रोंपर ध्यान देते हुए आमियाट और हेका नवाबके पास जाना उचित है या नहीं।

मिस्टर वाट्सकी राय थी कि इन लोगोंके जानेमें खतरा तो है अवश्य परन्तु लड़ाई रोकनेके अभिप्रायसे हर प्रकारके उपायका हमें अवलम्बन करना चाहिये। ये पत्र उन दोनों सदस्योंके पास कासिमबाजार भेज दिये जायँ और इन्हें पढ़ कर यदि वे उचित समझें तो जायँ। मेरीयाटकी इच्छा थी कि ये दोनों पत्र आमियाट और हेके पास भेजे तो जायँ ही, साथ ही यह सिफारिश भी की जाय कि वे लोग नवाबके पास अवश्य जायँ। हेस्टिंग्जने कहा कि उन दोनों सदस्योंको तुरन्त नवाबके पास जाना चाहिये। कारटेयरने मेरीयाटका समर्थन

किया। वाटसनने उन लोगोंका नवाबके पास जाना अनुचित समझा। प्रेसीडेण्टने भी मेरीयाटकी रायका समर्थन किया। अन्तमें यही तै रहा कि दोनों पत्र हे और आमियाटके पास भेज दिये जायँ और उनसे सिफारिश की जाय कि वे मुंगेरके लिए रवाना हो जायँ।

नवाबकी इच्छा आमियाट और हेसे मिलनेकी न थी, यह बात उनके पत्रोंसे स्पष्ट मालूम होती है। परन्तु इसमें नवाबका तनिक भी दोष न था। एलिसका दुर्व्यवहार तथा कलकत्ता-कौंसिलका रुख देख कर नवाबको निश्चय हो गया था कि अँगरेज झगड़ेपर तुले हुए हैं। इसी समय उनके विरुद्ध फौजें भी भेजी गयीं। अतः नवाबके लिए यह समझ लेना स्वाभाविक था कि हे और आमियाट भी सन्धिके बहाने सेनाके सञ्चालनके अभिप्रायसे भेजे जा रहे हैं।
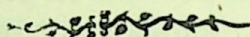
२७—आमियाटकी मुंगेर-यात्रा।
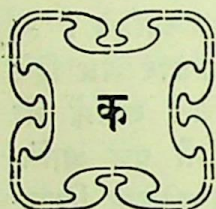
कलकत्ता-कौंसिलका पत्र पाकर आमियाट और हे मुंगेरके लिए रवाना हो गये। इनके साथ कप्तान जौनस्टनके अधीन थोड़ी सी सेना भी थी। इसी समय गवर्नर वानसीटार्टने नवाब मीर कासिमके पास एक पत्र लिखा कि मिस्टर आमियाट आपके पास डेपुटेशन लेकर जा रहे हैं। संभव है इनकी माँगें आपको स्वीकार न हों। परन्तु इन माँगोंसे

आपके शासन-प्रबन्धमें कोई हानि नहीं पहुँचेगी। पाँच महीनोंमें कौंसिलके बहुतसे सदस्य, जो अभी मेरे विरुद्ध हैं, अलग कर दिये जायँगे। तब तकके लिए उनकी इच्छानुसार आप सन्धि कर लें।

नवाबने अपने सेनापति गुरगीनखाँको बुला कर इस सम्बन्धमें उनकी राय ली। गुरगीनखाँने कहा "यदि आप अँगरेजोंकी बातें मान लें तो आप अपना सम्मान खो बैठेंगे और उनके हृदयमें आपकी जो कुछ धाक है वह मिट जायगी। परन्तु यदि आप बहादुरीके साथ स्वाभिमानके अनुकूल कार्य्य करें तो आपका प्रभाव उनके हृदयपर अधिक पड़ेगा और उनकी शक्ति क्षीण होती जायगी।" गुरगीनपर नवाबका बहुत विश्वास था। उन्होंने इनके कथनानुसार ही अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया।

नवाबने जब सुना कि आमियाट और हे चल पड़े हैं तो उन्होंने सैयद गुलाम हुसैन और मीर अब्दुल्ला नामके दो व्यक्तियोंको उनके स्वागतार्थ भेजा। इनके साथ बीस गुप्तचरोंको भी नवाबने भेजा। इन्हें यह आदेश दिया गया था कि ये आमियाटकी यात्राके वास्तविक उद्देश्यका पता लगावें। गुप्तचरोंके लिए नवाबकी यह ताकीद थी कि अँगरेजोंके साथ गुलामहुसैन और मीर अब्दुल्लाकी जो कुछ बातचीत हो उसे वे लोग नवाबके पास लिख भेजें। गंगाप्रसाद नामक स्थानमें आमियाट इन लोगोंसे मिले। वहाँसे सब लोग साथ ही आगे बढ़े।

नवाबके आदेशानुसार एक दिन गुलाम हुसैनने आमियाटसे पूछा "आपके यहाँ आनेका क्या उद्देश्य है? हम लोग आप और नवाब दोनोंके मित्र हैं। हम जानना चाहते हैं

कि आपका क्या मतलब है। तदनुसार कार्य्य करनेका हम यत्न करें।" आमियाटने जवाब दिया, "हिन्दुस्तानियों का यह ढंग है कि मुँहपर केवल चापलूसी करते हैं। हम लोगोंका वास्तविक उद्देश्य सफल नहीं होने पाता। इसीसे हम लोग इतनी दूरसे स्वयं यहाँ आये हुए हैं कि नवाबसे जाकर मिलें और जो कुछ कहना है स्वयं उनसे कहें और उन्हें जो कुछ जवाब देना है दें।"* जब नवाब मीर कासिमको मालूम हुआ कि आमियाट गुलाम हुसैन और मीर अब्दुल्लासे कार्य सम्बन्धी कुछ बातें नहीं करना चाहते तो उन दोनोंको उन्होंने बुला लिया। इन लोगोंके लौटनेपर नवाबने राजा नौबत राय और अपने भतीजे अब्बास-अली खांको आमियाटके स्वागतार्थ भेजा।

जब आमियाट और हे मुंगेर पहुँचे तब नवाब उनसे मिलनेके लिए गये। दूसरे दिन आमियाट भी नवाबके यहाँ आये। साथमें हे और जौनस्टन भी थे। कुछ देर बातचीत करनेके पश्चात् पान, इतर और गुलाब जलसे उन लोगोंका स्वागत किया गया। तत्पश्चात् आमियाट और हे अपने पड़ावको लौटे। रातको नवाबने उन्हें अपने यहाँ भोजनके लिए निमन्त्रित किया। दूसरे दिन आमियाटने अपनी माँगोंका फारसी तर्जुमा करा कर नवाबको दे दिया। शाही फरमानकी एक प्रति भी फारसीमें इन लोगोंने नवाबको दी। आमियाटकी माँगोंका विवरण यह है--

(१) गवर्नर वानसीटार्टके साथ आपकी जो सन्धि हुई थी उसे आप रद्द कर दें और इसकी सूचना अपने अफसरोंको दे दें।

---

* Sayr-ul-Mutakherin Vol. II. p. 55?.

(२) कारोबारमें रुकावट पड़नेसे अँगरेज़ोंको व्यापारमें जो क्षति पहुँची है उसकी आप पूर्ति कर दें।

(३) निःशुल्क व्यापारके सम्बन्धमें आपने जो आज्ञा प्रकाशित की है उसे रद्द कर दें क्योंकि इससे फरमान द्वारा प्राप्त हमारे अधिकारोंपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(४) हमारे गुमाश्तोंको यदि सरकारी अफसर कुछ क्षति पहुँचावें तो पहले वे आपके अफसरोंसे न्यायके लिए प्रार्थना करें। यदि उक्त न्यायको वे उचित न समझें तो फैक्टरीके सरदारको लिखें और वह जो उचित समझें करें। यदि हमारे गुमाश्तोंके द्वारा आपके अफसरोंको कोई कष्ट हो तो वे उन गुमाश्तोंसे ही न्यायके लिए कहें। यदि वह न्याय न करे तो सरकारी अफसर फैक्टरीके सरदारसे प्रार्थना करें और वह उचित रूपसे न्याय और इन्साफ करे।

(५) आप आज्ञा दें कि एक अँगरेज़ रेजीडेण्ट दरबारमें रहे।

(६) बर्दवान, चटगाँव और मिदनापुरकी ज़मीनोंके लिए आप हम लोगोंको जागीरदारी सनदें मंजूर करें।

(७) आप शराफोंको आज्ञा दें कि वे हमारे सिक्के स्वीकार करें। हम लोगोंको ढाके और पटनेकी टकसालोंसे तीन तीन लाख रुपया ढालनेकी आज्ञा दें।

(८) मु० रजा खाँने टिपरेपर आक्रमण करते समय चटगाँवकी मालगुजारीसे रुपया लिया था। उस समय चटगाँव कम्पनीको मिल चुका था अतएव वह रुपया कम्पनीको लौटा दिया जाय।

(६) सेठ भाइयोंको मुक्त कर दिया जाय और वे जहां चाहें वहाँ जानेकी उन्हें स्वतन्त्रता दी जाय।*

ऊपर लिखी माँगोंका ठीक ठीक और साफ साफ उत्तर आप हम लोगोंको दें और जहाँतक सम्भव हो शीघ्र ही तदनुसार आज्ञा प्रकाशित करें ताकि अँगरेजोंके कार्य्यमें रुकावट न पड़े।

२८—नवाबकी दृढ़ता।

आमियाट और हे अपनी जिद्दपर अड़े हुए थे। नवाब यदि अपनी कुछ शिकायतें पेश करते तो उसे ये लोग टाल देते और केवल अपनी माँगोंका साफ साफ उत्तर चाहते।† अन्तमें नवाबने नौबत रायके द्वारा आमियाटकी माँगोंका निम्न-लिखित उत्तर भेजा—

---

* ये वही दो भाई थे जिन्होंने सिराजको सिंहासनच्युत करनेमें विशेष भाग लिया था। मीर जाफरको गद्दीसे उतारनेमें भी ये सहायक हुए थे। नवाबने देखा कि अँगरेजोंसे झगड़ा बढ़ता ही जा रहा है, कहीं यह दोनों फिर अँगरेज़ोंसे मिलकर हमारे विरुद्ध भी कुछ कर न बैठें, अतएव उन्होंने मुर्शिदाबादमें इनको रहने देना उचित न समझा। मारकर नामके एक जेनरलको थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ भेजकर नवाबने इन्हें मुंगेर बुला लिया और बड़ी खातिरसे रखा। उनके लिए एक बैङ्क भी स्थापित कर दिया। इन्हें वहाँ पूर्ण स्वतन्त्रता थी, केवल इतनी कैद थी कि मुंगेर छोड़कर ये कहीं जा न सकते थे।

† It appeared from Navab's letter that his disposition for

मैंने तमाम व्यापारियोंको शुल्क देनेसे मुक्त कर दिया है अतएव आप दो वर्षतक बिना रोक-टोकके व्यापार कर सकते हैं। इस अवधिके समाप्त हो जानेपर हर अफसर शुल्कके लिए पुनः रोक-टोक करेगा। तब आप फरमानके द्वारा प्राप्त अपने अधिकारोंको मेरे सामने पेश करेंगे और मैं आपको उचित उत्तर दूँगा।

१. गवर्नरके साथ व्यापार सम्बन्धी जो नियम बनाये गये उनका मैंने कभी खयाल नहीं किया। आपके कथनानुसार ही मैं अपने अफसरोंके पास लिख रहा हूँ कि वह सन्धि अब बेकार है।

२. आप लोगोंके कारण मेरी मालगुज़ारीमें जो क्षति पहुँची है उसको पहले तै कीजिये। मैं भी व्यापार सम्बन्धी आपकी हर प्रकारकी क्षति-पूर्ति करनेको तैयार हूँ।

३. कम्पनीको जो लाभ अभी तक पहुँचता रहा है उससे मुझे कोई डाह नहीं है। परन्तु आप हमारे काग़ज़ोंको देखिये तो आपको मालूम होगा कि पटना, हुगली, ढाका आदि स्थानोंसे तीस चालीस लाख रुपयेकी मेरी आमदनी रही है। परन्तु इन दो तीन वर्षोंमें मुझे कुछ भी नहीं मिला। अपनी जेबसे इन स्थानोंके प्रबन्धका खर्च मुझे देना पड़ा है। इसके अतिरिक्त आप लोगोंने मेरे अफसरोंके साथ बड़ा अपमानजनक व्यवहार किया। मैंने आप लोगोंको बहुत कुछ इस सम्बन्धमें लिखा परन्तु आप लोगों-

---

peace was little assisted by his conversation with Amyatt and Hay who instead of allowing room for negotiation or showing an equal willingness to hear and redress his grievances, persisted only in requiring a determinate answer to their own demands.

—Vansittart.

ने तनिक भी ध्यान नहीं दिया। जब मैंने देख लिया कि मेरी सुनवाई नहीं है, मुझे आप लोगोंके द्वारा अपमानित होना पड़ता है, तब मैंने अपनी क्षतिको ही अधिक अच्छा समझा और हर प्रकारका कर लेना बन्द कर दिया।

४. यदि आपके आदमी मेरे आदमियोंको तंग न करेंगे तो मेरे आदमी भी आपके आदमियोंके साथ वैसा ही बरताव रखेंगे। आप लिखते हैं कि अँगरेज़ी फैकृरीके सरदार दोनों तरफके झगड़ोंको तै करेंगे। ऐसा नियम आजतक कभी नहीं रहा है। यदि नियम-विरुद्ध चल कर आप मेरी शक्ति और धाक कम करना चाहते हैं तो इसका मतलब यही है कि आप आपसकी मित्रता तोड़ना चाहते हैं।

५. जब हम लोगोंने जो कुछ करना था मिलकर कर लिया तो अब फिर आपके रेज़ीडेएटके रहनेकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती।

६. सन्धिमें जैसा वर्णन होगा वैसी ही कार्रवाई की जायगी।

७. शराफ और व्यापारी किसीके नौकर नहीं हैं। केवल थोड़ेसे लाभके लिए आपसमें कारोबार करते हैं। इस सम्बन्धमें मैं कुछ भी नहीं कर सकता।

८ रज़ा अलीने चटगाँवसे जो कुछ रुपया लिया था वह कम्पनीको लौटा दिया गया। मेरे पास रसीद मौजूद है।

९. शुरूसे यह रिवाज चला आ रहा है कि सेठ नाजिमके साथ रहते हैं। उसी नियमके अनुसार जहाँ मैं रहूँगा वहीं जगत सेठ भी रहेंगे और वहीं अपना कारोबार करेंगे।

मैं देख रहा हूँ कि आप लोग न तो प्रतिज्ञाका कुछ ख्याल करते हैं और न सन्धिका। जो माँगें आपने पेश की हैं उनके किस अंशकी पूर्ति मुझपर निर्भर है? जो सन्धि हम लोगोंमें हुई थी उसका मैंने अक्षरशः पालन किया। आप अपनी प्रतिज्ञासे विचलित हुए और अब फिर नयी सन्धि स्थापित करना चाहते हैं। यदि आप लोग चाहते हैं कि मैं नाजिम रहूँ तो आप लोग पटनेमें तथा अन्य स्थानोंमें केवल उतने आदमी रखिए जितने आपके कारोबारके सञ्चालनके लिए काफी हों। उन स्थानोंसे अपनी तमाम फौज हटा लीजिये। मैं भी तब आप लोगोंके लाभकी उन्नति करनेमें कदापि पीछे न रहूँगा।

आमियाटको नवाबका लिखा हुआ पत्र नौबतरायके द्वारा मिला। नौबतरायके साथ नवाबने कुछ सरकारी आमिलोंको भेजा जो गुमाश्तोंके अत्याचारसे पीड़ित थे। नवाबने उन्हें इसलिए भेजा था कि वे गुमाश्तोंके अत्याचारपूर्ण व्यवहारका आमियाटसे बयान करें। आमियाटने साफ साफ जवाब दिया कि मैं इन बातोंको नहीं सुनना चाहता। पटनेसे सेना हटानेके सम्बन्धमें आमियाट तथा हेने कहा कि वहाँसे सेना नहीं हटायी जा सकती। यदि नवाब हमसे लड़ना चाहते हैं तो हम लोग तैयार हैं। हम लोग वहाँ और भी सेना भेजेंगे।

नवाबकी इच्छा सन्धि करनेकी थी, इसमें कोई सन्देह नहीं। यह बात उनके पत्रोंसे स्पष्ट है। वानसीटार्टने नवाबके पास लिखा था कि आप इस समय आमियाटकी बातें मान लें। नवाबने इस सम्बन्धमें उत्तर दिया कि मैं आपकी बातें माननेको तैयार हूँ। परन्तु अवस्था इस सीमा-

तक पहुँच गयी है कि कुछ होते दिखाई नहीं देता । मैं पहलेसे ही आपको इसकी सूचना दे देता हूँ । इसी पत्रमें नवाबने यह लिखा था कि यदि आप लोग उस सन्धि और उन शर्तोंकी कुछ भी परवा करते हैं जिनके द्वारा आपको बर्दवान, मिदनापुर और चटगाँव सेनाके लिए मिले तो आप पटनेसे अपनी सेना बुला लें और उसे मेरे पास रखें या कलकत्तेमें रहने दें ।

इधर एक और भी नया झगड़ा उठ खड़ा हुआ था । हथियारसे भरी हुई कुछ नावें कलकत्तेसे मुंगेर पहुँचीं । ये नावें पटनेके लिए थीं । मुंगेरमें ये रोक ली गयीं । आमियाट और हेने नवाबसे उन्हें जाने देनेके सम्बन्धमें आज्ञा माँगी । नवाबने इस घटनाको युद्धकी तैयारी समझा और नावोंको आगे बढ़नेसे रोक रखा । उन्होंने आमियाटसे साफ साफ कह दिया कि इन हथियारोंकी सहायतासे एलिस और भी उत्पात करेंगे, अतएव मैं इन हथियारोंको उसी हालतमें मुक्त कर सकता हूँ यदि पटनेकी सेना यहाँ बुला ली जाय, या एलिस पटनेसे अलग कर दिये जायँ और उनके स्थानपर मिस्टर हेस्टिंग्ज, आमियाट या गायरकी नियुक्ति हो ।

इन तमाम बातोंकी सूचना यथासमय कलकत्ता-कौंसिलको मिली । नवाबकी माँगें उचित थीं, इसके सम्बन्धमें कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं । नावोंको रोक कर नवाब अँगरेजोंसे झगड़ा मोल लेना नहीं चाहते थे । यदि उनको यह नीयत होती तो वह इस बातको कभी स्वीकार न करते कि यदि एलिस बुला लिये जायँ तो वह नावोंको मुक्त कर देंगे । सन्धिके सम्बन्धमें भी नवाबने कह

दिया था कि यदि पटनेसे कुल सेना अलग कर दी जाय तो हम सन्धिके विषयमें कुछ कर सकेंगे। किन्तु इतने पर भी कलकत्ता-कौंसिलने नवाबकी उचित माँगोंकी तरफ बिलकुल ध्यान न दिया। कौंसिलकी बैठक हुई और उसमें यह तै किया गया कि आमियाटके पास लिखा जाय कि पटनेसे सेना नहीं हटायी जा सकती है। यदि नवाब इस शर्तके बिना नावें नहीं छोड़ना चाहते या सन्धिके विषयमें कुछ करना नहीं चाहते, तो आमियाट और हे कलकत्ता लौट आवें।

आमियाटको जब कलकत्ता-कौंसिलका उक्त पत्र मिला तब वे कलकत्ता जानेके लिए प्रस्तुत हुए। नवाबकी इच्छा थी कि तमाम अँगरेजोंको बतौर जमानत (प्रतिभू, 'होस्टेज') के रखें। बहुत वादविवादके पश्चात् यह निश्चय हुआ कि सब लोग जायँ, केवल हे मुंगेरमें रहें। जब मिरज़ा मुहम्मद अली तथा नवाबके कुछ और अफ-सरोंको अँगरेज़ मुक्त कर दें तो वह भी छोड़ दिये जायँ। हेने इस बातको स्वीकार कर लिया। सब लोग कल-कत्तेके लिए रवाना हुए।
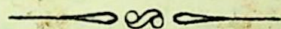
२६—पटनेपर अँगरेजोंका अधिकार।
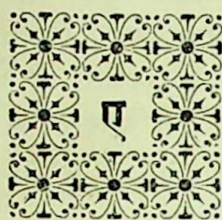
लिसकी प्रकृतिका परिचय पिछले कई अध्यायोंमें करा दिया गया है। इनकी उच्छृंखलतासे नवाब मीर क़ासिमके नाकों दम था। कुछ दिनोंसे तो इनका दुःसाहस पराकाष्ठाको पहुँच गया था। पटनेके सरकारी शासक मीर मेहँदीसे यह हमेशा झगड़ा करनेपर उतारू रहते थे। मीर मेहँदी सर्वदा पत्रों द्वारा ऐलिसकी शिकायत नवाबसे किया करते थे। परन्तु नवाब अभी तक सब कुछ सहन करते जा रहे थे। नवाबने स्वयं गवर्नर वानसीटार्टको लिखा था कि हमारे शासनके साथ जो अन्याय पटनेके अँगरेज़ी अफसर एलिसके द्वारा हो रहा है उसे अत्यन्त नीच पुरुष भी सहन नहीं कर सकता।

नवाबकी सहनशीलताका पता मीर मेहँदीके पत्रसे ही लग सकता है जो उन्होंने मीर क़ासिमके पास एलिसके दुर्व्यवहारका वर्णन करते हुए लिखा था। मीर मेहँदी लिखते हैं "मैंने आपको कई बार लिखा कि मिस्टर एलिस लड़ाई करने पर तुले हैं। परन्तु आप यही जवाब देकर टाल देते हैं कि अँगरेज़ी सेना शीघ्र ही पटनेसे हटायी जानेवाली है। एलिसने इधर क़िलेकी दीवारोंके लिए सीढ़ियाँ तैयार कर ली हैं। एक दिन उन्हें लेकर वह क़िलेकी दीवारोंतक गये भी थे। परन्तु पानी बरसनेके कारण

और कुछ न कर सके। आपने न तो सेना ही भेजी और न मुझे लड़नेकी आज्ञा ही देते हैं। फिर मैं यहाँ बेकार बैठ कर क्या करूँ? यदि एलिसने झगड़ा करना निश्चय ही कर लिया है तो मैं भी अब अधिक सहन न कर सकूँगा। उनके साथ अवश्य लड़ूँगा।"

उक्त पत्रसे यह साफ पता चलता है कि एलिसका उद्धत व्यवहार नवाब मीर क़ासिम अभीतक सहते ही आ रहे थे। अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी, फिर भी वह शान्ति धारण किये हुए थे। परन्तु आगे चल कर मिस्टर एलिसने ऐसा उद्धत व्यवहार किया कि नवाबके लिए शान्ति और धैर्य्य रखना असंभव हो गया।

अपने उद्देश्यमें असफल होकर जब आमियाट मुंगेर-से कलकत्ता लौटने लगे तो उन्होंने एक पत्र एलिसके पास भी भेजा। उन्होंने एलिसको सूचित किया कि कोई सन्धि नवाबके साथ नहीं हुई। इसका परिणाम युद्ध ही होगा। अतएव सावधान हो जाओ और मौक़ेको हाथसे जाने न दो। यह तो एलिसके मनकी ही बात हुई। वह नवाबसे चिढ़े हुए थे ही। उन्होंने समझ लिया कि आमियाटके कलकत्ता पहुँचनेपर कलकत्ता-कौंसिल तत्काल युद्धकी घोषणा कर देगी। उन्होंने भी अपनी तरफसे कोई कसर रखना उचित न समझा। उन्होंने इस बातका ठीक ठीक हिसाब लगा लिया कि मिस्टर आमियाट कबतक कलकत्ता पहुँचेंगे। उसी दिन उन्होंने मीर मेहँदीपर आक्रमण कर पटना शहरपर अधिकार प्राप्त करनेका निश्चय किया।

एलिसने यह प्रबन्ध किया कि संध्यातक तमाम अँग-रेजी सिपाही फैक्टरीमें पहुँच जायँ। उन्होंने बाँस और

लकड़ीकी कई सीढ़ियाँ बनवायीं। रात भर अच्छी तरह तैयारियाँ होती रहीं। मीर मेहँदीको इन सब बातोंका कुछ भी पता न था। जिस समय आक्रमण हुआ उस समय वह किलेमें सोये पड़े थे। पहरेदार भी किसी प्रकारकी गड़बड़ीकी आशङ्का न कर हथियार खोल कर खर्राटे ले रहे थे। अँगरेजोंसे युद्ध करनेके लिए कोई जगा न था।*

अँगरेजी सेना तड़के रवाना हुई। फैक्टरीके निकटस्थ सतून (टावर) के पास जाकर सीढियाँ लगा दी गयीं। उन्हींके जरिये सैनिक दीवारपर चढ़ गये। वहाँकी छोटीसी सरकारी सेनाने कुछ अँगरेज़ी सिपाहियोंको घायल किया और फिर भाग गयी। अँगरेज लोगोंके अधिकारमें दुर्ग-प्राचीर† आ गये। अब इन्होंने दो दलोंमें अपनेको विभक्त किया। एक तो खास खास सड़कों और बाजारोंसे होकर अग्नि-वर्षा करता हुआ आगे बढ़ा। दूसरा दल कटरा और दीवानखानेकी सड़कोंसे होकर गुज़रा। यह तमाम सेना दुर्गकी ओर बढ़ी आरही थी। शोरगुल सुनकर मीर मेहँदी सचेत हो उठे। उस समय जो कुछ थोड़ी-बहुत सेना मिली उसे लेकर यह अँगरेजी सेनाका सामना करनेको तत्पर हुए। परन्तु इनके साथ आदमी कम ही थे, साथ ही इनकी तैयारी भी काफी न हो पायी थी। अतएव ये लोग अँगरेजी सेनाके सामने अधिक समय तक ठहर न सके और भाग खड़े हुए। मुहम्मद अमीन खाँ यद्यपि बहुत घायल हो गये थे तथापि चहल सतूनको गये। तमाम फाटकोंको बन्द कर लिया और जो कुछ थोड़े बहुत आदमी साथ थे उन्हें लेकर

---

* S. Mutakherin. † Ramparts.

अपनी रक्षाके लिए प्रस्तुत हो गये। इधर सेनापति लालसिंहने दुर्गके फाटकोंको बन्द कर लिया और अग्नि वर्षा आरम्भ कर दी। इन दो स्थानोंको अँगरेज न ले पाये। शेष कुल शहरपर उनकी विजय-पताका फहराने लगी। इन लोगोंने शहर वालोंपर मनमाना अत्याचार किया। लोगोंके घर लूटे। कितनोंके यहाँ तो एक तिनका भी न बच रहा।* यह कुसमाचार पाकर नवाब बे-मारे मर गये।‡ काटो तो उनके शरीरमें लहू नहीं। इधर अगरेज मारे आनन्दके फूले न समाये। मिस्टर एलिस-ने विजय-सूचक पत्र कलकत्ता-कौंसिलको लिखा।

३०—अँगरेज़ोंका आत्म-समर्पण।
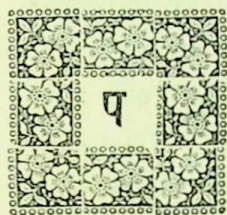
टनेपर अँगरेज़ाका अधिकार होनेके पहिले ही नवाब मीर क़ासिमने एक सेना मुंगेरसे वहाँके लिए भेज दी थी। जिस समय यह दुर्घटना हुई उस समय ये लोग पटनेसे पाँच कोसकी दूरीपर फतुहा नामके स्थानपर पहुँच चुके थे। वहाँपर इन लोगोंको अँगरेज़ोंके उत्पात और धृष्टताओंका पता लगा। ये तत्काल चल खड़े हुए और नदीकी राहसे

*The English Talingas together with their harcaras and luchas leisurely plundered the houses of the citizens without leaving in some of them so much as a bit of straw.

Sayer-ul—Mutakherin Vol. II. P. 423.

‡ Such an intelligence had nearly killed him.

Mutakherin p. 425.

तीन चार घंटोंमें सीद नामक बुर्ज़के निकट पहुँच गये। पहले सब लोग पूरबी फाटक पर गये। अँगरेजोंको फाटक खोल देना पड़ा। अँगरेज एक कतारमें खड़े होकर शत्रुसेनासे लड़नेके लिए प्रस्तुत हुए। परन्तु सरकारी सेनाके सामने इनकी तमाम बहादुरी मिट्टीमें मिल गयी। अपने हथियार छोड़ कर ये लोग भाग खड़े हुए। यह समाचार सुन कर अन्य फाटकों और बुर्जोंपर जो अँगरेजी सिपाही तैनात थे वे भी अपना अपना काम छोड़ कर चलते बने। 'नवाबकी पूर्ण विजय हुई और एक ही दिनमें सारे शहरपर उनका अधिकार हो गया।'*

भागे हुए अँगरेज़ोंने शहर छोड़ दिया और पुनः अपनी फैक्टृरीमें सब लोग जमा हुए। शत्रुदलके लोग सामनेके बुर्ज़में एकत्र थे। वहाँसे उन लोगोंने अँगरेज़ोंपर अग्नि-वर्षा आरम्भ कर दी। अँगरेज़ोंने अपनी इस शोचनीय अवस्थासे उद्धार पानेका यही उचित ढंग निकाला कि फैक्टृरीको छोड़ दें और रातके समय बाँकीपुरको भाग निकलें, परन्तु यह बात उनकी शक्तिसे बाहर थी। सरकारी सेनाने अँगरेजोंका पीछा करनेका निश्चय कर लिया था।

अब एलिसने सोचा कि गंगा पार कर छपरेकी तरफ भागें, वहाँसे सरजू पार कर नवाबी शासनसे बाहर चलें और सुजाउद्दौलाके राज्यमें शरण लें। परन्तु यह चाल भी सहायक न हुई। सारनके फौजदार रामनिधिको जब अँगरेजोंके भागनेका समाचार मिला तो उसने इन लोगोंका पीछा किया। इधर बकसर होते हुए समरू रामनिधिकी सहायताके लिए सेना लेकर पहुँच गये। माँझी

* Sayer-ul—Mutakherin Vol. II.

के पास अँगरेजोंने कुछ देरतक सरकारी सेनाका सामना किया । परन्तु अन्तमें विवश होकर इन लोगोंने आत्म-समर्पण किया ।

नवाब मीर क़ासिमको जब यह समाचार मिला तो वह आनन्दसे फूल उठे । उनका मन फड़क उठा । * नवाबको अब मालूम हो गया कि अँगरेजोंने उनसे झगड़ा करनेका निश्चय कर लिया है । वे लड़ाई करनेपर तुले हुए हैं और इसका प्रत्यक्ष उदाहरण भी उन्होंने दे दिया है । तत्काल नवाबने अपने तमाम अफसरोंके पास पत्र भेजा कि जहाँ जो अँगरेज़ मिलें मार डाले जायँ । अभी आमियाट कलकत्ता न पहुँच पाये थे । इन्हें भी मृत्युका शिकार होना पड़ा ।

कुछ इतिहासकारोंने आमियाटकी मृत्युके लिए नवाब मीर क़ासिमको दोषी ठहराया है । उनका कहना है कि नवाबका यह कार्य्य नीतिविरुद्ध था । आमियाट दूत-मात्र थे, उनपर हाथ छोड़ना नवाबके लिए उचित न था । ध्यानपूर्वक विचार करनेसे उक्त सन्देहका निवारण हो जाता है । नवाबके पत्रसे, जो उन्होंने मिस्टर आदम्सके पास २४ भाद्र १८२० (६ सितम्बर १७६३ ई०) को लिखा था, यह साफ साफ मालूम होता है कि नवाबकी इच्छा यह कदापि नहीं थी कि आमियाट मारे जायँ । वे लिखते हैं—"यह मैं कभी नहीं चाहता था कि मिस्टर आमियाट मारे

---

* Intelligence of this success having reached the Nawab it raised his pride to a height. This sudden intelligence revived his spirits. The Nawab's soul which was just going to quit his body, recovered its seat and gave him a new life. S. Mutakherin 474-75

जायँ"। नवाब तो केवल यह चाहते थे कि आमियाट मुंगेर लौटा लाये जायँ। उन्होंने अपने एक अफसर मु० तकीखाँको आज्ञा दी थी कि वह उक्त आशयका पालन करें। तकीखाँने समझा था कि शान्तिसे काम निकल जायगा। इस समय वह भागीरथीपर मुर्शिदाबाद और कासिम-बाजारके बीच डेरा डाले हुए थे। जब आमियाटकी नावें उन्हें दिखाई दीं तो उन्होंने एक अफसरको आमियाटके पास भोजनके लिए निमन्त्रित करनेके निमित्त भेजा। आमि-याटने आनेसे इनकार किया और नावोंको खेनेकी आज्ञा दी। तब किनारेसे ही तकीखाँके आदमियोंने मल्लाहोंको आवाजें दीं कि वे लोग नाव किनारे पर लायँ। इसके उत्तरमें आमियाटने गोली दागनेकी आज्ञा दी।* विवश होकर सरकारी आदमियोंको भी उसी पथका अवलम्बन करना पड़ा। थोड़ी देरतक दोनों दलोंमें मुठभेड़ होती रही। अन्तमें आमियाट अपने साथियों सहित लड़ाईमें मारे गये। अपनी ही मूर्खतासे उन्होंने अपनी जान दी।

इसी समय नवाब मीर क़ासिमने एक पत्र गवर्नर वानसीटार्टके पास लिखा। पत्र द्वारा नवाबने एलिसपर यह दोषारोपण किया कि उन्होंने रातके समय डाकूकी तरह शहरपर आक्रमण किया, बाज़ारोंको लूटा और निर-

---

* Mr. Amyatt, refusing to land or surrender, directed his *sipahis* to fire upon the Nawab's boats, which were approaching to compel them; the English boats were finally boarded and the whole party destroyed or made prisoners, with exception of a Havaldar and one or two sipahis, who made their escape and brought the melancholy intelligence to Calcutta.

—Broome's Bengal Army P. 361

पराध प्रजापर मनमाना अत्याचार किया। नवाब आगे चलकर लिखते हैं—"सिराजुद्दौलाके समय कलकत्तेके लूटे जाने पर अँगरेज़ोंने जिस प्रकार हरजाना वसूल किया था उसी प्रकार पटनेमें किये गये अत्याचारोंके लिए वे भी दें। मैंने तीन ज़िले कम्पनीको इस लिए दिये थे कि वे मेरी रक्षाके लिए फौज रखें। परन्तु उसी सेनासे मेरे नाशका उपाय किया गया, अतएव जो तीन ज़िले मैंने दिये थे उन्हें मैं वापस माँगता हूँ।"

नवाबने जिस समय उपर्युक्त पत्र लिखा था उस समय उनके हृदयकी क्या अवस्था थी, इसका अन्दाज़ा पाठक स्वयं लगा सकते हैं। उन्होंने यह बात समझ ली थी कि यदि हमें सम्मानके साथ जीवित रहना है तो अँगरेज़ों-के साथ शान्तिपूर्वक रहना असम्भव है। युद्ध किये बिना काम न चलेगा। उन्होंने निश्चय कर लिया कि या तो विजयी होकर भारतवर्षसे अँगरेजोंका मूलोच्छेद करेंगे या इस प्रयत्नमें स्वयं ही मर मिटेंगे।

अब अँगरेज़ों और मीर क़ासिमके बीच जीवन-मरणका प्रश्न था। यदि विजयने मीर क़ासिमका साथ दिया तो वह उन लोगों पर किसी प्रकारका दयाभाव नहीं दिखा सकते थे। इसके प्रतिकूल यदि उनकी पराजय हुई तो अँगरेज़ों-से भी वह किसी प्रकारकी आशा नहीं रख सकते थे।

३१—युद्धका निश्चय ।

आमियाटका पत्र पाकर कलकत्ता-कौंसिलको निश्चय हो गया कि नवाब मीर कासिमके साथ अब सन्धि होना असंभव है। उन लोगोंने समझ लिया कि एक न एक दिन युद्ध अवश्य होगा। ५ आषाढ़ १८२० (१८ जून १७६३ ई०) को कौंसिलका अधिवेशन हुआ और युद्ध होनेकी अवस्थामें सेनासञ्चालनके सम्बन्धमें विचार किया गया। मेजर आदम्स प्रधान सेनापतिके पदपर नियत किये गये। अब यह प्रश्न उठा कि यदि युद्ध हुआ तो मीर क़ासिमके स्थानपर नवाब कौन बनाया जायगा, युद्धमें कम्पनीका जो रुपया खर्च होगा वह कहाँसे वसूल किया जायगा तथा युद्धके कारण व्यापारियोंको जो घाटा होगा उसकी पूर्ति किस प्रकार होगी?

वाट्सने राय दी कि "सबसे अच्छा ढंग तो यह होता कि शासन-भार हम अपने हाथमें ले लेते, परन्तु ऐसा करना इस समय संभव नहीं, क्योंकि इस कार्य्यके लिए बड़ी सेना रखनेकी आवश्यकता पड़ेगी जिसे हम लोग अभी करनेमें असमर्थ हैं। यह भी डर है कि तमाम देशमें झगड़ा-फ़साद और अराजकताका प्रादुर्भाव होजाय। इन कठिनाइयोंका सामना हम लोग न कर सकेंगे। अतः इस समय यही उचित है कि हम किसी प्रभावशाली व्यक्तिको नवाब बनावें। परन्तु पहले उसके साथ सन्धि होजानी चाहिये जिससे भविष्यमें किसी प्रकारका फ़साद न हो।

उसीका यह कर्तव्य होगा कि युद्धका तमाम खर्च दे और व्यापारियोंको जो क्षति पहुँचे उसे पूरा करे ।

मेरीयाटने भी यही मत प्रकट किया कि दूसरा नवाब बनाया जाय । उनका कहना था कि "नवाब ऐसे मनुष्य-को बनाना चाहिये जो हमारी आज्ञाके अनुसार कार्य्य करे । मीर जाफर ही इस कार्य्यके लिए इस समय उप-युक्त होंगे । कहा जाता है कि मीर जाफर कमजोर और अयोग्य शासक हैं । यह तो हमारे लिए अच्छा ही है क्योंकि किसी योग्य और साहसी नवाबका होना कम्पनीके व्यापारके लिए हानिकारक है । वह हमेशा यही यत्न करेगा कि हम अँगरेजोंसे स्वतंत्र होकर रहें ।"* मि० कार-टियर और मि० बिलर्सने भी इस मतका समर्थन किया । मिस्टर हेस्टिंग्जने इस सम्बन्धमें अपनी राय न दी । उन्होंने कहा कि "यदि युद्ध हुआ ही तो हमारे मालिक जो उपाय बतलायँगे, हमें उसीका अवलम्बन करना उचित होगा ।"

वानसीटार्टने कहा कि "मैं किसी विशेष व्यक्तिका नाम इस सम्बन्धमें नहीं लेना चाहता । मैंने तै कर लिया है कि हमारे मालिकोंका प्रबन्ध ठीक हो जाने पर मैं देश लौट जाऊँगा । मैं तो यही उचित समझता हूँ कि जिन लोगोंको यहाँ हम लोगोंके पश्चात् रहना है वही इस बातको

---

* The Nawab's weak capacity, that was made an argument against him, I think would rather plead in his favour as it certainly can never be the Company's interest to have an enterprising Nabob for the Subah of these provinces, it being so natural for a man in that station to endeavour at all rates to render himself independent.

Marriot's statement before the Cal-Council on 20th June 1763.

तै करेंगे कि नवाब पदपर कौन व्यक्ति अभिषिक्त किया जाय ।"

ऊपर जो कुछ कहा गया है उससे पाठकोंको अँगरेज़ोंकी धूर्तताका पता लग गया होगा । इनकी यही इच्छा थी कि इस देशका शासक कोई ऐसा अयोग्य व्यक्ति रहे जो सर्वदा हमारे हाथोंका खिलौना बना रहे । उसकी अयोग्यताका लाभ उठाकर हम जो चाहें विना रोक-टोकके स्वतन्त्रतापूर्वक करते रहें ।

जब कलकत्ता-कौंसिल इस प्रकार भविष्यकी अवस्थापर विचार कर रही थी तो उसी समय उसे एलिसका पत्र मिला कि पटनेपर अँगरेज़ोंका अधिकार होगया । इस समाचारको पाकर कलकत्ता-कौंसिलने अब युद्ध ठानना ही तै कर लिया । बहुमतसे यह निश्चित हुआ कि मीर जाफर ही नवाब बनाये जायँ । दूसरे दिन यह खबर पहुँची कि आमियाट मार डाले गये । बादको पटनेके अँगरेज़ोंकी दुर्दशाका समाचार भी पहुँचा । अँगरेज़ोंके बीच खलबली मच गयी । बदला लेनेका विचार उनके हृदयमें प्रबल हो उठा । उन लोगोंका कोप गवर्नर वानसीटार्टपर भी कम न था । उन्हें वे लोग सारे झगड़ोंकी जड़ समझते थे । सबने एक आवाजसे कहना आरम्भ किया कि हम नवाबको उनकी उच्छृङ्खलताका दण्ड देंगे । गवर्नर वानसीटार्टने सदस्योंको शान्त करना चाहा और उनके सन्मुख यह बात पेश की कि "यदि नवाबको मालूम होगया कि हम लोगोंने युद्धकी घोषणा कर दी है तो मिस्टर एलिस अन्य सब अँगरेज़ोंके साथ मार डाले जायँगे । अतएव उचित यही होगा कि जबतक कुल अँग-

रेज़ विना विघ्नबाधाके लौट न आवें तबतक हम लोग शान्त रहें। उसके पश्चात् हम लोग नवाबके विरुद्ध युद्ध-की घोषणा करेंगे और उचित बदला भी लेंगे।

गवर्नरकी बातें अन्य सदस्योंपर कुछ भी प्रभाव न डाल सकीं। उन्होंने समझा कि वानसीटार्ट केवल नवाब-की रक्षाका उपाय कर रहे हैं। सबने मिलकर यही निश्चय किया कि युद्धकी घोषणा कर दी जाय। उन्होंने यह दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली कि यदि तमाम अँगरेज़ कैदी भी मार डाले जायँ तो भी हम लोग बदला लेनेसे पीछे न हटेंगे।

तत्पश्चात् कलकत्ता-कौंसिलका एक प्रतिनिधिदल मीर जाफरके पास गया और उनसे प्रार्थना की कि वह पुनः नवाब बनना स्वीकार करें। मीर जाफरने प्रसन्नतापूर्वक यह अनुरोध स्वीकार कर लिया। भला वह उसे कैसे टाल सकते थे। नवाब पदपर अभिषिक्त होना तो उनके लिए गौरवकी बात थी। सिराजुद्दौलाके विरुद्ध षड्यन्त्र रचकर, पलासीयुद्धमें द्रोह कर, एक बार तो वह अपने देशके साथ विश्वासघात कर ही चुके थे। अब उन्हें इस अपकीर्ति-को धोनेका जो सुअवसर प्राप्त हुआ था उससे लाभ उठाकर यदि वह नवाब पदपर लात मार देते—उन शर्तोंपर बंगालका शासक होना स्वीकार नहीं करते जिनके न माननेके कारण मीर कासिमको अँगरेजोंका शत्रु बनना पड़ा था—तो उनका नाम इतिहासमें पश्चात्ताप और सुकृतिके लिए अमर हो जाता। परन्तु बाह्य सुख और सम्मानकी लालसाके कारण उनकी बुद्धि मारी गयी थी। उन्होंने फिर दूसरी बार भी अपने देशसे द्रोह किया और अपनी आत्माको ग्लानि पहुँचायी।

निम्नलिखित आशयकी सन्धि मीर जाफर और कलकत्ता-कौंसिलके बीच हुई—"बर्दवान, मिदनापुर और चटगाँव, सेनाके खर्चके लिए मीर जाफर अँगरेजोंको देना मञ्जूर करें। अँगरेज़ बिना शुल्क दिये व्यापार कर सकें। पूर्णियामें जो सोरा उत्पन्न हो उसका आधा कम्पनीको दिया जाय और आधा नवाबको मिले। सिल्हटमें जो कुछ चुनम * तैयार हो वह आधा आधा कम्पनी और नवाब दोनोंको दिया जाय। मीर जाफर केवल १२ हजार घुड़सवार और १२ हजार पैदल सेना रखेंगे। यदि अधिककी कभी आवश्यकता होगी तो अँगरेज़ी सेना उनको सहायता पहुँचायगी। अँगरेजोंकी आज्ञाके बिना नवाब अपनी राजधानीमें परिवर्तन न कर सकेंगे। एक अँगरेज अफ़सर रेजीडेण्टकी हैसियतसे नवाबकी राजधानीमें रहेगा, और एक आदमी नवाबकी तरफसे कलकत्तेमें भी रहा करेगा। देशी सौदागरोंसे पूर्ववत् शुल्क वसूल किया जायगा। कलकत्तेकी टकसालसे जो सिक्के निकलेंगे उनके लिए यदि कोई बट्टा माँगेगा तो उसे दण्ड दिया जायगा। युद्धके खर्चके लिए तथा युद्धके कारण व्यापारियोंको जो कुछ हानि होगी उसकी पूर्तिके लिए मीर जाफर ३० करोड़ रुपया देंगे। यदि फ्रांसीसी यहाँ आवें तो नवाब उन्हें किसी प्रकारका किला न बनाने देंगे और न उन्हें सेना या ज़मीन रखने देंगे।" सन्धिपत्रपर मिस्टर वानसीटार्ट, चारनाक. बिलर्स, कारटियर, हेस्टिंग्ज, मेरीयाट और हेके हस्ताक्षर हुए।

इसके बाद कलकत्ता-कौंसिलने एक घोषणापत्र प्रकाशित किया और जनतासे प्रार्थना की कि वह मीर जाफरको

---

* Chunam.

नवाब माने । इस प्रकार निर्लज्ज मीर जाफरने नवाब पद-पर पुनः अभिषिक्त होकर अपने सम्मानको बट्टा लगाया । पाठकोंको ऊपरकी सन्धिसे विदित हो गया होगा कि उक्त नियमोंके अनुसार मीर जाफर नहीं वरन् अँगरेज़ बंगालके वास्तविक शासक और भाग्यविधाता हुए । मीर जाफर उनके हाथोंके खिलौना और उनकी इच्छाके दास मात्र रह गये ।

३२—कतवाका युद्ध ।

नवाब मीर कासिमने अब समझ लिया कि युद्धके अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं है । उन्होंने एक बड़ी सेना ज़ाफरखां, आलमखां और मीर हैबतुल्ला नामके तीन सेनानायकों-के अधीन अँगरेजोंके विरुद्ध मुर्शिदाबादकी ओर भेजी । उन लोगोंको वीरभूमके फौजदार मुहम्मद तकीखांके साथ मिलकर कार्य्य करनेका आदेश दिया गया था, साथ ही उन्हें यह हिदायत कर दी गयी कि युद्धके लिए जिन वस्तुओंकी आवश्यकता हो उन्हें मुर्शिदाबादके नायब सैयद मुहम्मदखांसे लेकर सब लोग कतवा चले जायँ और जब अँगरेजी सेना कलकत्तेसे आवे तो उसपर आक्रमण करें । नवाबने तकीखांको भी इस आशयका एक पत्र लिख दिया था । तदनुसार उन्होंने वीरभूम छोड़कर कतवामें अपना पड़ाव डाल दिया । इस बीचमें कलकत्ते और मुर्शिदाबादसे अँगरेजी सेनाएँ भी आगे बढ़ीं ।

उन दिनों मुहम्मद तकीखांकी कीर्ति बहुत फैली हुई थी। यह बड़े ही योग्य सेनापति थे। इन्होंने अपनी सेनाका सञ्चालन ऐसा अच्छा किया था कि इनका सिक्का चारों ओर जम गया था। मुर्शिदाबादके नायब सैयद मुहम्मदखां मुहम्मद तकीखांकी सुकीर्तिके कारण इनसे बहुत जलते थे। इस समय उनकी हार्दिक इच्छा थी कि मुहम्मद तकीखांकी पराजय हो। उन्होंने युद्ध सम्बन्धी आवश्यक पदार्थ देनेमें सुस्ती करना आरम्भ किया। अन्य तीन अफसरोंको भी भड़काया कि वे मुहम्मद तकीखांके अधीन न रहें, स्वतन्त्र होकर लड़ें। मुहम्मद तकीखांने उनसे बहुत कुछ अनुनयविनय की कि सब लोग मिलकर काम करें, परन्तु उन लोगोंने इस प्रार्थनाकी ओर तनिक भी ध्यान न दिया। मुहम्मद तकीके साथ न ठहर कर वे लोग भागीरथीकी दूसरी ओर चले गये और वहीं उन्होंने अपनी सेनाके साथ पड़ाव डाला।

दूसरे दिन उन लोगोंको समाचार मिला कि मिस्टर ग्लेन लड़ाईका सामान लिये उस ओरसे जा रहे हैं। तकीखांसे उन लोगोंने सहायता माँगी। यद्यपि तकीखां उनसे असन्तुष्ट थे तो भी उन्होंने ५०० आदमी उनकी सहायताके लिए भेज दिये। अँगरेजोंपर आक्रमण हुआ। ग्लेन बड़ी बहादुरीके साथ लड़े। तीन बार नवाबी सेनाने उनके खजाने और तोपोंपर अधिकार किया परन्तु फिर अँगरेजोंने उसे छीन लिया। पहले तो विजय नवाबी सेनाकी ही हुई परन्तु रातके समय, ग्लेनकी सहायताके लिए, बर्दवानसे सेना आ पहुँची। नवाबी सेना अँगरेजी सेनाके आक्रमणको सहन न कर सकी। अब नवाबके अफस-

वोंको मालूम हो गया कि तकीखांका साथ छोड़कर हम लोगोंने कितनी मूर्खता की। ये लोग मैदान छोड़ कर मुहम्मद तकीखांके पड़ावकी ओर भागे। तकीने इन्हें भीतर घुसनेकी आज्ञा न दी। वह डरते थे कि इनकी पराजित अवस्थाको देखकर कहीँ हमारी सेनामें भी गड़बड़ी वा निरुत्साह न फैल जाय।

दो दिन पश्चात् मुहम्मद तकीखांने शत्रुकी गति रोकनेका निश्चय कर लिया। अन्य अफसरोंसे सहायता लिये बिना ही वह अपनी सेनाके साथ युद्धक्षेत्रके लिए रवाना हुए। उन्होंने अपने सिपाहियोंको स्मरण दिलाया कि 'तुम्हारा सिक्का सारे देशमें जमा हुआ है। यदि तुम लोग बहादुरीके साथ लड़ोगे तो तुम अवश्य विजयी होगे।' ये बातें तकीखांने ऐसे खानगी तौरसे कहीं, उनके शब्दों- में इस प्रकारकी नम्रता, आजिजी और बराबरीका भाव भरा था कि कुल सिपाही मुग्ध हो गये। सबने एक स्वरसे प्रतिज्ञा की कि 'आपके सम्मानके लिए हम लोग अपनी जान भी दे देनेको तैयार हैं।'*

थोड़ी देरमें ही शत्रुसेना मुहम्मद तकीखाँको देख पड़ी। युद्ध आरम्भ हो गया। दोनों ओरसे तोपें दगने

* He reminded them of the character they bore all over the country and extorted them to support the same and promised them victory if they would all stand by him. All this was uttered with such an air of familiarity that he seemed to be rather their companion than their general and they were so animated with this kindness and air of fellowship that in marching with the utmost alacrity they were endeavouring to get the start of one another and swore that they would sacrifice their lives for his honour.—Mutakherin Vol II, p. 485.

लगीं। कुछ देरतक ऐसा विदित हुआ कि तक़ीखाँकी ही विजय होगी। अँगरेजी सेनामें गड़बड़ी मच गयी। इसी समय मुहम्मद तकीके पैरमें एक गोली लगी और इनका घोड़ा भी चोट खाकर मर गया। चिन्ताका भाव दिखाये बिना यह दूसरे घोड़ेपर सवार हो गये और अपने सिपाहियोंको उत्साहित करते हुए आगे बढ़े। अँगरेज पीछे हटनेही वाले थे। परन्तु उन लोगोंने एक छोटी नदीके पास थोड़ीसी सेना छिपा रखी थी। जब मुहम्मद तकी बढ़ते हुए उस नदीके पास पहुँचे तो वह सेना इनपर टूट पड़ी। इनकी तरफके बहुतसे आदमी मरे और घायल हुए। मुहम्मद तकीके मस्तकपर एक निशाना लगा। उसकी असह्य पीड़ासे इनका भी प्राणान्त हो गया। इस प्रकार नवाब मीर कासिमकी सेनाका एक रत्न निकल गया। अपना कर्तव्य पालन करता हुआ यह वीर यमलोकको पहुँच गया।

मुहम्मद तकीकी मृत्यु होते ही उनकी सेनामें गड़बड़ी मच गयी। जहाँ जिसने मौका पाया मैदान छोड़कर भागना आरम्भ किया। हैबतुल्ला, जाफरअली आदि सेनापति, जिन्हें नवाबने तकीकी सहायताके लिए भेजा था, बतौर तमाशबीनके तमाशा देखते ही रह गये। अँगरेजी सेनापति आदम्सने अपने सिपाहियोंके साथ खूब आनन्द मनाया। शत्रुसेनाकी कुल तोपें, जानवर और खेमे इत्यादि इनके हाथ लगे।

सेनापतियोंके आपसके द्वेषके कारण ही नवाबकी सेनाकी हार हुई। यदि मुहम्मद तकीखाँके साथ अन्य तीनों सेनानायक सहयोग करते, यदि अपनी महती सेनाको लेकर कतवाके युद्धक्षेत्रमें वे लोग मुहम्मद तकीखाँके साथ ही

युद्धमें प्रवृत्त होते, तो अँगरेजोंका विजयी होना असम्भव था। कतवामें अँगरेज करीब करीब हार ही चुके थे। नदीके किनारे जो सेना छिपी हुई थी उसका सामना करनेके लिए समयपर यदि अन्य तीनों सेनापतियोंकी सहायता मिल जाती तो विजय अवश्य तकीखाँका साथ देती। परन्तु मैलिसनके कथनानुसार* भारतवर्षका इतिहास तो इस प्रकारके आचरणोंसे भरा ही पड़ा है। अँगरेजोंकी सफलताका सबसे प्रधान कारण तो देशके राजाओं और नेताओंके दरमियान द्वेषका होना ही रहा है। कतवाके युद्धक्षेत्रमें नवाब मीर कासिमकी पराजयका भी मुख्य कारण यही था।

२३—सूतीका युद्ध ।

कतवाके युद्धक्षेत्रमें मिस्टर आदम्स तीन दिन तक ठहरे रहे। तत्पश्चात् वह मुर्शिदाबादके लिए रवाना हुए। पराजित सेना शहरसे दो मील दक्खिनमें पड़ाव डाले हुई थी। उसके पासमें मोतीझील नामक एक तालाब भी था। इन लोगोंकी स्थिति अच्छी थी, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। परन्तु कतवाकी पराजयके कारण इनके

* The History of India abounds in instances of such impatriotic conduct. Indeed it may be affirmed that few things have more contributed to the success of the English than the jealousy of each other of the native princes and leaders in India.

Malleson's Decisive Battles of India.

हृदयमें उत्साह नहीं रहा। जब अँगरेज़ोंने इनपर जोरोंसे आक्रमण किया तो ये ठहर न सके और भाग खड़े हुए। दूसरे दिन आदमूस मीर जाफरको लेकर मुर्शिदाबादमें दाखिल हुए। इधर मुर्शिदाबादके नायब सैयद मुहम्मद-खाँको जब कतवाकी पराजयका समाचार मिला तो उनका खून सर्द होगया। इस समय उनसे अपनी कायरताका परिचय देनेके सिवाय और कुछ करते न बना। शहरकी रक्षाका कुछ प्रबन्ध किये बिना, खजाना आदिको ज्योंका त्यों छोड़कर, वह शहरसे मुँगेरके लिए रवाना हुए। बिना किसी कष्टके शहरपर मीर जाफरका अधिकार हो गया। लगभग एक सप्ताह तक सब लोग मुर्शिदाबादमें ठहरे रहे। तदनन्तर अँगरेजी सेना शत्रुसे लड़नेके निमित्त आगे बढ़ी।

मुहम्मद तकीखाँकी मृत्युसे नवाब मीर कासिमको बड़ा शोक हुआ। परन्तु इस अवसरपर उन्होंने धैर्य्यसे काम लिया। शाह हैबतुल्लाके पास उन्होंने आज्ञा भेजी कि वह सूतीके मैदानमें जाकर शत्रुका सामना करें। नवाबने एक सेना भी रवाना की। सात हज़ार घुड़सवार आसु-दौल्लाखाँके अधीन रखे गये। समरू और मारकरके अधीन तिलंगोंकी सात पलटनें रखी गयीं। १६ तोपें भी इन लोगोंके सिपुर्द की गयीं। इनके अतिरिक्त नवाबने मीर नासिरके अधीन थोड़ेसे गोलन्दाज भी भेजे। सबको यह आदेश दिया गया कि आपसमें झगड़ा या द्वेष न करें। साथ ही मीर कासिमने पूर्णियाके फौजदार शेरअलीखाँको लिख भेजा कि गंगा पार कर अपनी सेनाके साथ वह भी सूतीके मैदानमें जायँ।

यथासमय सब लोग सूतीके मैदानमें आ पहुँचे। नवाबी सेनाकी स्थिति बड़ी ही अच्छी थी। सामने प्राकृतिक ढंग-पर खाइयां बनी पड़ी थीं। प्रकृतिने ही इनको ऐसा बना दिया था कि शत्रुकी दाल गलना यहाँ पर कठिन था। मीर कासिमने अपनी अच्छीसे अच्छी सेना यहाँ भेजी। कतवाके युद्धमें बचे हुए सिपाही भी युद्ध करनेके लिए तथा पराजय-कालिमा धोनेके लिए आकुल हो रहे थे। सब कुछ था परन्तु मुहम्मद तकीखांकी तरह योग्य नेता न था। यदि मीर कासिम ही रणभूमिमें उपस्थित रहते तो भी उनकी उपस्थिति मात्रसे सेनामें उत्साह रहता। वह अफसरोंके पारस्परिक द्वेषको रोक सकते थे। युद्ध-क्षेत्रमें उनके कारण सफलता प्राप्त हो सकती थी, परन्तु दुर्भाग्यसे वह भी वहाँ न थे। मारकर और समरू राहमें ही अपनी सेनाके साथ डटे थे। उनकी दाहिनी ओर आसुद्दौला आठ हजार घुड़सवार और बारह हजार पैदल सेनाके साथ मौजूद थे। बाईं ओर शेरअली अपने दो-तीन हजार आदमियोंको लिये खड़े थे।

मेजर आदमूसने भी अपनी सेनाकी व्यूहरचना की। यूरोपियन बीचमें रहे। सिपाहियोंकी तीन पलटनें हर कतार-में की गयीं। जगह जगहपर तोपोंका प्रबन्ध हुआ। सिपाहियोंकी एक पलटन जरूरतके लिए रख छोड़ी गयी। इस प्रकार व्यूहरचना करनेके पश्चात् मेजर आदमूस आगे बढ़े। दोनों तरफसे तोपें दगने लगीं। थोड़ी ही देरमें मध्यमें स्थित यूरोपियन सेनाका मुकाबला समरू और मारकरके साथ पड़ा। कुछ देर तक तो ऐसा मालूम हुआ कि विजय अँगरेजोंका ही पक्ष ग्रहण करेगी, परन्तु तुरन्त

ही अवस्था एकदम परिवर्तित होगयी थी। आसुद्दौलाकी सेनाके एक अफसर बदरुद्दीन अपने अधीनस्थ थोड़ेसे सिपाहियोंको लेकर आगे बढ़े और अँगरेज तिलंगोंकी एक पलटनपर उन्होंने आक्रमण किया। इसी बीचमें मीर नासिर अपने गोलन्दाज सिपाहियोंको लिये आ पहुँचे और अँगरेजी सेनापर उनका हमला हुआ। मीर बदरुद्दीनके मुकाबलेमें जो अँगरेजी तिलंगे लड़ रहे थे वे अब अधिक देर तक मैदानमें न ठहर सके। रणक्षेत्र छोड़कर नदीकी ओर भागे। बहुत आदमी मारे गये, कुछने नदीमें डूबकर प्राण विसर्जन किये। इस आक्रमणमें मीर बदरुद्दीनके भी बहुतसे आदमी मारे गये। आसुद्दौला इनकी सहायताके लिए आगे बढ़े। परन्तु इनके साथके सिपाहियोंने युद्धकी भयंकर अवस्था देखकर साहसको तिलाञ्जलि दे दी और ज्योंके त्यों काठकी तरह खड़े रह गये।

इधर मीर नासिर अपनी गोलन्दाज सेनाके साथ अँगरेजोंसे बड़ी बहादुरीके साथ लड़ रहे थे। अँगरेजोंको सामना करना कठिन हो गया। आदम्सके आदेशानुसार उन लोगोंने अपनी तोपोंमें काँटे ठोंक दिये और उनकी एक दीवार खड़ी कर दी जिसका पार करना शत्रुके लिए असंभव हो गया। मीर नासिरके किये अब कुछ न हो सका। इधर मारकर और समरू मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए। अब तिलंगोंकी चार पलटनें अँगरेजी सेनाकी सहायताके लिए रवाना कर दी गयीं। काफी मदद पाकर ये लोग नासिरकी फौजपर टूट पड़े। मीर नासिर मार डाले गये। मीर बदरुद्दीन भी मैदान छोड़कर चलते बने। समरू और मारकर पहले ही पीठ दिखा चुके थे।

आसुद्दौलाने भी इन लोगोंका अनुकरण किया। इस प्रकार विजयने इस बार भी अँगरेजोंका ही साथ दिया। शत्रु-दलकी १७ तोपें और रसदसे भरी एक सौ पचास नावें अँगरेजोंके हाथ लगीं।

निःसन्देह सूतीका युद्ध एक स्मरणीय युद्ध था। अँगरेज इसमें भी प्रायः हार चुके थे, परन्तु अन्तमें भाग्यने पलटा खाया। आसुद्दौलाकी कायरता तथा समरू और मारकरकी स्वार्थपरताने परिस्थितिमें विचित्र उलटफेर उत्पन्न कर दिया। यदि आसुद्दौलाकी सेना तनिक भी उत्साह दिखाती, यदि समरू और मारकर कुछ देर भी मैदानमें अड़ जाते, तो संभव नहीं था कि नवाबकी पराजय होती। कुछ भी हो, विजयलक्ष्मीने अँगरेजोंके ही गलेमें माला पहनायी। हारी हुई सेना उदवानाला पहुँची और वहीं उसने अपना पड़ाव डाला।

३४—उदवानालाका युद्ध।

सूती युद्धके भयंकर परिणामसे नवाबके हृदयको बड़ी चोट लगी। मुहम्मद तकीखाँकी मृत्युके बाद ही उन्होंने अपने परिवार और धनादिको रोहतासगढ़ भेज दिया था। सूतीकी लड़ाईके पश्चात् उन्हें अपने अफसरों और दरबारियोंके स्वभावमें कुछ परिवर्तन होता दिखाई दिया। नवाबको विशेष कर उन लोगोंका भय बना हुआ था जिन्हें उन्होंने कैद कर रखा था। उन्हें इस बातकी आशंका थी

कि समयको मेरे विरुद्ध देखकर ये लोग मेरे खिलाफ कोई षड्यन्त्र न कर बैठें । अवस्था ऐसी बिगड़ी हुई थी कि नवाब इन्हें अधिक दिनों तक कैदखानेमें भी नहीं रख सकते थे । अतएव ये लोग मार डाले गये । इनमें मुख्य व्यक्ति रामनारायन, जगत सेठ, राजवल्लभ और राजा फतह सिंह तथा बुनियाद सिंह थे । अँगरेज़ कैदी जो इन दिनों मुँगेरमें कैद थे अभी जीवित रखे गये ।

नवाब अब चम्पानगरके लिए रवाना हुए । वहाँपर उद-वामें लड़नेवाली सेनाकी अवस्थाका ज्ञान प्राप्त करनेके निमित्त वह ठहर गये । इन्हीं दिनों मिरज़ा नजीफ़खाँ नामक एक बहादुर सिपाहीने मीर क़ासिमसे भेंट की । नजीफ पहले सुजाउद्दौलाके सेनाविभागमें नायक रह चुके थे, परन्तु कुछ कारणवश उस स्थानको उन्होंने त्याग दिया और मीर क़ासिमके पास नौकरीकी इच्छासे आये । नवाबने उन्हें अपनी सेनामें रख लिया और उदवानालामें थोड़ेसे सिपाहियोंका अफसर बनाकर भेजा ।

उदवा एक छोटी गहरी नदी है । यह राजमहलकी पहाड़ियोंसे निकलकर गंगा नदीमें गिरती है । इसके किनारे इतने ऊंचे हैं कि उनको पार करना बड़ा ही कठिन है । इसकी स्थिति नवाब मीर कासिमको बड़ी पसन्द आयी । कुछ दिनों पहलेसे ही उन्होंने इस स्थानको अपनी सेनाके लिए ठीक करना आरम्भ कर दिया था । नदीके ऊपर नवाबके आदेशानुसार ईंटका एक पुल बनाया गया । उदवा नदीके परे एक गहरी खाई भी नवाबने खुदवायी और उसके पीछे मोरचाबन्दीके लिए दीवार भी खड़ी कर दी गयी । खाई और दीवार पहाड़ियोंके पाससे गंगानदी

तक फैली हुई थी । उनके और गंगानदीके बीचमें सेनाके ठहरनेके निमित्त काफी स्थान था । खाई बड़ी गहरी थी और उसके ऊपर लकड़ीका एक पुल था । यह पुल एक तालाब और दलदलसे मिला हुआ था जो पहाड़ियोंसे शुरू होकर दीवार (इंट्रेश्चमेराट) के साथ साथ चले गये थे । इसके द्वारा दीवारकी बड़ी रक्षा होती थी । जब सूतीके युद्धमें मीर क़ासिमकी हार हुई तो उन्होंने इसी सुरक्षित स्थानमें अपनी सेनाको ठहरने और लड़नेकी आज्ञा दी ।

उदवानालाकी लड़ाईमें नवाबने अपनी अच्छीसे अच्छी सेना भेजी । उनके तमाम चुने हुए सेनापति मौजूद थे । केवल प्रधान सेनापति गुरगीनखां नहीं थे । निस्सन्देह उदवानालाका युद्ध दोनों तरफ़के भाग्यका निबटारा करनेके लिए हुआ था । यदि नवाबका पलरा भारी हुआ तो वह पूर्ण स्वतन्त्र होंगे और अँगरेजोंकी शक्ति नष्ट होगी, क्लाइवके तमाम प्रयत्न धूलमें मिल जायँगे । दूसरी तरफ यदि अँगरेजोंकी विजय हुई तो नवाबकी शक्तिका लोप हो जायगा, उनका अस्तित्व ही इस संसारसे मिट जायगा ।

अँगरेजी सेना मेजर आदमूसके अधीन ११ तारीखको उदवासे चार मीलकी दूरीपर पालकीपुरमें पहुँची और तीन सप्ताह तक वहां रहकर लड़ाईका प्रबन्ध करती रही । २४ वें दिन तोपें दागी गयीं, परन्तु इन तोपोंका प्रभाव मीर क़ासिमके दुर्ग-प्राचीरोंपर कुछ भी न पड़ा—नदीके निकट फाटकपर छोटासा सूराख हो गया था परन्तु यह पर्याप्त नहीं था । आदमूस असमञ्जसमें ही पड़े रह गये कि क्या करना चाहिये । वह अपने कर्तव्यके सम्बन्धमें कुछ भी निश्चय नहीं कर सके ।

इधर भाग्यने फिर पलटा खाया। नवाबकी सेनाके एक अफसर नजीफखांको (जिनका वर्णन पहले कर दिया गया है) पता लगा कि तालाब और दलदल होकर एक छोटासा मार्ग निकला है जिसके द्वारा अँगरेजोंके पड़ावमें आसानीसे पहुँच सकते हैं। फिर क्या था। एक रातको नजीफ उसी रास्तेसे जाकर अँगरेजी सेनापर टूट पड़े और उसके दरमियान खलबला मचा दी। नवाब मीर जाफर तो मरते मरते बचे। वह भाग कर नदीमें डूबने ही वाले थे कि इतनेमें थोड़ेसे अँगरेजी सिपाहियोंने उन्हें देखा और बचा लिया। इस प्रकार नज़ीफखां नित्यप्रति अँगरेजोंपर आक्रमण करते थे। उनके नाकों दम होगया। अब वे उस मार्गका अनुसन्धान करने लगे जिससे होकर नजीफ आते थे।

कुछ दिन पहले एक अँगरेज़ अपनी सेना छोड़कर नवाबसे मिल गया था। उसने नजीफको उक्त मार्गसे जाते देखा था। एक रातको उसने अँगरेजी सेनाके निकट जाकर कहा कि यदि मुझे क्षमा प्रदान की जाय तो मैं उक्त मार्गका पता बतला दूँ। आदम्सने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। उस आदमीने रास्ता बतला दिया। अँगरेजोंने सीढ़ियाँ तैयार कीं और रातके समय कप्तान अरविंगके अधीन सिपाहियोंकी दो पलटनें और कुछ युरोपियन रेजीमेण्ट रवाना हुईं। कुछ फौज कप्तान मोरनके अधीन खाईके पास गयी। कुछ लोग चारनाककी मातहतीमें ज़रूरतके लिए रख छोड़े गये। बाकी लोग पड़ावकी रक्षाके लिए रह गये।

मिस्टर अरविंग सेना लिये घाट (फोर्ड) होकर चल

तो अवश्य दिये. परन्तु उन्हें कठिनाइयोंका पता नहीं था। घाट इतना गहरा था कि तोपें, सीढ़ियाँ आदि तमाम सामान माथेपर ले जाना पड़ा। यदि शत्रु-दलका एक भी आदमी इन सब घटनाओंको देखता तो निःसन्देह तमाम अँगरेजी सेना विनाशको प्राप्त हो जाती। परंतु वे लोग तो निश्चिन्त होकर सोये पड़े थे। उन्हें क्या पता था कि अँगरेज गुप्त मार्गसे आक्रमण करेंगे? अँगरेजी सेना दीवार तक पहुँच गयी। वह सीढ़ियाँ लगा कर दुर्गप्राचीरपर चढ़ गयी और वहाँ अपना अधिकार जमा लिया। प्राचीरपर पहुँच कर इन लोगोंने मशाल जलायी। मोरनने, जो खाईकी तरफ भेजे गये थे, जब इन मशालोंको देखा तो उन्हें प्रारम्भिक विजयका पता लग गया। फिर क्या था! वह उस सूराखकी तरफ बढ़े जिसका वर्णन पहले ही कर दिया गया है। परन्तु उस सूराख होकर सारी सेनाके लिए भीतर जाना बड़ा कठिन था। उसमें एक बार केवल एक ही आदमी जा सकता था। मैलिसन साहब लिखते हैं कि 'इस अवसरपर यदि शत्रुदल कुछ भी साहससे काम लेता तो अँगरेजोंके किये कुछ भी न होता।'

यद्यपि इस बीचमें नवाबकी सेना सावधान हो गयी थी परन्तु उसमें अभी गड़बड़ी फैली हुई थी। वह कुछ भी न कर सकी। इधर अँगरेजोंने दीवारपर सीढ़ियाँ खड़ी कर दीं। दो एक आदमी भीतर दाखिल होगये और फाटक खोल दिया। सब लोग भीतर घुस गये और अरविंगकी सेनामें जा मिले। नवाबकी सेनापर अग्नि-वर्षा आरम्भ होगयी। बहुतसे आदमी मारे गये। ये

लोग भागनेमें भी असमर्थ थे। नालापार पुलपर नवाबकी एक सेना थी। उसे यह आज्ञा थी कि कोई भी सिपाही यदि पीठ दिखावे तो मार डाला जाय। एक तरफ अँगरेजी सेना मारती और दूसरी ओरसे वे अपने ही आदमियों द्वारा कालके मुहँमें ढकेले जाते। इस प्रकार सेनाके बहुत आदमी हत हुए। बहुतसे तो नदीमें डूब मरे। मैलिसन लिखते हैं कि आदम्सने नवाबकी सेनाको केवल हराया ही नहीं वरन् पूर्णतया नष्ट भी कर डाला। अब इन लोगोंमें यह साहस नहीं रहा कि राजमहलमें ठहरें या अन्य किसी सुरक्षित स्थानमें पड़ाव डालें और युद्धकी तैयारी करें।

इस प्रकार उदवानालाकी लड़ाईका अन्त हुआ। 'यह केवल उस व्यक्तिका काम था जिसने अँगरेजोंको गुप्त मार्गका पता बताया, जिसका परिणाम यह हुआ कि अँगरेजोंकी निराशा विजयमें परिणित होगयी'* और नवाबकी कुल आशाएँ उदवानालाकी रणभूमिमें निर्मूल हो गयी।

यथासमय नवाब मीर क़ासिमको भी उदवानालाके युद्धका हाल मालूम हो गया। अपनी पराजयका संवाद पाकर उनका हृदय टुकड़े टुकड़े हो गया। अब उन्हें सफलताकी कोई आशा न दीख पड़ी। रातके समय वह मुँगेर चले गये और वहाँपर दो दिन रह कर अपनी सेनाकी देख-भाल करते रहे। तत्पश्चात् उन्होंने अजीमाबादकी यात्रा की। किलेकी रक्षाका भार अरब-निवासी अरीब

* It was the act of a single individual which converted the despair of the English into confindence.

—Malleson's Decisive Battles of India,. 157

अलीको सौंपते गये। नवाब अपने साथ सब अँगरेज कैदियोंको भी लेते गये। रास्तेमें गुरग़ीनखाँको मृत्यु-यन्त्रणा सहन करनी पड़ी।

मुताखरीनके लेखक सैयद गुलामहुसैनके कथनानुसार गुरग़ीनकी मृत्युकी कहानी यह है कि दो सिपाही इनके पास तनख्वाह माँगने आये और उन्होंने दो-चार अनुचित शब्द इनके लिए प्रयुक्त किये। इसपर गुरग़ीनको क्रोध आया और उन्होंने आवाज़ दी कि दोनों सिपाही कैद कर लिये जायँ। उन दोनोंने यह सुन कर अपना भाला खैंच लिया और गुरगीनका काम तमाम किया। सैयद गुलामहुसैन लिखते हैं कि—"जीवन पर्यन्त जिसने कपड़ा बेचा वह सौदागर गुरगीन भला अपने सिपाहियोंपर अपना दबदबा कैसे जमा सकता था" मुताखरीनके लेखकके मतानुसार दो सिपाहियोंने ही गुरग़ीनको मारा, यह ठीक है। परन्तु जो कारण उन्होंने दिया है वास्तवमें वह गुरग़ीनकी मृत्युका कारण नहीं था। गुलामहुसैनने स्वयं स्वीकार किया है कि नवाब मीर क़ासिमके सिपाहियोंकी तनख्वाह समयपर मिल जाया करती थी। असल बात यह है कि गुरगीनखाँपर नवाबको यह सन्देह हो गया कि वह हमारे विरुद्ध अँगरेज़ोंसे मिलकर षड्यन्त्र कर रहा है। गुरग़ीनका भाई ख्वाजा पेटरुस* अँगरेज़ोंका मित्र था। गवर्नर और हेस्टिंग्जकी प्रार्थनाके अनुसार वह अपने भाई गुरगीनखाँके साथ पत्र-व्यवहार कर रहा था कि वह अपनी सेनाके साथ अँगरेज़ोंसे मिल जायँ और मीर क़ासिमको पकड़ कर अँगरेज़ोंके सिपुर्द करें। इस पत्र-

* Khwaja Petrus

व्यवहारका पता नवाबको अपने गुप्तचर-विभाग द्वारा मिला । उन्होंने गुरग़ीनको मरवा डाला ।

पटना पहुँच कर नवावने जाफ़रखाँके बाग़में पड़ाव डाला । वहाँसे उन्होंने आज्ञा भेजी कि पटनेके दुर्गकी रक्षाका उचित प्रबन्ध किया जाय । दो-चार दिन बाद नवाबको खबर मिली कि मुँगेरका दुर्ग अँगरेज़ोंके हाथमें चला गया । जिस अरीब अलीखाँको दुर्गका भार नवाब सौंप आये थे उसने धोखा दिया । जब अँगरेज़ोंने दुर्गपर घेरा डाला तो अरीब अलीने कहला भेजा कि यदि मुझे कुछ रुपया दिया जाय तो मैं दुर्ग अँगरेज़ोंके सिपुर्द कर दूँ । अँगरेज़ोंको तो मीर क़ासिमको पकड़नेकी जल्दी पड़ी थी ही । रुपया दे दिया गया और दुर्गपर अँगरेज़ी पताका फहराने लगी ।

३५—प्राणदण्ड या हत्याकाण्ड ?

उदवानालाके युद्धमें परास्त होकर जब नवाब मीर कासिम मुँगेर होते हुए पटनेको लौट रहे थे तब उन्होंने अपने साथ उन अँगरेज़ अभियुक्तोंको भी ले लिया था जिन्होंने कुछ दिनों पूर्व पटना शहरपर आक्रमण किया था और प्रजाके धन तथा सम्पत्तिका अपहरण किया था । पटना पहुँच कर नवाबने इन अभियुक्तोंके लिए प्राणदण्ड निर्धारित किया । उन्होंने समरूको उन लोगोंका काम तमाम करनेकी आज्ञा

दी। डाक्टर फुलरटनके अतिरिक्त अन्य कुल अँगरेज़ोंको मृत्यु-यन्त्रणा भोगनी पड़ी।

यह घटना संवत् १८२० (सन् १७६३ ई० के अक्तूबर मास) की है। जब इसकी सूचना कलकत्ता पहुँची तो वहाँके अँगरेज़ोंमें बड़ी सनसनी फैली। दो सप्ताह तक शोक मनाया गया। अँगरेज़ोंने एक रोज़ उपवास भी किया और राष्ट्रीय अपमानका दिवस मनाया। यह घोषणा की गयी कि जो व्यक्ति मीर क़ासिमको अँगरेज़ोंके हाथ गिरफ्तार करा देगा उसे एक लाख रुपया इनाममें दिया जायगा। समरूको गिरफ्तारीके लिए भी चालीस हज़ार रुपया पुरस्कार नियत हुआ।

उपर्युक्त दण्ड-निर्धारणके लिए बहुतसे इतिहासकारोंने नवाब मीर क़ासिमको दोषी ठहराया है और उनकी कड़ी आलोचना की है। उनकी सम्मतिमें यह दण्ड-निर्धारण नहीं वरन् हत्याकाण्ड था। इतिहासमें यह घटना पटना-हत्याकाण्डके नामसे प्रख्यात है। बेवरिज साहब लिखते हैं कि 'यह घटना कलकत्तेकी काल-कोठरीके हत्या काण्डसे भी अधिक भयानक और दुष्कर थी।'* बंगालके तत्कालीन गवर्नर वानसीटार्टने अपने शासनकालमें सर्वदा नवाबका ही साथ दिया था। परन्तु अपने देश-वासियोंके प्रति नवाबके इस व्यवहारको वह भी किसी प्रकार सहन नहीं कर सके! वह लिखते हैं "इस घोर हत्याकाण्डके द्वारा नवाबने अपने माथेपर कलंकका जो टीका लगाया है उसपर दृष्टिपात करते हुए यह बात इतिहासके अधिकारसे बाहर की हो गयी है कि वह नवाबके साथ न्याय करे और उनके

* Calcutta Review—October 1884.

पिछले गुणोंकी ओर ध्यान दे।" थार्नटन साहबने भी इस घटनाके कारण नवाबके लिए लुच्चा और बदमाश शब्दोंका प्रयोग किया है।*

परिपाटी अथवा संस्कारका प्रभाव बड़ा ही प्रबल होता है। जो संस्कार एक बार हृदयमें बैठ जाते हैं उनका निकालना प्रायः बहुत कठिन हुआ करता है। यह बात जिस प्रकार सामाजिक प्रथाओंके सम्बन्धमें लागू है, उसी तरह इतिहास भी इस नियमसे मुक्त नहीं है। डफ आदि कुछ अँगरेज़ लेखकोंने शिवाजीको 'डाकू' और 'लुटेरा' आदि शब्दोंसे आभूषित किया था। अन्य लेखकोंने भी आँख मूँदकर उन्हींका अनुसरण किया। यह बात इतिहासका एक अंग बन गयी और जब तक मराठा इतिहासकारोंने वास्तविक सत्यका अनुसंधान नहीं किया, तब तक इतिहास लिखनेवालोंके लिए यह ब्रह्मवाक्य बना रहा। उसी प्रकार कालकोठरीकी घटनाको भी सत्य मानकर इतिहास-लेखकोंने उसकी भयङ्करता तथा सिराजुद्दौलाकी निरंकुशता प्रदर्शित करनेके निमित्त अपनी बुद्धि और विद्याका समस्त भण्डार खर्च कर डाला। यद्यपि यह बात लगभग प्रमाणित हो चुकी है कि कालकोठरीकी घटना हालवेल द्वारा गढ़ी हुई एक कपोल कल्पित कहानी मात्र थी, फिर भी पुरानी परिपाटीके अनुसार यह घटना आज भी ऐतिहासिक सत्य मानी जा रही है। मीर क़ासिमको बदनाम करनेके लिए और उनकी अपकीर्त्तिकी आड़में अपने देशवासियों द्वारा किये गये लज्जाजनक एवं निन्दनीय आचरणपर परदा डालनेके अभिप्रायसे अँगरेज इतिहास-लेखकोंने

* Thornton's History of the British Empire Vol. I. P. 449.

पटनेकी उपर्युक्त घटनाको तिलका पहाड़ बना दिया। शासककी हैसियतसे नवाबने जो कुछ किया उसे उन लोगोंने 'निर्दय हत्या'के नामसे मशहूर कर दिया। इन इतिहासकारोंकी बात आगे चलकर दैवकी लकीर बन गयी और बादकी पीढ़ीके लेखक उन्हींकी हाँमें हाँ मिलाते गये।

इन समस्त इतिहासकारोंकी पोथियोंको ताक़पर रख कर अब निष्पक्ष होकर यह अनुसन्धान करनेकी जरूरत है कि क्या सचमुच नवाब मीर क़ासिमने कोई अक्षम्य अपराध किया। कुछ इतिहासलेखकोंने नवाब मीर क़ासिमको दोषी बतलाते हुए भी इस बुनियादपर उन्हें क्षमा प्रदान की है कि 'जिस स्थितिमें नवाब पड़ गये थे उसमें रह-कर उक्त प्रकारका अपराध उनके हाथों होना अस्वाभाविक नहीं था। वह अँगरेज़ोंके अत्याचारोंसे तंग आ गये थे। उनके साथ बड़े बड़े अन्याय अँगरेज़ों द्वारा किये गये थे जिन्हें सहन करते करते उनका धैर्य्य छूट गया था। इसी कारण अधीर होकर उन्होंने ऐसा हत्याकाण्ड कर डाला। ऐसी स्थितिमें उनका अपराध क्षम्य है।' निस्सन्देह यदि नवाबका अपराध मान भी लिया जाय तो भी परिस्थिति-का विचार करते हुए उन्हें क्षमा करना पड़ेगा। परन्तु नवाबके कारनामे तो क्षमाके भिखारी हैं ही नहीं। लेखक तो परिस्थितिको किनारे रखकर—केवल उचित अनुचितका ही ख्याल करते हुए—यह प्रमाणित करनेको तैयार है कि नवाब मीर क़ासिमने उपर्युक्त घटनाके सम्बन्धमें जो कुछ किया वह पूर्णतः न्याययुक्त था। उसमें बदलेकी या विद्वेषकी गन्ध नहीं थी। केवल नीति और न्यायका भाव ही उसमें वर्तमान था।

पाठकोंको स्मरण होगा कि पटनेमें जो अँगरेज़ी सेना रक्खी गयी थी उसका खर्च नवाब द्वारा मिलता था। नवाबने तीन जिले अँगरेज़ी सेनाके खर्चके लिए दे डाले थे। यह सेना केवल इस लिए थी कि शत्रुओंसे नवाबकी रक्षा करे और उन्हें राज्य-सञ्चालनमें सहायता पहुँचावे। अँगरेज़ोंका एक मात्र कर्तव्य यही था कि वे नवाबकी सहायता करते, सेवा करते और समयपर उनके काम आते। परन्तु इन लोगोंने प्रारम्भसे ही इस कर्त्तव्यकी अवहेलना की। संवत् १८१८ (सन् १७६१ ई०) में जब नवाब बिहारकी राज्य-व्यवस्था ठीक करनेके निमित्त पटना आये हुए थे, उस समय एक रात्रिको मिस्टर कूटने ससैन्य उनके खेमोंपर हमला कर दिया। नवाब यदि चाहते तो उसी समय उन्हें उपयुक्त दण्ड दे सकते थे, परन्तु उन्होंने कोई भी प्रतिकार नहीं किया। इसके पश्चात् एलिसके हाथ भी उन्हें कई बार अपमानित होना पड़ा था, फिर भी नवाबने प्रति बार सब्रसे काम लिया। किन्तु पटनेपर अँगरेज़ोंका रातोरात आक्रमण, लूट पाट और कब्जा बड़ेसे बड़े सहनशील शासकके लिए भी असह्य था। यदि कोई शासक उसे सहन करता तो उसका अर्थ यही होता कि उसमें शासनकी योग्यता ही नहीं है। मुताखरीनके लेखानुसार अँगरेज़ी सेनाने बहुतसे घरोंमें एक दाना भी नहीं छोड़ा। कई घरोंमें आग लगा दी। इस बड़े अपराधका दण्ड क्या हो सकता था? पाठक स्वयं सोचें। शासनके अन्दर इतना बड़ा अपराध यदि कोई व्यक्ति करे तो उसके लिए मृत्युसे कम कोई दण्ड हो ही नहीं सकता, खासकर ऐसी अवस्थामें जब

वह अपराध ऐसे व्यक्तियों द्वारा हुआ हो जिनके हाथ रक्षाका भार सौंपा गया था। ऐसे विश्वासघातका दण्ड किसी भी राज्यमें मृत्युसे कम हुआ हो तो लेखकको उसका पता नहीं है।

अँगरेजोंके उक्त कृत्यको विश्वासघात कहना केवल लेखककी बुद्धिका ही आविष्कार नहीं है। गवर्नर वानसीटार्ट महाशयने, जो नवाब मीर क़ासिमको अँगरेज़ अभियुक्तोंके प्रति उनके न्याययुक्त आचरणके लिए किसी प्रकार क्षमा प्रदान करनेको तैयार नहीं हैं, साफ़ शब्दोंमें स्वीकार किया है कि अँगरेज़ोंका पटनेपर आक्रमण करना विश्वासघातसे कम नहीं था। वह लिखते हैं "कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति अपनेको मीर क़ासिमके स्थानपर रक्खे और बतलावे कि क्या वह उक्त परिस्थितिमें रहकर अँगरेज़ोंके इस आचरण (पटनेपर आक्रमण) को विश्वासघातके अतिरिक्त और कुछ समझ सकता था ?" *

पाठक लेखकके विचारोंको किनारे रखकर अपनेको वानसीटार्टके ही स्थानमें रक्खें—उन वानसीटार्टके स्थानपर नहीं जिन्होंने अपने देशवासियोंकी दुर्दशाको देख कर न्याय विचारको तिलाञ्जलि दे दी हो बल्कि उन वानसीटार्टके स्थानपर रक्खें जिन्होंने अपने देशवासियोंके कृत्यको विश्वासघात कहते हुए उसकी निन्दा की है—और बतलावें कि वे इन अभियुक्तोंके लिए क्या दण्ड निर्धारित करेंगे ?

* Let any impartial person now put himself in the place of Meer Kassim and say whether he could have regarded this assault on the city of Patna, in any other light than as an act of treachery.?

—Narrative of Vansittart Vol III Page 390.

यह भी कहा जाता है कि ये अभियुक्त युद्धके कैदी थे। इन्हें मारना युद्ध-नियमोंके विरुद्ध था। लेखकका जहाँ तक युद्ध-बन्दियोंकी परिभाषा मालूम है उसमें ये अँगरेज़ अभियुक्त नहीं आते। असल बात तो यह है कि इन लोगोंकी हैसियत नवाबके शत्रुओंकी नहीं थी बल्कि उनके रक्षकोंकी थी। वास्तवमें ये लोग उनके सिपाही थे। इसके अलावा इन लोगोंकी गिरफ्तारी युद्धकी घोषणाके पूर्व हुई थी। अतः ये लोग युद्ध-बन्दी नहीं कहे जा सकते।

मीर क़ासिमके विरुद्ध एक दलील यह दी जाती है कि यदि वह दण्ड देना चाहते थे तो उन्हें चाहिए था कि उन अभियुक्तोंपर बाक़ायदा मुक़द्दमा चलाते। निस्सन्देह नवाबने नियमित रूपसे मुक़द्दमा नहीं चलाया—चला भी नहीं सकते थे, नहीं तो वह ऐसा अवश्य करते। पाठकोंको मालूम है कि उदवानालाके युद्धमें नवाब अपना सर्वस्व खो चुके थे। इस समय वह भागनेकी अवस्थामें थे। अँगरेज़ी सेना उनके पीछे लगी थी। एक एक पल उनके लिए एक एक युगके समान था। परिस्थिति पूर्णतः उनके प्रतिकूल थी। हर जगह उनके विरुद्ध बगावतें शुरू हो गयी थीं। इतना समय नहीं था कि वह इन अभियुक्तों-को दण्ड देनेके लिए बाज़ाब्ता कचहरी बैठाते। ऐसी दशा में उनकी आज्ञा ही सर्वोपरि अदालत मानी जानी चाहिए।

कहा जाता है कि ये लोग निरस्त्र थे। निरस्त्रोंपर हाथ उठाना नीतिविरुद्ध है। ठीक है, किन्तु कब? जब दो सेनाएँ आपसमें लड़ती हों, तब एक सेनाके लिए यह अनुचित हो सकता है कि दूसरी सेनापर, यदि वह निरस्त्र है तो, हाथ न उठावे। परन्तु क्या अभियुक्तोंके

लिए भी यही नियम लागू है ? क्या कोई सरकार जब किसी व्यक्तिको फाँसीकी सज़ा देती है तब उसके हाथमें पिस्तौल दे देती है और कहती है कि मुकाबला करते हुए फाँसीपर चढ़ो ? ठीक इसी श्रेणीमें क्या ये अँगरेज बन्दी भी नहीं रक्खे जा सकते ? आज संसारकी सभ्यता पहिलेसे अधिक उन्नत है परन्तु किस राष्ट्रने अपने अभियुक्तोंको यह अधिकार दिया है ? उक्त अँगरेज भी अभियुक्तोंकी श्रेणीमें थे—उन्हें दण्ड दिया गया था और तदनुसार उनके साथ व्यवहार होना सर्वथा न्यायसङ्गत था।

किसी भी पहलूसे विचार किया जाय, परिणाम यही निकलेगा कि मीर क़ासिमने बदला लेने या विद्वेषके भावसे नहीं वरन् केवल न्यायभावसे प्रेरित होकर अँगरेज अभियुक्तोंको प्राणदण्ड दिया था। यदि उन्हें कुल अँगरेज जातिसे दुश्मनी होती (यद्यपि अँगरेजोंने जो सलूक उनके साथ किया था उसपर ध्यान देते हुए ऐसी दुश्मनी भी क्षम्य है) तो वह अपराधी और निरपराधी सबके साथ एक समान व्यवहार करते। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। पाठकोंको शायद मालूम होगा कि फुलरटनको नवाबने मुक्त कर दिया था। यह पटनेमें डाक्टरी करते थे। इन्होंने नवाबके सामने अपनी निरपराधिता प्रमाणित की; अतः नवाबने इन्हें छोड़ दिया।

कुछ लेखकोंने बड़ेही मर्मस्पर्शी शब्दोंमें वर्णन किया है कि मीर क़ासिमने पुरुषोंके अतिरिक्त स्त्रियोंको भी मरवा डाला। लेखकको मालूम नहीं किस आधारपर नवाबपर यह दोषारोपण किया जाता है। तीन प्रमाण इसके बिलकुल खिलाफ़ हैं। मिस्टर बेवरिजको ब्रिटिश म्यूजियममें एक

डायरी मिली थी जो किसी डाकृरके हाथकी लिखी थी। यह महाशय भी उन अभियुक्तोंमें थे जिन्हें नवाबने प्राण-दण्ड दिया था। अपनी मृत्युके पहिलेकी तमाम घटनाओं-का इन्होंने उल्लेख किया है। यह महाशय एक नावपर बैठकर अन्य बहुतसे अँगरेजोंके साथ भागे जा रहे थे। नवाबके आदमियोंने इनका पीछा किया। वेवरिजने इनकी डायरीके आधारपर लिखा है कि पुरुष गिरफ़ार कर लिये गये, किन्तु स्त्रियाँ तथा बच्चे छोड़ दिये गये।* इसके अति-रिक्त कलकत्ता-कौन्सिलके आदेशानुसार फुलरटनने इस घटनाका पूरा ब्यौरा तैयार किया था। उन्होंने उन लोगोंकी एक फ़िहरिस्त तैयार की थी जो मारे गये थे। उस सूचीमें किसी भी स्त्रीका नाम नहीं आता। तीसरा बड़ा प्रमाण सैरुल-मुताखरीन है। मुताखरीनके लेखकने अपनी पुस्तकमें अदनी अदनी बातोंका वर्णन भी नहीं छोड़ा है। उसने भी अपनी पोथीमें किसी भी स्त्रीके मारे जानेका हाल नहीं दिया है। यदि इन मौलिक लेखोंके अलावा कोई प्रमाण इतिहासकारोंके पास हो तो उसका पता लेखकको नहीं है। यदि इतिहासकारोंकी बातोंपर थोड़ी देरके लिए विश्वास भी कर लिया जाय कि उक्त अवसरपर कोई निर-पराधी भी मार डाले गये (जिसके माननेका कारण मौजूद नहीं है) तो भी उसका दोष नवाबपर नहीं वरन् मारनेवाले-पर है। नवाबकी इच्छा केवल अपराधियोंको ही दण्ड देनेकी थी।

---

* I gather from this narrative that women and boys mentioned as having been in the boat were not imprisoned.

Cal. Review, October 1884.

नवाब मीर कासिमके प्रतिकूल केवल एक बात है जिसके कारण वह भले ही दोषी कहे जायँ। वह युद्धमें परास्त हुए थे, उनका राज्य हाथसे निकल गया। यदि वह विजयी हुए होते तो उनके लिए सब कुछ क्षम्य होता। संसारका ऐसा ही नियम है। यदि कोई पराधीन राष्ट्र अपनी स्वतन्त्रताके निमित्त युद्ध करते हुए परास्त होता है तो उसके कार्य्यको 'बग़ावत' कह कर उसकी धज्जियाँ उड़ायी जाती हैं। यदि वह अपने उद्देश्यमें सफलीभूत हो जाता है तो उसका नाम इतिहासके पृष्ठोंपर स्वर्णाक्षरोंमें लिखा जाता है। यदि कोई शक्तिसम्पन्न व्यक्ति या राष्ट्र घोरसे घोर अमानुषिक कृत्य भी कर डाले तो भी वह सभ्य समझा जाता है। परन्तु पराभूत व्यक्ति या पराजित कौमकी न्यायप्रियता या गुणोंमें भी दोष निकालनेकी चेष्टा की जाती है। हारे हुए मीर कासिमका न्याय इतिहासमें (कोल्ड ब्लडेड मर्डर) निष्ठुर हत्याका कार्य कहलाने लगा परन्तु यदि वह विजयी हुए होते तो वही कार्य शासकका कर्तव्य-पालन कहलाता। जो हो, इतिहासकारका कर्तव्य निष्पक्ष होकर वास्तविकताका अनुसन्धान करना है और लेखकने भी उक्त कर्तव्यके पालन करनेकी चेष्टा की है। अब यह बात पाठक स्वयं सोच लें कि लेखकका मत कहाँतक ठीक है अर्थात् अँगरेज़ अभियुक्तोंके सम्बन्धमें मीर कासिमके आचरणको 'प्राणदण्ड' कहा जाय या 'हत्याकाण्ड'।
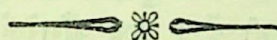
३६—पूर्णियामें क्रान्ति ।

जब नवाब मीर कासिम मुंगेरसे अज़ीमाबाद लौटे जा रहे थे उसी समय पूर्णियामें एक अद्भुत क्रान्ति हो गयी। इस क्रान्तिका प्रधान कारण रोहीद्दीन हुसैन खाँ नामक एक व्यक्ति थे। इनके पिता बहुत दिनों-तक पूर्णियाके शासक रह चुके थे। परन्तु इस समय रोहीद्दीन हुसैनकी अवस्था अच्छी नहीं थी। इन्हें मुंगेरमें रहना पड़ता था और निर्वाहके लिए केवल थोड़ा सा रुपया मिलता था।

जब नवाब मीर कासिम और अँगरेजोंके दरमियान युद्ध शुरू हो गया तो रोहीद्दीन भी अपने अच्छे दिनोंका अवसर ढूँढ़ने लगे। उन्होंने एक नाव किरायेपर ली और पूर्णिया पहुँचे। रातका समय था। वह अपने पिताके एक मित्र मेहँदी बेग़के यहाँ उतरे। मेहदीको भय हुआ कि कहीं नवाबको रोहीद्दीनके आनेकी बात मालूम हो गयी तो दोनोंकी जान सङ्कटमें पड़ेगी। अतएव इन्होंने रोहीद्दीनको आदेश दिया कि वह पूर्णियासे तत्काल अन्यत्र चले जायँ। तदनुसार रोहीद्दीन शहर छोड़कर कहीं अन्य स्थानमें जा छिपे। उन्होंने अपने आदमियोंको उदवा भेजा और उनसे कह दिया कि युद्धका जो कुछ परिणाम हो उसकी सूचना शीघ्र ही दें। जब अँगरेजोंने उदवाके रण-क्षेत्रमें विजय प्राप्त की तो इसकी खबर पूर्णियामें सबसे

पहले रोहीद्दीनको ही मिली। पूर्णियाके गवर्नर शेर अली तो उपस्थित थे नहीं। वह तो पहिले ही उद्वाके युद्धमें चले गये थे। शासनका सारा भार अपने भाईको सौंपते गये थे परन्तु यह अपने कुछ सिपाहियोंके साथ क़िलेमें छिपकर बैठ रहे। रोहीद्दीनको जब उद्वाकी लड़ाईका परिणाम मालूम हुआ तो वह उसी रातको पुनः शहरमें आये और मेहँदी बेग़के यहाँ ठहरे। बहुतसे लोगोंने, जिनसे रोहीद्दीनके पितासे मित्रता थी अथवा जो उनके मातहत रह चुके थे, उनका साथ दिया।

दूसरे दिन सवेरे रोहीद्दीनने पूर्णियापर अधिकार प्राप्त करना चाहा। उन्हें कुछ अधिक अड़चन न पड़ी। उन दिनों पूर्णियाके प्रधान मन्त्री गुरुदयालसिंह थे। रोहीद्दीनने इन्हें अपने कुछ मित्रोंके सिपुर्द रख दिया। तत्पश्चात् वह महलको गये। शेर अलीके भाईने कुछ विरोध नहीं किया और बिना कुछ आनाकानी किये अधीनता स्वीकार की। रोहीद्दीनने शासनकी बागडोर अपने हाथमें ले ली। शहरमें बाजे बजवाये गये। शहरके रईसोंने दरबारमें आकर तरह तरहकी भेंट पेश की और अधीनता स्वीकार की। रोहीद्दीनने एक पत्र मीर जाफरको लिखा और उन्हें अपना नवाब स्वीकार किया। इस प्रकार बिना कुछ कष्ट उठाये ही पूर्णियामें मीर जाफरका आधिपत्य हो गया। इससे उन्हें स्वभावतः बड़ी प्रसन्नता हुई।

३७—शुजाउद्दौलाकी शरणमें ।
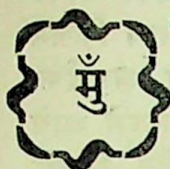
मुँगेरपर अधिकार प्राप्त करनेके पश्चात् अँगरेज़ लोग अजीमाबादके लिए रवाना हो गये । नवाबने शहरमें रहना उचित न समझा । अजीमाबादसे बारह कोसकी दूरीपर बकेरम नामके स्थानमें उन्होंने अपना पड़ाव डाला । उधर अँगरेज अजीमाबाद पहुँच गये और मारूफ गंजमें ठहरे । वहाँ उन्होंने अपनी तोप लगायी और दुर्गपर प्रहार करना शुरू कर दिया । उधरकी दीवार कच्ची थी, अतएव शीघ्र ही एक बड़ासा सूराख उसमें हो गया ! क़िलेपर अँगरेज़ोंने क़ब्ज़ा कर लिया और फिर शहरमें दाखिल हुए ।

नवाब मीर क़ासिमको जब सूराख होनेकी बात मालूम हुई तभी उन्हाने मीर अबूअली खाँ तथा मीर रोशन अली खाँके अधीन लगभग एक हजार घुड़सवार अँगरेजोंके साथ लड़नेके लिए भेजे । रातभर चल कर दूसरे दिन सवेरे ये लोग अजीमाबाद शहरके पास पहुँच गये । यहाँ आकर इन्हें मालूम हुआ कि दुर्गपर अँगरेजोंका अधिकार हो गया है और वे शहरमें भी घुस गये हैं । अब ये बड़े असमंजसमें पड़े । इन्हें कुछ देर तक सूझ ही न पड़ा कि अँगरेजोंका सामना करें या लौट चलें । इसी बीचमें थोड़ेसे अँगरेजी सिपाही पश्चिमी फाटकसे बाहर निकले । उन्हें देखते ही नवाबी सेना परेशान हो गयी । सब लोग विना कारण भाग खड़े हुए ।

नवाबको अब स्पष्ट प्रतीत होने लगा कि विधाता हमसे अप्रसन्न है। अब उन्हें चारों ओर निराशाका ही साम्राज्य नजर आने लगा। विहार छोड़नेके अतिरिक्त उन्हें कोई दूसरा उपाय नहीं सूझ पड़ा। वह मुहीब अलीपुरको चल पड़े। वहाँसे वह शमशेर नगरको गये। पुनः वहाँसे चल कर शाहपूरा पहुँचे और वहाँपर सोन नदीको पार कर नलीतो नामके शहरमें अपना पड़ाव डाला। यहाँ वह कुछ दिनों तक ठहरे रहे और रोहतासगढ़में स्थित अपने खजाने तथा स्त्री आदिकी बाट जोहते रहे।

इसी स्थानपर मिरजा नज़ीफ खाँ भी आकर नवाबसे मिले। नज़ीफको मालूम हुआ कि नवाब शुजाके राज्यमें जानेपर तुले हुए हैं। उन्होंने नवाबको ऐसा करनेसे मना किया और कुछ दूसरे उपाय बतलाये। नज़ीफका कहना था कि "आप रोहतासगढ़को लौट चलें। अपनी सेनाका तमाम भार मेरे सिपुर्द करें। मैं एक अच्छी सेना संघटित करके अँगरेज़ोंका नाकों दम कर डालूँगा। यदि आपको यह स्वीकार न हो तो आप बुन्देलखण्ड चलें और मराठोंको अपनी ओर मिलाकर अँगरेज़ोंसे युद्ध करनेकी तैयारी करें।" नवाबने मिरज़ा नज़ीफको युक्तियां पसन्द न कीं। उन्होंने यह समझ रखा था कि शुजाके दरबारमें जाते ही हमारे तमाम दुःखोंका अन्त हो जायगा। मिरज़ा नज़ीफ तो शुजाके दरबारसे रुष्ट होकर विहार आये ही थे। उन्होंने नवावसे छुट्टी चाही। नवाबने उन्हें भलीभाँति पुरस्कृत कर बिदा किया।

नलीतोसे नवाब सहसराम गये। वहाँसे पुनः आगे बढ़े और कर्मनासा नदीके निकट अपना पड़ाव डाला।

यहाँ ही शुजाके पाससे उन्हें एक पत्र और एक पारसल मिला। पारसलमें कुरानकी एक पोथी थी। उसपर शुजाने प्रतिज्ञा की थी कि हम नवाब मीर कासिमको रक्षाका भार अपने ऊपर लेते हैं। नवाब बड़े प्रसन्न हुए। वह कर्मनासा पार कर शुजाउद्दौलाके अधीनस्थ बलवन्त सिंह नामक सरदारके राज्यमें चले आये।

शुजाउद्दौला और सिराजुद्दौला समकालीन शासक थे। शुजा बंगालके परिवर्तनको बड़े ध्यानसे देख रहे थे। उन्होंने सिराजुद्दौलाका पदच्युत होना देखा। मीर जाफरकी नवाबी और मीर कासिमके साथ अँगरेजोंकी सन्धिका भी उन्हें पता था। वह चाहते थे कि बंगाल, बिहार इत्यादिपर भी हमारा राज्य रहे। जब नवाब मीर कासिम और अँगरेजोंमें लड़ाई हो रही थी तो वह उसके परिणामकी ओर बड़े ध्यानके साथ देख रहे थे। वह सोचते थे कि जो पार्टी जीत जायगी वह भी अवश्य पहलेसे अधिक कमजोर हो जायगी। उदवानालाके युद्धके बाद उन्होंने समझ लिया कि विजयने अँगरेजोंका पक्ष ग्रहण किया। उन्होंने अब यह निश्चय कर लिया कि हमें मीर कासिमका साथ देना चाहिये और उनके साथ सहयोग कर अँगरेजोंको हराना तथा इसी बहाने अपने राज्यका विस्तार करना चाहिये। पत्र लिखनेको तो शुजाने लिख दिया परन्तु कुछ ही दिनों बाद कुछ ऐसी घटनाएँ घटित हुईं जिनके कारण उनकी राय बदल गयी।

मुगल साम्राज्यकी गयी-गुजरी दशासे लाभ उठाना कुछ आदमियोंने आरम्भ कर दिया था। उन्हींमें बुन्देलखण्डके राजा भी थे। इन्होंने जमुनाको पार किया और शुजाके

राज्यमें उत्पात मचाने लगे। शाह आलम यद्यपि बादशाहत-के हक़दार थे परन्तु अभी उन्हें मारे मारे ही फिरना पड़ता था। वह भी साम्राज्य-रक्षाके निमित्त शुजासे सहायता माँगने लगे। उधर नवाब मीर जाफरके पाससे भी एक पत्र मिला कि मेरे साथ आप मित्रता स्थापित करें। शुजाउद्दौला उपर्युक्त कठिनाइयोंसे घिर गये। इन्होंने मीर कासिमको जो पत्र लिख दिया था उसके लिए यह बहुत पछताये।

बलवन्त सिंहके राज्यमें मीर कासिम पहुँच गये। परंतु उन्हें डर था कि कहीं अँगरेज पीछा न करें। अतएव उन्होंने बनारससे पाँच कोस और आगे जाकर अपना पड़ाव डाला। शुजाउद्दौला बादशाह शाह आलमके साथ इलाहाबाद जा रहे थे। मीर कासिमको भी उन्होंने वहीं मिलनेकी सूचना दी। वहाँ पहुँच कर शुजा बड़ी शानके साथ बारह हज़ार घुड़सवारोंको लिये हुए मीर कासिमसे मिलनेके निमित्त उनके पड़ावको गये। मीर कासिमने अपने सिपाहियोंको पहलेसेही आज्ञा दे रखी थी कि क़तारमें शुजाके स्वागतार्थ खड़े हो जायँ। शुजाने आकर देखा कि समरू और मारकरके अधीन सिपाही बड़े अच्छे ढंगमें उनके स्वागतके लिए एक कतारमें खड़े हैं। शुजाने पहले इस ढंगकी सेना नहीं देखी थी। उनके हृदयपर इसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। पहले वह यह सोचकर आये थे कि मीर कासिमको अपने राज्यसे निकल जानेकी आज्ञा देंगे। परन्तु लौटती बार यह विचार त्याग कर उनको जाना पड़ा। मीर कासिम शुजाके पहुँचनेपर बड़े आदरके साथ उनसे मिले। नवाबने बड़े अच्छे अच्छे जवाहरात,

हीरे इत्यादि भेंटमें उन्हें दिये। बहुतसे अच्छे अच्छे हाथी भी दिये। तत्पश्चात् दोनों शाह आलमके पड़ावमें गये। मीर कासिमने बादशाहको अपना सम्मान प्रदर्शित किया। कुछ देर बाद वज़ीर अपने पड़ावको लौट गये। मीर कासिम भी अपने खेमेको चल दिये।

दूसरे दिन नवाब स्वयं वजीरके यहाँ गये। शुजाने इनकी बड़ी इज्जत की और हर प्रकारका धैर्य्य दिलाया। नवाबने शुजाकी माँके पास भी एक पत्र बहुत सी भेंटके साथ भेजा, और "माँ" शब्दसे संबोधित कर उनसे भी सहायताके लिए प्रार्थना की। शुजाके वज़ीरोंको भी बहुत कुछ रुपया इत्यादि देकर अपने पक्षमें कर लिया।

मीर कासिमको इलाहाबादमें ठहरे कई दिन हो गये परन्तु अभी तक शुजाने उन्हें कुछ जवाब न दिया। उन्होंने इनके पास एक पत्र लिखा और उक्त विषयके सम्बन्धमें प्रार्थना की। वज़ीरने जवाब दिया कि जबतक बुन्देलखण्डके राजाका उत्पात शान्त न हो तबतक मैं इस ओर अधिक ध्यान न दे सकनेके लिए विवश हूँ। नवाबने तुरन्त लिख भेजा "ऐसी मामूली बातें आप कृपया मुझे लिख दिया करें। मैं थोड़े ही समयमें ठीक कर दूँगा। यदि आप केवल इसी मामूली कामके लिए रुके हुए हैं तो मुझे आज्ञा दीजिये। मैं तमाम उत्पातोंका मूलविच्छेद कर दूँगा।" वज़ीर राज़ी हो गये और मीर कासिम अपनी सेनाके साथ बुन्देलखण्डके लिए चल पड़े।

३८—युद्ध-यात्रा।

मीर कासिमको बुन्देलखण्डमें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। अब यह फूले न समाये। यह शीघ्र-ही लौटकर वज़ीरकी सेनामें सम्मिलित हो गये। शुजाउद्दौलापर इनकी धाक तो उसी समय जम चुकी थी जब उन्होंने इनकी सुसज्ञालित सेनाको पहले पहल देखा था। अब तो वज़ीरको इनकी शक्तिपर और भी विश्वास हो गया। अतएव दोनोंने मिलकर आगे बढ़नेका निश्चय किया। शाह आलम तो वज़ीरके हाथके खिलौने थे ही, अतः जब वजीरने मीर कासिमका साथ देनेपर कमर कस ली, तब भला शाह आलमको कैसे इनकार हो सकता था? वह भी साथ हो लिये। तीनोंकी सम्मिलित सेना आगे बढ़ी। इस सेनाका वर्णन करते हुए मुताखरीनके लेखकने लिखा है कि "यह सेना इतनी बड़ी थी कि उसके चलनेसे आसपासके कुल स्थान इस तरह ढँक जाते थे मानो पानीकी बाढ़ आयी हो। समुद्रकी लहरोंकी तरह यह आगे बढ़ती हुई देख पड़ती थी।"*

सेना थी तो अवश्य ही बहुत बड़ी और यदि यह चाहती तो बहुत कुछ कर सकती थी, परन्तु इसमें एक अवगुण था, एक बड़ा दोष था। इसी दोषके कारण

---

* It was so very numerous that it covered country and plains like an inundation and moved like the billows of the sea. It was not an army but a whole city *in* motion. Mutakherin P. 526.

हिन्दुस्तानियोंको कई जगहोंपर नीचा देखना पड़ा है। दुर्भाग्यसे यह दोष हमारी नस नसमें घुस गया है, हमारे लिए यह स्वाभाविक होगया है। दोष यह था कि इसमें संयम (डिसिप्लिन) का अभाव था। यह संघटित रूपसे काम करना नहीं जानती थी। इसीसे हम देखेंगे कि आगे चलकर इसकी हार हुई। अँगरेजोंमें यह दोष नहीं था। अपने नियमानुसार संघटित रूपमें जब ये लड़ाई-के मैदानमें खड़े हो जाते थे तब इनके थोड़ेसे आदमी भी बड़ी भारी देशी सेनाका मुकाबला कर सकते थे।

कुछ ही दिनोंमें ये लोग बनारस पहुँचे। यहींपर राजा बलवन्त सिंहसे वज़ीरकी मुलाकात हुई। बलवन्त सिंह बनारस और उसके आस-पासके स्थानोंके मालिक थे। पहले यह एक मामूली जमीन्दार थे परन्तु धीरे धीरे इन्होंने अपनी शक्ति बहुत बढ़ा ली थी। यद्यपि नामके लिए इन्होंने वज़ीरकी अधीनता स्वीकार कर ली थी परन्तु वास्तवमें यह स्वतन्त्र थे। शुजाउद्दौलाने कई बार इन्हें दबानेका यत्न किया, परन्तु बलवन्त सिंह उनके हाथ नहीं आये। इस बार शुजाउद्दौलाने बड़ा यत्न किया कि बलवन्त सिंह उनसे मिलें। पहले तो बलवन्त सिंह डरे और सोच-विचारमें पड़ गये। परन्तु जब कई प्रधान पुरुषोंने उन्हें समझाया और उनकी रक्षाका भार अपने ऊपर लिया तब वह वज़ीरसे मिलनेको तैयार होगये। दो-तीन हज़ार घुड़सवार और कई हज़ार पैदल-सेनाके साथ आकर वह वज़ीरसे मिले और अपना सम्मान प्रदर्शित किया।

बनारस आनेके दो-तीन दिन बाद इन्होंने गङ्गा नदीपर पुल बँधवाया। सारी सेनाने नदी पार की। नदी

पार करनेके पहले ही, जब ये लोग बनारसमें थे तभी, अचानक इन्हें अच्छी सहायता प्राप्त हुई। बात यह थी कि मीर जाफरने अपनी विजयके उपलक्ष्यमें पुरस्कार-के तौरपर अपनी सेनाको कर्मनासाके किनारे रुपया देनेका वादा किया था। परन्तु रुपया दिया नहीं गया। एक फ्रांसीसी सिपाहीका, जो अँगरेज़ी सेनामें काम करता था, अँगरेज़ी कमांडरसे इस सम्बन्धमें झगड़ा हो गया। फिर क्या था! उसने अपनी जातिके दो सौ आदमियों-को लिये हुए पड़ाव छोड़ दिया और बलवन्त सिंहके राज्यको चल दिया। ये लोग शुजाउद्दौलाकी अधीनतामें नौकर हो गये।

युद्धके सम्बन्धमें वज़ीरको उनके कुछ बुद्धिमान अफ-सरोंने बड़ी अच्छी सलाह दी थी। यदि उनकी युक्ति काममें लायी जाती तो बहुत कुछ हो सकता था। वज़ीर-की सेनामें संघटन नहीं था। वह नियमित रूपसे लड़ नहीं सकती थी। लुक-छिप कर लड़नेकी उसकी आदत थी। शुजाउद्दौलाके कुछ सरदारोंने उनसे कहा था कि "अँगरेज़ोंके साथ युद्ध-क्षेत्रमें लड़ना हमारे लिए हानिकारक है। उनके नियम और संघटनके सामने हम टिक नहीं सकते। इस अवस्थामें हमारे लिए यही श्रेयस्कर होगा कि हम लुक-छिप कर उनपर आक्रमण करें। युद्धके लिए रसद आदि सामग्री तो मुख्य सेनाके साथ रहे और थोड़े थोड़े आदमी कई स्थानोंसे एकाएक आक्रमण करें। यदि हम लोगोंने उनकी कतारें तोड़ दीं और उनके दरमियान गड़बड़ी मचा दी तो फिर विजय हमारी है। यदि हम लोगोंको पीछे भी हटना पड़ा तो भी कोई हर्ज

नहीं । हम लोग बार बार उनपर हमला करेंगे, उनकी गाड़ियाँ नष्ट कर देंगे, उनकी रसद जला डालेंगे, उनको सर्वदा चिन्तित अवस्थामें रखेंगे और उनका ठहरना असंभव कर देंगे। यदि इस प्रकार उत्साहके साथ कार्य जारी रहा तो ये लोग अज़ीमाबाद लौट जायँगे। फिर हम लोग सहसराम जाकर बरसात काटेंगे। इस दरमियानमें कुछ लोग सारन भेजे जायँ। वे उस स्थानको तथा उसके आसपासके और कई स्थानोंको, जिनकी रक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं किया गया है, अधिकारमें कर लें। वहाँके निवासियोंके साथ ज़मीनकी मालगुज़ारीका बन्दोबस्त थोड़े ही दाममें कर लें और उन्हें अपनी ओर मिलाये रखनेका यत्न करें। इस प्रकारका प्रबन्ध इधर बक्सरसे अजीमाबादतक भी किया जा सकता है। कुछ लोग अजीमाबादके आस पास गङ्गाके किनारे छितरे रहें और अँगरेज़ोंकी जो नावें अज़ीमाबादकी ओर जायँ उन्हें नष्ट कर डालें। इस प्रकार रसदका भीतर आना एकदम बन्द हो जायगा। अन्तमें फल यह होगा कि अँगरेज़ बंगाल बिहार छोड़कर लौट जायँगे। फिर हम लोग सोचेंगे कि आगे चलकर क्या करना चाहिये।"

उपर्युक्त सलाह विशेषकर उस समयके लिए बड़ी युक्तिसंगत थी। अँगरेजी सेना भी उस समय अच्छी अवस्थामें नहीं थी। उसमें आपसमें विद्वेष जोर पकड़ रहा था। वे लोग अजीमाबादको लौटने ही वाले थे। इस दशामें यदि वज़ीर चाहते तो इनके लिए कार्य्य करनेका बड़ा अच्छा अवसर था। परन्तु यह तो अपनी शक्तिके नशेमें चूर थे। अब्दालीकी ओरसे लड़ कर इनकी सेनाने बड़ी

बहादुरी दिखायी थी। तबसे यह समझने लगे थे कि हमारे सामने संसारकी कोई ताक़त ठहर नहीं सकती। इन्हें इस बातका पता नहीं था कि पानीपतके युद्धक्षेत्रमें जिन मराठोंको इन लोगोंने परास्त किया था उनमें और अँगरेज़ोंमें बड़ा अन्तर था। युद्धक्षेत्रमें मराठे लड़ना नहीं जानते थे, उन्हें परास्त करना कोई कठिन बात भले ही न हो परन्तु अँगरेजोंमें लड़ाकू जातिके तमाम गुण वर्तमान थे। उन्हें सामने सामने लड़कर हटाना टेढ़ी खीर थी। परन्तु वज़ीरको इस बातका ज्ञान नहीं था। अपने अफसरोंकी सलाह सुनकर भी उन्होंने उसपर ध्यान न दिया।

इधर अँगरेज बहुत दिनोंसे लड़ते लड़ते थक गये थे। अब वर्षा ऋतु भी आ पहुँची। इस समय उनमें लड़नेका उत्साह नहीं रहा। वे अपना धैर्य्य खो बैठे। इसके अतिरिक्त शुजाउद्दौलाकी बहादुरीका सिक्का उनके हृदयपर जमा हुआ था। उन्हें भय था कि हम इतने बड़े शत्रुका सामना न कर सकेंगे। उन्होंने बक्सरसे अपना पड़ाव हटाना ही उचित समझा। अज़ीमाबादको ही उन लोगोंने अपनी रक्षाके लिए ठीक स्थान समझा। तुरन्त चलनेकी तैयारी की गयी। जल्दी जल्दी वे लोग अज़ीमाबादकी ओर चल पड़े। शुजाउद्दौलाके घमण्डका तो अब वारपार न रहा। मीर कासिम और बादशाह शाह आलमके साथ वह अपनेको विजयी समझते हुए शत्रुका पीछा करनेके निमित्त अजीमाबादकी ओर बढ़े। अँगरेजोंको बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। शत्रु लगातार पीछा करते ही गये और उनको नुकसान भी पहुँचाया। अन्तमें अँगरेज अजीमाबाद पहुँच गये।

पानीकी तंगीके कारण सीधे सड़कसे न चलकर सोनके किनारे किनारे वज़ीर अपनी सेनाके साथ बढ़े। फुलवाड़ीमें इनका पड़ाव डाला गया। यह स्थान अजीमाबादसे चार कोसकी दूरीपर है। यहाँपर एक दिन और ठहर कर वजीर शत्रुपर आक्रमण करनेके लिए चल पड़े।
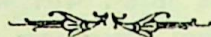
३९—अजीमाबादमें युद्ध।

अजीमाबाद पहुँच कर अँगरेजोंने अपनी कुछ गोलन्दाज़ सेना बुर्जोंपर रखी और बाकीको लिये हुए वे आगे बढ़े। शहरमें दक्षिणकी ओर एक तालाब था। वर्षा ऋतुमें इसका पानी बढ़ कर चारों ओर शहरमें फैल जाता था। इसी लिए यहाँ एक बाँध बाँधा गया था जिससे पानी रुक जाता था। इस बाँधको अँगरेज़ोंने और चौड़ा किया। उसके पीछे खाई खोदी और खाईके पीछे अपनी सेना रखी। साथ ही मीर जाफरको देशी सिपाहियों और अपने थोड़ेसे तिलंगोंके साथ अपने पीछे रक्षित सेनाके रूपमें रख छोड़ा।

इधर वज़ीरने भी लड़नेका बन्दोबस्त आरम्भ किया। राजा बेनीबहादुर और राजा बलवन्तसिंह वजीरकी बाईं ओर स्थानापन्न हुए। इसी कतारमें इनायतखांके अधीन तीन हज़ार रुहिले भी खड़े किये गये। इनसे बिलकुल मिले हुए पाँच हज़ार नागे भी लड़ाईके लिए तैयार होकर डट गये। इनके पीछे कुछ दूरीपर समरू मीर कासिमके

ति गोंकी पाँच पलटनें लिये तैयार थे। इनके साथ पाँच अच्छी तोपें थीं। इनके पीछे, मीर जाफरके बिलकुल आमने सामने, बेनीबहादुरकी दाईं ओर छः या सात हज़ार घुड़सवार सेनाको लिये हुए मीर क़ासिम खड़े थे।

शुजाउद्दौला आगे बढ़े और खुले मैदानमें अपनी सेना लिये हुए बहादुरीके साथ आ डटे। इधर अँगरेज़ अग्निवर्षा कर रहे थे। कुछ गोले समरूकी सेनापर गिरे परन्तु बहुतसे खाली ही चले गये। समरू और मीर कासिम दोनों तो बचकर इतनी दूरीपर खड़े थे कि इनपर किये गये वारोंका खाली जाना अनिवार्य था। कुछ ही देरमें शुजाउद्दौलाके पाससे एक दूत मीर कासिमके यहाँ आया और वज़ीरका सन्देश सुनाया कि "तुम पीछे खड़े क्या देख रहे हो? जिस प्रकार मैं आगे बढ़ रहा हूँ तुम भी बढ़ो और शत्रुको अपनी ओर उलझावो। यदि तुम स्वयं बढ़ना नहीं चाहते तो समरूको सेनाके साथ भेजो।" मीर कासिमने कुछ ठीक उत्तर नहीं दिया। न वह स्वयं आगे बढ़े और न समरूको कुछ आज्ञा दी।

इस समय तक बारह बज चुके थे। अब नागे लड़नेको आगे बढ़े। परन्तु इनके किये कुछ न हो सका। इनके बहुतसे आदमी मार डाले गये। जो बचे वे जल्दी से भाग खड़े हुए। यह देख शुजाकी सेना पुनः इकट्ठी हुई। इनायत खाँ भी रुहिलोंको लिये हुए आगे बढ़े। परन्तु इनकी भी वही अवस्था हुई जो उक्त संन्यासियोंकी हुई थी।

दिनके तोन बज गये। वजीर शुजाउद्दौलाने तीसरी बार फिर जोर लगानेकी ठानी। अपनी सेना उन्होंने

फिर इकट्ठी की। इस तीसरे प्रयत्नका प्रभाव अँगरेजों-पर भी पड़े बिना न रह सका। उनके दरमियान कुछ गड़बड़ी सी दीख पड़ी। उनके कई बाजा बजानेवाले शत्रु द्वारा पकड़ लिये गये। परन्तु यह अवस्था कुछ ही देर तक रही। तुरन्त उन्होंने अपनी कतार ठीक कर ली और जोरोंके साथ अग्निवर्षा आरम्भ कर दी। वज़ी-रकी सेना टिक न सकी, उसे पीछे हटना पड़ा। इतने समय तक बलवन्तसिंह और बेनीबहादुर अपने स्थान-पर ही खड़े रहे, आगे न बढ़े। अन्तमें विजय अँगरे-जोंकी ही रही। वजीरने एक दूत द्वारा मीर कासिमको उनकी सुस्तीके लिए बहुत बुरा-भला सुनाया और कहा कि अब मीर कासिमको पड़ावको लौट चलना चाहिए। मीर कासिमने तदनुसार समरूको भी लौटनेकी आज्ञा भेजी। वजीर पहले ही लौट चुके थे। कुछ दिनों तक वे लोग और पड़ाव डाले रहे। परन्तु अजीमाबादका यह युद्ध यहीं समाप्त होगया। इधर वर्षा समाप्त हो रही थी, अतः इन्हें अब अधिक दिनों तक ठहरनेका भी साहस नहीं हुआ। इन्होंने अपना डेराडण्डा उठा कर बक्सरकी ओर लौटनेका निश्चय किया।

अजीमाबादमें मीर कासिमकी हार क्यों हुई? पाठक-गण विचारपूर्वक देखें तो मालूम हो जायगा कि इसका मुख्य कारण संघटन (डिसिप्लिन) की कमी थी। यद्यपि अँगरेजोंकी अपेक्षा इनकी ओर बहुत बड़ी संख्या थी, यदि चाहते तो अँगरेजों जैसी कई सेनाएँ हरा सकते थे, परन्तु इनमें ढीलापन था, निरुत्साह था, संघटनका अभाव था। इसीलिए यह कुछ भी न कर सके। बल-

वन्तसिंह, वेनीबहादुर आदि अफसर जिस तरह लड़ाईमें उदासीन रहनेके दोषी ठहराये जा सकते हैं, उसी तरह मीर कासिमपर भी यही दोष आरोपित किया जा सकता है। परन्तु हम मीर कासिमकी इस ढिलाईको उत्साहकी कमी या उदासीनता नहीं कह सकते और न इसे कायरता ही कह सकते हैं। इनको तो सूबेदारी प्राप्त करनेकी महत्वाकांक्षा थी। भला निरुत्साह होकर यह उस महत्वाकांक्षा तक कैसे फटक सकते थे? बात यह थी कि मीर कासिम चतुर राजनीतिज्ञ थे, अच्छे शासक थे, परन्तु अच्छे सिपाही न थे। धुरन्धर राजनीतिज्ञके समस्त गुण इनमें वर्तमान थे परन्तु एक लड़ाके सिपाहीके गुणोंसे यह खाली थे, यही इनकी ढिलाईका कारण था।
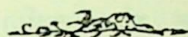
४०—मीर कासिमकी गिरफ्तारी।

अज़ीमाबादकी लड़ाईने सर्वदाके लिए नवाब मीर कासिमके भाग्यका निर्णय कर दिया। सूबेदारी प्राप्त करनेकी उनकी रही-सही आशा धूलमें मिल गयी। जब वज़ीर शुजाउद्दौलाकी सेना बनारससे गङ्गा पार कर रही थी उसी समय मीर कासिमके साथ यह तै हुआ कि जबतक यह युद्ध जारी रहेगा तबतक वह शुजाउद्दौलाको फौजके खर्चके लिए ग्यारह लाख रुपये दिया करेंगे। जब अजीमाबादका घेरा पड़ा हुआ था, तब मीर

कासिमके पास बहुत थोड़ा द्रव्य रह गया था। अब उनमें शुजाउद्दौलाको पूर्ववत रुपया देनेकी सामर्थ्य नहीं थी। उन्हें अब यही चिन्ता लगी कि वज़ीर शुजाके चंगुलसे किस प्रकार निकलें। बहुत सोच-विचारकर उन्होंने एक युक्ति निकाली। अपने विश्वासपात्र मित्र अली इब्राहम खाँके द्वारा उन्होंने वज़ीरसे कहला पठाया कि "मुझे मुर्शिदाबाद और बंगालकी तरफ भेजिये। अँगरेज़ों द्वारा नियत कलक्टरोंको मैं तंग करूँगा। उनकी धाक इस प्रान्तमें स्थापित न होने दूँगा। अँगरेज़ोंके पास सेना बहुत कम है। रक्षाका उचित प्रबन्ध उनके पास नहीं है, अतः सफलताकी मुझे बड़ी आशा है।" मीर कासिमने अपने बचावके लिए उपाय तो अच्छा सोचा था, परन्तु शुजाउद्दौला उनके चकमेमें नहीं आये। मीर कासिमकी चालाकी वह समझ गये। वह मीर कासिमको अलग करनेको तैयार नहीं थे। उन्होंने साफ साफ कह दिया कि बङ्गालमें अँगरेजी सत्ता घटानेके लिए और कोई आदमी भेजा जायेगा। मीर कासिमको यहाँ ही रहना पड़ेगा।

जब बुरे दिन आते हैं तो मित्र भी शत्रु बन जाते हैं, सच्चे हितैषी भी मुँह मोड़ लेते हैं। यही बात नवाब मीर कासिमके साथ भी इस समय घटित हो रही थी। जब खजाना बहुत कुछ खाली हो गया और भाग्यने पलटा खाया तब उनके बड़ेसे छोटे तक तमाम नौकर उनसे विमुख हो गये। उन्होंने अपनी उच्छृङ्खलता दिखानी शुरू कर दी। जो जिसने पाया लूटना खसोटना आरम्भ कर दिया।

मीर सुलेमान नवाब मीर कासिमका खजानची था। उसने अपने मालिकके विरुद्ध ही साजिश करना शुरू कर

दिया। वह वजीरके प्रधान प्रधान अफसरोंसे मित्रता स्थापित करने लगा। खजानेके बहुतसे अमूल्य पदार्थ उसने हड़प लिये। धीरे धीरे मीर कासिमको भी इसका पता लग गया। उन्होंने अपने मित्रोंसे मीर सुलेमानकी बेईमानीका जिक्र किया। मीर सुलेमानने देखा कि अब मेरे सरपर कुछ आफत आयगी। यदि रुपयेका हिसाब माँगा गया तो और भी कठिन हो जायगा। अतएव उसने मीर कासिमके पड़ावको छोड़ दिया और शुजाउद्दौलाकी तरफ जाकर मिल गया।

उक्त घटनाके छः सप्ताह बाद वज़ीर शुजाउद्दौलाने पुनः मीर कासिमसे रुपयेकी माँग पेश की। इन्होंने अपनी असमर्थता दिखलायी और साथही साथ वज़ीरके व्यवहार-पर असन्तोष प्रगट किया। वज़ीरको मीर कासिमके विरुद्ध अब एक बहाना मिल गया। वह ऐसा अवसर ढूँढ़ ही रहे थे कि कोई हीला करके वह उन प्रतिज्ञाओंको तोड सकें जो उन्होंने मीर कासिमसे की थीं। अन्तमें उन्होंने एक पत्र इनके पास भेजा। उसमें लिखा था कि बादशाह शाह आलम चाहते हैं कि बंगालकी मालगुज़ारीकी जो रक़म उन्हें मिलनी चाहिये वह मीर कासिम शीघ्र दे दें। जब नवाब मीर कासिमने यह सन्देश सुना तो उनके होश उड़ गये। उन्होंने तुरन्त अली इब्राहम खाँको शुजा-उद्दौलाके पास भेजा। अली इब्राहमने अपने मालिककी ओरसे वज़ीरसे बहुत कुछ अनुनय-विनय की, परन्तु फल कुछ भी न निकला। निराश होकर उन्हें लौट आना पड़ा। अब मीर कासिमके सामने चारों ओर अन्धेरा ही देख पड़ने लगा। वह निराशाके समुद्रमें गोते लगाने लगे।

अली इब्राहमसे उन्होंने पूछा कि अब क्या करूँ। इब्राहमने जवाब दिया "आपके लिए मुझे एक ही उपाय देख पड़ता है। आप अपना पड़ाव छोड़कर बाहर बैठ जाइए और शुजाके पास यह कहला पठाइए कि मैं आपके यहाँ अपनी रक्षाके लिए आया था और उसीकी आशा मुझे अभीतक है। उनसे कह दीजिए कि मेरा सब कुछ इस समय आपके हाथमें हैं।" इस रायमें कुछ लोगोंने और भी नमक-मिर्च मिला दिया। उन्होंने कहा कि आप फकीर हो जायँ। मीर कासिमने उनकी सलाह भी मान ली। इन्होंने केवल अपना तख्त ही नहीं छोड़ दिया, वरन् नवाबी पोशाक भी त्याग दी और मामूली गेरुवा वस्त्र धारण कर बाहर एक चटाईपर बैठ गये। लगभग बीस आदमियोंने वैसाही किया। गेरुवा वस्त्र पहन कर उन लोगोंने भी इनका साथ दिया।

कौन ऐसा क्रूरहृदय होगा जो बंगालके पूर्व पराक्रमी और प्रतापी नवाबकी इस वर्तमान दीन अवस्थापर दो आँसू न बहायगा। परन्तु प्रभुकी लीला अद्भुत है। उसके लिए कोई बात असंभव नहीं। उसकी इच्छासे महा रंक भी क्षणभरमें धनी हो सकता है, कुबेरका भंडार भी क्षणभरमें खाली हो सकता है। जब भाग्यने ही पलटा खाया, जब समय ही विपरीत हो गया, तब विचारे मीर कासिमके किये क्या हो सकता था? यदि उन्हें सफलता प्राप्त न हो सकी तो इसमें उनका क्या दोष?

वज़ीर शुजाउद्दौलाने जब सुना कि मीर कासिमने गेरुवा वस्त्र धारण कर लिया है और वह फ़क़ीर हो गये हैं तो उनको बड़ी चिन्ता हुई। वह भयभीत हो उठे।

वह सोचने लगे कि मीर कासिमकी फ़क़ीरीसे हमारे नाम पर धब्बा लगेगा। क़यामतके दिन ईश्वरके सम्मुख हम मुँह न दिखा सकेंगे। उन्होंने अपने एक अफसर अली बेग खाँको मीर कासिमके पास उन्हें सान्त्वना देनेकी गरजसे भेजा और उनसे अपने कुव्यवहारके लिए क्षमा-प्रार्थना की। अली बेगने अपना कर्तव्य भली भाँति निबाहा। मीर कासिमपर इसका अच्छा प्रभाव पड़ा। उन्होंने अली इब्राहमको वज़ीरके पास भेजा। जब यह शुजासे मिले तो उन्होंने कहा कि "यदि मीर कासिम फ़क़ीरी वस्त्र धारण किये रहेंगे तो इससे हमारा मुँह काला होगा। हम ईश्वरके सामने मुँह दिखाने योग्य न रहेंगे।" इब्राहमने जवाब दिया "मीर कासिमका इसमें दोष ही क्या है? उन्होंने निराश होकर संसारको त्याग दिया है। इस अवस्थामें जो कुछ किया जा सकता था वही उन्होंने किया है। अब आप जो कुछ अपना कर्तव्य समझें सो करें।" वजीर स्वयं मीर कासिमके पास जानेको तत्पर हो गये। वहाँ जाकर बड़ी नम्रताके साथ उन्होंने अपने पिछले कुव्यवहारके लिए क्षमायाचना की और मीर कासिमसे प्रार्थना की कि आप पुनः अपना लबास पहन लें, गेरुवा वस्त्र त्याग दें। मीर कासिमने शुजाकी बात मान ली। गेरुवा वस्त्र त्याग कर फिर अपने कार्य्योंकी देख-रेख करने लगे।

इस घटनाके तीन दिन बाद समरूने मीर कासिमके निवास-स्थानको घेर लिया और अपनी पिछली तनख्वाहका बकाया माँगा। उन्होंने किसी तरह समरूका हिसाब चुकता किया। फिर उन्होंने उसे आज्ञा दी कि तमाम गोला-बारूद इत्यादि जमा कर दो। हम इतनी सेना

रखना नहीं चाहते । नमकहराम समरूने उत्तर दिया कि ये सब चीजें अब उसके अधीन रहेंगी जिसके कब्जेमें पहले-से ही हैं । समरूने पहलेसे ही वज़ीरकी सेनामें नौकरी कर ली थी । उक्त बात मीर क़ासिमसे कह कर वह वज़ीरकी सेनामें मिल गया । इसी दिन सन्ध्याको अली इब्राहम-को खबर लगी कि मीर कासिम दूसरे दिन कैद कर लिये जायँगे । ऐसा ही हुआ भी । दूसरे दिन नौ बजे दिनको मीर कासिमके खेमे घिर गये । चारों ओर पहरा बैठा दिया गया । मीर कासिम गिरफ़्तार कर लिये गये । वह हाथीपर बैठा कर वहाँसे लाये गये और वज़ीरके पड़ावमें कैद रखे गये । उनका जो कुछ बचा बचाया द्रव्य तथा सामान इत्यादि था वह सब वज़ीरने अपने क़ब्जेमें कर लिया ।

आज मीर कासिमके तमाम मनसूबोंका लोप हो गया । उदवानालाके युद्धमें हराये जाने पर भी उन्हें अभीतक यह विश्वास बना हुआ था कि हम अपना लुप्त गौरव पुनः प्राप्त कर सकेंगे । उन्होंने समझा था कि वज़ीर शुजा-उद्दौलाकी सहायतासे हमें फिर बंगालकी सूबेदारी मिल जायगी । किन्तु आज उन्होंने स्पष्ट देख लिया कि उनके लिए आशाका एक कण भी शेष नहीं रहा । वह ऐसे समुद्रमें गोते लगा रहे थे जहाँसे निकलनेके लिए एक तिनकेका भी सहारा नहीं रह गया था । बंगाल, विहार और उड़ीसाका स्वामी आज अपने ही राज्यमें कैदी बना हुआ है ! भाग्यका उलट-फेर इसे ही कहते हैं !

४१—देशी सिपाहियोंका विद्रोह।

स समय वज़ीर शुजाउद्दौला अँगरेजोंके साथ युद्धकी तैयारी कर रहे थे उस समय इन लोगोंकी अवस्था बहुत खराब थी। देशी सिपाहियोंमें असन्तोषकी अग्नि सुलग रही थी। मीर जाफरने उन्हें पुरस्कार आदि देनेके जो कुछ वादे किये थे वे पूरे नहीं किये गये। इसी कारण सेना असन्तुष्ट थी। उधर शत्रुके एजंट भी इन लोगोंको भड़का रहे थे और इन्हें प्रलोभन देकर अपनी ओर मिलानेका यत्न कर रहे थे। बहुतसे सिपाही इनकी बातोंमें आ भी गये और शत्रुकी ओर मिलनेको तैयार हो गये। मेजर चारनाक इस समय सेनापति थे। विद्रोहको शान्त करनेकी योग्यता इनमें नहीं थी। यह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये। इसी समय बकसरपर वज़ीरका आक्रमण हुआ। चारनाक जानते थे कि इस अवस्थामें लड़ना हानिकारक है, अतएव वह अजीमाबादकी ओर सेनाके साथ चल पड़े।

११ आषाढ़ (२५ जून) को कोर्ट आफ डायरेक्टर्सके आज्ञानुसार मेजर चारनाकको कम्पनीकी नौकरीसे हटना पड़ा। मेजर मुनरो बंगाल सेनाके सेनापति नियुक्त किये गये। मेजर चारनाक और मीर जाफरसे मिलकर यह फिर सेनामें सम्मिलित हो गये। मुनरो चारनाकके ढंगके आदमी नहीं थे। इनकी प्रकृति दूसरीही तरहकी थी। यह बहादुर और कार्य्यपरायण सेनापति थे। इनमें उत्साह था, आत्मविश्वास था। यह विद्रोहको शान्त करनेपर तुले

हुए थे। जब यह पहुँचे तो इन्होंने देशी सिपाहियोंमें विद्रोहके चिह्न पाये। जो अग्नि धीरे धीरे सुलग रही थी वह भभक उठी थी। कप्तान गैलियरकी अधीनस्थ* एक देशी पलटन माँझीमें बागी हो गयी। उसने अपने अफसरोंको गिरफ्तार कर लिया और शत्रुदलमें मिल जानेकी इच्छा प्रगट की। कप्तान त्रिवानियनके अधीन एक सेना विद्रोहियोंको दबानेके लिए भेजी गयी। जब ये लोग निद्रावस्थामें थे तब सबके सब एक साथ पकड़ लिये गये। ये लोग छपरा लाये गये जहाँपर मेजर मुनरो पहलेसे ही इन लोगोंकी इन्तज़ारी कर रहे थे। जिस समय उनके आनेकी इन्हें आशा थी, उस समय वहाँकी देशी और यूरोपियन सेनाको क़वायदके मैदानमें इन्होंने खड़ा करवाया।

यथासमय विद्रोही कैदी मेजर मुनरोके सामने लाये गये। मेजर खूनके प्यासे नहीं थे। परन्तु विद्रोहको शान्त करनेके लिए इन्हें यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि कुछ कड़ाईसे काम लिया जाय। मुनरोके आज्ञानुसार विद्रोहियोंमें पचास मुखिया चुने गये। बादमें उनकी संख्या चौबीस कर दी गयी। देशी अफसरोंके कोर्ट मार्शल (फौजी अदालत) के सामने ये पेश किये गये। ये लोग दोषी ठहराये गये। यह आज्ञा हुई कि जिस प्रकार मुनरो चाहें इन्हें मृत्युदण्ड दे सकते हैं। चारको उन्होंने यह हुक्म दिया कि वे तोपके मुहँपर उड़ा दिये जायँ। वे लोग तोपके मुहँपर बाँधे गये। इसी समय चार और आदमी आगे बढ़ कर आये और कहने लगे कि चूँकि हम लोग सबसे अधिक अगुआ रहे हैं अतएव

* Galliar.

पहले हम लोग दागे जायँ। उनकी प्रार्थना स्वीकार हुई। क्षण भरमें ये लोग मृत्युके शिकार होगये। इस भयानक दण्डको अन्य देशी सिपाही भी जो विद्रोही न थे सहन न कर सके। उन्होंने अपने अँगरेजी अफसरों द्वारा मुनरोको सूचित किया कि हम लोग अब इस भयानक दृश्यको नहीं देखना चाहते। परन्तु मुनरो इन घुड़कियोंसे डरनेवाले न थे। वह जानते थे कि ऐसे अवसरोंपर किस तरह काम किया जाता है। उन्होंने थोड़े थोड़े सिपाहियोंके बीचमें कुछ अँगरेजी सिपाहियोंको खड़ा कर दिया और आज्ञा दी कि ये लोग हथियार पृथ्वीपर रख दें। उन्होंने यह भी धमकी दी कि यदि आज्ञापालनमें तनिक भी कमी की गयी तो उनपर अग्निवर्षा आरम्भ कर दी जायगी। डर कर उन लोगोंने तत्काल हथियार जमीनपर रख दिये। सोलह सिपाही और तोपके मुँहपर उड़ा दिये गये। चौबीसमेंसे चार और बच रहे। ये लोग किसी अन्य छावनीमें भेजे गये। वहाँपर भी विद्रोहकी आशङ्का थी। अतएव वहाँके सिपाहियोंको डरानेके अभिप्रायसे वहींपर उनको मृत्युदण्ड दिया गया।

इस प्रकार मुनरोने साहसपूर्वक सिपाहियोंके विद्रोहको कुचल डाला और पूर्ण रूपसे सेनामें शान्तिकी स्थापना की। अब वे शुजासे लड़नेके लिए तैयारीमें लग गये।

४२—बक्सरका युद्ध ।

कुछ दिनोंतक अजीमाबादमें और ठहर कर शुजाउद्दौलाने वहाँसे अपना घेरा उठा लिया और बक्सरके लिए चल पड़े । यह शहर गङ्गाके किनारे बसा हुआ है और गाजीपुरके ठीक आमने सामने पड़ता है । यहींपर वजीरने अपना पड़ाव डाला । इन्होंने वर्षा ऋतु यहीं व्यतीत करनेका निश्चय किया ।

यहाँपर यह बतलाना असङ्गत न होगा कि युद्धके साथ साथ दोनों दलोंमें सन्धिकी बातें भी हो रही थीं । बूढ़े नवाब मीर जाफर वजीरकी बहुसंख्यक सेना और उनकी बहादुरीसे डरे हुए थे । उनकी इच्छा थी कि किसी तरह सन्धि हो जाय । अँगरेज भी यही सोच रहे थे कि यदि हमारी कोई हानि न हो तो मुफ़्तमें झगड़ा-टण्टा क्यों किया जाय । ये लोग यहाँतक तैयार थे कि यदि बङ्गाल-पर उनका (अँगरेजोंका) कब्जा रहे और उन्हें शाही खजाने-में केवल थोड़ी सी मालगुजारी देनी पड़े तो बिहार प्रान्त वजीरको दे दिया जाय । परन्तु वजीर शुजाउद्दौला इसके लिए तैयार नहीं थे ।* वह अपनी शक्तिके नशेमें चूर थे । उनके पास असंख्य सेना थी । वह उसीके बूतेपर कूदते

---

* Nor had they (the English) any objections to the Emperor's or rather to the Vezir's keeping possession of the province of Azimabad, if they could be left in quiet possession of Bengal under a certain quit-rent.

—Sayer-ul-Mutakherin Vol II, Page 558

थे । उन्हें मालूम नहीं था कि केवल सैनिकोंकी संख्यापर ही विजय निर्भर नहीं रहता । सैनिकोंका उचित रूपसे सङ्गटन और सञ्चालन करना भी आवश्यक होता है । यह सञ्चालन और सङ्गटन करनेकी शक्ति उनमें नहीं थी। वह इतनी बड़ी सेनाको सम्हाल नहीं सकते थे । अजीमाः बादमें उनको एक धक्का लग भी चुका था । परन्तु वह इस बार भी नहीं चेते । इधर अँगरेजोंकी ओरसे सन्धिकी बात उस समयतक जारी रही जबतक विद्रोह शान्त न हो गया । इसी समय शुजाउद्दौलाका एक पत्र कलकत्ता-कौंसिलको मिला । मुताखरीनमें लिखा है कि उस पत्रमें सन्धिके सम्बन्धमें ऐसी कड़ी शर्तें थीं जिन्हें कोई स्वाभिमानी राष्ट्र स्वीकार नहीं कर सकता । इसी कारण कलकत्ता-कौंसिलने एकमत होकर मुनरोके पास लिख भेजा कि लड़ाई जारी करो ।

कलकत्ता कौंसिलका उक्त पत्र मेजर मुनरोको यथासमय मिला । दो-एक दिन ठहर कर इन्होंने रसद इत्यादिका प्रबन्ध किया और युद्धके अन्य सामानसे अपनेको सुसज्जित किया । फिर यह ३० भाद्रपद (१५ सितम्बर) को बक्सरके लिए चल पड़े । इनके साथ ८५७ यूरोपियन, ५२९ देशी सिपाही और ९१८ देशी घुड़सवार थे । २० तोपें भी साथमें थीं । मार्गमें इन्हें कुछ कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा । शत्रुके कुछ घुड़सवारोंने इनकी गतिका अवरोध करनेकी चेष्टा की । सब कठिनाइयोंको पार करते हुए एक सप्ताहमें ये लोग बक्सर पहुँचे ।

बक्सरमें वजीर शुजाउद्दौला खाई खोद कर पहले ही पड़ाव डाले हुए थे । इनके साथ लगभग चालीस हजार

सेना थी। इनकी स्थिति बहुत ही अच्छी थी। परन्तु अपनी बहुसंख्यक सेनापर विश्वास कर इन्होंने स्वयं ही हमला करनेका निश्चय किया। मुनरोकी इच्छा थी कि रातके समय अचानक शत्रुदलपर आक्रमण किया जाय। परन्तु जब शत्रुने स्वयं आक्रमण कर दिया तो उनके लिए भी सिवा मैदानमें लड़नेके और कोई उपाय न देख पड़ा। एक तरफ शुजाउद्दौलाकी सेना लड़नेके लिए प्रस्तुत हुई। बेनीबहादुर गङ्गाके किनारे खड़े हुए। उनके बगलमें समरू और मारकर तिलङ्गोंकी आठ पलटनें लिए तैयार थे। इन लोगोंके पीछे शुजाकुलीखाँ ६ या ७ हजार पैदल और घुड़सवार सेना लिए तैयार खड़े थे। स्वयं शुजाउद्दौला मियाँ शुजाकुलीखाँकी दाहनी ओर सेना लेकर खड़े होगये।

युद्ध आरम्भ हुआ। दोनों ओरसे अग्निवर्षा शुरू हुई। दोनों दलोंके बहुतसे आदमी मारे गये। आरम्भमें तो ऐसा मालूम पड़ा कि विजय शुजाउद्दौलाकी ही होगी। शुजाने थोड़ेसे चुने हुए सिपाहियोंको लेकर मुनरोकी घुड़सवार सेनापर आक्रमण कर दिया। उन लोगोंको पीछे हटना पड़ा। अँगरेजी सेनामें गड़बड़ी मच गयी। इसी समय मेजर मुनरोको एक युक्ति सूझ गयी। थोड़ीसी अँगरेजी सेना बहुत दूरीपर, शत्रुकी पहुँचके बाहर, खड़ी थी। इस पलटनमें बहादुर सिपाही और कई योग्य सेना संचालक थे। मुनरोने हुक्म दिया कि गङ्गाकी ओर बढ़ कर वे लोग बेनीबहादुरपर हमला करें। वे अचानक बेनीबहादुरकी सेनापर टूट पड़े। बेनीबहादुरकी सेना युद्धमें अधिक देरतक नहीं ठहर सकी। बहुतसे आदमी मारे गये और बहुतेरे डरकर भाग गये। फिर भी

बेनीबहादुर कुछ देर तक डटे रहे । परन्तु अन्तमें जब अपनेको लड़नेमें अशक्य पाया तो मैदान छोड़कर वह भी भाग खड़े हुए । बेनीबहादुरको पीछे हटा कर अँगरेजी सेनाने खाई पार की और शुजाके पड़ावमें घुस पड़ी । वहाँपर वजीरके बहुतसे सिपाही थे । परन्तु अँगरेजी सेनाको अचानक आते देखकर ठहरनेकी किसीकी हिम्मत न पड़ी । सब अपना अपना सामान जहाँका तहाँ छोड़ कर भाग खड़े हुए । वजीरकी सेनामें गड़बड़ी मच गयी । मुगल सिपाहियोंने इस गड़बड़ीसे खूब लाभ उठाया । अपने ही आदमियोंको उन्होंने जहाँ पाया लूटना-खसोटना आरम्भ कर दिया । जिधर जिसने अवसर देखा भाग खड़ा हुआ । वजीर भी न टिक सके । उन्होंने भी भाग-नेवालोंका साथ दिया । तीन घंटे तक युद्ध जारी रहा । अन्तमें विजय अँगरेजोंकी रही । इस लड़ाईमें वजीरके चार हजार आदमी मारे गये और १३० तोपें अँगरेजोंके हाथ लगीं । अँगरेजी सेनाके ८४७ आदमी मरे ।

बक्सरके युद्धके पश्चात् बादशाह शाह आलम एकदम पस्त हो गये । इनकी शक्ति तो पहले ही ध्वस्त हो चुकी थी । शुजाउद्दौलासे थोड़ी बहुत आशा अवश्य थी । परन्तु बक्सरकी लड़ाईमें वह भी हार गये । अब इन्होंने अँग-रेजोंसे सन्धि करना ही उचित समझा । गङ्गाके दूसरे किनारे यह बैठे थे । इन्होंने अँगरेजोंको बुलाया । अँग-रेज तो यह चाहते ही थे । वह तो पहलेसे ही इस यत्नमें थे कि शाह आलमको अपने हाथमें करें । भला इस अवसरको वे कैसे हाथसे जाने दे सकते थे ? तुरन्त नदी पार कर आ पहुँचे । तबसे शाह आलम बराबर अँगरेजों-

के साथ रहे। बादको, जैसा कि हम आगे देखेंगे, शाह आलमके साथ अँगरेजोंका सन्धि हुई। इलाहाबाद इनके रहनेके लिए दिया गया और बङ्गालकी दीवानी अँगरजोंको प्राप्त हुई।

४३—मीर कासिमके अन्तिम दिन।

ती स भाद्र संवत् १८२१ (१५ सितम्बर १७६४) को बक्सरकी लड़ाई हुई। इस युद्धके एक दिन पहले वजीर शुजाउद्दौलाने मीर कासिमको मुक्त कर दिया। इन्हें एक लँगड़ी हथिनी दी गयी जिसपर चढ़कर यह भाग निकले। अभी मीर कासिमके भाग्यमें बुरे दिन देखना और भी बदा था। तभी तो सर्वशक्तिमान्ने अन्तिम बार शत्रुके हृदयमें भी दयाका भाव जागृत किया जिससे उसने अपने असहाय कैदी मीर कासिमको उदारतापूर्वक रिहा कर दिया।

बक्सरकी लड़ाईका फल क्या हुआ, यह हम देख ही चुके। इस युद्धने बंगालमें अँगरेज़ोंकी सत्ता सुदृढ़ नींवपर स्थापित कर दी। वज़ीर शुजाउद्दौलाकी गहरी हार हुई। जब सन्धिकी बात चली तो अँगरेज़ोंने सबसे पहले यह माँग पेश की कि मीर क़ासिम और समरू उनके सिपुर्द किये जायँ। जब मीर कासिमको सन्धिकी ये बातें मालूम हुईं तो उन्होंने अपनी चाल और तेज़ की। जल्दी जल्दी वह इलाहाबादकी ओर भागे। वहाँसे अपने परिवारको लेकर बरैलीकी ओर चल पड़े। बहुत दिनों तक

रुहिलोंकी शरणमें रहे। कहा जाता है कि नजीफ उद्दौला (जिसका वर्णन पहले उदवाके युद्धमें आ चुका है) इनके पालन-पोषणके लिए पेन्शन देता रहा।

ऐसा पता लगता है कि संवत् १८२३ (१७६६ ई०) में मीर कासिमने अहमद शाह अब्दालीसे सहायतार्थ प्रार्थना की। * अहमदशाहने तदनुसार अटक पार भी किया और लाहौरसे १२० मीलकी दूरीपर आगया। परन्तु इस समय भारतवर्षकी अवस्था वह नहीं रही थी जो पानीपत की लड़ाईके समय थी। उस समय तमाम मुसलमान सरदार अब्दालीकी ओर थे। इस बार सबसे बड़ा मुसलमान सरदार शुजा अँगरेज़ोंका मित्र बना हुआ था। सिक्ख अब्दालीके विरुद्ध थे ही। अतएव उसके लिए यह सम्भव नहीं जान पड़ा कि अँगरेज, शुजा और सिक्ख तीनोंसे एक साथ मिल कर लड़े। अतः उसने मीर कासिमसे अपनी असमर्थता प्रगट की और अपने देशको लौट गया।

---

* The fugitive Nawab Mir Kassim in 1766 invited Ahmad Shah Abdali to come and help him. On the second February. 1767 the governor received a letter from Md. Raza Khan informing him that Ahmad Shah had crossed the Attock and was 120 miles from Lahore. But a great change had taken place in the political situation in India. In 1759 all the Muhammedan chiefs of Hindustan were on one side. Now the most powerful of them all, Nawab Shujauddaulah, stood aloof and was actually leagued with the very power whom he might have engaged in battle. The Shah was not prepared to meet a confederacy of the English, the Sikhs and the Vezir. He therefore gave a curt reply to Mir Kassim and returned to his country.

Introduction to third vol, of the Calender of Persian correspondence

इसके बाद दस वर्षतक मीर कासिमका कुछ भी पता नहीं चलता। संवत् १८३४ (सन् १७७७) में दिल्लीकी एक झोपड़ीमें एक आदमी मरा पाया गया। इसके शरीरपर केवल एक दोशाला था। उसीको बेच कर इसके लिए कफ़न आदि जुटाया गया। जब इसका शव गाड़ा जारहा था तब एक व्यक्तिने धीरेसे कहा "यह तो मीर कासिम है"। इस प्रकार नवाब मीर कासिमकी मृत्यु हुई। इस समय इनकी मृत्युपर शोक प्रगट करनेवाला, दो आँसू बहानेवाला भी कोई न रहा। प्रभुको लीला बड़ी विचित्र है!

४४—शुजाउद्दौलाका भाग्यनिर्णय।

बक्सरकी लड़ाईने वज़ीर शुजाउद्दौलाकी शक्ति पूर्णतः ध्वस्त कर दी। अब उनमें इतनी सामर्थ्य न रही कि अँगरेज़ोंके विरुद्ध मैदानमें डट सकें। उन्होंने अब किसी दूसरे राज्यमें शरण लेना ही उचित समझा। तदनुसार उन्होंने अपने कुछ विश्वासपात्र आदमियोंको फैज़ाबाद और लखनऊको बिदा किया। उन्हें यह आज्ञा थी कि ये वज़ीरके परिवार और धनादिको लेकर रुहिला सरदार हाफिज़ रहमत खाँके राज्यको चले जायँ और बरैलीमें रहें। वह स्वयं इलाहाबाद गये, किलेका भार अलीबेग खाँको सौंपा, और अपनी माता तथा स्त्रीको लिये हुए बरैली पहुँचे। इसी समय बेनीबहादुर भी आ पहुँचे।

इन्होंने शुजाउद्दौलाको अँगरेज़ोंके साथ सन्धि करनेकी राय दी। परन्तु शुजाने इससे साफ साफ इनकार किया। वह सन्धिके लिए तैयार नहीं थे। वह ऐसा करना स्वाभिमानके विरुद्ध समझते थे। अभी युद्ध करनेका हौसला उनमें बाकी था। उन्हें औरोंकी सहायता पानेकी आशा अभी बनी हुई थी। उन्होंने समझा था कि अफगानों और मराठा सरदार मल्हारराव होलकरकी सहायतासे हम अँगरेज़ोंके विरुद्ध अपने भाग्यकी परीक्षा कर सकेंगे। उन्होंने बेनीबहादुरको अँगरेज़ोंके पास भेजा कि उन्हें बातचीतमें उलझाये रहें।

शुजाउद्दौलाके लिए अफगानोंसे मददकी आशा करना फजूल था। विश्वास तो सभीने दिलाया कि हम लड़ाईमें आपको सहायता देंगे, लेकिन समयपर कोई काम न आया। कुछ न कुछ बहाना कर सब तटस्थ रहे। वज़ीरके आदमियोंने मराठा सरदार मल्हाररावको रुपयेका बहुत लालच दिखलाया। वह वज़ीरकी ओर होकर लड़नेको तैयार होगये। अपनी सेना लेकर वह आ भी पहुँचे।

अँगरेज़ोंने देखा कि युद्ध अनिवार्य्य है। अतएव उन्होंने भी तैयारी आरम्भ कर दी। बनारसके राजा बलवन्त सिंहको उन लोगोंने अपनी ओर मिला लिया था। बलवन्त सिंहको सलाहसे उन लोगोंने चुनारगढ़ लेनेका निश्चय किया। एक बड़ी सेना चुनारगढ़पर चढ़ाई करनेके लिए भेजी गयी। परन्तु वहाँ लेनेके देने पड़ गये। किलेके सिपाहियोंने बहादुरीके साथ किलेको रक्षा की। कई अँगरेज़ अफसर और बहुतसे सिपाही मार डाले गये। अँगरेज़ोंको घेरा उठाकर लौटना पड़ा।

इस समय मिरज़ा नज़ीफ खाँ अँगरेज़ोंसे मिल गये थे। उन्हींकी सहायतासे इलाहाबादके क़िलेपर अँगरेजों-का कब्जा हुआ। उन लोगोंने इलाहाबादके क़िलेपर आक्रमण किया। नज़ीफ खाँको एक भागका पता था जिसमें कोई दुर्ग-प्राचीर नहीं था। इसी ओरसे अँगरेजों-ने अग्निवर्षा आरम्भ कर दी। क़िलेकी रक्षामें जो सिपाही थे उन्हें उसे अँगरेज़ोंके सिपुर्द करना पड़ा।

इधर जब वज़ीर और मल्हारराव दोनों मिल गये तब दोनोंने अँगरेज़ोंपर हमला किया। परन्तु वे लोग बालूपर इमारत खड़ी कर रहे थे। सेनामें किसीमें यह दिमाग़ नहीं था कि लड़ाईके ढंगको सोच सके। वजीरके सिपाहियोंमें निराशा भरी हुई थी। वे बक्सरकी लड़ाईमें हार चुके थे। अब उनमें खड़े होनेका दम बाकी न था, खास कर उसी शत्रुके विरुद्ध खड़े होनेका जिसके साथ वे एक बार लड़ चुके थे। कोरामें लड़ाई हुई। वज़ीरकी सेनाने तुरन्त ही पीठ दिखा दी। मल्हारराव भी अँग-रेज़ोंकी अग्निवर्षाके सामने न टिक सके। वह जी छोड़ कर भागे और ग्वालियरमें ही पहुँच कर दम लिया। वज़ीरकी यह अन्तिम चेष्टा थी। दूसरोंकी सहायताका आसरा कर उन्होंने आखरी बार कोशिश की परन्तु निष्फल रहे। अब उनका रहा-सहा हौसला भी जाता रहा।

इस बार लड़ाईमें हार कर वह फिरोजाबाद गये। अफगानोंसे शिकायत की कि आप लोगोंने मुझे समयपर धोखा दिया। सबने कुछ न कुछ बहाना बना दिया। अहमद शाह बङ्गशने शुजाउद्दौलाको सलाह दी कि आंप अँगरेज़ोंके साथ सन्धि कर लें। वे बड़ी खुशीके साथ

आपसे सुलह कर लेंगे। शुजाउद्दौलाको भी यही राय पसन्द आयी। दूसरी बात वह कर ही क्या सकते थे? उनके हाथमें अब रहा ही क्या था जिसके बूतेपर वह कूद सकते। चुनारमें एक बार अँगरेज़ोंको नीचा अवश्य देखना पड़ा था। परन्तु उन्होंने दूसरी बार पुनः आक्रमण कर चुनारगढ़को ले लिया था। शुजाउद्दौला एक पालकीमें सवार होकर थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ अँगरेज़ी सेनाकी ओर चल पड़े। अँगरेज़ोंने बड़ी नम्रतासे व्यवहार किया। तीन चार रोज़तक सन्धिकी बात चलती रही। अन्तमें अँगरेज़ोंके साथ शुजाउद्दौलाकी सन्धि हो गयी। यह तै हुआ कि "वज़ीर पचास लाख रुपया लड़ाईके खर्चका अँगरेज़ोंको देंगे। उसमेंसे बीस लाख तो अभी देना होगा और शेष भविष्यमें देंगे। इलाहाबादसे अपना अधिकार वज़ीरको हटा लेना पड़ेगा। वह स्थान शाह आलमके रहनेको दिया जायगा। अँगरेज़ोंकी एक पलटन बादशाह शाह आलमकी रक्षाके लिए इलाहाबादमें रहेगी। एक अँगरेज़ रेजीडेण्टके तौरपर शुजाउद्दौलाके दरबार-में रहा करेगा। बलवन्त सिंहने अँगरेज़ोंका साथ दिया था, इसके लिए शुजा उन्हें दण्ड न दे सकेंगे, वरन् क्षमा कर देंगे।" इस प्रकार वज़ीर और अँगरेज़ोंका युद्ध समाप्त हुआ और शान्ति स्थापित हुई।

अब वज़ीरको रुपयेकी चिन्ता हुई। इन्होंने अपने मित्रों, कुटुम्बियों तथा नौकरों आदिसे रुपया माँगा। परन्तु सब अपने ही स्वार्थमें मत्त थे। वज़ीरको यथेष्ट सहायता न मिल सकी। कहते हैं कि वज़ीर शुजाकी स्त्रीने अपने कर्तव्यको भलीभांति निबाहा। उसके पास

जो कुछ था वह सब उसने दे डाला। अपने शरीरके तमाम गहने भी उतार कर दे दिये। जब किसीने उससे पूछा कि यह मूर्खता क्यों कर रही हो? तब उसने जवाब दिया कि ये गहने उसी समय शोभा देंगे जब हमारे स्वामी सुखी रहेंगे। वज़ीरके पास काफी रुपया इकट्ठा नहीं हुआ, फिर भी किसी तरह गहने जवाहरात इत्यादि जो कुछ था उसे देकर प्रथम अदायगीसे अपना पिण्ड छुड़ाया।

इसके पश्चात् क्या हुआ, इसकी छानबीन करनेकी आवश्यकता इस पुस्तकमें नहीं है। बक्सरकी लड़ाईके बाद बंगालमें तो अँगरेज़ोंकी सत्ता स्थायी रूपसे जम ही चुकी थी। अवधके दरबारमें भी अब उनका पाँव पड़ गया। धीरे धीरे वे वहाँके प्रबन्धमें भी हस्तक्षेप करने लगे और बादको डलहौज़ीके समयमें यह प्रान्त अँगरेज़ी राज्यमें मिला लिया गया।

४५—नवाबोंका अन्त कैसे हुआ?

कलुषित आत्माके लिए सुख सर्वदा स्वप्न है। राज-प्रासादमें भी उसको आनन्द दुर्लभ है। जहाँ भी वह रहता है, शान्ति और सुख उसकी छायासे कोसों दूर भागते हैं। अपने दुष्कर्मोंका फल उसको मिलकर ही रहता है। यह इस संसारका नियम ही है कि जैसा जो बोयेगा वैसा ही काटेगा, जो जैसा करेगा वैसा ही फल चखेगा। मीर

जाफरका भी यही हाल हुआ। अपने मालिक सिराजु-द्दौलाको उन्होंने धोखा दिया, अपने स्वाभिमान, प्रतिष्ठा और धर्मको विदेशियोंके हाथ बेंच दिया। बाहरी मान और प्रतिष्ठाके लिए उन्होंने अपने आत्मगौरवको तिलाञ्जलि दे दी। उन्होंने समझा था कि इन दुष्कर्मोंको करके मैं सुखी होऊँगा, ऐश्वर्य्य भोग करूँगा। परन्तु ऐसी आशा करके मानो वह हवामें इमारतें खड़ी कर रहे थे। एक बार सिराजको धोखा देकर वह नवाब हुए थे। उसका फल उन्होंने कुछ ही दिनोंके भीतर पा लिया। जब सेनाने वेतनके लिए उनके महलोंको घेर लिया था और उनकी जानके लाले पड़ गये थे तभी उन्होंने समझ लिया था कि झोपड़ियोंमें रहने वाला—मेहनत मजदूरी करके खानेवाला मजदूर—मुझसे कहीं अधिक सुखी है। प्रथम बार जब वह गद्दीसे उतारे गये तो उन्हें सम्हल जाना चाहिये था। परन्तु उनकी बुद्धि मारी गयी थी। विवेक तो उनमें था ही नहीं। जब मीर कासिमने अँगरेज़ोंकी लज्जाजनक शर्तों-को न माना और उन्हें गद्दीसे अलग होना पड़ा, तब मीर जाफरने उन्हीं शर्तोंको मान कर नवाब होना स्वीकार कर लिया। एक बार धक्का खाकर भी उन्होंने पुनः अपनेको विदे-शियोंके हाथ बेंच दिया। परन्तु उनके लिए सुख दुर्लभ था। जिन अँगरेज़ोंकी कृपासे मीर जाफरको सिंहासन प्राप्त हुआ था उनके हाथोंसे इन्हें और भी कष्ट भोगने पड़े। उन्होंने तो अपना मतलब साधनेके लिए ही इन्हें नवाब बनाया था। जब कार्य सिद्ध हो गया, जब वे अपनी शक्तिके शिखरपर चढ़ गये, तो उन्होंने इन्हें ठुकरा दिया। जिस निर्दयता और बुरे ढंगसे उन्होंने इनसे अपना रुपया

वसूल किया वह इन्हें सहन न हो सका। कुछ ही दिनों बाद अर्थात् फाल्गुन १८२१ (फरवरी १७६५ ई०) में इनका देहान्त हो गया।

मीर जाफ़रके पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र नजीमुद्दौला नवाबके पदपर अभिषिक्त हुए। इनके साथ अँगरेज़ोंने नयी सन्धि की। इसके अनुसार नायब नाज़िमका पद क़ायम हुआ और इसका भार गवर्नर और कौंसिलके आदेशानुसार मुहम्मद रज़ा खाँको दिया गया। यह तै हुआ कि मुतसद्दियोंको बहाल और बरख्वास्त करना गवर्नर और कौंसिलकी इच्छाके अधीन रहेगा। मुतसद्दियोंको अधिकार रहेगा कि नवाबकी नौकरीमें जो बुरे लोग हों उन्हें वे नवाबको बतला दें और नवाबको उनकी बातोंपर ख्याल करना होगा। फौजके सम्बन्धमें यह निश्चय हुआ कि नवाब उतनी ही सेना रख सकेंगे जो उनके सम्मान, प्रतिष्ठा, राज्यसञ्चालन और कर-वसूलीके लिए पर्याप्त हो। किसी यूरोपियनको वह नौकर न रख सकेंगे। फ्रांसीसियोंको किले बनाने या बसनेकी आज्ञा न देंगे। इन शर्तोंके द्वारा नवाबकी शक्ति बहुत कुछ कम कर दी गयी। पहले नजीमुद्दौलाने आनाकानी की। परन्तु जब कुछ भी सुनवाई न हुई तो उनको इन शर्तोंके आगे माथा झुकाना पड़ा।

बक्सरकी लड़ाईके बाद अँगरेज़ोंको शाह आलमके द्वारा बंगाल बिहार और उड़ीसाकी दीवानी प्राप्त हुई। तदनुसार यह तै हुआ कि अँगरेज़ २६ लाख रुपया सालाना शाही खज़ानेमें देंगे और नज़ामतके प्रबन्धके लिए रुपया देकर शेष अपने पास रखेंगे। अब नजीमुद्दौलाके साथ

दूसरी सन्धि १४ आश्विन १८२२ (३० सितम्बर १७६५ ई०) को हुई। नज़ामतके खर्चके लिए ५३ लाख ८६ हजार १३१ रु० ६ आने नवाबको मिलना निश्चित हुआ। यह संवत् १८२३ (१७६६ ई०) में मरे। इनके बाद इनके भाई सैफुद्दौला नवाब नाज़िम हुए। इनके साथ अँगरेज़ोंने पुनः नवीन सन्धि की। निज़ामतका खर्च घटाकर ४१, ८६,१३१॥-) कर दिया गया। सैफुद्दौलाने राज्य-रक्षाका सम्पूर्ण भार अँगरेज़ोंको सौंप दिया। संवत् १८२६ (१७७० ई०) में मुबारक उद्दौला नवाब बनाये गये। इस समय यह केवल १२ वर्षके थे। ७ चैत्र संवत् १८२६ (२१ मार्च १७७०) को इनके साथ दूसरी सन्धि अँगरेज़ोंकी हुई और नज़ामतका खर्च घटाकर ३१,८१,९९१॥-) कर दिया गया। तै तो यह हुआ था कि यह सन्धि अब सदाके लिए अँगरेज़ोंको मान्य रहेगी। परन्तु कुछ ही दिनों बाद १७७२ में बिना नई सन्धि किये ही यह खर्च घटा कर ३१ लाखसे १६ लाख कर दिया गया।

इस प्रकार अँगरेज़ोंने धीरे धीरे नवाबोंकी शक्ति छीनना आरम्भ कर दिया। उन्होंने एकदम तमाम अधिकार अपने हाथमें नहीं किया। उन्हें डर था कि ऐसा करनेसे कहीं असन्तोष फैल जाय और विद्रोहकी अग्नि भभक उठे। तब उसे दबाना भी कठिन होगा और आश्चर्य्य नहीं यदि हमारी सत्ताका समूल नाश हो जाय। इसीसे उन्होंने धीरे धीरे अपनी ताक़त बढ़ाना और नवाबोंकी शक्ति कमज़ोर करना आरम्भ किया। जो जो नये नवाब होते उनके साथ नयी नयी सन्धि होती। अँगरेज़ उनका खर्च भी धीरे धीरे घटाते गये। संवत् १८९५ (१८३८ ई०) में मन्सूर अलीने

बंगालका निज़ामत पद ग्रहण किया। संवत् १६११ (१८५४ ई०) में डलहौज़ीने उनपर यह दोषारोपण किया कि शिकार खेलते समय उनके आदमियों द्वारा दो मनुष्योंका खून हो गया था। मन्सूर अलीको इसका कुछ भी पता नहीं था। अँगरेज़ी अदालतने नवाबके नौकरोंपर मुक़दमा चलाया। परन्तु वे छोड़ दिये गये। नवाबने उन्हें फिर से नौकर रख लिया। इसपर डलहौज़ी बहुत बिगड़े। अब पुलिसका पहरा इनपर रहने लगा। बिना पुलिसकी निगरानीके यह शिकार खेलने नहीं जा सकते थे। इनके कई अधिकार भी छीन लिये गये। संवत् १६१४ (१८५७ ई०) के विद्रोहमें इन्होंने अँगरेज़ोंकी सहायता नहीं की थी, अतः वे इनसे असन्तुष्ट थे। संवत् १६२६ (१८६६ ई०) में यह इंग्लैण्ड चले गये और वहीं रहने लगे। सं० १६३७ (१८८० ई०) में इन्हें अँगरेज़ोंके साथ नयी सन्धि करनी पड़ी। उसके अनुसार नवाब नाज़िमका खिताब इन्हें छोड़ना पड़ा। एक लाख रुपयेकी सालाना पेन्शन मिलनी निश्चित हुई। इनके ज्येष्ठ पुत्र अली कादिरको नवाब मुर्शिदाबादका खिताब दिया गया। इस तरह संवत् १६३७ के १५ कार्तिक (१८८० की पहली नवम्बर) को बंगालके देशी राज्यका दीपक सदाके लिए बुझ गया। रही-सही नवाबकी शक्ति भी लुप्त हो गयी।

परिशिष्ट ।

(१)

कम्पनीके साथ मीर जाफरका प्रथम सन्धिपत्र ।

I. Whatever articles were agreed to in the time of peace with the Nabob Surajah Dowlah, I agree to comply with. II. The enemies of the English are my enemies. III. All the effects and factories belonging to the French in Bengal, Behar and Orissa shall remain in the possession of the English, nor will I ever allow them any more to settle in the three provinces. IV. In consideration of the losses which the Company have sustained by the capture and plunder of Calcutta by the Nabob, ...I will give them one crore of rupees. V. For the effects plundered from the English inhabitants of Calcutta, I agree to give fifty lacs of rupees...... IX. All the land lying south of Calcutta, as far as Culpee, shall be under the Zemindary of the Company... . The revenues to be paid by the Company in the same manner as other Zemindars. X. Whenever I demand the assistance of the English, I will bear the charge of the maintenance of their troops. XI. I will not erect any new fortifications near the Ganges below Hughley.—Dated the 15th of Remazan, in the 2nd year of the present reign.

---

(२)

मीर कासिमका सन्धिपत्र ।

"FIRST, The Nabob Meer Mahomed Jaffier Cawn, shall continue in the possession of his dignities, and all affairs be transacted in his name, and a suitable income shall be allowed for his expenses.

"SECOND. The Neabut of the Soubadaree of Bengal, Azimabad and Orissa, etc., shall be conferred by his Excellency the Nabob, on Meer Mahomed Cossim Cawn. He shall be vested with the administration of all the affairs of the provinces, and after his Excellency he shall succeed to the government.

"THIRD, Betwixt us and Meer Mahomed Cossim Cawn, a firm friendship and union is established. His enemies are our enemies and his friends are our friends.

"FOURTH, The Europeans and seepoys of the English army shall be ready to assist the Nabob Meer Mahomed Cossim Cawn, in the management of all affairs, and in all affairs dependent on him, they shall exert themselves to the utmost of their abilities,

"FIFTH, For all charges of the Company, and of the said army, and provisions for the field, etc., the lands of Burdwan, Midnapoor, and Chittagong, shall be assigned, and sunnuds for that purpose shall be written and granted. The Company is to stand to all losses, and receive all the profits of these three countries; and we will demand no more than the three assignments aforesaid.

"SIXTH, One-half of the Chunam produced at Silhet for three years shall be purchased by the Gomastahs of the Company, from the people, of the Government, at the customary rate of that place. The tenants and inhabitants of that place shall receive no injury.

"SEVENTH, The balance of the former iuncaws shall be paid according to the Kistbundee agreed upon with the Royroyan. The jewels, which have been pledged shall be received back again.

"EIGHTH, We will not allow the tenants of the Sircar to settle in the lands of the English Company. Neither shall the tenants of the Company be allowed to settle in the lands of the Sircar.

"NINTH, We will give no protection to the dependants of the Sircar in the lands or factories of the Company, neither shall any protection be given to the dependants of the Company, in the lands of the Sircar; and whoever shall fly to either party for refuge shall be given up.

"TENTH, The measures for war or peace with the Shahzada, and raising supply of money, and the concluding both these points, shall be weighed in the scale of reason, and whatever is judged expedient shall be put in execution; and it shall be so contrived by our joint counsels that he be removed from this country, nor suffered to get any footing in it. Whether there be peace with the Shahzada or not, our agreement with Meer Mahomed Cossim Cawn, we will, by the grace of God inviolably observe, as long as the English Company's factories continue in the country.—

Dated 27th September, 1760, in the year of the Hegira, 117

---

(३)

मीर जाफरका दूसरा सन्धिपत्र

(पृष्ठ १८२ देखिये)

I. The treaty which I formerly concluded with the Company, upon my accession to the Nizamut,...I now confirm and ratify. II. I do grant and confirm to the Company, for defraying the expenses of their troops, the chucklas of Burdwan, Midnapoor and Chittagong, which were before ceded for the same purpose. III. I do ratify and confirm to the English, the privilege granted them by their firmaun, and several husbul-hookums, of carrying on their trade by means of their own dustucks, free from all duties, taxes and impositions..., except salt, on which a duty of two and a half per cent. is to be levied on the Rowana or Hooghly market price. IV. I give to the Company half the saltpetre which is produced in Poornea, which their gomastahs shall send to Calcutta; the other half shall be collected by my fougedar; and I will suffer no other person to make purchases of this article in that country, V. In Sylhet for the space of five years my fougedar, and the Company's gomastah, shall jointly prepare Chunam; half the Chunam shall be given to the Company and the other half shall be for my use....VIII. The late perwanna issued by Cossim Allee Cawn, granting to all merchants the exemption of all duties, for

the space of two years, shall be reversed and called in, and the duties collected as before. IX. I will cause the rupees coined in Calcutta, to pass in every respect equal to the siccas of Moorshedabad, without any deductions of batta, and whosoever will demand batta will be punished. X. I will give 30 lacks of rupees to defray all expenses and loss accruing to the Company, from the war and stoppage of their investment ;... if I should not be able to discharge this in ready money, I will give assignment of land for the amount. XII. If the French come into the country I will not allow them to erect any fortification, maintain forces, or hold lands.—the 10th of July, 1764.

---

(४)

मीर जाफ़रकी ओरसे पेश की गयी माँगोंकी सूची ।

Demands made on the part of the Nabob Meer Mahomed Joffier Cawn, to the Governor and Council, at the time of signing the treaty.

"FIRST,—I formerly acquainted the Company with the particulars of my own affairs, and received from them repeated letters of encouragement with presents, I now make this request, that you will write to the Company, the particulars of our friendship, and procure for me writings of encouragement, that my mind may be assured from that quarter, that no breach may ever happen between me and the English.

SECONDLY—Since all the English Gentlemen, confirm me in the Nizamut, I request, that to whatever I may at any time write they will give their credit and assent, nor regard the stories of designing men to my prejudice, that all my affairs may go on with success, and no occasion may arise for jealousy or ill-will between us.

THIRDLY,—Let no protection be given by any of the English gentlemen to any of my dependants, who may fly for shelter to

Calcutta, or other of your districts; but let them be delivered up to me on demand. I shall strictly enjoin all my fougedars aumils on all accounts, to afford assitance and countenance to such of the gomastahs of the Company as attend to the lawful trade of their factories; and if any of the said gomastahs shall act otherwise, let them be checked in such a manner, as may be an example to others.

FOURTHLY,—From the neighbourhood of Calcutta to Hooghly, and many of the praganahs bordering upon each other, it happens, that on complaints being made, people go against the taalookdars, reiats, and tenants of my towns, to the prejudice of the business oi the sircar; wherefore, let strict orders be given, that no peons be sent from Calcutta on the complaint of any one, upon my taalookdars or tenants; but on such occasions, let application be made to me, or the Naib of the fougedars of Hooghly, that the country may be subject to no loss or devastation.

FIFTHLY,—Whenever I may demand any forces from the Governor and Council for my assistance, let them be immediately sent to me, and no demand made on me for their expenses.

The demands of the Nabob Meer Mahomed Jaffier Cawn Bahadur, Mohabut Jung, we the President and Council of the English Company do agree, and set our hands to, in Fort William, the 10th of July, 1763."

---

(५)

गुरगीन खाँकी मृत्यु।

(पृष्ठ १९७)

मीर कासिमके लिए गुरगीन खाँके प्रति सन्देह करनेका कारण था, इसका आभास मेजर आदम्सके निम्नलिखित पत्रसे भी मिलता है—

Dear Sir,—We had a report yesterday that Coja Gregory has been wounded by a party of Mogul cavalry who mutinied for want

of their pay, it is just now confirmed by a hurcarra......; though it was imagined that the Moguls were induced to affront and assault Coja Gregory by Cossim Ally Khan, who began to grow very jealous of him on account of *his good behaviour to the English*.

---

(६)

'पटना हत्याकाण्ड'।

(पृष्ठ २०५)

जिन लेखकोंने मीर कासिमको "पटना हत्याकाण्ड" के कारण दोषी ठहराया है और उनपर पुरुषोंके अतिरिक्त स्त्रियोंको भी मरवा डालनेका दोषारोपण किया है उनमेंसे ब्रूमका कथन नीचे दिया जाता है—

"The intelligence of the fall of Monghyr filled up the measure of Meer Kassim's fury, the surrender being attributed to treachery. He now issued the fatal order for the massacre of his unfortunate prisoners but so strong was the feeling in the subject, that none amongst his officers could be found to undertake the office, until Sumroo offered his services to execute it"—Broome's Bengal Army, Vol I., p. 390.

"Their very executioners, struck with their gallantry, requested that arms might be furnished to them, when they would set upon them and fight them till destroyed, but that this butchery of unarmed men was not the work for Sipahis but for "Hullal Khores"...Neither age nor sex was spared, and Sumroo consummated his diabolical villany by the murder of Mr. Ellis's infant child. —Broome's Bengal Army, Vol I. p. 339.

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका।

ख